हिंदी

(कक्षा–10)

माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उ०प्र०, प्रयागराज

द्वारा प्रकाशित

Royalty Paid Book

प्रथम संस्करण : 2023-24
द्वितीय संस्करण : 2025-26

© माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

प्रकाशक : माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश
प्रयागराज–211001

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रानिकी मशीनी, फोटो प्रतिलिपि, रिकार्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक किसी अन्य प्रकार से व्यापार, पुनर्विक्रय या किराये पर न दी जायेगी और न बेची जायेगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

मूल्य ₹ 39.00

पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण में 80 जी.एस.एम. मैपलीथो पेपर IS मार्क नवीनतम् संशोधित BIS Specification 1848/2007 Updated Revised पेपर (सेतिया पेपर मिल्स लि., के. आर. पल्प एण्ड पेपर्स लिमिटेड, बिन्दल पेपर मिल्स लि., मोहित पेपर मिल्स लि., ट्राइडेन्ट लि.) के मानक का प्रयुक्त किया गया है।

मुद्रक एवं वितरक :

राजीव प्रकाशन

48/13A रामबाग, प्रयागराज

दूरभाष : 2402474, 2404980

प्राक्कथन

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को परिवेश के प्रति संवेदनशील बनाना एवं समकालीन परिवर्तनों के बारे में समझ और दृष्टि का विकास करना है। इस महत्त्वपूर्ण उद्देश्य की सफलता के लिए समयानुसार पाठ्य–पुस्तकों का अद्यतन होना परमावश्यक है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 का उद्देश्य एक ऐसी शिक्षा–प्रणाली को तैयार करना है, जो भारत के सभी विद्यार्थियों में ज्ञान और कौशल का विकास करते हुए भारत को एक 'वैश्विक ज्ञान–महाशक्ति' के रूप में स्थापित करे। 'नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति' इस बात पर बल देती है कि भारत को 'ज्ञान–महाशक्ति' बनाने में भाषा की भूमिका अहम होगी इसलिए भारतीय भाषाओं की जीवंतता बरकरार रखते हुए सृजनात्मक लेखन की पहुँच व्यापक बनायी जाए। साहित्य की पहुँच व्यापक समाज तक बनाने में पुस्तकें सेतु का कार्य करती हैं। माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज द्वारा इस दिशा में कार्य करते हुए 'आजादी का अमृत महोत्सव वर्ष' में हाईस्कूल और इण्टरमीडिएट की पाठ्यपुस्तकों का नवीन परिवर्तित संस्करण प्रस्तुत किया जा रहा है।

हिंदी साहित्य का संसार बहुत व्यापक है। साहित्य की सार्थकता इस बात में निहित है कि वह मनुष्य को एक संवेदनशील इंसान बनाने में या बनाये रखने में अपनी स्पष्ट भूमिका का निर्वहन करे। हिंदी–साहित्य ने सदैव इस चुनौतीपूर्ण दायित्व को स्वीकारा है और उसका निर्वाह किया है। हिंदी 'भाषा' और 'साहित्य' दोनों स्तरों पर एक समृद्ध परंपरा का ध्यान रखते हुए हमारा उद्देश्य विद्यार्थियों में भाषायी योग्यता का विकास करना, उनमें साहित्य की विभिन्न विधाओं के प्रति अनुराग उत्पन्न करना, उन्हें साहित्यिक नवीनता एवं उपलब्धियों से परिचित कराते हुए सफल इंसान बनाना है। हमारा प्रयास है कि पुस्तक में संकलित 'पाठ्य–सामग्री' विद्यार्थियों में मौलिक चिन्तन, समीक्षात्मक दृष्टिकोण एवं सृजनात्मक प्रतिभा के विकास के साथ–साथ उनमें मानवीय मूल्यों के प्रति गहरी आस्था उत्पन्न करने वाली, भारतीय सांस्कृतिक चेतना जाग्रत करने वाली तथा उन सब में राष्ट्रीय भावना भरने वाली हो। हिंदी साहित्य का उद्देश्य रहा है कि प्रतिबद्ध नागरिकों का निर्माण किया जाए ताकि समाज और देश की बौद्धिक उन्नति की पताका वैश्विक मंच पर प्रतिष्ठापित हो सके। इस पुस्तक के माध्यम से हमारी हर संभव कोशिश है कि हम विद्यार्थियों को ऐसी पाठ्यसामग्री उपलब्ध करायें जो उनकी अभिरुचियों का परिमार्जन करते हुए उनमें यथोचित अभिवृत्तियों, भावात्मक एकता, आत्मीय संवेदनशीलता तथा वैचारिक प्रखरता का विकास कर सके। अतः हिंदी की इस पाठ्यपुस्तक का अध्ययन एवं वाचन अत्यंत उपयोगी और ज्ञानवर्द्धक है। संस्कृत भाषा की एक सामान्य समझ विकसित हो सके, इसका भी पुस्तक में ध्यान में रखा गया हैं।

माध्यमिक शिक्षा परिषद् उत्तर प्रदेश, प्रयागराज ने पाठ्यक्रम और परीक्षा प्रणाली के सभी पक्षों को दृष्टि में रखते हुए विद्वान परामर्शदाताओं, सुयोग्य एवं अनुभवी विषय–विशेषज्ञों तथा विभागीय सदस्यों के अथक परिश्रम से कक्षा 9–10 एवं 11–12 के लिए हिंदी की सुंदर एवं उत्कृष्ट पुस्तकें तैयार करायी हैं। आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि ये पुस्तकें शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए अत्यंत बोधगम्य और उपयोगी साबित होंगी। सुझावों का स्वागत रहेगा।

डॉ. महेन्द्र देव
निदेशक (मा0)/सभापति
माध्यमिक शिक्षा परिषद्
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

पाठ्यपुस्तक–निर्माण–समिति

संरक्षक :

श्री दीपक कुमार, अपर मुख्य सचिव, माध्यमिक शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश शासन।

निर्देशक :

डॉ. महेन्द्र देव, शिक्षा निदेशक (माध्यमिक), उत्तर प्रदेश लखनऊ।

संयोजक :

श्री दिब्यकान्त शुक्ल, सचिव, माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज।

सह–संयोजक :

श्री अशोक कुमार गुप्ता, अपर सचिव (पा.पु.रा.), माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज।

श्रीमती श्रद्धा शुक्ला, उपसचिव, माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज।

श्रीमती मनीषा कुशवाहा, सहायक सचिव, माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज।

परामर्शदाता मण्डल

1. प्रो. उमाकांत यादव, संस्कृत विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
2. डॉ. कुमार वीरेंद्र, एसोसिएट प्रो., हिंदी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
3. डॉ. आशुतोष पार्थेश्वर, एसोसिएट प्रो., हिंदी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
4. डॉ. अमृता, असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
5. डॉ. सुनील कुमार सुधांशु, असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
6. डॉ. लक्ष्मण प्रसाद गुप्ता, असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज।

विषय–विशेषज्ञ

1. डॉ. संतोष कुमार मिश्र, प्रधानाचार्य, श्री लाल बहादुर शास्त्री इण्टर कॉलेज, चायल, कौशांबी।
2. डॉ. अवनीश यादव, प्रधानाचार्य, राजकीय मॉडल इण्टर कॉलेज, बरेली।
3. डॉ. अरुण कुमार मिश्र, असिस्टेंट प्रोफेसर, एम0डी0 महाविद्यालय, प्रतापगढ़।
4. डॉ0 ज्योति यादव, असिस्टेंट प्रोफेसर, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हमीरपुर, भदोही।
5. मनुजेन्द्र मिश्र, प्रवक्ता, गोमती इण्टर कॉलेज, फूलपुर।
6. रेनू घिल्डियाल, क्रॉस्थवेट गर्ल्स इण्टर कॉलेज, प्रयागराज।
7. अरुणा यादव, प्रवक्ता, राजकीय बालिका इण्टर कॉलेज, फूलपुर, प्रयागराज।
8. डॉ. अनीता, प्रवक्ता, राजकीय बालिका इण्टर कॉलेज, मुंगारी, करछना, प्रयागराज।
9. कमल सिंह, सहायक अध्यापक, राजकीय इण्टर कॉलेज, प्रयागराज।

समन्वयक

सरोज यादव, साहित्यिक सहायक, माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उ. प्र. प्रयागराज।

इंदु यादव, शोध सहायक, माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उ. प्र. प्रयागराज।

चित्रांकन

आशीष नारायन।

भूमिका

अपनी सरलता, स्पष्टता, ग्राह्यता तथा विपुल साहित्य के कारण हिंदी की प्रतिष्ठा विश्व स्तर पर निरंतर बढ़ती जा रही है। अतएव माध्यमिक स्तर की हिंदी के पाठ्यक्रम निर्धारण में उस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि विद्यार्थी हिंदी के क्रमिक विकास का परिचय प्राप्त करते हुए उसकी मुख्य विधाओं का अध्ययन, अनुशीलन कर सकें। हालांकि कक्षा 10 के हिंदी विषय के मूल पाठ्यक्रम में परिवर्तन नहीं हुआ है, किंतु इस बात का भरसक प्रयास किया गया है कि पुस्तक में जो भी सामग्री उपलब्ध करायी जाए, वह विशुद्ध, तथ्यपूर्ण, रुचिकर, ज्ञानवर्धक तथा प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए भी उपादेय हो।

कक्षा 10 के विद्यार्थियों के लिए तैयार की गई यह पाठ्यपुस्तक तीन खण्डों में विभक्त है—पद्य खण्ड, गद्य खण्ड एवं संस्कृत खण्ड। पद्य खण्ड में तेरह कवियों की रचनाओं को सम्मिलित किया गया है। पाठ्यपुस्तक में पद्यखण्ड को इसलिए स्थान दिया गया है, जिससे विद्यार्थियों में हिंदी पद्य साहित्य के विकास का ज्ञान, साहित्यिक अभिरूचि, सौंदर्य बोध एवं हृदयगत भावों का विकास हो सके। विद्यार्थी स्वयं पद्य की महत्ता एवं उपयोगिता को समझते हुए साहित्य सृजन में उद्यत होंगे।

पुस्तक में पहले भक्तिकाल, रीतिकाल एवं आधुनिक काल के कवियों की रचनाएँ काल खण्ड के अनुसार व्यवस्थित की गई हैं। इसी क्रम में पहले सूरदास, तुलसीदास और रसखान जैसे भक्त कवियों को रखा गया है एवं उनके काव्य के उन अंशों को चुना गया है जो भक्ति रस में डूबे हुए, सरस एवं गेय हैं। सूरदास के 'विनय तथा भक्ति', 'बालगोपाल' 'गोचारण' एवं 'भ्रमरगीत' के प्रसिद्ध पदों को संकलित किया गया है, जिसमें भगवत् विषयक रति, वात्सल्य एवं गोपियों के वचन में विदग्धता और वक्रता भरी है। तुलसीदास की अक्षय कीर्ति का आधार 'रामचरितमानस' महाकाव्य से उद्धृत धनुष भंग दोहा—चौपाई में निबद्ध है तथा 'वन पथ पर' शीर्षक 'कवितावाली' से संकलित की गई है, जिसमें वन के मार्ग में जाते हुए राम—लखन और सीता के सौंदर्य एवं मर्यादा का चित्रण ब्रजभाषा में किया गया है। 'रामचरितमानस' का 'धनुष भंग' प्रसंग अत्यंत मार्मिक है, जिसमें तत्सम शब्दों की बहुलता है। कृष्णभक्त कवियों में रसखान विशिष्ट स्थान रखते हैं। इनका 'सवैया' और 'कवित्त' छंद अत्यन्त सरस, मधुर एवं गेय है, जिसमें श्रीकृष्ण की भक्ति एवं बाललीला का वर्णन ब्रजभाषा में किया गया है। इस पाठ्यपुस्तक में रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि बिहारीलाल के दोहे संकलित हैं, जिसमें वाग्वैदग्ध्य वाक्—चातुर्य एवं आलंकारिक भाषा का प्रयोग किया गया है। भक्ति एवं नीति के दोहों में राधा वंदना के साथ—साथ श्रृंगारिक दोहे, नीति के दृष्टान्तों द्वारा द्वैव—शासन की पीड़ा ब्रजभाषा में कही गई है।

आधुनिककाल से नौ कवि चुने गए हैं— मैथिलीशरण गुप्त, सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा, रामनरेश त्रिपाठी, माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्रा कुमारी चौहान, श्यामनारायण पांडेय, केदारनाथ सिंह और अशोक

बाजपेयी, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की कविता 'भारत माता का मंदिर यह' में प्रतीक द्वारा भारत माता का चित्रण किया गया है। इसके बाद सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा की दो–दो कविताएँ इस पुस्तक में शामिल की गई हैं, जो अपनी शैली एवं शिल्प में तो सरल और सहज हैं इनकी अभिव्यंजना भी सहज एवं संप्रेषणीय है। रामनरेश त्रिपाठी की कविता 'स्वदेश प्रेम' राष्ट्र के प्रति आत्मोत्सर्ग का भाव पैदा करती है, जिसकी भाषा शैली सरल, स्वाभाविक और प्रवाहपूर्ण है। तदुपरांत माखनलाल चतुर्वेदी की पुस्तक 'युगचरण' और 'हिमकिरीटिनी' से एक–एक कविता इस पाठ्यपुस्तक में संकलित है। 'पुष्प की अभिलाषा' कविता स्वतंत्रता के लिए त्याग और समर्पण की भावना से ओतप्रोत है, जिसकी ओजपूर्ण भाषा शैली पाठकों को रोमांचित करने वाली है और 'जवानी' कविता भारतीय नवयुवकों में स्वदेशानुराग एवं आत्म बलिदान की भावना पैदा करती है। सुभद्रा कुमारी चौहान और श्यामनारायण पांडेय इतिहास प्रसिद्ध अंग्रेजों एवं मुगलों से लोहा लेने वाले रानी लक्ष्मीबाई और महाराणा प्रताप से संबंधित कविता 'झाँसी की रानी की समाधि पर' एवं 'हल्दी घाटी' संकलित है, जिसमें ओजपूर्ण भाषा शैली में वीररस का परिपाक हुआ है। इस पुस्तक में समकालीन कवियों में केदारनाथ सिंह की एक तथा अशोक बाजपेयी की दो कविता संकलित हैं। केदारनाथ सिंह 'नदी' कविता में प्रतीक के माध्यम से संस्कृति समन्वित भारतीय जीवन धारा की अविछिन्नता पर बल दिया। शैली तथा भाषिक संरचना की दृष्टि से कविता का व्यापक प्रभाव पाठकों को आवेष्टित कर लेता है। अंत में अशोक बाजपेयी की कविता 'युवा जंगल' और 'भाषा एक मात्र अनंत है' को संकलित किया गया है, जिसमें अति साधारण अनुभव के सूत्र को पकड़कर असाधारण कल्पना एवं अनुभव के क्षितिज तक पहुँचने का अनूठा प्रयास है। बाजपेयी अपने अनुभवों की ताजगी और सूक्ष्म शब्द–विन्यास से पाठकों का ध्यान आकृष्ट करते हैं।

पाठ्यपुस्तक में गद्य खंड से सम्बन्धित पाठ्य के साथ वस्तु में गद्य साहित्य के उद्भव और विकास तथा निबंध का चरमोत्कर्ष शुक्ल एवं शुक्लोत्तर युग, सात लेखकों की रचनाओं को संकलित किया गया है, जिसमें डॉ. राजेंद्र प्रसाद के भाषण का अंश 'भारतीय संस्कृति' नाम से संकलित है। इस पाठ में भाषा, संस्कृति, धर्म, जाति आदि में विविधता होते हुए भी एकता के दर्शन होते हैं।

पाठ्यपुस्तक में आचार्य रामचंद्र शुक्ल के 'मित्रता' निबंध को संकलित किया गया है, जिसमें युवाओं को मित्र बनाने से पहले मित्रों के आचरण और प्रकृति को ध्यान में रखने की नसीहत दी गई है। निबंध की भाषा शैली सरल एवं व्यवहारिक होने के साथ साथ सूक्तिपरक और तत्सम प्रधान है। सभी भाषा के प्रयोग द्वारा सूक्तिपरक वाक्यों का प्रयोग किया गया है।

पाठ्य पुस्तक में कहानी संकलित करने का उद्देश्य विद्यार्थियों में कथा साहित्य के प्रति रूचि उत्पन्न करने के साथ–साथ मानवीय संवेदनाओं की समझ विकसित करना है। इस दृष्टि से जयशंकर प्रसाद की 'ममता' कहानी में रोहतास दुर्ग के प्रकोष्ठ में बैठी ममता की कथा का मार्मिक, भावात्मक और कलात्मक वर्णन किया गया है। इसकी भाषा शैली काव्यात्मक गुणों से संपन्न है।

पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी का 'क्या लिखूँ' ललित निबंध है, जिसका विषय प्रतिपादन, प्रस्तुतीकरण एवं भाषा शैली अद्वितीय है। रामधारी सिंह 'दिनकर' का मनोवैज्ञानिक निबंध 'ईर्ष्या तू न गयी मेरे मन से' को इस पाठ्य पुस्तक में संकलित किया गया है, जिसमें ईर्ष्या जैसे मनोविकार का सुंदर एवं यथार्थ वर्णन किया गया है। इसमें शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली का प्रयोग किया गया है, जिसमें चित्रात्मकता, ध्वन्यात्मकता तथा मनोहारिता है। डॉ. भगवत शरण उपाध्याय का लेख 'अजंता' पुरातत्व से संबंधित है जिसमें खुले विचार, भाषा शैली के चुनाव के साथ भित्ति–चित्त के सौंदर्य का सजीव चित्रण मिलता है। गद्य खंड का अंतिम पाठ 'पानी में चंदा और चाँद पर आदमी' जयप्रकाश भारती का वैज्ञानिक लेख है, जिसमें चाँद पर आदमी के पदार्पण का विवरण और इतिहास की रोमांचकारी एवं वैज्ञानिक कथा कही गयी है।

पाठ्यपुस्तक के तृतीय खंड का उद्देश्य विद्यार्थी को संस्कृत साहित्य का बोध कराना है, क्योंकि हिंदी की जननी संस्कृत है। संस्कृत वाङ्मय में हमारी प्राचीन विभूतियों का विशाल संग्रह सुरक्षित है। भारतीय संस्कृति, पौराणिक, ऐतिहासिक विभूति एवं नीतिपरक उद्देश्यों एवं क्रमबद्धता को देखते हुए नौ पाठों को संकलित किया गया है। 'भारतीय संस्कृति' पाठ भारतीय संस्कृति चेतना के प्रतीक है। जिसमें 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' का संदेश दिया गया है। 'आरुणिश्वेतकेतोः संवादः' पाठ में अहंकार को त्याज्य बताया गया है और 'वाराणसी' के महात्म्य का सुन्दर वर्णन किया गया है। 'वीरः वीरेण पूज्यते' में पुरुराज की वीरता का वर्णन किया गया है जो 'देशभक्ति की भावना जाग्रत करता है। 'जीवन–सूत्राणि' पाठ में विद्यार्थियों के लिए जीवनोपयोगी सूत्र को संकलित किया गया है और 'केन किं वर्धते ?' पाठ सूत्र शैली में लिखा गया है, जिसमें विद्यार्थियों को जीवनोपयोगी सामग्री प्राप्त हो सकेगी। 'प्रबद्धो ग्रामीणः' पाठ मनोरंजक कहानी है जो हास्य शैली में लिखी गयी है एवं अन्योक्तिविलासः' पाठ विद्यार्थियों को व्यवहारिक ज्ञान प्रदान करने के लिए संकलित की गयी है।

विद्यार्थियों के अनुभूति एवं अभिव्यक्ति पक्ष को मजबूत करने के उद्देश्य से साहित्यिक पाठ्यवस्तुओं के साथ–साथ भाषा एवं कला पक्ष को भी विकसित करने के लिए इससे संबंधित पाठ्यवस्तु को पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। जिसके अन्तर्गत काव्य–सौंदर्य के तत्व–रस, छंद, अलंकार, संस्कृत एवं हिंदी व्याकरण को भी यथोचित स्थान दिया गया है। 'काव्य सौंदर्य के तत्त्व' का उद्देश्य है कि काव्य लालित्य के प्रमुख तत्त्व रस, अलंकार एवं छंद की समझ विद्यार्थियों में विकसित हो सके। 'व्याकरण एवं शब्द रचना' को पाठ्यपुस्तक में संकलित किया गया है, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों के भाषायी ज्ञान को परिष्कृत करना है। भाव एवं विचार को हृदयंगम एवं अभिव्यक्त करने के लिए व्याकरण एवं शब्द ज्ञान अत्यंत आवश्यक है। इन बातों को दृष्टिगत रखते हुए समास, लोकोक्तियाँ एवं मुहावरे, पर्यायवाची, विलोम, तत्सम, तद्भव, वाक्यांशों के लिए एक शब्द, पद रचना परिचय, वाक्य रचना एवं वाच्य रचना को भी पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है, जिससे विद्यार्थियों में भाषा की समझ बढ़ेगी।

पाठ्यपुस्तक में पाठों के अतिरिक्त पाठ्यान्तर में कवि/लेखक परिचय, प्रश्न अभ्यास, भाषा के रंग, अनुभूति और अभिव्यक्ति के प्रश्नों को संकलित किया गया है, जिसका उद्देश्य क्रमशः पाठों को विश्लेषित करके विद्यार्थियों के ज्ञान को स्थायित्व प्रदान करना, व्याकरणिक समझ एवं पाठ्य बोध एवं अभिव्यक्ति के लिए विद्यार्थियों को तैयार करना है। पाठ्यपुस्तक में काठिन्य निवारण के लिए 'शब्दार्थ' दिया गया है, जिससे विद्यार्थियों की बोधगम्यता को सरल किया जा सके। इन सबका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में साहित्यिक रुचि के साथ–साथ भाषायी ज्ञान में वृद्धि करना है। आशा है कि पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों के भाषायी कौशल एवं साहित्यिक अभिरूचि के विकास की दृष्टि से उपयोगी सिद्ध होगी। पुस्तक का पाठ्य संकलन और लेखन कार्य विद्वानों द्वारा संपन्न हुआ है फिर भी यदि त्रुटि शेष रह गयी हो तो संशोधन एवं परिष्करण प्रक्रिया में आपके सुझाव का हम स्वागत करेंगे।

■

अनुक्रमणिका

प्राक्कथन iii

भूमिका v

भाग – I

पद्य खंड

कवि/लेखक	पाठ का नाम	
I. हिंदी पद्य साहित्य का इतिहास*		3-15
(1) सूरदास	– पद*	16-23
(2) तुलसीदास	– धनुष भंग, वन पथ पर*	24-33
(3) रसखान	– सवैये, कवित्त	34-40
(4) बिहारीलाल	– भक्ति, नीति	41-47
(5) मैथिलीशरण गुप्त	– भारतमाता का मंदिर यह	48-54
(6) माखन लाल चतुर्वेदी	– पुष्प की अभिलाषा, जवानी	55-65
(7) सुमित्रानदंन पंत	– चींटी, चन्द्रलोक में प्रथम बार*	66-73
(8) सुभद्रा कुमारी चौहान	– झाँसी की रानी की समाधि पर*	74-81
(9) महादेवी वर्मा	– हिमालय से, वर्षा सुंदरी के प्रति	82-88
(10) श्याम नारायण पाण्डेय	– हल्दी घाटी	89-95
(11) राम नरेश त्रिपाठी	– स्वदेश प्रेम*	96-103
(12) केदारनाथ सिंह	– नदी	104-108
(13) अशोक वाजपेयी	– युवा जंगल, भाषा एकमात्र अनन्त है	109-114

गद्य खंड

2. हिन्दी गद्य साहित्य का विकास*		115-133
(1) डॉ0 राजेंद्र प्रसाद	– भारतीय संस्कृति*	134-145
(2) आचार्य रामचंद्र शुक्ल	– मित्रता*	146-154
(3) जयशंकर प्रसाद	– ममता*	155-163
(4) पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी	– क्या लिखूँ	164-173
(5) रामधारी सिंह 'दिनकर'	– ईर्ष्या तू न गयी मेरे मन से	174-183
(6) डॉ0 भगवतशरण उपाध्याय	– अजन्ता*	184-192
(7) जयप्रकाश भारती	– पानी में चंदा और चाँद पर आदमी	193-202

भाग – II

संस्कृत खंड

3. संस्कृत खंड

(1)	भारतीयाः संस्कृतिः*	205-207
(2)	आरुणिश्वेतकेतुः संवादः	208-209
(3)	वाराणसी*	210-212
(4)	वीरः वीरेण पूज्यते	213-216
(5)	देशभक्तः चन्द्रशेखरः	217-219
(6)	जीवन सूत्राणि*	220-222
(7)	केन किं वर्धते	223-224
(8)	प्रबुद्धोग्रामीणः*	225-227
(9)	अन्योक्तिविलासः*	228-230

4. संस्कृत एवं हिंदी व्याकरण खंड

(1)	सर्वनाम*	231-232
(2)	काव्य सौंदर्य के तत्त्व*– रस, छंद, अलंकार	233-243
(3)	समास*	244-250
(4)	पर्यायवाची*	251-253
(5)	विलोम शब्द*	254-254
(6)	वाक्यांश के लिए एक शब्द*	255-256
(7)	तत्सम्*, तद्भव*, उपसर्ग	257-259
(8)	पद परिचय*	260-265
(9)	वाक्य का स्वरूप*	266-268
(10)	वाच्य एवं वाच्य परिवर्तन*	269-273
(11)	लोकोक्ति एवं मुहावरा*	274-280
(12)	पत्र–लेखन	281-294

•

नोट : * प्रारंभिक हिंदी हेतु निर्धारित पाठ्यवस्तु।

खंड–I

पद्य–खंड

हिंदी पद्य साहित्य का विकास

हिंदी पद्य का प्रारंभ आदिकाल से होता है, परंतु यहाँ हम रीतिकाल से पद्य के विकास का अध्ययन करेंगे क्योंकि पूर्व की कक्षा में हम रीतिकाल से पहले के पद्य के विकास की यात्रा से परिचित हो चुके हैं।

रीतिकाल

रीतिकाल—हिंदी साहित्य में रीतिकाल का समय सन् 1643 से 1843 ई. (सं0 1700-1900 वि0) तक माना गया है। इस काल को रामचंद्र शुक्ल ने **उत्तरमध्य काल** भी कहा है। 'रीति' का अर्थ 'पद्धति', 'प्रणाली' या 'मार्ग' होता है। इस काल में काव्यगत अलंकारिकता तथा रसबोध का ध्यान रखते हुए एक विशेष 'पद्धति' या 'प्रणाली' से रीतिबद्ध काव्य की रचना की गई। रस, छंद, अलंकार, गुण, ध्वनि और नायिका भेद आदि काव्यांगों का विवेचन करते हुए तथा इनके लक्षण बताते हुए रीतिबद्ध काव्यों की रचना की गई है। चूँकि इस काल में श्रृंगारिक ग्रंथों की रचना भी प्रचुर मात्रा में की गई अतः इस काल को 'श्रृंगार काल' भी कहा जाता है।

सत्रहवीं शताब्दी के मध्य से लेकर 19वीं शताब्दी के मध्य तक का काल हिंदी साहित्य में रीतिकाल के नाम से जाना जाता है। यहाँ रीति शब्द का अभिप्राय काव्यरचना—पद्धति और उसके पर्याय मार्ग से है। रीतिकाल में संस्कृत के काव्यशास्त्रीय ग्रंथों के आधार पर काव्यांगों को लेकर लक्षण ग्रंथों की रचना की गई। यह समय भारतीय इतिहास में सुख एवं वैभव का काल था। राजदरबारों में भी कवियों का सम्मान था, जिसके कारण कविता पर दरबारी संस्कृति का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। साथ ही कुछ कवि ऐसे भी थे जो स्वच्छंद होकर रचना कर रहे थे। उनके काव्य में न तो लक्षणग्रंथों की बाध्यता दिखाई देती है न दरबारी संस्कृति का प्रभाव। इन्हीं विशेषताओं के कारण रीतिकाल को मिश्र बंधुओं ने 'अलंकारकाल' विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने 'श्रृंगारकाल' रमाशंकर शुक्ल रसाल ने 'कला काल' आदि नामों से अभिहित किया है। काव्य की प्रवृत्ति एवं रचना शैली के आधार पर रीतिकाल की तीन धाराएँ स्वीकार की गयी है—

रीतिकाल

- रीतिबद्ध काव्य धारा
- रीतिसिद्ध काव्य धारा
- रीतिमुक्त काव्य धारा

1. रीतिबद्ध काव्यधारा– इस धारा के कवियों ने काव्यशास्त्र की शिक्षा देने के लिए रीतिग्रंथो या काव्यशास्त्रीय ग्रंथो का प्रणयन किया वे। इन कवियों का मुख्य उद्देश्य काव्य शास्त्र के नियमों के लक्षण एवं उदाहरण प्रस्तुत करना था। इनमें रस, अलंकार, छंद आदि के विवेचन से जुडे ग्रंथों की रचना हुई है। रीतिबद्धकाव्य धारा के प्रमुख कवियों में केशवदास, चिंतामणि, मतिराम, देव, भिखारीदास, ग्वाल आदि हैं। इसमें केशवदास की 'कविप्रिया', 'रामचंद्रिका', 'विज्ञानगीता', मतिराम का 'रसराज', 'ललित–ललाम' 'मतिराम–सतसई' देव का 'भाव विलास', 'भवानी विलास', 'अष्टयाम' भिखारीदास का 'काव्य निर्णय', 'रस सारांश' आदि प्रमुख हैं।

2. रीतिमुक्त काव्यधारा– इस धारा के कवियों ने काव्यशास्त्रीय परंपरा में बँधकर रचना न करके स्वच्छंद होकर काव्य सृजन किया। इनकी रचनाओं में प्रेम का विषय सांसारिक जीव (प्राणी) और ईष्वर दोनों रहे हैं इस धारा के प्रमुख कवियों ने घनानंद, आलम, बोधा, ठाकुर का नाम उल्लेखनीय है। घनानंद की रचनाओं में मार्मिकता, भावात्मकता एवं स्वच्छंदता आदि के गुण विद्यमान हैं; 'सुजान सागर', 'बिरहलीला', 'कोकसार', 'रसकेलिवल्ली' आदि; बोधा की 'विरहवारीश', 'इष्कनामा', ठाकुर की 'ठाकुर–ठसक' इस धारा की प्रमुख रचनाएँ हैं।

3. रीतिसिद्ध काव्यधारा– इस काव्यधारा के कवियों ने काव्यशास्त्र के नियमों के आधार पर काव्य का सृजन किया किंतु रीतिग्रंथों की रचना नहीं की। उनके ग्रंथ में अलंकार, रस आदि प्रत्यक्षतः निरूपित नहीं हुए हैं, किंतु इनके काव्य में सभी काव्य लक्षणों के सटीक उदाहरण मिलते हैं। इस काव्यधारा के सर्वाधिक प्रसिद्ध कवि बिहारीलाल हैं। इनकी लोकप्रिय रचना 'बिहारी–सतसई' है।

रीतिकाल में भक्ति, नीति और वीरता से संबंधित भी कुछ काव्य रचा गया। 'वृंद', गिरिधर, दीनदयाल गिरि आदि ने इस काल में नीतिपरक तथा भक्तिपरक रचनाओं का सृजन किया। 'भूषण', 'लालकवि' और 'सूदन' ने 'वीर रस' एवं 'सेनापति' ने प्रकृति–चित्रण पर आधारित काव्य की रचना की।

रीतिकाल के प्रमुख कवि तथा रचनाएँ

कवि		रचनाएँ
केशव	:	रामचंद्रिका, कविप्रिया
देव	:	भावविलास, भवानीविलास, कुशलविलास, रसविलास
भूषण	:	शिवराज भूषण, शिवा बावनी, छत्रसाल दशक
मतिराम	:	रसराज, ललित-ललाम, मतिराम सतसई
बिहारी	:	बिहारी सतसई
पद्माकर	:	पद्माभरण, जगद्विनोद, गंगालहरी

रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ– रीतिकालीन काव्य तत्कालीन समय की सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों की देन हैं। इस प्रकार रीतिकालीन काव्य की प्रवृत्तियाँ निम्नलिखित हैं–

1. काव्यांगविवेचन– रीतिकाल की अधिकांश रचनाओं में काव्यांगों का विवेचन हुआ हैं। काव्य के ये विशिष्ट अंग हैं– रस, अलंकार, छंद, गुण, नायिकाभेद एवं शब्दशक्ति इत्यादि।

2. अलंकार पर आधारित ग्रंथ–इस प्रकार के ग्रंथों में अलंकारिकता की प्रमुखता है। आलंकारिक ग्रंथों की रचना करने वाले कवियों में **आचार्य केशवदास, भूषण** तथा **राजा जसवंत सिंह** प्रमुख हैं।

जदपि सुजात सुलच्छिनी,
सुबरन सरस सुवृत्त।
भूषण बिनु न विराजइ,
कविता बनिता मित्त।।

3. रस पर आधारित ग्रंथ–रस पर आधारित ग्रंथों में श्रृंगार वर्णनों की प्रधानता है। रसवादी कवियों ने नायक-नायिकाओं की विभिन्न मनोदशाओं पर आधारित रचनाओं के द्वारा श्रृंगार का विशद वर्णन प्रस्तुत किया है। **मतिराम, देव** और **पद्माकर** प्रमुख रसवादी कवि हैं।

4. श्रृंगार रस की प्रधानता– रीतिकालीन कवियों ने अपने काव्य में श्रृंगार रस को प्रमुखता से स्थान दिया तथा श्रृंगार के संयोग एवं वियोग दोनों पक्षों पर लिखा।

5. ब्रजभाषा की प्रधानता– भक्तिकाल में जहाँ पर अवधी और ब्रज दोनों भाषाओं में प्रचुर मात्रा में कवियों ने लिखा, वहीं रीतिकाल में ब्रजभाषा ने साहित्यिक क्षेत्र में बहुत उन्नति प्राप्त की। प्रायः सभी कवियों की रचनाओं में ब्रज भाषा का सौंदर्य विद्यमान है।

6. प्रकृति चित्रण का अभाव– रीतिकाल में प्रायः प्रकृति का स्वतन्त्र रूप में चित्रण नहीं मिलता है। अधिकांशतः प्रकृति–चित्रण उद्दीपक के रूप में किया गया है। प्रकृति चित्रण की दृष्टि से इस काल के प्रमुख कवि सेनापति हैं।

रीतिकाल का पद्य साहित्य के विकास में योगदान : रीतिकालीन कवियों ने ब्रजभाषा को काव्यभाषा के रूप में प्रतिष्ठित कर साहित्य के विकास में एक बड़ा योगदान दिया। इसका व्यापक परिणाम यह हुआ कि ब्रजभाषा अर्थगौरव, चमत्कारिकता, लाक्षणिकता तथा सूक्ष्म-भावाभिव्यंजना की दृष्टि से एक समर्थ भाषा बन गई तथा 'दोहा', 'सवैया' और 'कवित्त' मुक्तक काव्य रचना के लिए सिद्ध छंद बन गए।

आधुनिक काल

विद्वानों ने हिंदी साहित्य का आधुनिक काल सन् 1843 ई. (सं0 1900 वि0) से माना है। इस काल को **पुनर्जागरण काल, गद्य काल** आदि नामों से भी जाना जाता है।

आधुनिक काल को कालक्रम एवं काव्य प्रवृत्तियों के आधार पर प्रमुख रूप से भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद तथा नयी कविता आदि युगों में बाँटा गया है।

भारतेंदु युग (नवजागरण काल) : हिंदी साहित्य में भारतेंदु युग सन् 1868 से 1900 ई. तक माना जाता है। भारतेंदु युग का नामकरण हिंदी नवजागरण के अग्रदूत भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाम पर किया गया है। भारतेंदु हरिश्चंद्र को 'आधुनिक हिंदी का जन्मदाता' माना गया है। बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', प्रतापनारायण मिश्र, राधाकृष्ण दास, अंबिकादत्त व्यास और ठाकुर जगन्मोहन सिंह इस युग के प्रमुख कवि हैं।

भारतेंदु युग के कवियों ने देश–प्रेम पर आधारित रचनाओं के माध्यम से जनमानस में राष्ट्रीय–भावना का विकास किया। यह युग सामाजिक चेतना का युग था। इस युग के कवियों ने समाज में व्याप्त अंधविश्वासों एवं सामाजिक रूढ़ियों को समाप्त करने के उद्देश्य से काव्य का सृजन किया।

भाषा के रूप में इस युग में **'ब्रजभाषा'** की प्रधानता रही किंतु धीरे–धीरे काव्य भाषा खड़ी बोली की ओर उन्मुख होने लगी।

भारतेंदु युग की विशेषताएँ :

1. राष्ट्रीयता की भावना का विकास
2. सामाजिक चेतना का विकास
3. हास्य व्यंग्यात्मक शैली में रूढ़ियों एवं अंधविश्वासों पर प्रहार
4. अंग्रेजी शिक्षा का विरोध
5. भारतीय संस्कृति का गौरव-गान
6. छंद विधान की नवीनता – **दोहा, सवैया, कवित्त** जैसे परंपरागत छंदों के साथ उन्होंने अन्य लोकप्रिय छंदों-**कजरी, ठुमरी, लावनीं, चैती, कहरवा** आदि को भी रचनाओं का माध्यम बनाया।
7. गद्य एवं उनकी विधाओं का विकास
8. प्राकृतिक वर्णन

द्विवेदी–युग (जागरण सुधार काल) : द्विवेदी युग का समय सन् 1900 से 1918 ई. तक माना जाता है। प्रसिद्ध विचारक, पथ-प्रदर्शक और साहित्यकार आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के नाम पर इस काल का नाम **द्विवेदी–युग** पड़ा। इसे **जागरण सुधार काल** भी कहा जाता है। खड़ी बोली को समृद्ध एवं गतिशील बनाने में द्विवेदी युग का प्रमुख योगदान है।

द्विवेदी-युग के कवियों में **मैथिलीशरण गुप्त, अयोध्यासिंह उपाध्याय' 'हरिऔध', गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही', लोचन प्रसाद पांडेय, रामनरेश त्रिपाठी, रामचरित उपाध्याय** आदि प्रमुख हैं। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त रचित 'साकेत' तथा अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' रचित 'प्रियप्रवास' साहित्य में इस युग की अनुपम देन हैं।

द्विवेदी युग की प्रमुख विशेषताएँ :

1. राष्ट्रीयता की भावना का विकास
2. मानवतावादी दृष्टिकोण का विकास
3. खड़ी बोली की प्रतिष्ठा
4. श्रृंगार के विकृत रूप का बहिष्कार
5. प्रकृति चित्रण

छायावाद : द्विवेदी युग के बाद की कविता छायावाद के नाम से जानी जाती है। छायावाद का समय सन् 1918 से सन् 1936 ई. तक माना गया है।

इस युग के प्रमुख कवियों में **जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'** और **सुमित्रानंदन पंत** प्रमुख हैं। जयशंकर प्रसाद रचित विश्व प्रसिद्ध महाकाव्य 'कामायनी' और सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' रचित 'राम की शक्तिपूजा' इस युग की अनुपम देन है।

सुमित्रानंदन पंत और सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की कुछ कविताओं में प्रगतिशीलता के स्वर भी हैं जो कि आगे की कविता यानी प्रगतिवादी कविता के लिए प्रेरणास्रोत की तरह हैं।

छायावाद की प्रमुख प्रवृत्तियाँ :

1. आत्मपरक रचनाएँ (वैयक्तिक अनुभूति की प्रबलता)
2. प्रकृति का मानवीकरण
3. रहस्यवाद की भावना
4. नारी सौंदर्य एवं प्रेम के अनूठे चित्रण
5. राष्ट्रीय व सांस्कृतिक जागरण

6. स्वच्छंदतावाद की प्रधानता
7. चित्रमयी कल्पना की प्रधानता
8. दार्शनिक तत्त्वों का निरूपण

प्रगतिवाद : हिंदी साहित्य में प्रगतिवाद का समय सन् 1936 से 1943 ई. तक माना जाता है। द्विवेदी युग की इतिवृत्तात्मकता (वस्तु वर्णन या आख्यान की प्रधानता), आदर्श और नैतिकता का छायावादी काव्य में विरोध हुआ था किंतु छायावादी काव्य में सूक्ष्म और वायवीय कल्पनाओं का इतना अतिरेक हुआ कि जीवन की कठोर वास्तविकताओं से उसका कोई संबंध न रहा। परिणामस्वरूप प्रगतिवादी काव्य ने छायावादी काव्य की सूक्ष्मता और अतिकाल्पनिकता का विरोध कर स्थूल जगत की वास्तविकता को प्रमुखता दी। प्रगतिवादी कवियों ने दैनिक जन–जीवन की समस्याओं रोटी, कपड़ा और मकान तथा मजदूर-किसानों की दयनीय दशा को कविता का प्रमुख विषय बनाया। इन कवियों ने सीधी-सादी भाषा में पूँजीवाद के विरुद्ध आवाज उठाई।

प्रगतिवादी कवियों में **नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, त्रिलोचन, शिवमंगल सिंह 'सुमन' और रामधारीसिंह 'दिनकर'** आदि प्रमुख हैं।

प्रगतिवादी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ :

1. प्रगतिवादी कवियों ने कविता में छंद के बंधन को अनिवार्य नहीं माना
2. शोषक वर्ग के प्रति उपेक्षा एवं शोषितों के प्रति सहानुभूति
3. विद्रोह एवं क्रांति की भावना
4. समाज के यथार्थवादी रूप का चित्रण
5. नारी शोषण के विरुद्ध मुक्ति का स्वर
6. भाग्यवाद के स्थान पर कर्मवाद की श्रेष्ठता पर बल
7. समाज में परंपरागत रूप से चली आ रही रूढ़ियों व अतार्किक मान्यताओं का विरोध।

प्रयोगवाद (नई कविता का युग) : प्रयोगवादी काव्यधारा का आरंभ सन् 1943 ई. से माना गया है। सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' द्वारा संपादित तथा सन् 1943 ई. में प्रकाशित 'तारसप्तक' नामक संकलन को प्रयोगवाद के आरंभ का श्रेय दिया जाता है। प्रयोगवाद हिंदी साहित्य की आधुनिकतम विचारधारा है। प्रयोगवादी कवियों ने काव्य के भावपक्ष एवं कलापक्ष को महत्त्व देते हुए नए प्रतीकों, बिंबों व उपमानों का प्रयोग कर काव्य को नई दिशा प्रदान की। **तारसप्तक** में सात कवियों की रचनाएँ संकलित हैं। इन कवियों को 'अज्ञेय' ने **राहों के अन्वेषी** कहा है। ये सात कवि हैं–**अज्ञेय, गजानन माधव मुक्तिबोध, नेमिचंद्र जैन, भारतभूषण अग्रवाल, प्रभाकर माचवे, गिरिजा**

कुमार माथुर एवं **रामविलास शर्मा।** इस क्रम को आगे बढ़ाते हुए सन् 1951 ई. में 'दूसरा सप्तक', सन् 1959 ई. में 'तीसरा सप्तक' तथा सन् 1979 में चौथा सप्तक भी प्रकाशित हुआ। प्रयोगवाद की प्रमुख रचनाएँ–'हरी घास पर क्षण भर', 'सुनहरे शैवाल', 'इंद्रधनुष रौंदे हुए ये', 'आँगन के पार द्वार' (अज्ञेय), 'गीत फरोश', 'खुशबू के शिलालेख' (भवानी प्रसाद मिश्र), 'धूप के धान', 'शिलापंख चमकीले' (गिरिजा कुमार माथुर), 'ठंडा लोहा', 'कनुप्रिया' (धर्मवीर भारती) मुख्य हैं।

प्रयोगवादी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ :

1. अति यथार्थवादी दृष्टिकोण
2. गहन बौद्धिकता (बुद्धिवाद की प्रधानता)
3. नवीन उपमानों का प्रयोग
4. रूढ़ियों के प्रति विद्रोह
5. मुक्त छंदों का प्रयोग
6. प्रेम भावनाओं का खुला चित्रण
7. व्यंग्य तथा कटूक्तियों का प्रयोग
8. घोर वैयक्तिकता

नई कविता का युग : हिंदी साहित्य में सन् 1951 ई. के बाद को नई कविता का युग कहा गया है। नई कविता में काव्य के परंपरागत स्वरूप से आगे बढ़कर नए भावबोधों की अभिव्यक्ति के साथ ही नए मूल्यों और शिल्प.विधान का अन्वेषण किया गया। प्रयोगवादी काव्यधारा के बाद आई नई कविता एक तरह से प्रयोगवादी कविता का ही विकसित रूप है। प्रयोगवाद को नयी कविता की संज्ञा सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' ने प्रदान की। नई कविता के **प्रमुख कवि सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय', धर्मवीर भारती, गजानन माधव 'मुक्तिबोध', भवानीप्रसाद मिश्र, नरेश मेहता, कुँवर नारायण, जगदीश गुप्त** तथा **शमशेर बहादुर सिंह** हैं।

नई कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ :

1. प्रतीकों का अत्यंत सांकेतिक वर्णन
2. लघु मानववाद की प्रतिष्ठा
3. प्रयोगों में नवीनता (नए–नए भावों को नए-नए शिल्प विधानों में प्रस्तुत किया गया है।)
4. मानवीय अनुभूतियों का वास्तविक चित्रण
5. मानव मन में व्याप्त कुंठाओं, जीवन के संत्रास एवं मृत्युबोध का मनोवैज्ञानिक चित्रण

6. नूतन बिंबों की खोज
7. बौद्धिकता
8. अति यथार्थवाद

अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए–

1. रीतिकाल को अन्य किस नाम से जाना जाता है ?
   (क) उत्तर मध्यकाल (ख) पूर्व मध्यकाल (ग) मध्यकाल (घ) उत्तरपूर्व मध्यकाल
2. 'रीति' का अर्थ है –
   (क) विशेष (ख) गढ़ (ग) पद्धति (घ) प्रयास
3. 'छत्रसाल दशक' किसकी रचना है ?
   (क) पद्माकर (ख) बिहारी (ग) भूषण (घ) मतिराम
4. रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्ति है –
   (क) श्रृंगार प्रधान ग्रंथों का रचना (ख) आश्रयदाताओं की प्रशंसा
   (ग) ब्रजभाषा की व्यापक प्रतिष्ठा (ग) उपर्युक्त सभी
5. 'नवजागरण काल' कहा जाता है –
   (क) भारतेंदु युग को (ख) द्विवेदी युग को (ग) प्रगतिवाद को (घ) प्रयोगवाद को
6. रीतिकाल की समय–सीमा है –
   (क) सन् 1700–1850 ई. तक (ख) सन् 1643–1843 ई. तक
   (ग) सन् 1600–1800 ई. तक (घ) सन् 1700–1900 ई. तक
7. निम्नलिखित में कौन रीतिबद्ध कवि नहीं है ?
   (क) मतिराम (ख) पद्माकर (ग) बिहारी (घ) देव
8. 'घनानंद' किस धारा के कवि हैं ?
   (क) रीतिबद्ध (ख) रीतिमुक्त (ग) रीतिसिद्ध (घ) भक्तिधारा
9. रीतिकालीन रचना है–
   (क) सतसई (ख) रामचरितमानस (ग) कामायनी (ग) साकेत
10. 'रामचंद्रिका' के रचनाकार हैं –
    (क) सूरदास (ख) केशवदास (ग) कबीर (घ) तुलसीदास
11. रीतिकालीन कवि हैं –
    (क) बिहारी (ख) सूरदास (ग) चंदबरदाई (घ) महादेवी वर्मा

12. निम्न में भूषण की रचना है–
(क) शिवराज भूषण (ख) सतसई (ग) गंगालहरी (घ) कामायनी
13. 'मतिराम' किस युग के कवि हैं ?
(क) आदिकाल (ख) रीतिकाल (ग) भक्तिकाल (घ) आधुनिक काल
14. 'भूषण' किस रस के प्रमुख कवि माने जाते हैं ?
(क) श्रृंगार रस (ख) वीर रस (ग) हास्य रस (घ) करुण रस
15. 'शिवा बावनी' के रचनाकार हैं –
(क) देव (ख) भूषण (ग) बिहारी (घ) घनानंद
16. निम्न में 'मतिराम' की रचना है –
(क) कविप्रिया (ख) गंगालहरी (ग) रसराज (घ) रामचंद्रिका
17. निम्न में अलंकारवादी आचार्य कवि थे –
(क) केशवदास (ख) सूरदास (ग) निराला (घ) भारतेंदु हरिश्चंद्र
18. निम्न में रसवादी आचार्य है –
(क) मतिराम (ख) केशव (ग) राजा जसवंत सिंह (घ) भूषण
19. 'गंगालहरी' के रचनाकार हैं –
(क) मतिराम (ख) केशव (ग) पद्माकर (घ) भूषण
20. निम्न में नीतिपरक रचनाओं के लिए प्रसिद्ध कवि हैं –
(क) वृन्द (ख) मतिराम (ग) भूषण (घ) केशव
21. केशव को 'कठिन काव्य का प्रेत' किस आलोचक ने कहा ?
(क) रामचंद्र शुक्ल (ख) ग्रियर्सन (ग) हजारी प्रसाद द्विवेदी (घ) मिश्रबंधु
22. बिहारी के दोहों पर किसका प्रभाव है ?
(क) गाथा सप्तशती (ख) छत्रसाल दशक (ग) इश्कनामा (घ) अष्टयाम
23. निम्न में रीतिबद्ध कवि नहीं हैं –
(क) मतिराम (ख) बिहारी (ग) चिंतामणि (घ) देव
24. 'भाव-विलास' के रचनाकार हैं –
(क) देव (ख) बिहारी (ग) चिंतामणि (घ) मतिराम
25. 'आँसू' के रचनाकार हैं –
(क) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (ख) मैथिलीशरण गुप्त
(ग) महादेवी वर्मा (घ) जयशंकर प्रसाद
26. 'द्वापर' के रचयिता हैं –
(क) महादेवी वर्मा (ख) मैथिलीशरण गुप्त (ग) सुमित्रानंदन पंत (घ) अज्ञेय

27. भारतेंदु हरिश्चंद्र की रचना है –
(क) जानकी मंगल (ख) द्वंद्वगीत (ग) रस विलास (घ) प्रेम–सरोवर

28. 'तारसप्तक' के संपादक हैं –
(क) निराला (ख) महादेवी वर्मा (ग) अज्ञेय (घ) श्यामनारायण पांडेय

29. मैथिलीशरण गुप्त की रचना है –
(क) लोकायतन (ख) परिमल (ग) भारत–भारती (घ) परिवर्तन

30. छायावाद के कवि हैं–
(क) कुँवर नारायण (ख) जयशंकर प्रसाद (ग) अज्ञेय (घ) माखनलाल चतुर्वेदी

31. 'साकेत' के रचनाकार हैं –
(क) जयशंकर प्रसाद (ख) दिनकर (ग) मैथिलीशरण गुप्त (घ) भगवतीचरण वर्मा

32. 'दूसरा सप्तक' प्रकाशित हुआ –
(क) सन् 1943 ई. में (ख) सन् 1951 ई. में
(ग) सन् 1959 ई. में (घ) सन् 1979 ई. में

33. 'दीपशिखा' किसकी रचना है ?
(क) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (ख) महादेवी वर्मा
(ग) सुभद्राकुमारी चौहान (घ) मैथिलीशरण गुप्त

34. 'प्रियप्रवास' के रचनाकार हैं –
(क) मैथिलीशरण गुप्त (ख) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
(ग) भारतेंदु हरिश्चंद्र (घ) रामधारीसिंह 'दिनकर'

35. छायावाद की मुख्य विशेषता है –
(क) प्रकृति का मानवीकरण (ख) युद्धों का वर्णन
(ग) यथार्थ–चित्रण (घ) भक्ति की प्रधानता

36. सुमित्रानंदन पंत की रचना है –
(क) उर्वशी (ख) पल्लव (ग) परिमल (घ) कामायनी

37. 'तारसप्तक' का प्रकाशन वर्ष है –
(क) सन् 1953 ई. (ख) सन् 1943 ई. (ग) सन् 1936 ई. (घ) सन् 1919 ई.

38. छायावादी महाकाव्य है –
(क) प्रियप्रवास (ख) साकेत (ग) कामायनी (घ) पद्म ावत

39. महादेवी वर्मा की रचना है –
(क) गुंजन (ख) नीरजा (ग) गीतिका (घ) झरना

40. छायावाद युग के कवि हैं –
(क) नरेंद्र शर्मा (ख) भवानीप्रसाद मिश्र
(ग) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला (घ) गिरिजाकुमार माथुर

41. द्विवेदी–युग में लिखी गई रचना है –
(क) तारसप्तक (ख) कामायनी (ग) गीतिका (घ) प्रियप्रवास

42. 'कुरुक्षेत्र' के रचनाकार हैं –
(क) जयशंकर प्रसाद (ख) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
(ग) रामधारीसिंह 'दिनकर' (घ) शमशेर बहादुर सिंह

43. 'शोक-गीत' कहा जाता है –
(क) राम की शक्ति पूजा (ख) परिमल (ग) सरोज–स्मृति (घ) अंधेरे में

44. 'आधुनिक युग की मीरा' कही जाती हैं –
(क) महादेवी वर्मा (ख) सुभद्राकुमारी चौहान
(ग) सुमित्रा कुमारी सिंह (घ) इनमें से कोई नहीं

45. मैथिलीशरण गुप्त संबंधित हैं –
(क) द्विवेदी युग से (ख) शुक्ल युग से (ग) छायावाद युग से (घ) भारतेंदु युग से

46. 'नई कविता' का प्रवर्तक माना जाता है –
(क) सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' (ख) डा. रामस्वरूप चतुर्वेदी
(ग) रामधारी सिंह 'दिनकर' (घ) डा. धर्मवीर भारती

47. 'कला और बूढ़ा चाँद' के रचनाकार हैं –
(क) जयशंकर प्रसाद (ख) गिरिजाकुमार माथुर
(ग) सुभद्राकुमारी चौहान (घ) सुमित्रानंदन पंत

48. 'चुभते–चौपदे' के रचनाकार हैं–
(क) सुमित्रानंदन पंत (ख) भारतेंदु हरिश्चंद्र
(ग) मैथिलीशरण गुप्त (घ) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

49. 'झरना' काव्य–ग्रंथ के कवि हैं–
(क) जयशंकर प्रसाद (ख) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
(ग) महादेवी वर्मा (घ) सुमित्रानंदन पंत

50. 'इंद्रधनुष रौंदे हुए ये' के रचनाकार हैं–
(क) अज्ञेय (ख) पंत (ग) निराला (घ) धर्मवीर भारती

51. सुमित्रानंदन पंत की रचना नहीं है–
(क) परिमल (ख) रश्मिबंध (ग) पल्लव (घ) स्वर्णधूलि

52. कौन–सी रचना मैथिलीशरण गुप्त की नहीं है ?
(क) यशोधरा (ख) पंचवटी (ग) रसकलश (घ) भारत–भारती

53. 'अज्ञेय' की रचना है –
(क) हरी घास पर क्षण भर (ख) कुरुक्षेत्र (ग) हुंकार (घ) रश्मिरथी

54. जयशंकर प्रसाद की रचना है –
(क) रेणुका (ख) पारिजात (ग) लहर (घ) सामधेनी

55. सुमित्रानंदन पंत की रचना है –
(क) दोहावली (ख) झरना (ग) जूही की कली (घ) पल्लव

56. 'वैदेही वनवास' के रचयिता हैं –
(क) मैथिलीशरण गुप्त (ख) महादेवी वर्मा
(ग) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (घ) सियारामशरण गुप्त

57. 'प्रेम–तरंग' के रचनाकार हैं –
(क) नागार्जुन (ख) अज्ञेय (ग) घनानंद (घ) हरिश्चंद्र

58. तुलसीदास द्वारा लिखा गया महाकाव्य है –
(क) प्रेम-माधुरी (ख) गंगा लहरी (ग) रामचरितमानस (घ) विष्णु लहरी

59. 'पृथ्वीराज रासो' के रचनाकार हैं –
(क) जगनिक (ख) चंदबरदाई (ग) पद्‌माकर (घ) शिवमंगलसिंह 'सुमन'

60. 'अज्ञेय' की रचना है –
(क) कुरुक्षेत्र (ख) नीरजा (ग) धूप के धान (घ) पूर्वा

61. धर्मवीर भारती ने लिखा है –
(क) अणिमा (ख) अपरा (ग) अंधा युग (घ) अर्चना

62. 'परिमल' किसकी रचना है ?
(क) सुमित्रानंदन पंत (ख) गजानन माधव 'मुक्तिबोध'
(ग) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (घ) महादेवी वर्मा

63. 'नीरजा' के रचनाकार हैं –
(क) सुमित्रानंदन पंत (ख) जयशंकर प्रसाद (ग) महादेवी वर्मा (घ) वियोगी हरि

64. 'अनघ' के रचनाकार हैं –
(क) निराला (ख) जगन्नाथदास 'रत्नाकर'
(ग) सियारामशरण गुप्त (घ) मैथिलीशरण गुप्त

65. जयशंकर प्रसाद की रचना नहीं है –
(क) आँसू (ख) लहर (ग) झरना (घ) यामा

66. 'गुंजन' के रचनाकार हैं –
(क) अज्ञेय (ख) सुमित्रानंदन पंत
(ग) रामधारीसिंह दिनकर (घ) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

67. छायावाद की प्रमुख प्रवृत्ति है–
(क) वीरता और शृंगार का सम्मिश्रण (ख) वर्तमान राजनीति का वर्णन
(ग) स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह (घ) युद्ध का सजीव वर्णन

68. छायावाद युग की रचना है–
(क) प्रेम–माधुरी (ख) उद्धव शतक (ग) चित्राधार (घ) शारंगधर

69. प्रयोगवाद के कवि हैं–
(क) भूषण (ख) अज्ञेय (ग) सुमित्रानंदन पंत (घ) महादेवी वर्मा

70. महादेवी वर्मा का गीत संग्रह है –
(क) यामा (ख) सामधेनी (ग) राम की शक्ति पूजा (घ) पल्लव

71. 'सामधेनी' काव्य के रचयिता हैं–
(क) रामधारीसिंह 'दिनकर' (ख) जयशंकर प्रसाद (ग) नरेंद्र शर्मा (घ) भवानीप्रसाद मिश्र

72. छायावाद–युगीन रचना है –
(क) प्रियप्रवास (ख) कामायनी (ग) साकेत (घ) वैदेही वनवास

73. 'ब्रह्मराक्षस' के रचयिता हैं –
(क) रामनरेश त्रिपाठी (ख) अज्ञेय
(ग) धर्मवीर भारती (घ) गजानन माधव 'मुक्तिबोध'

74. 'हरी घास पर क्षण भर' के रचनाकार हैं –
(क) धर्मवीर भारती (ख) जयशंकर प्रसाद (ग) अज्ञेय (घ) इनमें से कोई नहीं

75. 'परशुराम की प्रतीक्षा' के लेखक हैं –
(क) अज्ञेय (ख) दिनकर (ग) नागेंद्र (घ) हजारीप्रसाद द्विवेदी

■

सूरदास

(सन् 1478-1583 ई.)

सगुणोपासक कृष्णभक्त कवि सूरदास का जन्म दिल्ली के निकट **सीही** नामक गाँव में सन् 1478 ई. (सं. 1535 वि.) में हुआ था। कुछ विद्वान् इनका जन्मस्थान **रुनकता क्षेत्र, आगरा** (उ0प्र0) को मानते हैं। ये मथुरा और वृंदावन के बीच 'गऊघाट' पर रहते थे। श्रीनाथ जी के मंदिर में भजन-कीर्तन करते थे। महाप्रभु वल्लभाचार्य के शिष्य सूरदास अष्टछाप के कवियों में सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं। सन् 1583 ई. (सं. 1640 वि.) में **पारसौली** में इनका निधन हुआ।

सूरदास के बारे में कहा जाता है कि ये जन्म से दृष्टिहीन थे। इन्होंने कृष्ण के जन्म से लेकर मथुरा जाने तक की कथा और उनकी विभिन्न बाल-लीलाओं से संबंधित अत्यंत मनोहर पदों की रचना की है। श्रीकृष्ण की बाल-लीलाओं का वर्णन अपनी सहजता, स्वाभाविकता और मनोवैज्ञानिकता के कारण अद्वितीय है। इनके काव्य में ब्रजभाषा का सजीव, भावानुकूल और स्वाभाविक प्रयोग है। इन्होंने अपने काव्य में उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक और अन्य अनेक अलंकारों का प्रभावी प्रयोग किया है। इनका अलंकार-विधान उत्कृष्ट है जिसमें शब्द–चित्र उपस्थित करने एवं प्रसंगों की वास्तविक अनुभूति कराने की पूर्ण क्षमता है।

सूरदास के सभी पद गेय हैं और वे किसी न किसी राग से संबंधित हैं। **सूरसागर, सूरसारावली** और **साहित्यलहरी** इनकी प्रमुख काव्य–कृतियाँ हैं।

संकलित ***पद*** *शीर्षक के प्रथम दो छंदों में अपने आराध्य श्रीकृष्ण के महात्म्य-वर्णन व वंदन के साथ ही सूरदास ने निर्गुण-भक्तिमार्ग की दुरूहता के कारण सगुण-भक्तिमार्ग पर बल दिया है। अन्य छंदों में श्रीकृष्ण के बाल–सौंदर्य, माँ यशोदा से हठ, अन्य बाल सुलभ चेष्टाओं सहित बाँसुरी के प्रति गोपियों के सौतन भाव का सुंदर वर्णन है। साथ ही कृष्ण के मथुरा गमन से व्याकुल गोपियों द्वारा तर्कपूर्वक उद्धव की बात का खंडन तथा माँ यशोदा की व्याकुलता एवं उनकी संवेदनशीलता का वर्णन है।*

पद

चरन-कमल बंदौं हरि राइ।
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै, अंधे को सब कछु दरसाइ।
बहिरौ सुनै, गूँग पुनि बोलै, रंक चलै सिर छत्र धराइ।
सूरदास स्वामी करुनामय, बार–बार बंदौं तिहिं पाइ।।1।।

अबिगत–गति कछु कहत न आवै।
ज्यौं गूँगे मीठे फल कौ रस, अंतरगत ही भावै।
परम स्वाद सबही सु निरंतर, अमित तोष उपजावै।
मन-बानी कौ अगम–अगोचर, सो जाने जो पावै।
रूप–रेख–गुन–जाति–जुगति–बिनु, निरालंब कित धावै।
सब विधि अगम विचारहिं तातै, सूर सगुन-पद गावै।।2।।

किलकत कान्ह घुटुरुवनि आवत।
मनिमय कनक नंद कै आँगन, बिंब पकरिबै धावत।
कबहुँ निरखि हरि आपु छाँह कौ, करि सौं पकरन चाहत।
किलकि हँसत राजत द्वै दतियाँ, पुनि-पुनि तिहिं अवगाहत।
कनक-भूमि पर कर-पग छाया, यह उपमा इक राजति।
करि-करि प्रतिपद प्रतिमनि बसुधा, कमल बैठकी साजति।
बाल-दसा-सुख निरखि जसोदा, पुनि-पुनि नंद बुलावति।
अँचरा तर लै ढाँकि, सूर के प्रभु कौं दूध पियावति।।3।।

मैं अपनी सब गाइ चरैहौं।
प्रात होत बल कै संग जैहौं, तेरे कहैं न रैहौं।
ग्वाल बाल गाइनि के भीतर, नैंकहुँ डर नहिं लागत।
आजु न सोवौं नंद-दुहाई, रैनि रहौंगो जागत।
और ग्वाल सब गाइ चरैहैं, मैं घर बैठो रैहौं?
सूर स्याम तुम सोइ रहौ अब, प्रात जान मैं दैहौं।।4।।

मैया हौं न चरैहौं गाइ।
सिगरे ग्वाल घिरावत मोसौं, मेरे पाइ पिराइ।
जौ न पत्याहि पूछि बलदाउहिं, अपनी सौंह दिवाइ।
यह सुनि माइ जसोदा ग्वालिन, गारी देति रिसाइ।
मैं पठवति अपने लरिका कौं, आवै मन बहराइ।
सूर स्याम मेरौ अति बालक, मारत ताहि रिंगाइ।।5।।

सखी री, मुरली लीजै चोरि।
जिनि गुपाल कीन्हे अपनैं बस, प्रीति सबनि की तोरि।।
छिन इक घर-भीतर, निसि-बांसर, धरत न कबहूँ छोरि।
कबहूँ कर, कबहूँ अधरनि, कटि कबहूँ खोंसत जोरि।।
ना जानौं कछु मेलि मोहिनी, राखे अँग-अँग भोरि।
सूरदास, प्रभु कौ मन सजनी, बँध्यौ राग की डोरि।।6।।

ऊधौ मोहिं ब्रज बिसरत नाहीं।
बृंदावन गोकुल बन उपवन, सघन कुँज की छाहीं।।
प्रात समय माता जसुमति अरु, नंद देखि सुख पावत।
माखन रोटी दह्यौ सजायौ, अति हित साथ खवावत।।
गोपी ग्वाल बाल सँग खेलत, सब दिन हँसत सिरात।
सूरदास धनि-धनि ब्रजवासी, जिनसौं हित जदुनाथ।।7।।

ऊधौ मन न भए दस बीस।
एक हुतौ सो गयौ स्याम सँग, को अवराधै ईस।।
इंद्री सिथिल भई केसव बिनु, ज्यौं देही बिनु सीस।
आसा लागि रहति तन स्वासा, जीवहिं कोटि बरीस।।
तुम तौ सखा स्याम सुंदर के, सकल जोग के ईस।
सूर हमारै नंदनंदन बिनु, और नहीं जगदीस।।8।।

ऊधौ जाहु तुमहिं हम जाने।
स्याम तुमहिं ह्याँ कौ नहिं पठयौ, तुम हौ बीच भुलाने।
ब्रज नारिनि सौं जोग कहत हौं, बात कहत न लजाने।
बड़े लोग न विवेक तुम्हारे, ऐसे भए अयाने।।
हमसौं कही लई हम सहि कै, जिय गुनि लेहु सयाने।
कहँ अबला कहँ दसा दिगंबर, मष्ट करौ पहिचाने।।
साँच कहौ तुमकौ अपनी सौं, बूझति बात निदाने।
सूर स्याम जब तुमहिं पठायौ, तब नैकहुँ मुसकाने।।9।।

निरगुन कौन देस कौ बासी ?
मधुकर कहि समुझाइ सौंह दै, बूझति साँच न हाँसी।।
को है जनक, कौन है जननी, कौन नारि, को दासी ?
कैसे बरन, भेष है कैसो, किहिं रस मैं अभिलाषी ?
पावैगौ पुनि कियौ आपनौ, जो रे करैगौ गाँसी।
सुनत मौन ह्वै रह्यौ बावरौ, सूर सबै मति नासी।।10।।

संदेसौ देवकी सौं कहियौ।
हौं तो धाइ तिहारे सुत की, मया करत ही रहियौ।।
जदपि टेव तुम जानतिं उनकी, तऊ मोहिं कहि आवै।
प्रात होत मेरे लाल लड़ैतैं, माखन रोटी भावै।।
तेल उबटनौ अरु तातौ जल, ताहि देखि भजि जाते।
जोइ-जोइ माँगत सोइ–सोइ देती, क्रम क्रम करि कै न्हाते।।
सूर पथिक सुन मोहिं रैनि दिन, बढ़्यो रहत उर सोच।
मेरौ अलक लड़ैतो मोहन, ह्वैहै करत सँकोच।।11।।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए–

1. भक्तिकाल में सूरदास किस धारा के कवि हैं ?
   (क) प्रेमाश्रयी काव्यधारा (ख) रामाश्रयी काव्यधारा
   (ग) कृष्णाश्रयी काव्यधारा (घ) ज्ञानाश्रयी काव्यधारा
2. सूरदास ने कृष्ण की आराधना की है –
   (क) दास्य-भाव से (ख) सख्य-भाव से
   (ग) भक्ति-भाव से (घ) शिष्य-भाव से
3. सूरदास के गुरु का नाम है –
   (क) विट्ठलदास (ख) वल्लभाचार्य
   (ग) निम्बार्काचार्य (घ) चैतन्य 'महाप्रभु'
4. गोपियाँ 'सकल जोग के ईस' किसे कहती हैं ?
   (क) बलराम (ख) श्रीकृष्ण
   (ग) उद्धव (घ) नंद
5. सूरदास की रचना नहीं है –
   (क) साहित्यलहरी (ख) श्रीकृष्ण गीतावली
   (ग) सूरसारावली (घ) सूरसागर
6 सूरदास सिद्धहस्त थे–
   (क) शांत रस के प्रयोग में (ख) वात्सल्य रस के प्रयोग में
   (ग) रौद्र रस के प्रयोग में (घ) श्रृंगार रस के प्रयोग में

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. 'चरन–कमल बंदौ हरि राइ' में 'हरि–राइ' शब्द किसके लिए प्रयोग किया है ?
2. उद्धव गोकुल किस लिए आए थे और उसका क्या प्रभाव हुआ ?
3. 'निरगुन कौन देस को बासी' में 'निरगुन' शब्द किसके लिए आया है ?
4. गोपियों ने उद्धव को क्या उत्तर दिया ?
5. सूरदास ने किनकी बाल-लीलाओं का वर्णन किया है ?
6. कृष्ण को ब्रज की क्या–क्या बात याद आती है ?
7. गोपियों ने उद्धव की किन बातों का खंडन किया है ?
8. गोपियाँ क्या चुराने की योजना बनाती हैं और वे ऐसा क्यों करना चाहती हैं ?

9. श्रीकृष्ण गाय चराए जाने संबंधी किन समस्याओं का उल्लेख माँ यशोदा से करते हैं ?
10. सूरदास के जीवन–वृत्त का उल्लेख करते हुए उनके साहित्यिक योगदान पर प्रकाश डालिए।
11. सूरदास की प्रमुख रचनाओं का उल्लेख करते हुए उनके काव्यगत सौंदर्य पर प्रकाश डालिए।
12. सूरदास का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

III. दिये गए पद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

(क) चरन–कमल बंदौं हरि राइ।
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै, अंधे को सब कछु दरसाइ।
बहिरौ सुनै, गूँग पुनि बोलै, रंक चलै सिर छत्र धराइ।
सूरदास स्वामी करुनामय, बार-बार बंदौं तिहिं पाइ।।

(i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक एवं रचयिता का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश में कौन सा अलंकार है ? स्पष्ट कीजिए।
(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ख) अबिगत–गति कछु कहत न आवै।
ज्यौं गूँगें मीठे फल कौ रस, अंतरगत ही भावै।
परम स्वाद सबही सु निरंतर, अमित तोष उपजावै।
मन–बानी कौ अगम-अगोचर, सो जाने जो पावै।
रूप–रेख–गुन–जाति–जुगति–बिनु, निरालंब कित धावै।
सब विधि अगम विचारहिं तातै, सूर सगुन-पद गावै।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ii) 'अगम-अगोचर' से क्या तात्पर्य है ? स्पष्ट कीजिए।
(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ग) मैया हौं न चरैहौं गाइ।
सिगरे ग्वाल घिरावत मोसौ, मेरे पाइ पिराइ।
जौ न पत्याहि पूछि बलदाउहिं, अपनी सौंह दिवाइ।
यह सुनि माइ जसोदा ग्वालिन, गारी देति रिसाइ।
मैं पठवति अपने लरिका कौं, आवै मन बहराइ।
सूर स्याम मेरौ अति बालक, मारत ताहि रिंगाइ।।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) अविश्वास की स्थिति में कृष्ण किससे प्रमाण प्राप्त करने की बात करते हैं ?

(घ) ऊधौ मोहिं ब्रज बिसरत नाहीं।
बृन्दावन गोकुल बन उपवन, सघन कुँज की छाहीं।।
प्रात समय माता जसुमति अरु, नंद देखि सुख पावत।
माखन रोटी दह्यौ सजायौ, अति हित साथ खवावत।।
गोपी ग्वाल बाल सँग खेलत, सब दिन हँसत सिरात।
सूरदास धनि–धनि ब्रजवासी, जिनसौं हित जदुनाथ।।

(i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक एवं कवि का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) श्रीकृष्ण को ब्रज की कौन-कौन सी बातें विस्मृत नहीं होती हैं ?

(ङ) निरगुन कौन देस कौ बासी ?
मधुकर कहि समुझाइ सौंह दै, बूझतिं साँच न हाँसी।।
को है जनक, कौन है जननी, कौन नारि, को दासी ?
कैसे बरन, भेष है कैसो, किहिं रस मैं अभिलाषी ?
पावैगौ पुनि कियौ आपनौ, जो रे करैगौ गाँसी।
सुनत मौन ह्वै रह्यौ बावरौ, सूर सबै मति नासी।।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ii) पद्यांश में 'मधुकर' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है ?
(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(च) संदेसौ देवकी सौं कहियौ।
हौं तो धाइ तिहारे सुत की, मया करत ही रहियौ।।
जदपि टेव तुम जानतिं उनकी, तऊ मोहिं कहि आवै।
प्रात होत मेरे लाल लड़ैतैं, माखन रोटी भावै।।
तेल उबटनौ अरु तातौ जल, ताहि देखि भजि जाते।
जोइ-जोइ माँगत सोइ–सोइ देती, क्रम क्रम करि कै न्हाते।।
सूर पथिक सुन मोहिं रैनि दिन, बढ़्यो रहत उर सोच।
मेरौ अलक लड़ैतो मोहन, ह्वैहै करत सँकोच।।6।।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) पद्यांश का काव्यगत सौंदर्य लिखिए।

IV. भाषा के रंग :

1. निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त उपसर्गों की पहचान कीजिए।
'निरगुन', 'निरालंब', 'प्रतिमनि', 'अगोचर', 'अबला', 'अगम', 'प्रतिपद', 'अबिगत'।

2. 'जगदीस' एवं 'निरालंब' का संधिविच्छेद करते हुए संधि के नाम लिखिए तथा इसी संधि के अन्य पाँच शब्दों को पाठ से चुनकर लिखिए।

3. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार को स्पष्ट कीजिए।
   (क) चरन–कमल बंदौ हरि–राई।
   (ख) करि-करि प्रतिपद प्रतिमनि बसुधा, कमल बैठकी साजति।

4. तत्सम व तद्भव शब्दों को तालिकाबद्ध कीजिए–
   'धाई', 'जोग', 'जननी', 'गृह', 'चरन', 'पंगु', 'बिंब', 'विधु', 'इंद्री', 'मति', 'साँच'।

V. अनुभूति और अभिव्यक्ति :

1. सूरदास ने कृष्ण की विविध बाल–लीलाओं का जितना सजीव व सचित्र वर्णन किया है उस आधार पर आपको क्या लगता है कि सूरदास जन्म से दृष्टिहीन थे ? विमर्श कीजिए।
2. 'संदेसौ देवकी सौं कहियौ ....है़हे करत संकोच' तथा 'मैं पठवति अपने लरिका कौं....... मारत ताहि रिंगाइ' इन काव्य पंक्तियों से ध्वनित भावों के आधार पर कल्पना कीजिए कि माँ अपनी संतानों के पालन–पोषण के प्रति कितना संवेदनशील व समर्पित होती है; ऐसे में बड़े होने पर आपका माता–पिता के प्रति क्या कर्त्तव्य होना चाहिए ? चितंन कीजिए।

शब्दार्थ

चरण–कमल – कमल रूपी चरण। **राइ** – राजा। **पंगु** – लंगड़ा। **गिरि** – पर्वत। **रंक** – गरीब, कंगाल। **करुनामय** – करुणा के स्वामी, दयालु। **अबिगत** – जिसके बारे में कुछ पता न हो, निर्गुण, निराकार। **अंतरगत** – हृदय में। **अमिततोष** – अत्यधिक आनंद। **अगम–अगोचर** – इंद्रियातीत या इंद्रियों के द्वारा न जानने योग्य। **निरालंब** – बिना किसी सहारे के, अवलंब रहित। **हौं** – मैं। **चरैहों** – चराऊँगा। **सिगरे** – संपूर्ण, सभी। **मोसो** – मुझसे। **पिराइ** – दर्द करता है। **न पत्याहि** – विश्वास न करना, भरोसा न हो। **सौहँ** – सौगंध। **रिसाइ** – नाराज होकर, गुस्सा होकर। **लरिका कौ** – लड़के को। **आवै मन बहराइ** – मन बहलाने के लिए। **मारत ताहि रिंगाइ** – चलाकर थका डालते हैं। **निसि-वासर** – रात दिन। **मेलि** – डालकर। **मोहिनी** – मोहने या आसक्त करने वाली, जादू, टोना, सम्मोहनकारी विद्या। **भोरि** – भुलावा। **बिसरत** – भूलना। **कुँज की छाहीं** – छोटी झाड़ियों का छाया। **दहयौ** – दही। **सिरात** – व्यतीत होता है। **धनि-धनि** – धन्य-धन्य। **जदुनाथ** – श्रीकृष्ण। **हुतौ** – था। **अवराधै** – आराधना। **बरीस** – वर्ष। **मधुकर** – भौंरा, ऊधौ। **जनक** – पिता। **करैगौ गाँसी** – छल करोगे। **मति नासी** – बुद्धि नष्ट हो गयी। **मष्ट करौं** – चुप रहो। **निदाने** – निष्कर्षतः, अंत में। **अभिलाषी** – अभिलाषा रखने वाले। **धाइ** – धाय माँ, पालन पोषण करने वाला। **तिहारे** – तुम्हारे। **सुत** – पुत्र। **मया** – दया। **टेव** – आदत। **लाल-लड़ैतैं** – अधिक प्यारा। **तातौ** – गरम, तप्त। **उर सोच** – हृदय में चिंता।

■

तुलसीदास

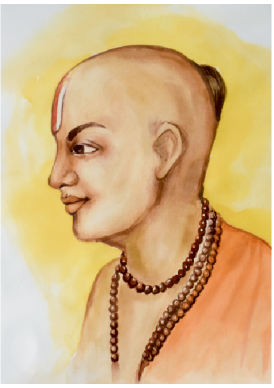

(सन् 1532–1623 ई.)

हिंदी साहित्य की सगुण भक्तिधारा के प्रसिद्ध कवि गोस्वामी तुलसीदास के जन्म के संबंध में विद्वानों में मतैक्य नहीं है। 'गोसाईं चरित', 'तुलसी प्रकाश', 'गौतम चंद्रिका', 'घट रामायण' आदि ग्रथों को आधार मानकर इनकी जन्मतिथि एवं जन्म-स्थान को सिद्ध करने का प्रयास किया गया है। शिवसिंह सेंगर और राम गुलाम द्विवेदी गोस्वामी जी का जन्म-स्थान राजापुर मानते हैं जबकि गौरीशंकर द्विवेदी, रामनरेश त्रिपाठी एवं डॉ. रामदत्त भारद्वाज के अनुसार इनका जन्म-स्थान **'सोरों'** है। प्रचलित रूप में तुलसीदास का जन्म सन् 1532 ई. में चित्रकूट जिले के 'राजापुर' ग्राम में माना जाता है। इनके पिता का नाम **आत्माराम दूबे** तथा माता का नाम **हुलसी** था। इनका बचपन का नाम 'रामबोला' था तुलसीदास का बचपन बहुत संघर्षपूर्ण था। जीवन के प्रारंभिक वर्षों में ही माता-पिता से विछोह हो जाने पर बाबा नरहरिदास ने इनका पालन-पोषण किया और ज्ञान-भक्ति की शिक्षा-दीक्षा भी दी। गोस्वामी तुलसीदास का विवाह 'रत्नावली' से हुआ था। ऐसा माना जाता है कि 'रत्नावली' की फटकार से ही इनके मन में वैराग्य और भक्ति-भाव उत्पन्न हुई। इसके बाद काशी में इन्होंने वेद-वेदांग का ज्ञान प्राप्त किया। इनके जीवन का अधिक समय काशी, अयोध्या और चित्रकूट में व्यतीत हुआ। गोस्वामी तुसलीदास की मृत्यु सन् 1623 ई. में हुई।

रामभक्त तुलसीदास की भक्ति 'दास्य–भाव' की थी। सन् 1574 ई. में इन्होंने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'रामचरितमानस' की रचना आरंभ की जिसे 2 वर्ष 7 महीने में पूरा किया। राम में शक्ति, शील और सौंदर्य तीनों गुणों का समन्वय करके तुलसी ने उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम बना दिया। दोहा–चौपाई छंद में रचित **रामचरितमानस** बड़ा ही लोकप्रिय ग्रंथ है। 'रामचरितमानस' के अतिरिक्त इन्होंने **जानकी-मंगल**, **पार्वती-मंगल, रामलला-नहछू, वैराग्य-संदीपनी, रामाज्ञा प्रश्नावली, बरवै रामायण, दोहावली, कवितावली, गीतावली, श्रीकृष्ण गीतावली** तथा **विनय-पत्रिका** आदि ग्रंथों की रचना की। इनकी रचनाओं में भारतीय सभ्यता और संस्कृति का पूर्ण दर्शन दृष्टिगत होता है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने गोस्वामी तुलसीदास के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए कहा है – ''गोस्वामी के प्रादुर्भाव को हिंदी–काव्य क्षेत्र में एक चमत्कार समझना चाहिए। हिंदी-काव्य की शक्ति का पूर्ण प्रसार इनकी रचनाओं में ही पहले–पहल दिखाई पड़ा। इनकी भक्तिरस भरी वाणी जैसी मंगलकारिणी मानी गई वैसी और किसी की नहीं। आज राजा से रंक तक के घर में गोस्वामी जी का रामचरितमानस विराज रहा है और प्रत्येक प्रसंग पर इनकी चौपाइयाँ कही जाती हैं। तुलसीदास ने दोहा, चौपाई, सवैया, कवित्त छंद में अपनी रचना की। उनके 'रामचरितमानस' में अवधी भाषा तथा 'विनयपत्रिका', 'कवितावली' में ब्रजभाषा का प्रयोग मिलता है। वे काव्य का मुख्य प्रयोजन लोकमंगल को मानते हैं। ज्ञान एवं भक्ति का समन्वय, निर्गुण और सगुण का समन्वय, शैव और वैष्णव मत का समन्वय उनके काव्यों में प्रमुखता से मिलती है। इसलिए उनका संपूर्ण काव्य समन्वयवादी कहा जाता है।

'धनुष भंग' *रामचरितमानस के बालकांड से उद्धृत है। प्रस्तुत छंदों में महाकवि तुलसीदास ने सीता स्वयंवर में भगवान श्री रामचंद्र द्वारा धनुषभंग एवं सीता की व्याकुलता का वर्णन किया है। 'वन–पथ पर' प्रकरण में राम–लक्ष्मण एवं सीता के सौंदर्य एवं मर्यादा का वर्णन है। 'वन–पथ पर', छंद में कवितावली के अयोध्याकांड से ली गई है।*

धनुष-भंग

दो0– उदित उदयगिरि मंच पर रघुबर बालपतंग।
बिकसे संत सरोज सब हरषे लोचन भृंग।।1।।

नृपन्ह केरि आसा निसि नासी। बचन नखत अवली न प्रकासी।।
मानी महिप कुमुद सकुचाने। कपटी भूप उलूक लुकाने।।
भए बिसोक कोक मुनि देवा। बरसहिं सुमन जनावहिं सेवा।।
गुरु पद बंदि सहित अनुरागा। राम मुनिन्ह सन आयसु मागा।।
सहजहिं चले सकल जग स्वामी। मत्त मंजु बर कुंजर गामी।।
चलत राम सब पुर नर नारी। पुलक पूरि तन भए सुखारी।।
बंदि पितर सुर सुकृत सँभारे। जौं कछु पुन्य प्रभाउ हमारे।।
तौ सिवधनु मृनाल की नाईं। तोरहुँ रामु गनेस गोसाईं।।

दो0– रामहि प्रेम समेत लखि सखिन्ह समीप बोलाइ।
सीता मातु सनेह वस वचन कहइ विलखाइ।।2।।

सखि सब कौतुकु देखनिहारे। जेउ कहावत हितू हमारे।।
कोउ न बुझाइ कहइ गुर पाहीं। ए बालक असि हठ भलि नाहीं।।
रावन बान छुआ नहिं चापा। हारे सकल भूप करि दापा।।
सो धनु राजकुअँर कर देहीं। बाल मराल कि मंदर लेहीं।।
भूप सयानप सकल सिरानी। सखि बिधि गति कछु जाति न जानी।।
बोली चतुर सखी मृदु बानी। तेजवंत लघु गनिअ न रानी।।
कहँ कुंभज कहँ सिंधु अपारा। सोषेउ सुजसु सकल संसारा।।
रबि मंडल देखत लघु लागा। उदयँ तासु त्रिभुवन तम भागा।।

दो0– मंत्र परम लघु जासु बस बिधि हरि हर सुर सर्ब।
महामत्त गजराज कहुँ बस कर अंकुस खर्ब।।3।।

काम कुसुम धनु सायक लीन्हे। सकल भुवन अपने बस कीन्हे।।
देबि तजिअ संसउ अस जानी। भंजब धनुषु राम सुनु रानी।।
सखी बचन सुनि भै परतीती। मिटा बिषादु बढ़ी अति प्रीती।।
तब रामहि बिलोकि बैदेही। सभय हृदयँ बिनवति जेहि तेही।।
मनहीं मन मनाव अकुलानी। होहु प्रसन्न महेस भवानी।।
करहु सफल आपनि सेवकाई। करि हितु हरहु चाप गरुआई।।
गननायक बरदायक देवा। आजु लगें कीन्हिउँ तुअ सेवा।।
बार बार विनती सुनि मोरी। करहु चाप गुरुता अति थोरी।।

दो0– देखि देखि रघुवीर तन सुर मनाव धरि धीर।
भरे बिलोचन प्रेम जल पुलकावली सरीर।।4।।

नीकें निरखि नयन भरि सोभा। पितु पनु सुमिरि बहुरि मनु छोभा।।
अहह तात दारुनि हठ ठानी। समुझत नहिं कछु लाभु न हानी।।
सचिव सभय सिख देइ न कोई। बुध समाज बड़ अनुचित होई।।
कहँ धनु कुलिसहु चाहि कठोरा। कहँ स्यामल मृदुगात किसोरा।।
बिधि केहि भाँति धरौं उर धीरा। सिरस सुमन कन बेधिअ हीरा।।
सकल सभा कै मति भै भोरी। अब मोहि संभुचाप गति तोरी।।
निज जड़ता लोगन्ह पर डारी। होहि हरुअ रघुपतिहि निहारी।।
अति परिताप सीय मन माहीं। लव निमेष जुग सय सम जाहीं।।

दो0– प्रभुहि चितइ पुनि चितव महि राजत लोचन लोल।
खेलत मनसिज मीन जुग जनु बिधु मंडल डोल।।5।।

गिरा अनिलि मुख पंकज रोकी। प्रगट न लाज निसा अवलोकी।।
लोचन जलु रह लोचन कोना। जैसें परम कृपन कर सोना।।
सकुची व्याकुलता बड़ि जानी। धरि धीरजु प्रतीति उर आनी।
तन मन वचन मोर पनु साचा। रघुपति पद सरोज चितु राचा।।
तौ भगवानु सकल उर बासी। करिहि मोहि रघुबर कै दासी।।
जेहि के जेहि पर सत्य सनेहू। सो तेहि मिलइ न कछु संदेहू।।
प्रभु तन चितइ प्रेम तन ठाना। कृपानिधान राम सबु जाना।।
सियहि बिलोकि तकेउ धनु कैसें। चितव गरुड़ लघु ब्यालहि जैसें।।

दो0– लखन लखेउ रघुवंसमनि ताकेउ हर कोदंडु।
पुलकि गात बोले वचन चरन चापि ब्रह्मंडु।।6।।

दिसिकुंजरहु कमठ अहि कोला। धरहु धरनि धरि धीर न डोला।।
रामु चहहिं संकर धनु तोरा। होहु सजग सुनि आयसु मोरा।।
चाप समीप रामु जब आए। नर नारिन्ह सुर सुकृत मनाए।
सब कर संसउ अरु अग्यानू। मंद महीपन्ह कर अभिमानू।।
भृगुपति केरि गरब गरुआई। सुर मुनिबरन्ह केरि कदराई।।
सिय कर सोचु जनक पछितावा। रानिन्ह कर दारुन दुख दावा।।
संभुचाप बड़ बोहितु पाई। चढ़े जाइ सब संगु बनाई।।
राम बाहुबल सिंधु अपारू। चहत पारु नहिं कोउ कड़हारू।।

दो0– राम बिलोके लोग सब चित्र लिखे से देखि।
चितई सीय कृपायतन जानी विकल विसेषि।।7।।

देखी बिपुल बिकल बैदेही। निमिष बिहात कलप सम तेही।।
तृषित बारि बिनु जो तनु त्यागा। मुएँ करइ का सुधा तड़ागा।।
का बरषा सब कृषी सुखानें। समय चुकें पुनि का पछितानें।।
अस जियँ जानि जानकी देखी। प्रभु पुलके लखि प्रीति बिसेषी।।
गुरहि प्रनामु मनहिं मन कीन्हा। अति लाघवँ उठाइ धनु लीन्हा।।
दमकेउ दामिनि जिमि जब लयऊ। पुनि नभ धनु मंडलसम भयऊ।।
लेत चढ़ावत खैंचत गाढ़ें। काहुँ न लखा देख सबु ठाढ़ें।
तेहि छन राम मध्य धनु तोरा। भरे भुवन धुनि घोर कठोरा।।

छन्द– भरे भुवन घोर कठोर रव रबि बाजि तजि मारगु चले।
चिक्करहिं दिग्गज डोल महि अहि कोल कूरुम कलमले।।
सुर असुर मुनि कर कान दीन्हें सकल विकल बिचारहीं।
कोदंड खंडेउ राम तुलसी जयति वचन उचारहीं।।

वन-पथ पर

पुरतें निकसी रघुबीरबधू, धरि धीर दए मग में डग द्वै।
झलकीं भरि भाल कनीं जलकी, पुट सूखि गए मधुराधर वै।।
फिर बूझति हैं; चलनो अब केतिक, पर्नकुटी करिहौं कित ह्वै ?
तियकी लखि आतुरता पियकी अँखियाँ अति चारु चलीं जल च्वै।।1।।

''जलको गए लक्खनु, हैं लरिका, परिखौ, पिय ! छाँह घरीक ह्वै ठाढ़े।
पोंछि पसेउ बयारि करौं, अरु पाय पखारिहौं भूभुरि डाढ़े।।''
तुलसी रघुबीर प्रिया श्रम जानि कै, बैठि बिलंब लौं कंटक काढ़े।
जानकीं नाहको नेहु लख्यो, पुलको तनु, बारि बिलोचन बाढ़े।।2।।

रानी मैं जानी अजानी महा, पबि पाहनहूँ तें कठोर हियो है।
राजहुँ काजु अकाजु न जान्यो, कह्यो तियको जेहिं कान कियो है।।
ऐसी मनोहर मूरति ए, बिछुरे कैसे प्रीतम लोगु जियो है।
आँखिन में, सखि ! राखिबे जोगु, इन्हें किमि कै बनबासु दियो है ?।।3।।

सीस जटा, उर–बाहु बिसाल, बिलोचन लाल, तिरीछी–सी भौंहें।
तून सरासन–बान धरें, तुलसी बन-मारग में सुठि सोहै।
सादर बारहिं बार सुभायँ चितै तुम त्यों हमरो मन मोहैं।
पूँछति ग्रामबधू सिय सों, 'कहौ, साँवरे–से, सखि! रावरे को हैं'।।4।।

सुनि सुंदर बैन सुधारस-साने, सयानी हैं जानकीं जानी भली।
तिरछे करि नैन, दै सैन, तिन्हैं समुझाइ कछू, मुसकाइ चली।
तुलसी तेहि औसर सोहैं सबै अवलोकति लोचनलाहु अलीं।
अनुराग-तड़ाग में भानु उदैं बिगसीं मनो मंजुल कंजकलीं।।5।।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों में सही विकल्प का चयन कीजिए –

1. तुलसीदास का जन्म स्थान है –
   (क) चित्रकूट (ख) मथुरा (ग) ग्वालियर (घ) काशी
2. तुलसीदास को अन्य किस नाम से पुकारा जाता था ?
   (क) रामबोला (ख) आत्माराम (ग) रामदीन (घ) इनमें से कोई नहीं
3. तुलसीदास द्वारा रचित ग्रंथों में से कौन-सी रचना उनकी नहीं है ?
   (क) रामचरितमानस (ख) जानकी-मंगल (ग) विनय-पत्रिका (घ) रामचंद्रिका
4. 'धनुष-भंग' शीर्षक 'रामचरितमानस' के किस कांड से संकलित है ?
   (क) बालकांड से (ख) सुंदरकांड से (ग) उत्तरकांड से (ग) इनमें से कोई नहीं
5. 'खेलत मनसिज मीन जुग जनु विधु मंडल डोल' में अलंकार है –
   (क) उपमा (ख) यमक (ग) उत्प्रेक्षा (घ) श्लेष
6. 'वन पथ पर' कविता किस छंद में लिखी गयी है ?
   (क) रोला (ख) सवैया (ग) चौपाई (घ) दोहा
7. तुलसीदास का पालन-पोषण किया था –
   (क) रत्नावली ने (ख) नरहरिदास ने (ग) वल्लभाचार्य ने (घ) हुलसी ने

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. राम को देखकर सीता की माता को क्या संदेह हुआ ?
2. धनुष-भंग के प्रसंग में सीता की माता राम के प्रति चिंता कर अपने सखियों से क्या कहती हैं? स्पष्ट कीजिए।
3. राम ने धनुष उठाने के पूर्व किसे मन ही मन प्रणाम किया?
4. राम द्वारा धनुष–भंग किए जाने के पूर्व लक्ष्मण पृथ्वी को डगमगाने से बचाने हेतु किस-किस को सावधान करते हैं ?
5. राम को देखकर नगरवासी नर-नारियाँ सीता से क्या पूछती हैं ?
6. 'वन-पथ पर' कविता का सारांश लिखिए।
7. 'तुलसीदास' का साहित्यिक-परिचय देते हुए उनकी भाषा-शैली पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
8. तुलसीदास का संक्षिप्त जीवन-परिचय देते हुए उनकी किन्ही दो रचनाओं का नाम लिखिए।
9. वन गमन पथ में जल हेतु लक्ष्मण के चले जाने पर राम ने क्या किया ?

III. दिये गए पद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

(क) नृपन्ह केरि आसा निसि नासी। बचन नखत अवली न प्रकासी।।
मानी महिप कुमुद सकुचाने। कपटी भूप उलूक लुकाने।।
भए बिसोक कोक मुनि देवा। बरसहिं सुमन जनावहिं सेवा।।
गुरु पद बंदि सहित अनुरागा। राम मुनिन्ह सन आयसु मागा।।
सहजहिं चले सकल जग स्वामी। मत मंजु बर कुंजर गामी।।
चलत राम सब पुर नर नारी। पुलक पुरि तन भए सुखारी।।
बंदि पितर सुर सुकृत सँभारे। जौं कछु पुन्य प्रभाउ हमारे।।
तौ सिवधनु मृनाल की नाईं। तोरहु रामु गनेस गोसाईं।।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) पद्यांश का काव्यगत सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

(ख) सखि सब कौतुकु देखनिहारे। जेउ कहावत हितू हमारे।।
कोउ न बुझाइ कहइ गुर पाहीं। ए बालक असि हठ भलि नाहीं।।
रावन बान छुआ नहिं चापा। हारे सकल भूप करि दापा।।
सो धनु राजकुअँर कर देहीं। बाल मराल कि मंदर लेहीं।।
भूप सयानप सकल सिरानी। सखि बिधि गति कछु जाति न जानी।।
बोली चतुर सखी मृदु बानी। तेजवंत लघु गनिअ न रानी।।
कहँ कुंभज कहँ सिंधु अपारा। सोषेउ सुजसु सकल संसारा।।
रबि मंडल देखत लघु लागा। उदय तासु त्रिभुवन तम भागा।।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) सीताजी की माता अपनी सखियों से क्या कह रहीं हैं ?

(ग) काम कुसुम धनु सायक लीन्हे। सकल भुवन अपने बस कीन्हे।।
देबि तजिअ संसउ अस जानी। भंजब धनुषु राम सुनु रानी।।
सखी बचन सुनि भै परतीती। मिटा बिषादु बढ़ी अति प्रीती।।
तब रामहि बिलोकि बैदेही। सभय हृदयँ बिनवति जेहि तेही।।
मनहीं मन मनाव अकुलानी। होहु प्रसन्न महेस भवानी।।

करहु सफल आपनि सेवकाई। करि हितु हरहु चाप गरुआई।।
गननायक बरदायक देवा। आजु लगें कीन्हिउँ तुअ सेवा।।
बार बार विनती सुनि मोरी। करहु चाप गुरुता अति थोरी।।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का शीर्षक एवं कवि का नाम लिखिए।
(ii) पद्यांश में सीताजी का सशंकित मन श्रीराम से विवाह के लिए देवताओं से किस प्रकार विनती कर रहा है ?
(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(घ) पुरतें निकसी रघुबीरबधू, धरि धीर दए मगमें डग द्वै।
झलकीं भरि भाल कनीं जल की, पुट सूखि गए मधुराधर वै।।
फिर बूझति हैं; चलनों अब केतिक, पर्णकुटी करिहौं कित ह्वै?
तिय की लखि आतुरता पिय की अँखियाँ अति चारु चलीं जल च्वै।।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का शीर्षक एवं कवि के नाम का उल्लेख कीजिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) पद्यांश में प्रयुक्त 'मधुराधर' शब्द का विशेषण–विशेष्य छाँट कर लिखिए।

(ङ) रानी मैं जानी अजानी महा, पबि–पाहन हूँ तं कठोर हियो है।
राजहुँ काजु अकाजु न जान्यो, कह्यो तियको जेहिं कान कियो है।।
ऐसी मनोहर मूरति ए, बिछुरे कैसे प्रीतम लोगु जियो है।
आँखिन में, सखि ! राखिबे जोगु, इन्हैं किमि कै बनबासु दियो है।।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) पद्यांश में 'ऐसी मनोहर मूरति ए' किसके लिए प्रयुक्त है तथा इसमें कौन सा अलंकार है?

IV. भाषा के रंग :

1. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकारों का नामोल्लेख करते हुए स्पष्टीकरण दीजिए।

(क) उदित उदयगिरि मंच पर रघुबर बालपतंग।
बिकसे संत सरोज सब हरषे लोचन भृंग।।

(ख) सुनि सुन्दर बैन सुधारस-साने, सयानी हैं जानकीं जानी भली।
तिरछे करि नैन, दै सैन, तिन्हैं समुझाइ कछू, मुसकाइ चली।

2. निम्नलिखित पदों का समास–विग्रह कीजिए तथा समास का नाम लिखिए।

बालपतंग, राजकुँवर, त्रिभुवन, गजराज, पर्णकुटी, रामलखन।

3. 'धनुष–भंग' एवं 'वन-पथ पर' कविता में प्रयुक्त हुए निम्नलिखित सम्मोच्चरित भिन्नार्थक शब्दों का अर्थ लिखिए।
   विधि विधु, हरि हर, रव रवि, तून तन
4. जड़ता, गुरुता, गरुआई, मुसकाइ — इन शब्दों में प्रत्यय की पहचान कीजिए तथा उस प्रत्यय से बनने वाले दो अन्य शब्दों का उल्लेख कीजिए।

V. अनुभूति और अभिव्यक्ति :

1. कैकेयी द्वारा राम के वनवास की घोर लोक-निंदा हुई। आपकी दृष्टि में कैकेयी का यह कृत्य कहाँ तक उचित था ? विचार कीजिए।
2. राम ने गुरुओं एवं मुनियों (श्रेष्ठजन) के प्रति जो शिष्टाचार व आदरभाव प्रकट किया उसका आजकल के बच्चों में समावेश कितना आवश्यक है ? विचार प्रस्तुत कीजिए।

शब्दार्थ

उदित – प्रकट। **बिकसे** – प्रसन्नता से खिल उठे। **भृंग** – भौंरे। **निसि** – निशा, रात्रि। **नासी** – नष्ट हो गयी। **अवली** – पंक्ति। **महिप** – राजा। **लुकाने** – छिप गये। **कोक** – चकवे। **उलूक** – उल्लू। **लोचन** – नेत्र। **नखत** – नक्षत्र। **बंदि** – वंदना। **बिसोक** – शोकरहित। **अनुराग** – प्रेमपूर्वक। **सहजहिं** – स्वाभाविक रूप से। **कुंजर** – हाथी। **सुकृत** – पुण्य। **भूप** – राजा। **सिवधनु** – भगवान शंकर का धनुष। **कुंभज** – घड़े से उत्पन्न होने वाले, अगस्त्य ऋषि। **सोषेउ** – सुखा देना। **बैदेही** – सीताजी। **बिनवति** – प्रार्थना करती है। **अकुलानी** – व्याकुल होना। **कुसुम** – फूल। **बिषादु** – दुःख। **मृदुगात** – कोमल शरीरवाले। **निहारी** – देखकर। **परिताप** – दुःख, संताप। **लोचन** – नेत्र। **सरोज** – कमल। **महीपन्ह** – राजाओं के। **दारुन** – कठोर। **मारगु** – पथ। **दामिनि** – विद्युत। **चापा** – धनुष। **दापा** – दर्प, घमंड। **बाल मराल** – हंस का बच्चा। **मंदर** – मंदराचल। **गनिअ** – गिनना। **भवानी** – पार्वती। **सायक** – बाण। **भंजब** – तोड़ेंगे। **पुलकावली** – रोमांच होना। **पनु** – प्रण। **चितई** – देखकर। **मनसिज** – कामदेव। **गिरा अलिनि** – वाणी रूपी भ्रमरी। **व्यालहिं** – साँप को। **हर कोदंडु** – शिव का धनुष। **दिसिकुंजरहु** – दिशारूपी हाथी। **कमठ** – कच्छप। **अहि** – शेषनाग। **तृषित** – प्यासा। **रबि बाजि** – सूर्य के घोड़े। **रव** – ध्वनि। **घरीक** – एक घड़ी के लिए। **पसेउ** – पसीना। **बयारि** – हवा। **भूभुरि** – धूल, बालू। **कंटक** – काँटे। **काढ़े** – निकाले। **नाह** – नाथ, स्वामी। **सरासन** – धनुष। **सुठि** – अच्छी तरह। **रावरे** – आपके। **सयानी** – चतुर। **सैन** – संकेत। **लाह** – लाभ। **अली** – सखी। **अनुराग तड़ाग में** – प्रेम के सरोवर में। **बिगसी** – विकसित।

■

रसखान

(सन् 1533–1628 ई.)

कृष्णभक्ति शाखा के भक्त कवि रसखान के जन्म-समय, शिक्षा-दीक्षा और निधन आदि के संबंध में कोई प्रामाणिक साक्ष्य उपलब्ध नहीं है। विद्वानों ने इनकी रचना 'प्रेमवाटिका' की अधोलिखित छंद से रसखान को किसी बादशाह का वंशज माना है–

देखि गदर हित साहबी, दिल्ली नगर मसान।
छिनहिं बादसा-बंस की, ठसक छोरि रसखान।

रसखान दिल्ली के पठान सरदार कहे जाते हैं। कुछ विद्वान इनका जन्म स्थान **पिहानी,** हरदोई (उ0प्र0) मानते हैं। किंतु इस विषय में कोई प्रबल प्रमाण उपलब्ध नहीं है। इनके जन्म के संबंध में विद्वानों में मतैक्य नहीं है। कुछ विद्वान इनका जन्म सन् 1533 ई. मानते हैं किंतु मिश्रबंधु ने इनका जन्म 1548 ई. माना है। इनका वास्तविक नाम सैयद इब्राहिम था। मिश्रबंधु तथा रामचंद्र शुक्ल इन्हें विट्ठलनाथ का शिष्य बतलाते हैं। 'मूल गोसाईं चरित' में गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा स्वरचित 'रामचरितमानस' की कथा सर्वप्रथम रसखान को सुनाने का उल्लेख है। 'प्रेमवाटिका' (सन् 1614 ई.) उनकी अंतिम कृति है। इनकी मृत्यु सन् 1628 ई. के लगभग हुई।

रसखान प्रेम और शृंगार के कवि है। उनका प्रेम भगवान श्रीकृष्ण के प्रति अलौकिक था। वे कृष्ण के रूप सौंदर्य के साथ ही ब्रज के प्राकृतिक सौंदर्य पर भी मुग्ध थे। उनकी भाव–सबलता और सरलता के कारण उनकी रचनाएं **सुजान–रसखान,** एवं **प्रेमवाटिका** बड़ी लोकप्रिय हुई हैं। 'सुजान–रसखान' में सवैया और घनाक्षरी की प्रचुरता है तथा 'प्रेमवाटिका' दोहा छंद में रचित काव्य है। ये दोनों रचनाएँ लघु–काव्य होने पर भी पाठकों के हृदय में कृष्ण भक्ति का अनन्य भाव उत्पन्न करने में समर्थ है।

रसखान की भाषा शुद्ध, परिमार्जित तथा साहित्य ब्रजभाषा है। माधुर्य एवं प्रसाद गुणों के समावेश के कारण इनकी काव्य भाषा अत्यंत सरल तथा सजीव बन गई है। जिनका स्वाभाविक प्रवाह ही इनके काव्य को आकर्षक बना देता है। अन्य कृष्ण भक्त कवियों की भाँति इन्होंने परंपरागत पद-शैली का अनुसरण नहीं किया बल्कि विविध लाक्षणिक प्रयोगों के कारण उनकी भाषा में चुटीलापन आ गया है। इन्होंने मुक्तक छंद शैली में अपनी रचनाएँ

की। इनकी रचनाओं में उपमा, रूपक, पुनरुक्ति प्रकाश, श्लेष, यमक तथा अनुप्रास आदि अलंकारों का प्रयोग बहुत ही अनूठे रूप में मिलता है जिससे भाषा-सौंदर्य के साथ भाव-सौंदर्य की भी वृद्धि हुई है। कविवर रसखान के सरस काव्य पर मुग्ध होकर ही तो भारतेंदु ने कहा है –

'इन मुसलमान हरि जनन पर, कोटिक हिंदू वारिए।'

वास्तव में रसखान जैसा मुसलमान भावुक भक्त कवि अन्य नहीं है।

*संकलित **'सवैया'** छंदों में रसखान ने श्रीकृष्ण की भक्ति के माध्यम से निकटता प्राप्त करने की तीव्र इच्छा व्यक्त की है। साथ ही श्रीकृष्ण के बालरूप के सौंदर्य का चित्रण किया है।*

■

सवैये

मानुष हौं तो वही रसखानि, बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।
जौ पसु हौं तो कहा बस मेरो, चरौं नित नंद की धेनु मँझारन।।
पाहन हौं तो वही गिरि को, जो धर्‌यौ कर छत्र पुरंदर-धारन।
जो खग हौं तो बसेरो करौं, मिलि कालिंदी-कूल कदंब की डारन।।1।।

आजु गई हुती भोर ही हौं, रसखानि रई वहि नंद के भौनहिं।
वाको जियौ जुग लाख करोर, जसोमति को सुख जात कह्यौं नहिं।
तेल लगाइ लगाइ कै अँजन, भौहैं बनाइ बनाइ डिठौनहिं।
डारि हमेलनि हार निहारत वारस ज्यौ चुचकारत छौनहिं।।2।।

धूरि भरे अति सोभित स्यामजू, तैसी बनी सिर सुंदर चोटी।
खेलत खात फिरैं अँगना, पग पैजनी बाजति पीरी कछोटी।।
वा छबि को रसखानि बिलोकत, वारत काम कला निज कोटी।
काग के भाग बड़े सजनी हरि-हाथ सों लै गयौ माखन-रोटी।।3।।

जा दिन तें वह नंद को छोहरा, या बन धेनु चराइ गयौ है।
मोहिनि ताननि गोधन गावत, बेनु बजाइ रिझाइ गयौ है।।
वा दिन सो कछु टोना सो कै, रसखानि हियै मैं समाइ गयौ है।
कोऊ न काहू की कानि करै, सिगरो ब्रज बीर, बिकाइ गयौ है।।4।।

कान्ह भये बस बाँसुरी के, अब कौन सखी, हमकौं चहिहै।
निसद्यौस रहै सँग-साथ लगी, यह सौतिन तापन क्यौं सहिहै।।
जिन मोहि लियौ मनमोहन कौं, रसखानि सदा हमकौं दहिहै।
मिलि आऔ सबै सखी, भागि चलैं अब तो ब्रज में बँसुरी रहिहै।।5।।

मोर-पखा सिर ऊपर राखिहौं, गुंज की माल गरे पहिरौंगी।
ओढ़ि पितांबर लै लकुटी, बन गोधन ग्वारन संग फिरौंगी।।
भावतो सोई मेरो रसखान, सो तेरे कहै सब स्वाँग करौंगी।
या मुरली मुरलीधर की, अधरान धरी अधरा न धरौंगी।।6।।

कवित्त

गोरज बिराजै भाल लहलही बनमाल
आगे गैयाँ पाछें ग्वाल गावै मृदु तानि री।
तैसी धुनि बाँसुरी की मधुर मधुर जैसी,
बंक चितवनि मंद-मंद मुसकानि री।
कदम बिटप के निकट तटिनी के तट
अटा चढ़ि चाहि पीत पट फहरानि री।
रस बरसावै तन-तपनि बुझावै नैन
प्राननि रिझावै वह आवै रसखानि री।।7।।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों में सही विकल्प का चयन कीजिए –

1. रसखान का जन्म स्थान है –
   (क) ग्वालियर (ख) पिहानी, हरदोई (ग) बसुआ गोविंदपुर (घ) मथुरा
2. रसखान की प्रसिद्ध रचना है –
   (क) प्रेमवाटिका (ख) सतसई (ग) प्रेमसरोवर (घ) इनमें से कोई नहीं
3. "जो खग हौं तो बसेरो करौं, मिलि कालिंदी-कूल कदंब की डारन।" में प्रयुक्त अलंकार है।
   (क) उपमा (ख) अतिशयोक्ति (ग) उत्प्रेक्षा (घ) अनुप्रास
4. गोपियाँ कृष्ण की मुरली को क्या समझती हैं ?
   (क) सौत (ख) सखी (ग) प्रेमिका (घ) पत्नी
5. 'करोर' शब्द का खड़ीबोली रूप है –
   (क) हजार (ख) करोड़ (ग) लाख (घ) इनमें से कोई नहीं
6. 'धूरि भरे अति सोभित स्यामजू, तैसी बनी सिर सुंदर चोटी' में प्रयुक्त रस है :
   (क) श्रृंगार (ख) वीर (ग) हास्य (घ) करुण

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. रसखान ने श्रीकृष्ण की निकटता प्राप्त करने के लिए किन–किन रूपों में जन्म प्राप्त करने की तीव्र इच्छा प्रकट की है ?
2. यशोदा के किस सुख का वर्णन गोपियाँ नहीं कर पा रही हैं ?
3. गोपियाँ ब्रज में क्यों नहीं रहना चाहती हैं ? कविता के आधार पर उत्तर दीजिए।
4. कृष्ण की किस छवि पर कवि करोड़ो कामदेव न्यौछावर करते हैं ?
5. गोपियाँ कृष्ण की मुरली को अपनी सौत क्यों समझती हैं ? स्पष्ट कीजिए।
6. वियोग में गोपियाँ कृष्ण के किन-किन रूपों को धारण करती हैं ?
7. वन से लौटते हुए कृष्ण के सुंदर रूप का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।
8. पठित कविता के आधार पर रसखान के काव्यगत सौंदर्य का उल्लेख कीजिए।
9. रसखान का जीवन परिचय देते हुए उनके प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए।
10. रसखान के साहित्यिक अवदान पर प्रकाश डालिए।

III. दिये गए पद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

(क) मानुष हौं तो वही रसखानि, बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।
जौ पसु हौं तो कहा बस मेरो, चरौं नित नंद की धेनु मँझारन।।
पाहन हौं तो वही गिरि को, जो धर्‌यौ कर छत्र पुरंदर-धारन।
जो खग हौं तो बसेरो करौं, मिलि कालिंदी-कूल कदंब की डारन।।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) पद्यांश का काव्यगत सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

(ख) आजु गई हुती भोर ही हौं, रसखानि रई वहि नंद के भौनहिं।
वाको जियौ जुग लाख करोर, जसोमति को सुख जात कह्यौं नहिं।
तेल लगाइ लगाइ कै अँजन, भौहैं बनाइ बनाइ डिठौनहिं।
डारि हमेलनि हार निहारत वारत ज्यौ चुचकारत छौनहिं।।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) पद्यांश में प्रयुक्त 'डिठौनहिं' शब्द का अर्थ लिखिए। यह बच्चों को क्यों लगाया जाता है ?

(ग) कान्ह भये बस बाँसुरी के, अब कौन सखी, हमकौं चहिहै।
निसद्यौस रहै सँग-साथ लगी, यह सौतिन तापन क्यौं सहिहै।।
जिन मोहि लियौ मनमोहन कौं, रसखानि सदा हमकौं दहिहै।
मिलि आऔ सबै सखी, भागि चलैं अब तो ब्रज में बँसुरी रहिहै।।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का शीर्षक एवं रचयिता का नाम लिखिए।
(ii) गोपियाँ कृष्ण के बाँसुरी के प्रति किस प्रकार का भाव रखतीं हैं ? स्पष्ट कीजिए।
(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(घ) मोर-पखा सिर ऊपर राखिहौं, गुंज की माल गरे पहिरौंगी।
ओढ़ि पितांबर लै लकुटी, बन गोधन ग्वारन संग फिरौंगी।।
भावतो सोहि मेरो रसखान, सो तेरे कहें सब स्वाँग करौंगी।
या मुरली मुरलीधर की, अधरान धरी अधरा न धरौंगी।।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ii) कृष्ण के वियोग में व्याकुल गोपियों ने कृष्ण की किन लीलाओं का अनुकरण करना चाहा है ?
(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ङ) गोरज बिराजै भाल लहलही बनमाल
आगे गैयाँ पाछें ग्वाल गावै मृदु तानि री।
तैसी धुनि बाँसुरी की मधुर मधुर जैसी,
बंक चितवनि मंद-मंद मुसकानि री।
कदम बिटप के निकट तटिनी के तट
अटा चढ़ि चाहि पीत पट फहरानि री।
रस बरसावै तन–तपनि बुझावै नैन
प्राननि रिझावै वह आवै रसखानि री।।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ii) 'गोरज' के बीच कृष्ण के सुंदर रूप का सजीव चित्रण रसखान ने किस प्रकार से किया है ?
(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

IV. भाषा के रंग :

1. निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों में कौन सा रस है, उसके स्थायी भाव का उल्लेख कीजिए।
   (i) 'तेल लगाइ लगाइ कै अँजन, भौहैं बनाइ बनाइ डिठौनहिं।'
   (ii) कान्ह भये बस बाँसुरी के, अब कौन सखी, हमकौं चहिहै।
2. पुरंदर, कालिंदी, धेनु शब्द का अर्थ लिखिए।
3. निम्नलिखित शब्दों के खड़ी बोली रूप लिखिए–
   करोर, सिगरो, लकुटी, काग, अँगुरी, माखन, जुग, बानि, बिटप।
4. निम्नलिखित शब्दों के दो–दो पर्यायवाची शब्द लिखिए–
   पुरंदर, पाहन, कालिंदी, पट, विटप, खग।

V. अनुभूति और अभिव्यक्ति :

1. श्रीकृष्ण के सान्निध्य हेतु रसखान ने जिस प्रकार के भावी जन्मों एवं स्थितियों की कामना की है, उसी तरह आप अपने संदर्भ में किस प्रकार के सुखद व आनंदमय जीवन की कल्पना करते हैं ? विचार प्रकट कीजिए।
2. कृष्ण के हाथ से रोटी छीन कर उड़ जाने वाले कौवे को कवि ने भाग्यशाली क्यों कहा है ? विचार कीजिए।

शब्दार्थ

मानुष – मनुष्य। **धेनु** – गाय। **मझारन** – मध्य में। **पाहन** – पाषाण, पत्थर। **पुरंदर** – इंद्र। **खग** – पक्षी। **बसेरो करौं** – निवास करूँ। **कालिंदी कूल** – यमुना का किनारा। **डारन** – डाल पर। **हुती** – थी। **भोर** – प्रातःकाल। **हौं** – मैं। **रई** – प्रेम में डूब गयी। **भौनहिं** – भवन में। **डिठौनहिं** – काला टीका। **हमेलनि** – हमेल (सोने का एक आभूषण), **निहारत** – देख रही थी। **वारत** – न्योछावर करते हुए। **छौनहिं** – पुत्र को। **बनी** – सुशोभित। **पैंजनी** – पायजेब, पायल। **पीरी** – पीला। **कछोटी** – कच्छा। **सजनी** – सखी। **बेनु** – वंशी। **टोना** – जादू। **सिगरो** – सम्पूर्ण, चारों ओर। **चहिहै** – चाहेगा। **निसद्यौस** – रात.दिन। **तापन** – संतापों को। **मोहि लियौ** – मोहित कर लिया है। **दहिहै** – जलाती है। **मोर–पखा** – मोर के पंखों से बना मुकुट। **गरें** – गले में। **पितांबर** – पीलावस्त्र। **लकुटी** – छोटी लाठी। **स्वाँग** – कृत्रिम या बनावटी वेश धारण करना, नकल करना। **अधरा न** – होंठों पर नहीं। **गोरज** – गायों के पैरों से उड़ी ध ूल। **लहलही** – शोभायमान हो रही है। **बंक** – टेढ़ी। **तटिनी** – (यमुना) नदी। **तन–तपनि** – शरीर की गर्मी।

■

बिहारीलाल

(सन् 1595–1663 ई.)

बिहारीलाल का जन्म सन् 1595 ई. में ग्वालियर के निकट **बसुआ गोविंदपुर** में हुआ था। इनके पिता का नाम केशवराय था। इनके पिता निम्बार्क-सम्प्रदाय के महंत नरहरिदास के शिष्य थे। बिहारी ने उनके यहाँ संस्कृत–प्राकृत के काव्य–ग्रंथों का अध्ययन किया था। बाद में ये वृंदावन आ गए और वहीं मथुरा के किसी ब्राह्मण-परिवार में इनका विवाह हुआ। तदुपरांत ये वहीं रहने लगे। उसी बीच इन्होंने फारसी-काव्य का अभ्यास किया और बादशाह शाहजहाँ से भेंट की। राजा जयसिंह अपनी नवविवाहिता रानी के प्रेमपाश में आबद्ध होकर राजकाज भूल गए थे। बिहारी की एक श्रृंगारिक अन्योक्ति ने राजा को सचेत कर कर्त्तव्य पथ पर अग्रसर कर दिया। वह दोहा है–

''नहिं परागु नहिं मधुर मधु, नहिं विकासु इहिं काल।
अली कली ही सौं बंध्यौं, आगैं कौन हवाल।।''

इस दोहे ने राजा जयसिंह की आँखें खोल दीं और उन्होंने बिहारी को अपने दरबार की शोभा बना लिया। उसके बाद यहीं रहते हुए बिहारी ने राजा जयसिंह की प्रेरणा से अनेक सुंदर दोहों की रचना की। कहा जाता है कि इन्हें प्रत्येक दोहे की रचना के लिए एक अशर्फी (स्वर्णमुद्रा) प्रदान की जाती थी। बिहारी की मृत्यु सन् 1663 ई. में हुई थी।

कविवर बिहारी की प्रसिद्धि का मुख्य आधार उनकी एकमात्र काव्यकृति **बिहारी सतसई** है। यह बिहारी की अनुपम कृति है। इसका एक-एक दोहा हिंदी साहित्य के लिए रत्न माना जाता है। नीति, भक्ति, प्रकृति-चित्रण तथा श्रृंगार-वर्णन ही 'बिहारी सतसई' के मुख्य विषय रहे हैं।

बिहारी सौंदर्य के कवि हैं। इनकी कविता में वाह्य तथा अंतः सौंदर्य के दर्शन स्थान–स्थान पर होते हैं। इन्होंने वाह्य–सौंदर्य के चित्रण की अभिव्यक्ति के लिए अलंकार योजना का सहारा लिया है। उनके काव्य में कल्पना की समाहर शक्ति विद्यमान है। बिहारी वाग्वैदग्ध्य में अति निपुण है। इनके काव्य में वाक्चातुर्य और व्यंग्य की बारीकी का

भिन्न–भिन्न रूप देखने को मिलता है। बिहारी ने काव्य की मुक्तक-शैली को अपनाया है जिसमें समास शैली का वैशिष्ट्य समाहित है। दोहे जैसे छोटे से छंद में अनेक भावों को भरने के लिए इस गुण का होना आवश्यक है। बिहारी की सम्पूर्ण रचनाएँ 'दोहा' और 'सोरठा' छंद में ही हैं।

बिहारी की भाषा ब्रज है। इनकी भाषा व्याकरण सम्मत, बहुत कुछ शुद्ध और साहित्यिक है। मुहावरों के प्रयोग, सांकेतिक शब्दावली तथा सुगठित पदावली से संयुक्त हैं। इनकी भाषा में अरबी, फारसी, उर्दू, बुंदेलखंडी आदि के शब्द पाये जाते हैं।

बिहारी बहुज्ञ और सच्चे कलाकार थे। हिंदी साहित्य में बिहारी के अतिरिक्त अन्य कोई ऐसा कवि नहीं, जो इतना कम लिखकर इतना अधिक प्रसिद्ध हुआ है। अद्भुत कल्पना शक्ति, मानव प्रकृति का ज्ञान तथा कला निपुणता के कारण बिहारी अपने दोहों में अपरिमित रस भर सके हैं। इसलिए इनके दोहों के बारे में कहा जाता है –

सतसैया के दोहरे, ज्यों नावक के तीर।
देखन में छोटे लगैं, घाव करैं गंभीर।।

*संकलित **'भक्ति'** के छंदों में संसारिक-बाधाओं के निवारणार्थ राधा की वंदना, कृष्ण के मुकुट, पीतांबर, बाँसुरी आदि का शृंगारिक वर्णन है तथा कपट व आडंबर को भक्ति-भावना में बाधक बताया गया है। **'नीति'** के दोहों में सरल दृष्टांतों द्वारा 'द्वैध-शासन की पीड़ा', 'विनम्रता की श्रेष्ठता' तथा 'संपन्नता के दुष्प्रभाव' जैसे शिक्षाप्रद तथ्यों का वर्णन है।*

■

भक्ति

मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।
जा तन की झाइ परैं, स्यामु हरित-दुति होइ।। 1।।
मोर-मुकुट की चंद्रिकनु, यौं राजत नँदनंद।
मनु ससि सेखर की अकस, किय सेखर सत चंद।। 2।।
सोहत ओढ़े पीतु पटु, स्याम सलौनैं गात।
मनौ नीलमनि–सैल पर, आतपु पर्‍यौ प्रभात।। 3।।
अधर धरत हरि कै परत, ओठ-डीठि-पट-जोति।
हरित बाँस की बाँसुरी, इंद्रधनुष रँग होति।। 4।।
या अनुरागी चित्त की, गति समुझै नहिं कोइ।
ज्यौं ज्यौं बूड़े स्याम रंग, त्यौं-त्यौं उज्जलु होइ।। 5।।
तौ लगु या मन-सदन मैं, हरि आवैं किहिं बाट।
बिकट जटे जौ लगु निपट, खुटैं न कपट-कपाट।। 6।।
जगतु जनायौ जिहिं सकलु, सो हरि जान्यौ नाँहि।
ज्यौं आँखिनु सबु देखियै, आँखि न देखी जाँहि।। 7।।
जपमाला, छापै, तिलक सरै न एकौ कामु।
मन-काँचै नाचै वृथा, साँचे राँचै रामु।। 8।।

नीति

दुसह दुराज प्रजानु कौं, क्यौं न बढ़ै दुख-दंदु।
अधिक अँधेरौ जग करत, मिलि मावस रबि चंदु।। 9।।
बसै बुराई जासु तन, ताही कौ सनमानु।
भलौ भलौ कहि छोड़ियै, खोटैं ग्रह जपु दानु।। 10।।

नर की अरु नल-नीर की, गति एकै करि जोइ।
जेतौ नीचो है चलै, तेतौ ऊँचौ होइ।। 11।।
बढ़त-बढ़त संपति-सलिलु, मन–सरोजु बढ़ि जाइ।
घटत-घटत सु न फिरि घटै, बरु समूल कुम्हिलाइ।। 12।।
जौ चाहत चटक न घटै, मैलौ होइ न मित्त
रज राजसु न छुवाइ तौ, नेह-चीकनौं चित्त।। 13।।
बुरौ बुराई जौ तजै, तौ चितु खरौ डरातु।
ज्यौं निकलंकु मयंकु लखि, गनैं लोग उतपातु।। 14।।
स्वारथु सुकृत न, श्रमु बृथा; देखि, बिहंग, बिचारि।
बाज, पराऐं पानि परि, तूँ पच्छीनु न मारि।। 15।।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों में सही विकल्प का चयन कीजिए।

1. बिहारी का जन्म-स्थान है–
   (क) मथुरा (ख) काशी (ग) ग्वालियर (घ) सीही
2. बिहारी की रचना है–
   (क) श्रीकृष्ण गीतावली (ख) अष्टयाम (ग) सतसई (घ) बैरवै रामायण
3. 'गागर में सागर' नामक उक्ति प्रसिद्ध है–
   (क) महादेवी वर्मा के लिए (ख) तुलसीदास के लिए
   (ग) बिहारीलाल के लिए (घ) सूरदास के लिए
4. कृष्ण की बाँसुरी किस रंग की हो जाती है?
   (क) पीले रंग की (ख) नीले रंग की
   (ग) इंद्रधनुष रंग की (घ) इनमें से कोई नहीं
5. किसी राज्य की प्रजा का दुःख कब बढ़ जाता है?
   (क) लोकतंत्रात्मक में (ख) इकहरे शासन में
   (ग) द्वैधशासन में (घ) इनमें से कोई नहीं।

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. बिहारी ने अपने दोहे में मंगलाचरण के रूप में किसकी वंदना की है ?
2. ''सोहत ओढ़ै पीतु पटु, स्याम सलौनैं गात'' – इस दोहे में पीला वस्त्र ओढ़े हुए श्रीकृष्ण का सौंदर्य कैसा प्रतीत हो रहा है ? वर्णन कीजिए।
3. कृष्ण की 'हरित बाँस की बाँसुरी' इंद्रधनुष के रंगों वाली क्यों हो जाती है ? स्पष्ट कीजिए।
4. ''ज्यौं ज्यौं बूड़े स्याम रंग, त्यौं-त्यौं उज्जलु होइ''– इस विरोधाभास को स्पष्ट कीजिए।
5. बिहारी ने मनुष्य की और पानी के नल की दशा को समान क्यों कहा है ? स्पष्ट कीजिए।
6. बिहारी ने अपने दोहे में किसकी निरर्थकता बताकर भगवान की सच्ची भक्ति पर बल दिया है?
7. बिहारी ने अपने दोहे में दो राजाओं के शासन से उत्पन्न कष्टों का वर्णन किस प्रकार किया है? स्पष्ट कीजिए।
8. बिहारीलाल का जीवन-परिचय देते हुए उनके प्रमुख रचना का उल्लेख कीजिए।
9. बिहारीलाल के साहित्यिक अवदान पर उल्लेख करते हुए उनकी भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।
10. ''नहिं परागु नहिं मधुर मधु, नहिं विकासु इहिं काल'' इस दोहे के माध्यम से बिहारीलाल ने किस प्रेमानुरक्त राजा को सचेत कर कर्तव्य-पथ पर अग्रसर किया ?

III. दिये गए पद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

(क) मेरी भव–बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।
जा तन की झाईं परै, स्यामु हरित–दुति होइ।।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ii) उपर्युक्त पद्यांश में बिहारी ने किसकी स्तुति की हैं?
(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ख) मोर–मुकुट की चंद्रिकनु, यौं राजत नँदनंद।
मनु ससि सेखर की अकस, किय सेखर सत चंद।।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का शीर्षक एवं रचनाकार का नाम लिखिए।
(ii) कृष्ण के मस्तक पर सुशोभित मयूर पंख की शोभा का तुलनात्मक वर्णन किसके साथ किया गया है ?
(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ग) सोहत ओढ़ै पीतु पटु, स्याम सलौनै गात।
मनौ नीलमनि सैल पर, आतपु पर्‍यौ प्रभात।।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

(ii) रेखांकित पद्यांश की व्याख्या कीजिए।

(iii) उपर्युक्त पद्यांश में प्रयुक्त रस, छंद एवं अलंकार को पहचानकर उनके नाम लिखिए।

(घ) जगतु जनायौ जिहिं सकलु, सो हरि जान्यौ नाँहि।
ज्यौं आँखिनु सबु देखियै, आँखि न देखी जाँहि।।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

(ii) उपर्युक्त पद्यांश के माध्यम से कवि भक्तों को किस बात की प्रेरणा दे रहें हैं ?

(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ङ) दुसह दुराज प्रजानु कौं, क्यौं न बढ़ै दुख–दंदु।
अधिक अँधेरौ जग करत, मिलि मावस, रबि चंदु।।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

(ii) 'रबि-चंदु' शब्द का समास-विग्रह करके समास का नाम लिखिए।

(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

IV. भाषा के रंग :

1. (i) 'जा तन की झाईं परै, स्यामु हरित-दुति होई।
   (ii) 'मनौ नीलमनि–सैल पर, आतपु पर्‌यौ प्रभात'
   उपर्युक्त पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार को पहचानकर स्पष्टीकरण सहित नाम लिखिए।
2. निम्नलिखित पंक्तियों में कौन-सा छंद है ? समझाइए –
   ''तो लगु या मन-सदन मैं, हरि आवै किहिं बाट।
   बिकट जटे जौ लगु निपट, खुटै न कपट-कपाट।।''
3. निम्नलिखित पदों में समास-विग्रह कीजिए तथा उनका नाम लिखिए –
   पीतु पटु, नीलमनि, मनसदन, दुराज, रवि-चंद, समूल

V. अनुभूति और अभिव्यक्ति :

1. बिहारीलाल के नीति के दोहों का निहितार्थ वर्तमान सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक परिप्रेक्ष्य में कहाँ तक प्रासंगिक हैं ? विचार व्यक्त कीजिए।
2. बिहारीलाल के भक्ति व नीतिपरक दोहों के अनुशीलनोपरांत 'सतसैया के दोहरे, ज्यों नावक के तीर, देखन में छोटे लगैं, घाव करैं गंभीर' की उक्ति से आप कहाँ तक सहमत हैं? आपस में विमर्श कीजिए।

शब्दार्थ

भव-बाधा – सांसारिक बाधाएँ। **हरौ** – दूर करो, निवारण करो। **नागरि** – चतुर। **झाईं** – परछाई। **परै** – पड़ने पर। **हरित–दुति** – हरे रंग की कांति, प्रसन्नचित्त, (हृत-द्युति – जिसकी कांति छीन ली गई हो, निष्प्रभ)। **स्यामु** – श्रीकृष्ण, काला रंग, मलिनता। **चंद्रिकनु** – चंद्रमाओं से। **राजत** – शोभित। **अकस** – प्रतिस्पर्धा, ईर्ष्या। **सलौने** – सुंदर। **सैल** – पर्वत। **आतपु** – धूप, प्रकाश। **ओठ** – होंठ (ऊपर का)। **अधर** – होंठ (नीचे का)। **दीठि** – दृष्टि। **अनुरागी** – प्रेमी। **बूड़े** – डूबता है। **मन-सदन** – मनरूपी घर। **बाट** – रास्ता। **विकट जटे** – दृढ़ता से बंद। **जौ लगु** – तब तक। **खुटैं** – खुलेंगे। **कपट-कपाट** – कपटरूपी किवाड़। **जनायौ** – ज्ञान कराया। **सकलु** – संपूर्ण। **जप** – जपना। **छापा** – चंदन का छापा लगाना, शंख, चक्र आदि का चिह्न जिसे वैष्णव लोग शरीर पर लगाते हैं। **सरै** – सिद्ध होता है। **मन काँचै** – कच्चे मन वाला। **साँचे राँचै रामु** – राम तो सच्ची भक्ति से अनुरक्त होते है। **दुसह** – असह्य। **दुराज** – दो राजाओं का शासन, द्वैधशासन। **दुख-दंदु** – दो दुःखों का उत्कर्ष, दुहरा दुःख। **अँधेरौ** – अंधाकार, अँधेरा। **मावस** – अमावस्या। **सनमानु** – सम्मान, आदर। **खोटैं ग्रह** – खराब ग्रह, अनिष्टकारी ग्रह। **संपति सलिलु** – संपत्तिरूपी जल। **मन-सरोजु** – मनरूपी कमल। **बरु** – भले ही। **समूल** – जड़ सहित। **कुम्हिलाइ** – मुरझा जाए। **रज** – धूल। **राजसु** – रजोगुण। **नेह** – प्रेम, तेल। **बुरौ** – बुरा आदमी। **खरौ** – अधिक। **मयंकु** – चन्द्रमा को। **लखि** – देखकर। **गनैं** – गिनते हैं। **उतपातु** – अपशकुन। **बिहंग** – पक्षी, दूरदर्शी। **पानि** – हाथ।

■

मैथिलीशरण गुप्त

(सन् 1886–1964 ई.)

मैथिलीशरण गुप्त का जन्म सन् 1886 ई. में **चिरगाँव, झाँसी** में हुआ था। इनके पिता का नाम सेठ रामचरण था, जो स्वयं श्रेष्ठ कवि थे। काव्य-रचना की ओर उनका झुकाव बाल्यावस्था से ही था। आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के संपर्क में आकर इनकी काव्य रचना निखर उठी और आगे चलकर वे **राष्ट्रकवि** के रूप में जाने गए। गुप्त जी पर महात्मा गाँधी और उनके स्वतंत्रता-आंदोलन का अत्यधिक प्रभाव पड़ा। मैथिलीशरण गुप्त का निधन सन् 1964 ई. में हुआ।

गुप्त जी की ख्याति रामचरित पर आधारित महाकाव्य **साकेत** के कारण है। इनकी अन्य रचनाओं में **जयद्रथ-वध, भारत-भारती, पंचवटी, यशोधरा, द्वापर, सिद्धराज, त्रिपथगा, कुणाल-गीत, नहुष, विष्णुप्रिया, हिडिम्बा, रंग में भंग, बक-संहार, वीरांगना, मेघनाद-वध** आदि हैं। इसके अतिरिक्त '**चंद्रहास**', '**तिलोत्तमा**' और '**अनघ** गीति-नाट्य हैं। 'भारत-भारती' गुप्त जी का प्रसिद्ध काव्य-संग्रह है। गुप्त जी के काव्य में सर्वत्र आदर्श और यथार्थ का सुंदर समन्वय है। देश-काल के अनुसार बदलती भावनाओं तथा विचारों को अपनी रचना में स्थान देने की इनमें क्षमता है।

गुप्त जी के काव्य का उद्देश्य लोक-सेवा ही रहा है। भारतीय संस्कृति के उपासक होने के कारण गुप्त जी के हृदय में नारियों के प्रति अटूट-श्रद्धा और सहानुभूति है। 'उर्मिला' और 'यशोधरा' जैसे काव्यों में उपेक्षित नारी पात्र का सफल चित्रण कर गुप्त जी ने एक नवीन परंपरा को जन्म दिया है।

गुप्त जी की भाषा शुद्ध तथा परिष्कृत खड़ीबोली है। खड़ीबोली में सरल तथा मधुर कविता करके इन्होंने इस धारणा को निर्मूल सिद्ध कर दिया है कि खड़ीबोली में ब्रजभाषा जैसी मधुरता नहीं आ सकती है। इनकी भाषा में कहीं-कहीं संस्कृतनिष्ठ शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। गुप्तजी के काव्य में गीति-काव्य के तत्त्वों को अपनाने के कारण सरसता आयी है, इन्होंने प्रबंध और मुक्तक दोनों शैलियों में रचना की। कवित्व विकास के साथ

इनकी भाषा का बहुत परिमार्जन हुआ, उसमें धीरे-धीरे लाक्षणिकता, संगीत और लय के तत्त्वों का प्राधान्य हो गया तथा लोकोक्तियों और मुहावरों के प्रयोग से इनकी काव्य भाषा और भी जीवंत हो उठी है। गुप्त जी के काव्य में अलंकारों का भाव-सौंदर्य-वर्धक एवं स्वाभाविक प्रयोग हुआ है। सभी प्रकार के प्रचलित छंदों में इन्होंने काव्य रचना की है। 'हरिगीतिका' इनका प्रिय छंद है।

गुप्त जी राष्ट्रीय-चेतना और इसके विकसित होते हुए रूप के प्रति सजग थे। इसकी स्पष्ट झलक उनके काव्य में मिलती है। आधुनिक हिंदी काव्य-जगत में वे **राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना के प्रतिनिधि** कवि स्वीकार किए गए। इन्होंने राष्ट्र-भावना को जगाया और उसकी चेतना को वाणी दी। वे सच्चे अर्थों में आधुनिक भारत के राष्ट्रकवि थे।

प्रस्तुत शीर्षक ***'भारत माता का मंदिर यह'*** *में कवि ने भारत देश को भारत माता के मंदिर के प्रतीक के रूप में चित्रित किया है। भारत ऐसा देश है जहाँ सभी लोगों में समानता और सद्भावना है। यहाँ सभी जाति, धर्म, संप्रदाय के लोग किसी भेदभाव के बिना समान अधिकार और सम्मान के साथ रहते है। यह देश सभी तीर्थों का तीर्थ है। इसलिए हम अपने हृदय को पवित्र कर लें, सभी से मित्रवत् व्यवहार करें। हमारे समाज में जो भी आदर्श है, उन्हें ग्रहण कर उत्तम चरित्र का निर्माण करें। इस कविता में देश-प्रेम की भावना मुखरित हुई है।*

■

भारत माता का मंदिर यह

भारत माता का मंदिर यह
समता का संवाद जहाँ,
सबका शिव कल्याण यहाँ है
पावें सभी प्रसाद यहाँ।
जाति-धर्म या संप्रदाय का,
नहीं भेद-व्यवधान यहाँ,
सबका स्वागत, सबका आदर
सबका सम सम्मान यहाँ।
राम, रहीम, बुद्ध, ईसा का,
सुलभ एक सा ध्यान यहाँ,
भिन्न-भिन्न भव संस्कृतियों के
गुण गौरव का ज्ञान यहाँ।
नहीं चाहिए बुद्धि बैर की
भला प्रेम का उन्माद यहाँ
सबका शिव कल्याण यहाँ है,
पावें सभी प्रसाद यहाँ।
सब तीर्थों का एक तीर्थ यह
हृदय पवित्र बना लें हम।
आओ यहाँ अजातशत्रु बन,
सबको मित्र बना लें हम।
रेखाएँ प्रस्तुत हैं, अपने
मन के चित्र बना लें हम।
सौ-सौ आदर्शों को लेकर
एक चरित्र बना लें हम।
बैठो माता के आँगन में
नाता भाई-बहन का

समझे उसकी प्रसव वेदना
वही लाल है माई का
एक साथ मिल बाँट लो
अपना हर्ष विषाद यहाँ है,
सबका शिव कल्याण यहाँ है,
पावें सभी प्रसाद यहाँ।
मिला सेव्य का हमें पुजारी
सकल काम उस न्यायी का
मुक्ति लाभ कर्तव्य यहाँ है
एक एक अनुयायी का
कोटि-कोटि कंठों से मिलकर
उठे एक जयनाद यहाँ
सबका शिव कल्याण यहाँ है
पावें सभी प्रसाद यहाँ।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों में सही विकल्प का चयन कीजिए–

1. मैथिलीशरण गुप्त का जन्म किस जिले में हुआ था ?
   (क) झाँसी (ख) बलिया (ग) ग्वालियर (घ) आजमगढ़
2. 'भारत-भारती' के रचनाकार हैं –
   (क) महादेवी वर्मा (ख) भारतेंदु हरिश्चंद्र
   (ग) मैथिलीशरण गुप्त (घ) रामनरेश त्रिपाठी
3. साहित्य में किस कवि को 'राष्ट्रकवि' का सम्मान प्राप्त हुआ है ?
   (क) केदारनाथ सिंह (ख) मैथिलीशरण गुप्त
   (ग) महादेवी वर्मा (घ) सुमित्रानंदन पंत
4. मैथिलीशरण गुप्त की रचना है –
   (क) यामा (ख) साकेत
   (ग) जमीन पक रही है (ग) हल्दी-घाटी
5. "सबका स्वागत, सबका आदर
   सबका सम सम्मान यहाँ"
   इस काव्य-पंक्ति में अलंकार है –
   (क) यमक (ख) अनुप्रास (ग) श्लेष (घ) रूपक

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. कवि ने किसे 'भारत माता का मंदिर' कहकर संबोधित किया है ?
2. भारत देश को 'सब तीर्थों का एक तीर्थ' कहने का आशय स्पष्ट कीजिए।
3. 'भारत माता का यह मंदिर' इस शीर्षक में उल्लिखित भारत देश की पाँच विशेषताएँ बताइए।
4. 'सकल काम उस न्यायी का' इस पंक्ति में कवि ने किस सत्ता की ओर संकेत किया हैं?
5. मैथिलीशरण गुप्त के साहित्यिक योगदान का उल्लेख करते हुए उनकी भाषा–शैली पर प्रकाश डालिए।
6. मैथिलीशरण गुप्त का संक्षिप्त जीवन-परिचय तथा इनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए।
7. मैथिलीशरण गुप्त की कविता 'भारत माता का मंदिर यह' का केंद्रीय भाव लिखिए।
8. मैथिलीशरण गुप्त इस कविता के माध्यम से पाठकों को क्या संदेश देना चाहते हैं ?
9. हमें अपने चरित्र का निर्माण किस आधार पर करना चाहिए ? स्पष्ट कीजिए।
10. 'हर्ष-विषाद' से क्या तात्पर्य है ? कवि इस शब्द के माध्यम से क्या कहना चाहता है ?
11. प्रस्तुत कविता से आपको क्या शिक्षा मिलती है ?

III. दिये गए पद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

(क) भारत माता का मंदिर यह
समता का संवाद जहाँ,
सबका शिव कल्याण यहाँ है
पावें सभी प्रसाद यहाँ।
जाति-धर्म या संप्रदाय का,
नहीं भेद-व्यवधान यहाँ,
सबका स्वागत, सबका आदर
सबका सम सम्मान यहाँ।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) कवि ने किसे भारत माता के मंदिर का प्रतीक माना है ?

(ख) नहीं चाहिए बुद्धि बैर की
भला प्रेम का उन्माद यहाँ
सबका शिव कल्याण यहाँ है,
पावें सभी प्रसाद यहाँ।
सब तीर्थों का एक तीर्थ यह

हृदय पवित्र बना लें हम।
आओ यहाँ अजातशत्रु बन,
सबको मित्र बना लें हम।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) अजातशत्रु से कवि का क्या अभिप्राय है ?

(ग) रेखाएँ प्रस्तुत हैं, अपने
मन के चित्र बना लें हम।
सौ-सौ आदर्शों को लेकर
एक चरित्र बना लें हम।
बैठो माता के आँगन में
नाता भाई-बहन का
समझे उसकी प्रसव वेदना
वही लाल है माई का
एक साथ मिल बाँट लो
अपना हर्ष विषाद यहाँ है,
पावें सभी प्रसाद यहाँ।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) "एक साथ मिल बाँट लो, अपना हर्ष विषाद यहाँ है" पंक्ति से कवि का क्या आशय है?

(घ) मिला सेव्य का हमें पुजारी
सकल काम उस न्यायी का
मुक्ति लाभ कर्तव्य यहाँ है
एक एक अनुयायी का
कोटि-कोटि कंठों से मिलकर
उठे एक जयनाद यहाँ
सबका शिव कल्याण यहाँ है
पावें सभी प्रसाद यहाँ।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) 'कोटि-कोटि कंठों से मिलकर' पंक्ति में कौन-सा अलंकार है ? स्पष्ट कीजिए।

IV. भाषा के रंग :

1. निम्नलिखित पदों का समास-विग्रह कीजिए तथा समास का नाम लिखिए–
   अजातशत्रु, हर्ष-विषाद, जयनाद, भाई-बहन
2. निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग और मूल-शब्द पृथक करके लिखिए–
   संवाद, संप्रदाय, सुलभ, सम्मान, अजात
3. निम्नलिखित पंक्तियों में स्पष्टीकरण सहित अलंकार का नाम लिखिए।
   (i) सबका स्वागत, सबका आदर
   सबका सम सम्मान यहाँ।
   (ii) भिन्न-भिन्न भव संस्कृतियों के
   गुण गौरव का ज्ञान यहाँ।
4. निम्नलिखित पंक्तियों में रस पहचानिए एवं उनके स्थायीभाव का उल्लेख कीजिए।
   (i) राम, रहीम, बुद्ध, ईसा का, सुलभ एक सा ध्यान यहाँ,
   भिन्न-भिन्न भव संस्कृतियों के, गुण गौरव का ज्ञान यहाँ।
   (ii) मिला सेव्य का हमें पुजारी, सकल काम उस न्यायी का
   मुक्ति लाभ कर्तव्य यहाँ है, एक एक अनुयायी का।
5. निम्नलिखित शब्दों के विलोम लिखिए –
   सम्मान, सुलभ, मित्र, विषाद।

V. अनुभूति और अभिव्यक्ति :

1. 'भारत माता का यह मंदिर' शीर्षक में वर्णित विशेषताओं वाले अनुपम भारत देश में जन्म पाकर आप कैसा महसूस करते हैं ? कारण सहित स्पष्ट कीजिए तथा अपने देश की विलक्षणताओं से संदर्भित अन्य कविताओं का संग्रह कर उन्हें कंठस्थ कीजिए।
2. 'भारत माता का यह मंदिर' इस कविता में कवि ने भेदभाव व वैमनस्यता से रहित जिस सौहार्दपूर्ण तथा समतामूलक समाज की कल्पना की है– क्या वह आज के परिवेश में संभव है ? आपस में विचार कीजिए।

शब्दार्थ

संवाद – वार्तालाप। **सुलभ** – जो सरलता से मिल जाए, सरल, सहज। **गौरव** – महत्त्व, बड़प्पन। **बैर** – शत्रुभाव, दुश्मनी। **समता** – समानता। **कल्याण** – भलाई। **प्रसाद** – कृपा। **व्यवधान** – बाधा। **आदर** – सम्मान। **सम-सम्मान** – बराबर सम्मान। **भिन्न-भिन्न** – विविध। **अजातशत्रु** – जिसका कोई शत्रु न हो, शत्रुहीन। **मित्र** – दोस्त। **वेदना** – कष्ट। **हर्ष** – खुशी। **विषाद** – कष्ट। **कोटि-कोटि** – करोड़ों। **अनुयायी** – अनुसरण करने वाले। **जयनाद** – विजय घोष, विजय स्वर। **संप्रदाय** – धार्मिक मत। **भव** – संसार। **उन्माद** – बावलापन, अत्यधिक अनुराग। **लाल** – पुत्र। **सेव्य** – सेवा करने योग्य। **भला** – नेक, अच्छा। **प्रेम** – स्नेह, प्यार।

■

माखनलाल चतुर्वेदी

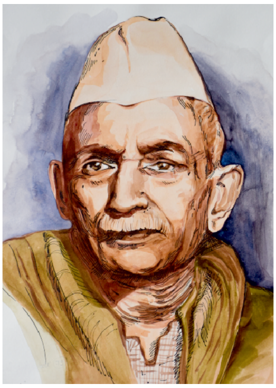

(सन् 1889–1968 ई.)

राष्ट्रीय सांस्कृतिक धारा के प्रमुख कवि माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म सन् 1889 ई. में मध्य प्रदेश के **होशंगाबाद** जिले के **बाबई** नामक गाँव में हुआ। प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद उन्होंने घर पर ही संस्कृत, बांग्ला, गुजराती और अंग्रेजी का अध्ययन किया। उन्होंने कुछ दिनों तक अध्यापन कार्य भी किया। वे एक सजग, संवेदनशील एवं उत्साही व्यक्ति थे और आरंभ से ही देश सेवा के प्रति जागरूक थे। गणेश शंकर विद्यार्थी की प्रेरणा से उन्होंने राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लिया और कई बार जेल भी गए। वे सन् 1913 ई. में सुप्रसिद्ध मासिक पत्रिका 'प्रभा' के संपादक के रूप में नियुक्त हुए। सागर विश्वविद्यालय ने उन्हें डी0लिट्0 की उपाधि से सम्मानित किया। सन् 1943 ई. में उन्होंने हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष पद को सुशोभित किया। अपने काव्य में नव जागरण एवं क्रांति का शंख फूँकने वाले इस कवि का सन् 1968 ई. में निधन हो गया।

माखनलाल चतुर्वेदी की मुख्य रचनाएँ हैं– **हिमकिरीटिनी, हिमतरंगिनी, माता, युगचरण, समर्पण, वेणु लो गूँजे धरा**। **'हिमतरंगिनी'** को 'हिंदी साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त उन्होंने नाटक, कहानी, निबंध और संस्मरण भी लिखे। उनके गद्य–काव्य की अमर कृति **'साहित्य–देवता'** भावनात्मक निबंधों का संग्रह है। **चिंतक की लाचारी** और **आत्मदीक्षा** में उनके ओजस्वी एवं विचारशील भाषण संगृहीत हैं। **कृष्णार्जुन–युद्ध**, **समय के पाँव**, **वनवासी** और **कला का अनुवाद** उनकी अन्य रचनाएँ हैं।

उनके काव्य का मूल स्वर राष्ट्रीयतावादी है, जिसमें त्याग, बलिदान, कर्त्तव्य और समर्पण की भावना है। उनकी रचनाओं में देश के प्रति गंभीर प्रेम और देश कल्याण के लिए आत्मोत्सर्ग की उत्कट भावना दिखाई देती है। उनकी काव्य भाषा खड़ी बोली है, जिसमें संस्कृत तथा फारसी शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। देश–प्रेम के अतिरिक्त प्रणय–निवेदन तथा रहस्य के गीत भी जहाँ–तहाँ मिल जाते हैं। देश–प्रेम से जुड़ी रचनाओं के कारण

उन्हें **'एक भारतीय आत्मा'** के रूप में भी जाना जाता है। 'पुष्प की अभिलाषा' शीर्षक उनकी कविता जनता की जुबान पर चढ़कर बोलती है।

युगचरण *से संकलित* ***पुष्प की अभिलाषा,*** *कविता में पुष्प कहता है कि मेरी यह इच्छा नहीं है कि मुझे देवांगनाओं के गहनों में गूँथा जाय। न मैं चाहता हूँ कि कोई प्रेमी मेरी माला बनाकर अपनी प्रेमिका को भेंट कर उसे प्रसन्न करे। न मैं सम्राटों के शव पर चढ़ना चाहता हूँ और न ही मेरी इच्छा देवताओं के सिर पर चढ़ने की है। मेरी तो एकमात्र अभिलाषा है कि हे वनमाली! तू मुझे तोड़कर उस मार्ग पर फेंक देना जिस मार्ग से होकर मातृभूमि पर मिटने वाले अनेक वीर जा रहे हों।*

'हिमकिरीटिनी' *काव्य-संग्रह से संकलित 'जवानी' शीर्षक कविता में भारतीय युवकों को उत्साहित कर उन्हें देश के लिए मर-मिटने को प्रेरित किया गया है। कवि नवयुवकों को संबोधित करते हुए कहता है कि तुम्हारे हृदय में असीम उत्साह है। तुम्हारे कंधों पर देशहित का दायित्व है अतः तुम्हें देश के बलिदान के लिए तत्पर रहना चाहिए। कवि ने देश के युवकों को स्वाभिमान के साथ जीने तथा अवसर पड़ने पर आत्म-बलिदान के लिए तत्पर रहने की प्रेरणा दी है।*

■

पुष्प की अभिलाषा

चाह नहीं, मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ,
चाह नहीं प्रेमी-माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ,
चाह नहीं सम्राटों के शव पर हे हरि डाला जाऊँ,
चाह नहीं देवों के सिर पर चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ,
मुझे तोड़ लेना बनमाली,
उस पथ में देना तुम फेंक।
मातृ-भूमि पर शीश चढ़ाने,
जिस पथ जावें वीर अनेक।

जवानी

प्राण अंतर में लिए, पागल जवानी!
कौन कहता है कि तू
विधवा हुई, खो आज पानी ?
चल रहीं घड़ियाँ,
चले नभ के सितारे,
चल रहीं नदियाँ,
चले हिम-खंड प्यारे;
चल रही है साँस,
फिर तू ठहर जाए?
दो सदी पीछे कि
तेरी लहर जाए ?

पहन ले नर–मुंड–माला,
उठ, स्वमुंड सुमेरु कर ले;
भूमि-सा तू पहन बाना आज धानी
प्राण तेरे साथ हैं, उठ री जवानी!

द्वार बलि का खोल
चल, भूडोल कर दें,
एक हिमगिरि एक सिर
का मोल कर दें,
मसल कर, अपने
इरादों–सी, उठा कर,
दो हथेली हैं कि
पृथ्वी गोल कर दें ?

रक्त है ? या है नसों में क्षुद्र पानी!
जाँच कर, तू सीस दे-देकर जवानी ?

वह कली के गर्भ से फल
रूप में, अरमान आया!
देख तो मीठा इरादा, किस
तरह, सिर तान आया!
डालियों ने भूमि रुख लटका
दिए फल, देख आली!
मस्तकों को दे रही
संकेत कैसे, वृक्ष-डाली!

फल दिए ? या सिर दिए ? तरु की कहानी
गूँथकर युग में, बताती चल जवानी।

श्वान के सिर हो
चरण तो चाटता है!
भौंक ले – क्या सिंह

को वह डाँटता है ?
रोटियाँ खायीं कि
साहस खो चुका है,
प्राणि हो, पर प्राण से
वह जा चुका है।

तुम न खेलो ग्राम-सिंहों में भवानी!
विश्व की अभिमान मस्तानी जवानी!

ये न मग हैं, तव
चरण की रेखियाँ हैं,
बलि दिशा की अमर
देखा-देखियाँ हैं।
विश्व पर, पद से लिखे
कृति लेख हैं ये,
धरा तीर्थों की दिशा
की मेख हैं ये।

प्राण रेखा खींच दे, उठ बोल रानी,
री मरण के मोल की चढ़ती जवानी।

टूटता-जुड़ता समय
'भूगोल' आया,
गोद में मणियाँ समेट
'खगोल' आया,
क्या जले बारूद ?
हिम के प्राण पाए!
क्या मिला ? जो प्रलय
के सपने न आए।
धरा ? यह तरबूज
है, दो फाँक कर दे,

चढ़ा दे स्वातंत्र्य-प्रभु पर अमर पानी!
विश्व माने–तू जवानी है, जवानी!

लाल चेहरा है नहीं
फिर लाल किसके ?
लाल खून नहीं ?
अरे, कंकाल किसके ?
प्रेरणा सोयी कि
आटा-दाल किसके ?
सिर न चढ़ पाया
कि छापा-माल किसके ?

वेद की वाणी कि हो आकाशवाणी,
धूल है जो जग नहीं पायी जवानी।

विश्व है असि का ?
नहीं संकल्प का है;
हर प्रलय का कोण,
काया-कल्प का है,
फूल गिरते, शूल
शिर ऊँचा लिए हैं;
रसों के अभिमान
को नीरस किए हैं !

खून हो जाए न तेरा देख, पानी!
मरण का त्योहार, जीवन की जवानी।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए –

1. माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म किस जिले में हुआ था ?
   (क) झाँसी (ख) बलिया (ग) आजमगढ़ (घ) होशंगाबाद
2. 'हिमकिरीटिनी' रचना के रचनाकार हैं –
   (क) जयशंकर प्रसाद (ख) भारतेंदु हरिश्चंद्र
   (ग) माखनलाल चतुर्वेदी (घ) महादेवी वर्मा
3. 'कर्मवीर' साप्ताहिक पत्र के संपादक थे –
   (क) जयशंकर प्रसाद (ख) महादेवी वर्मा
   (ग) मैथिलीशरण गुप्त (घ) माखनलाल चतुर्वेदी
4. 'युग चरण' के रचनाकार हैं –
   (क) माखनलाल चतुर्वेदी (ख) केदारनाथ सिंह
   (ग) श्यामनारायण पांडेय (घ) मैथिलीशरण गुप्त
5. 'पुष्प की अभिलाषा' शीर्षक कविता किस काव्य-संग्रह से ली गई है ?
   (क) युगचरण (ख) यामा (ग) साकेत (घ) रश्मिरथी

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. 'पुष्प की अभिलाषा' कविता में पुष्प किसका प्रतीक है ?
2. पुष्प की अभिलाषा' शीर्षक कविता का केंद्रीय भाव लिखिए।
3. कविता में पुष्प को किन चीजों की चाह नहीं है और क्यों ?
4. 'जवानी' कविता के माध्यम कवि नवयुवकों को क्या संदेश देना चाहते हैं? स्पष्ट कीजिए।
5. 'जीवन की जवानी को मरण का त्योहार' कहने का भाव स्पष्ट कीजिए।
6. साहसहीन युवकों को 'ग्राम-सिंह' कहकर संबोधित करने का आशय स्पष्ट कीजिए।
7. माखनलाल चतुर्वेदी का संक्षिप्त जीवन-परिचय तथा उनकी भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।
8. माखनलाल चतुर्वेदी के साहित्यिक अवदान पर प्रकाश डालिए तथा उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए।
9. माखनलाल चतुर्वेदी के ओजस्वी भाषण किन ग्रंथों में संगृहीत है ?
10. माखनलाल चतुर्वेदी के काव्यों का मूल–स्वर क्या है ?
11. माखनलाल चतुर्वेदी की किस रचना को 'हिंदी साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया ?

III. दिये गए पद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) चाह नहीं, मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ,
चाह नहीं प्रेमी-माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ,
चाह नहीं सम्राटों के शव पर हे हरि डाला जाऊँ,
चाह नहीं देवों के सिर पर चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ,
मुझे तोड़ लेना बनमाली,
उस पथ में देना तुम फेंक।
मातृ-भूमि पर शीश चढ़ाने,
जिस पथ जावें वीर अनेक।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) उपर्युक्त पद्यांश का काव्य-सौंदर्य लिखिए।

(ख) प्राण अंतर में लिए, पागल जवानी!
कौन कहता है कि तू
विधवा हुई, खो आज पानी ?
चल रहीं घड़ियाँ,
चले नभ के सितारे,
चल रहीं नदियाँ,
चले हिम-खण्ड प्यारे;
चल रही है साँस,
फिर तू ठहर जाए ?
दो सदी पीछे कि
तेरी लहर जाए ?
पहन ले नर-मुंड-माला,
उठ, स्वमुंड सुमेरु कर ले;
भूमि-सा तू पहन बाना आज धानी
प्राण तेरे साथ हैं, उठा री जवानी!

(i) उपर्युक्त पद्यांश का शीर्षक व कवि का नाम लिखिए।
(ii) उपर्युक्त पद्यांश में कवि ने युवकों को क्या संदेश दिया है ?
(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ग) वह कली के गर्भ से फल
रूप में, अरमान आया!
देख तो मीठा इरादा, किस
तरह, सिर तान आया!
डालियों ने भूमि रुख लटका
दिए फल, देख आली!
मस्तकों को दे रही
संकेत कैसे, वृक्ष-डाली!
<u>फल दिए ? या सिर दिए ? तरु की कहानी</u>
<u>गूँथकर युग में, बताती चल जवानी।</u>

(i) उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) 'भूमि' और 'आली' शब्द के दो–दो पर्यायवाची बताइए।

(घ) श्वान के सिर हो
चरण तो चाटता है!
भौंक ले – क्या सिंह
को वह डाँटता है ?
रोटियाँ खायीं कि
साहस खो चुका है,
प्राणि हो, पर प्राण से
वह जा चुका है।
<u>तुम न खेलो ग्राम-सिंहों में भवानी!</u>
<u>विश्व की अभिमान मस्तानी जवानी!</u>

(i) उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ii) 'श्वान के सिर हो, चरण तो चाटता है!'इस पंक्ति में निहित भाव को स्पष्ट कीजिए।
(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ङ) ये न मग हैं, तव
चरण की रेखियाँ हैं,
बलि दिशा की अमर
देखा-देखियाँ हैं।

विश्व पर, पद से लिखे
        कृति लेख हैं ये,
धरा तीर्थों की दिशा
        की मेख हैं ये।
प्राण रेखा खींच दे, उठ बोल रानी,
री मरण के मोल की चढ़ती जवानी।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का शीर्षक एवं रचयिता का नाम लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) कवि ने युवकों को 'जवानी' कविता के माध्यम से क्या संदेश दिया है ?

(च) विश्व है असि का ?
नहीं संकल्प का है;
हर प्रलय का कोण,
काया–कल्प का है,
        फूल गिरते, शूल
        शिर ऊँचा लिए हैं;
        रसों के अभिमान
        को नीरस किए हैं !
खून हो जाए न तेरा देख, पानी!
मरण का त्योहार, जीवन की जवानी।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का शीर्षक एवं कवि का नाम बताइए।

(ii) उपर्युक्त पद्यांश का काव्य-सौंदर्य लिखिए।

(iii) रेखांकित अंश का व्याख्या लिखिए।

IV. भाषा के रंग :

(क) उपमा अलंकार की परिभाषा देते हुए पाठ से एक उदाहरण दीजिए।

(ख) 'लाल चेहरा है नहीं पर लाल किसके' इस पंक्ति में प्रयुक्त रस को स्पष्ट कीजिए।

(ग) वीर रस की परिभाषा देते हुए पाठ से एक उदाहरण लिखिए।

(घ) कविता में आए निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ तथा वाक्य प्रयोग कीजिए–
नसों में पानी होना, चरण चाटना, कायाकल्प होना, खून पानी होना।

V. अनुभूति एवं अभिव्यक्ति :

1. 'जवानी' कविता को हृदयंगम कर कक्षा में सस्वर वाचन कीजिए।
2. ''विश्व है असि का?, नहीं संकल्प का है''; कवि का यह विचार आज के परिप्रेक्ष्य में कितना औचित्यपूर्ण है? क्या आप इस विचार से सहमत हैं? विचार व्यक्त कीजिए।

शब्दार्थ

चाह – इच्छा, कामना। **सुरबाला** – देवांगना, अप्सरा। **सम्राटों** – चक्रवर्ती राजाओं। **इठलाऊँ** – गर्व करूँ। **बनमाली** – माली। **बिंध** – गुंथकर। **शव** – मृत शरीर। **स्वमुंड** – अपना सिर। **सुमेरु** – एक पुराणोक्त पर्वत जो सोने का कहा गया है, बहुत ऊँचा, जपमाला के बीच का वह बड़ा दाना जिससे जप प्रारंभ व समाप्त होता है। **धानी** –धानों की हरियाली। **भूडोल** – पृथ्वी का काँपना, भूकंप। **इरादों** – संकल्पों, इच्छाओं, विचारों। **क्षुद्र** – तुच्छ। **अरमान** – अभिलाषा। **आली** – सखी। **श्वान** – कुत्ता। **ग्राम–सिंहों** – कुत्तों। **भवानी** – दुर्गा। **मग** – मार्ग। **तव** – तुम्हारे। **रेखियां** – रेखाएँ। **बलि-दिशा** – बलिदान की दिशा। **कृति** – लेख–कर्मो के लेख। **भूगोल** – भूमंडल। **खगोल** – आकाश मंडल। **स्वातंत्र्य प्रभु** – स्वतंत्रतारूपी ईश्वर। **कंकाल** – हड्डी का ढाँचा। **असि** – तलवार। **कायाकल्प** – पूर्ण परिवर्तन। **लाल** – लाल रंग, पुत्र। **शूल** – काँटा। **नीरस** – रस विहीन, आभाहीन।

■

सुमित्रानंदन पंत

(सन् 1900–1977 ई.)

सुमित्रानंदन पंत प्रकृति के सुकुमार कवि हैं। छायावादी काव्य की संपूर्ण कोमलता उनके काव्य में साकार हो उठी है। सुमित्रानंदन पंत का जन्म सन् 1900 ई. में **कौसानी, अल्मोड़ा** (उत्तराखंड) में हुआ था। जन्म के पश्चात् ही उनकी माता का निधन हो गया। उनका लालन-पालन प्रकृति की गोद में हुआ। प्रारंभिक शिक्षा गाँव की पाठशाला में हुई। हाईस्कूल क्वींस कॉलेज, वाराणसी से पास करने के बाद उन्होंने प्रयाग के म्योर सेंट्रल कॉलेज में प्रवेश लिया। किंतु सन् 1921 ई. में असहयोग आंदोलन प्रारंभ होने पर कालेज छोड़कर साहित्य साधना में लग गए। पंत जी ने संस्कृत, अंग्रेजी तथा बांग्ला का गहन अध्ययन किया। उपनिषद्, दर्शन तथा आध्यात्मिक साहित्य की ओर भी उनकी रुचि रही। संगीत से भी इन्हें प्रेम था। इनकी प्रथम रचना **गिरजे का घंटा** सन् 1916 ई. में सामने आई। अल्मोड़ा में पढ़ते समय ही उन्होंने अपना नाम गुसाईंदत्त से बदलकर सुमित्रानंदन पंत रख लिया। अपने कोमल स्वभाव के कारण ये सत्याग्रह में सम्मिलित नहीं हुए और साहित्य-साधना में संलग्न हो गए। सन् 1931 ई. में ये कालाकांकर (प्रतापगढ़) आ गए। वहाँ उन्होंने मार्क्सवाद का अध्ययन किया और प्रगतिशील विचारों की पत्रिका **रूपाभ** निकाली। सन् 1950 ई. में 'आल इंडिया रेडियो' के परामर्शदाता के पद पर नियुक्त हुए और सन् 1957 ई. तक प्रत्यक्ष रूप से रेडियो से संबद्ध रहे। साहित्य अकादमी ने उनकी रचना **कला और बूढ़ा चाँद** के लिए उन्हें पुरस्कृत किया। भारत-सरकार ने उन्हें 'पद्मभूषण' अलंकरण से सम्मानित किया। **चिदम्बरा** के लिए भारतीय ज्ञानपीठ तथा 'लोकायतन' पर सोवियत लैंड नेहरु पुरस्कार से भी उन्हें सम्मानित किया गया। पंत का निधन 1977 ई. को हुआ।

उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं – **वीणा, ग्रंथि, पल्लव, अतिमा, गुंजन, युगांत, युगवाणी, ग्राम्या, स्वर्णकिरण, स्वर्णधूलि, उत्तरा, कला और बूढ़ा चाँद, युगपथ, शिल्पी, चिदम्बरा, लोकायतन, रश्मिबंध, रजत शिखर** आदि। नौका विहार कविता उन्होंने कालाकांकर (प्रतापगढ़) में रहते हुए लिखी। इसके अतिरिक्त पंत जी ने उमर खय्याम की रुबाइयों का हिंदी अनुवाद **मधु ज्वाल** नाम से किया और अनेक संग्रहों की भूमिकाएँ भी लिखी हैं, जो उनके आलोचक रूप को उजागर करती है।

पंत के काव्य का विकास तीन रूपों में हुआ है– छायावादी कवि के रूप में, प्रगतिवादी कवि के रूप में और आध्यात्मवादी कवि के रूप में। उनके काव्य का विकास 'वीणा' से प्रारंभ होकर 'पल्लव' एवं 'गुंजन' में विकसित होता हुआ 'युगांत' पर समाप्त हो जाता है। छायावाद के सभी गुण उनके काव्य-संग्रहों में मिलते हैं। प्रकृति-प्रेम, विरह-वेदना, प्रेम-सौन्दर्य का चित्रण और पलायनवादी भावनाएँ उनके मुख्य प्रतिपाद्य हैं। पंत की कविताओं का अंतिम चरण महर्षि अरविंद से प्रभावित रहा है। 'स्वर्णधूलि', 'स्वर्णकिरण', लोकायतन इस समय की प्रमुख रचनाएँ हैं।

कोमल कल्पना से परिपूर्ण काव्य-रचना के कारण उन्हें 'प्रकृति का सुकुमार कवि' कहा जाता है। पंत की प्रारंभिक रचनाओं में छायावादी कविता की प्रवृत्तियों के अनुरूप विरह-वेदना की प्रधानता है – जैसे– **"वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान। निकल कर आँखों से चुपचाप, बही होगी कविता अनजान।।"**

पंत की भाषा कोमलकांत पदावली लिए हुए खड़ी बोली है, जिसमें चित्रमयता, ध्वन्यात्मकता और पदलालित्य समाहित है। छायावादी शैली की प्रमुख विशेषताएँ – प्रतीकात्मकता, सजीव बिंब-विधान स्पष्ट दिखाई देती है। उन्होंने खड़ीबोली मे ब्रजभाषा जैसा माधुर्य एवं सरसता प्रदान करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया हैं। पंत की शैली गीतात्मक एवं मुक्तक है, जिसमें सरलता, संगीतात्मकता और अभिव्यंजना-शक्ति की प्रधानता है।

'युगवाणी' *से संकलित* ***'चींटी'*** *कविता में सूक्ष्म-काय प्राणी चींटी के श्रमजीवी, श्रमजित, सामाजिक, निर्भय, आपसी सामंजस्यतापूर्ण आदि स्वभावों के माध्यम से श्रेष्ठ नागरिकों के गुणों के अनुकरण की आवश्यकता पर बल दिया गया है।*

'चंद्रलोक में प्रथम बार' *कविता में चंद्रमा पर मानव के पदार्पण को 'गौरवशाली' एवं 'नये युग का प्रारंभ' मानकर पृथ्वी के अनेकानेक पारस्परिक वैमनस्यता, कटुता, भेदभाव आदि को दूर कर सद्भाव एवं सौहार्द से समन्वित मानवतावादी विश्व की कामना की गयी है।*

■

चींटी

चींटी को देखा ?
वह सरल, विरल, काली रेखा
तम के तागे सी जो हिल-डुल
चलती लघुपद पल-पल मिल-जुल
वह है पिपीलिका पाँति !
देखो ना, किस भाँति
काम करती वह सतत !
कन-कन करके चुनती अविरत !

गाय चराती,
धूप खिलाती,
बच्चों की निगरानी करती,
लड़ती, अरि से तनिक न डरती,
दल के दल सेना सँवारती,
घर आँगन, जनपथ बुहारती !

चींटी है प्राणी सामाजिक,
वह श्रमजीवी, वह सुनागरिक!

देखा चींटी को ?
उसके जी को ?
भूरे बालों की सी कतरन,
छिपा नहीं उसका छोटापन,
वह समस्त पृथ्वी पर निर्भय
विचरण करती, श्रम में तन्मय,
वह जीवन की चिनगी अक्षय!

वह भी क्या देही है, तिल-सी ?
प्राणों की रिलमिल झिलमिल सी!
दिन भर में वह मीलों चलती,
अथक, कार्य से कभी न टलती।।

चंद्रलोक में प्रथम बार

चंद्रलोक में प्रथम बार,
मानव ने किया पदार्पण,
छिन्न हुए लो देश काल के,
दुर्जय बाधा बंधन !
दिग्विजयी मनु-सुत, निश्चय
यह महान् ऐतिहासिक क्षण,
भू-विरोध हो शांत,
निकट आएँ सब देशों के जन।
युग-युग का पौराणिक स्वप्न
हुआ मानव का संभव,
समारंभ शुभ नये चंद्रयुग का
भू को दे गौरव !
फहराए ग्रह उपग्रह में
धरती का श्यामल अंचल,
सुख संपद् संपन्न जगत् में
बरसे जीवन मंगल !
अमरीका सोवियत बनें
नव दिक् रचना के वाहन
जीवन पद्धतियों के भेद
समन्वित हों, विस्तृत मन !
अणु-युग बने धरा जीवन हित
स्वर्ग सृजन का साधन,
मानवता ही विश्व सत्य
भू–राष्ट्र करें आत्मार्पण।
धरा चंद्र की प्रीति परस्पर
जगत प्रसिद्ध, पुरातन,
हृदय–सिंधु में उठता
स्वर्गिक ज्वार देख चंद्रानन !

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों में सही विकल्प का चयन कीजिए –

1. पंत ने चींटी को किसका प्रतीक माना है ?
   (क) श्रमशील मनुष्य का (ख) सर्वहारा वर्ग का
   (ग) पशु का (घ) इनमें से कोई नहीं
2. 'चींटी' कविता पंत के किस काव्य.संग्रह से ली गई है ?
   (क) युगवाणी (ख) गुंजन (ग) पल्लव (घ) युगांत
3. सुमित्रानंदन पंत का जन्म.स्थान है'–
   (क) कौसानी (अल्मोड़ा) (ख) फर्रुखाबाद (ग) ग्वालियर (घ) दिल्ली
4. पंत को ज्ञानपीठ सम्मान प्राप्त हुआ –
   (क) पल्लव के लिए (ख) युगांत के लिए (ग) युगपथ के लिए (ग) चिदंबरा के लिए
5. 'चंद्रलोक में प्रथम बार' कविता के रचनाकार हैं –
   (क) निराला (ख) प्रसाद (ग) सुमित्रानंदन पंत (घ) महादेवी वर्मा

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. 'चंद्रलोक में प्रथम बार' कविता में कवि की उन संभावनाओं का वर्णन कीजिए, जो मानव के चाँद पर पहुँचने पर साकार.सी प्रतीत होती है।
2. 'चंद्रलोक में प्रथम बार' मानव के उतरने पर कवि क्या मंगल कामना करता है? पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
3. 'ह्रदय सिंधु' में उठता, स्वर्गिक ज्वार देख चंद्रानन' का भाव स्पष्ट कीजिए।
4. सुमित्रानंदन पंत का जीवन.परिचय देते हुए उनकी साहित्यिक उपलब्धियों का उल्लेख कीजिए।
5. सुमित्रानंदन पंत की रचनाओं का उल्लेख करते हुए उनके काव्य.सौंदर्य पर प्रकाश डालिए।
6. 'चींटी' कविता पंत के किस काव्य.संग्रह से लिया गया है ?
7. पंत द्वारा रचित 'चींटी' कविता का सारांश लिखिए।
8. पंत 'चींटी' के माध्यम से मनुष्य को किस प्रकार प्रेरणा दे रहे हैं? स्पष्ट कीजिए ।
9. 'वह जीवन की चिनगी अक्षय' इस पंक्ति में कवि चींटी के किस गुण की ओर संकेत कर रहे हैं? चींटी के इस गुण से हमें क्या प्रेरणा लेनी चाहिए?

III. दिये गए पद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

(क) चींटी को देखा ?
वह सरल, विरल, काली रेखा
तम के तागे सी जो हिल-डुल
चलती लघुपद पल-पल मिल-जुल
वह है पिपीलिका पाँति !
देखो ना, किस भाँति
काम करती वह सतत !
कन-कन करके चुनती अविरत !
गाय चराती,
धूप खिलाती,
बच्चों की निगरानी करती,
लड़ती, अरि से तनिक न डरती,
दल के दल सेना सँवारती,
घर आँगन, जनपथ बुहारती !

(i) उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

(ii) कवि ने चींटी जैसे लघु प्राणी की कर्मठता का वर्णन किस प्रकार से किया है?

(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ख) युग-युग का पौराणिक स्वप्न
हुआ मानव का संभव,
समारंभ शुभ नये चंद्रयुग का
भू को दे गौरव !
फहराए ग्रह उपग्रह में
धरती का श्यामल अंचल,
सुख संपद् संपन्न जगत् में
बरसे जीवन मंगल !
अमरीका सोवियत बनें
नव दिक् रचना के वाहन
जीवन पद्धतियों के भेद
समन्वित हों, विस्तृत मन !

(i) उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

(ii) पद्यांश में प्रयुक्त अलंकार एवं रस का उल्लेख कीजिए।

(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए

(ग) अणु-युग बने धरा जीवन हित
स्वर्ग सृजन का साधन,
मानवता ही विश्व सत्य
भू–राष्ट्र करें आत्मार्पण।
धरा चंद्र की प्रीति परस्पर
जगत प्रसिद्ध, पुरातन,
हदय–सिंधु में उठता
स्वर्गिक ज्वार देख चंद्रानन !

(i) उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

(ii) 'हृदय–सिंधु में उठता, स्वर्गिक ज्वार देख चंद्रानन' में कौन सा अलंकार है? स्पष्ट कीजिए।

(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए

IV. भाषा के रंग :

1. 'तम के तागे सी जो हिल-डुल,
चलती लघुपद पल-पल मिल-जुल।'
पंक्ति में कौन-सा अलंकार है ?

2. निम्नलिखित पदों में से प्रत्ययों को अलग करके लिखिए–
सामाजिक, छोटापन, पौराणिक, मानवता, ऐतिहासिक

3. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त रस-छंद और अलंकार की पहचान कीजिए–
'अणु-युग बने धरा जीवन हित
स्वर्ग सृजन का साधन,
मानवता ही विश्व सत्य
भू-राष्ट्र करें आत्मार्पण।'

4. उपसर्गों की पहचान कीजिए –
सुनागरिक, समारंभ, उपग्रह, अक्षय, दुर्जय

V. अनुभूति एवं अभिव्यक्ति :

1. चींटी को श्रमजीवी, सामाजिक एवं सुनागरिक कहकर कवि किन मानवीय गुणों की ओर संकेत कर रहे हैं? जीवन में इन गुणों की भूमिका को आप कहाँ तक आवश्यक मानते है? विचार कीजिए।
2. मनुष्य जब चाँद पर निवास करेगा, तब मानव को जीवन में किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है।

शब्दार्थ

विरल – पतली, जो घना न हो। **तम** – अंधकार। **पिपीलिका** – चींटी। **सतत** – निरंतर। **अविरत** – बिना रुके। **विचरण** – घूमना। **श्रम में तन्मय** – मेहनत में लीन। **चिनगी** – अंगार, चिंगारी। **अक्षय** – कभी नष्ट न होने वाली। **अथक** – कभी न थकने वाली। **पदार्पण करना** – कदम रखना। **दुर्जय** – जिसे आसानी से जीता न जा सके। **मनु-सुत** – मनुष्य। **महत** – बड़ा। **भू-विरोध** – पृथ्वी के झगड़े, वैमनस्यता। **पौराणिक** – पुराण संबंधी। **समारंभ** – प्रारंभ। **ग्रह** – सूर्य की परिक्रमा करने वाले आकाशीय पिंड। **उपग्रह** – किसी बड़े ग्रह के चारों ओर घूमने वाला छोटा ग्रह। **श्यामल** – हरा-भरा। **नवदिक्** – नई दिशाएँ। **पद्धति** – परिपाटी, प्रणाली। **समन्वित हों** – इकट्ठा हों। **विस्तृत** – विशाल। **धरा** – पृथ्वी। **सृजन** – निर्माण। **आत्मार्पण** – आत्म समर्पण।

■

सुभद्राकुमारी चौहान

(सन् 1904–1948 ई.)

सुभद्राकुमारी चौहान का जन्म सन् 1904 ई. में इलाहाबाद (वर्तमान प्रयागराज) के **निहालपुर** में हुआ था। उन्होंने प्रयाग के क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज से शिक्षा प्राप्त की। उनकी साहित्य में रुचि बाल्यकाल से ही थी। मध्यप्रदेश निवासी ठाकुर लक्ष्मणसिंह चौहान के साथ विवाह होने के बाद सुभद्राकुमारी के जीवन में एक नया मोड़ आया। उन पर राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के आंदोलनों का इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि वह अपने पति के साथ असहयोग आंदोलन में कूद पड़ीं और देश-सेवा का कार्य करने लगीं, जिसके फलस्वरूप उन्हें कई बार जेल जाना पड़ा। सन् 1948 ई. में उनकी असामयिक मृत्यु हो गई।

सुभद्राकुमारी चौहान की पहचान उनकी राष्ट्रप्रेम की कविताओं से होती है। **झाँसी की रानी** तथा **वीरों का कैसा हो बसंत** शीर्षक कविताओं से उनकी ख्याति में अत्यधिक वृद्धि हुई। अपनी रचनाओं के माध्यम से उन्होंने समसामयिक राजनीतिक जीवन को भारतीय इतिहास और संस्कृति से जोड़ा तथा जनजीवन में राष्ट्रीय भावना का संचार किया। उन्होंने 'झाँसी की रानी' कविता को बुंदेलखंड के लोक-काव्य 'आल्हा' के शिल्प-शैली में ढालकर घर-घर पहुँचाया। इस कविता से ब्रिटिश सरकार का सिंहासन हिल गया जिससे क्षुब्ध होकर ब्रिटिश सरकार ने इस कविता को प्रतिबंधित कर दिया। इसकी प्रारंभिक पंक्तियाँ ही रोमांचित करने लगती हैं –

"सिहांसन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी।
बूढ़े भारत में आयी फिर से नयी जवानी थी।।
गुम हुई आजादी की कीमत सबने पहचानी थी।
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी।।

इसी प्रकार 'वीरों का कैसा हो बसंत' कविता ने लाखों युवक–युवतियों के हृदय में क्रांति की ज्वाला फूँक दी।

मुकुल और **त्रिधारा** उनके प्रसिद्ध काव्य-संग्रह हैं। **सीधे-सादे चित्र**, **बिखरे मोती** और **उन्मादिनी** उनका कहानी संग्रह है। काव्य-संग्रह **मुकुल** पर उन्हें 'साहित्य सम्मेलन प्रयाग' द्वारा 'सेकसरिया पारितोषिक पुरस्कार' प्रदान किया गया।

सुभद्राकुमारी की भाषा सरल एवं स्पष्ट खड़ी बोली है। नारी हृदय की कोमलता और उसके मार्मिक भाव पक्षों को नितांत स्वाभाविक रूप में प्रस्तुत करना उनकी शैली का मुख्य आधार है। उनकी कविताओं में मुख्यतः दो रस प्रधान हैं–वीर और वात्सल्य। उनके काव्य में एक ओर नारी सुलभ ममता तथा दूसरी तरफ क्रांति की भीषण ज्वाला है। उनकी रचनाओं में पारिवारिक जीवन के मोहक चित्र भी अंकित हैं जिसमें वात्सल्य की मधुर व्यंजना हुई है। उन्होंने बहुत अधिक तो नहीं लिखा, किंतु जो भी लिखा वह हिंदी साहित्य और समाज के लिए अमूल्य निधि है।

त्रिधारा *से संकलित* ***झाँसी की रानी की समाधि पर*** *कविता में झाँसी की रानी के द्वारा स्वतंत्रता के लिए दिए गए आत्मबलिदान एवं उनके समाधि-स्थल के प्रति श्रद्धा-भाव का वर्णन है।*

■

झाँसी की रानी की समाधि पर

इस समाधि में छिपी हुई है,
एक राख की ढेरी।
जल कर जिसने स्वतंत्रता की,
दिव्य आरती फेरी।।
यह समाधि, यह लघु समाधि है,
झाँसी की रानी की।
अंतिम लीलास्थली यही है,
लक्ष्मी मरदानी की।।
यहीं कहीं पर बिखर गयी वह,
भग्न विजय-माला-सी।
उसके फूल यहाँ संचित हैं,
है यह स्मृति-शाला सी।।
सहे वार पर वार अंत तक,
लड़ी वीर बाला-सी।
आहुति-सी गिर चढ़ी चिता पर,
चमक उठी ज्वाला-सी।।
बढ़ जाता है मान वीर का,
रण में बलि होने से।
मूल्यवती होती सोने की,
भस्म यथा सोने से।।
रानी से भी अधिक हमें अब,
यह समाधि है प्यारी।
यहाँ निहित है स्वतंत्रता की,
आशा की चिनगारी।।

इससे भी सुंदर समाधियाँ,
हम जग में हैं पाते।
उनकी गाथा पर निशीथ में,
क्षुद्र जंतु ही गाते।।
पर कवियों की अमर गिरा में,
इसकी अमिट कहानी।
स्नेह और श्रद्धा से गाती
है, वीरों की बानी।।
बुंदेले हरबोलों के मुख,
हमने सुनी कहानी।
खूब लड़ी मर्दानी वह थी,
झाँसी वाली रानी।।
यह समाधि, यह चिर समाधि है,
झाँसी की रानी की ।
अंतिम लीलास्थली यही है,
लक्ष्मी मरदानी की।।

■

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए–

1. 'बिखरे मोती' किसकी रचना है –
   (क) महादेवी वर्मा (ख) मैथिलीशरण गुप्त
   (ग) जयशंकर प्रसाद (घ) सुभद्राकुमारी चौहान
2. सुभद्राकुमारी चौहान की रचना है–
   (क) यामा (ख) मुकुल (ग) साकेत (घ) हल्दी घाटी
3. 'झाँसी की रानी की समाधि पर' कविता किस रचना से ली गई है–
   (क) मुकुल (ख) त्रिधारा (ग) उन्मादिनी (घ) बिखरे मोती
4. 'झाँसी की रानी की समाधि पर' कविता में प्रयुक्त रस है –
   (क) वीर (ख) करुण (ग) शांत (घ) श्रृंगार
5. सुभद्राकुमारी चौहान को उनकी किस रचना पर 'सेकसरिया पुरस्कार' प्राप्त हुआ है –
   (क) त्रिधारा (ख) मुकुल (ग) उन्मादिनी (घ) झाँसी की रानी

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. सुभद्राकुमारी चौहान का जन्म कब और कहाँ हुआ ?
2. ब्रिटिश सरकार ने सुभद्राकुमारी चौहान के किस काव्य को प्रतिबंधित किया ?
3. 'झाँसी की रानी को मरदानी' कहने का क्या आशय है? स्पष्ट कीजिए।
4. 'झाँसी की रानी की समाधि पर' कविता से कवयित्री क्या संदेश देना चाहती है ?
5. 'झाँसी की रानी की समाधि' का मूलभाव अपने शब्दों में लिखिए।
6. 'पर कवियों की अमर गिरा में, इसकी अमिट कहानी' से क्या समझते हैं ?
7. 'झाँसी की रानी की समाधि' को कवयित्री ने रानी से अधिक प्यारी क्यों कहा है ?
8. 'झाँसी की रानी समाधि पर' कविता की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
9. कवयित्री ने 'झाँसी की रानी' के लिए किन विशेषणों का प्रयोग किया है और वे कहाँ तक सार्थक हैं?
10. सुभद्राकुमारी चौहान के जीवन–वृत्त का उल्लेख करते हुए उनकी भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।
11. सुभद्राकुमारी चौहान के साहित्यिक अवदान पर प्रकाश डालिए।

III. दिये गए पद्यांशों पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

(क) इस समाधि में छिपी हुई है,
एक राख की ढेरी।
जल कर जिसने स्वतंत्रता की,
दिव्य आरती फेरी।।
यह समाधि, यह लघु समाधि है,
झाँसी की रानी की।
अंतिम लीलास्थली यही है,
लक्ष्मी मरदानी की।।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

(ii) कवयित्री ने किसकी समाधि पर अपनी भावनाएँ व्यक्त की हैं ?

(iii) रेखांकित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए ।

(ख) यहीं कहीं पर बिखर गयी वह,
भग्न विजय-माला-सी।
उसके फूल यहाँ संचित हैं,
है यह स्मृति-शाला सी।।
सहे वार पर वार अंत तक,
लड़ी वीर बाला-सी।
आहुति-सी गिर चढ़ी चिता पर,
चमक उठी ज्वाला-सी।।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) 'विजयमाला' 'स्मृतिशाला' और 'वीरबाला' पदों में समास बताते हुए समास विग्रह कीजिए।

(ग) बढ़ जाता है मान वीर का,
रण में बलि होने से।
मूल्यवती होती सोने की,
भस्म तथा सोने से।।
रानी से भी अधिक हमें अब,
यह समाधि है प्यारी।

यहाँ निहित है स्वतंत्रता की,
आशा की चिनगारी।।

(i) उपर्युक्त पद्यांश कविता का संदर्भ लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) 'स्वतंत्रता' एवं 'आशा' शब्द का विलोम बताइए।

(घ) इससे भी सुंदर समाधियाँ,
हम जग में हैं पाते।
उनकी गाथा पर निशीथ में,
क्षुद्र जंतु ही गाते।।
पर कवियों की अमर गिरा में,
इसकी अमिट कहानी।
स्नेह और श्रद्धा से गाती
है, वीरों की बानी।।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) 'निशीथ' एवं 'गिरा' शब्द का अर्थ लिखिए।

(ङ) बुंदेले हरबोलों के मुख,
हमने सुनी कहानी।
खूब लड़ी मर्दानी वह थी,
झाँसी वाली रानी।।
यह समाधि, यह चिर समाधि है,
झाँसी की रानी की ।
अंतिम लीलास्थली यही है,
लक्ष्मी मरदानी की।।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का शीर्षक एवं कवि का नाम लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) उपर्युक्त पद्यांश में कौन–सा रस है ? उसका स्थायी भाव बताइए।

IV. भाषा के रंग :

(क) निम्नलिखित शब्दों का विलोम–शब्द लिखिए–

स्वतंत्रता, विजय, क्षुद्र, स्नेह, अंत

(ख) निम्नलिखित पद्यांश में कौन सा रस प्रयुक्त है ? स्पष्ट कीजिए।

बुंदेले हरबोलों के मुख
हमने सुनी कहानी
खूब लड़ी मरदानी वह थी
झाँसी वाली रानी।

(ग) निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन रूप लिखिए–

समाधि, चिनगारी, ज्वाला, प्यारी, बाला, गाथा

(घ) निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध करके लिखिए–

लघू, भगन, श्रधा, स्थलि, कवीयों

V. अनुभूति एवं अभिव्यक्ति :

स्वाधीनता संघर्ष में अपने प्राणों की आहुति देने वाले कुछ वीरांगनाओं एवं वीर-सपूतों की सूची बनाइए तथा उनमें से किसी एक के बलिदान पर आधारित कविता को कंठस्थ कीजिए।

शब्दार्थ

दिव्य – अलौकिक। **मरदानी** – पुरुषों के समान। **संचित** – एकत्र। **वार** – आघात, चोट। **मूल्यवती** – मूल्यवान। **निहित** – रखी हुई। **भग्न विजय-माल-सी** – टूटी हुई फूलों की माला की भाँति, (झाँसी की रानी बलिदान हो गई)। **फूल** – पुष्प। **आहुति-सी गिर चढ़ी चिता पर** – जिस प्रकार पवित्र आहुतियाँ दी जाती है, उसी प्रकार इस स्वतंत्रता के यज्ञ में अपने प्राणों की आहुति दे दी। **क्षुद्र** – छोटे, तुच्छ। **गिरा** – वाणी। **निशीथ** – रात्रि।

■

महादेवी वर्मा

(सन् 1907–1987 ई.)

आधुनिक मीरा नाम से प्रसिद्ध कवयित्री महादेवी वर्मा छायावाद के प्रमुख आधार स्तंभों में से एक हैं। उनका जन्म **फर्रुखाबाद** (उ0प्र0) में सन् 1907 ई. में हुआ। उनके पिता 'गोविंद प्रसाद वर्मा' शिक्षक और माता 'हेमरानी देवी' गृहिणी थी। उनका विवाह नौ वर्ष की अवस्था में 'डा0 स्वरूपनारायण वर्मा' के साथ हुआ, परंतु वैवाहिक जीवन अधिक सुखी न रहा। उनकी विधिवत् शिक्षा प्रयाग में हुई, जहाँ उन्होंने प्रयाग विश्वविद्यालय से एम0ए0 की शिक्षा पूरी की। उसके बाद वे 'प्रयाग महिला विद्यापीठ' की प्राचार्य नियुक्त हुईं। वे कुछ वर्षों तक उत्तर प्रदेश विधान सभा की सदस्य रहीं और सन् 1956 ई. में भारत सरकार द्वारा उन्हें 'पद्मश्री' सम्मान से सम्मानित किया गया। सन् 1987 ई. में उनका स्वर्गवास हो गया।

महादेवी वर्मा की प्रमुख काव्य रचनाएँ हैं – **नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, दीपशिखा और यामा**। **नीहार** उनका प्रथम प्रकाशित काव्य-संग्रह है। वह काव्य–रचना के साथ गद्य लेखन में भी सिद्धहस्त थीं। उन्होंने संस्मरण और रेखाचित्र विधा को भी समृद्ध किया। प्रमुख गद्य रचनाएं हैं – **पथ के साथी, अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएं और मेरा परिवार**। **शृंखला की कड़ियाँ** नारी संबंधी संघर्षों का निबंध संकलन है।

महोदवी वर्मा की रचनाओं में 'दार्शनिकता' एवं 'आध्यात्मिकता' सर्वत्र दिखाई पड़ती है। उनके काव्यों में अलौकिक प्रियतम के लिए प्रणय भावना, वेदना, करुणा आदि भावों की अभिव्यक्ति हुई है। गीति–कला उनके काव्य में पूर्णता को प्राप्त हुई है क्योंकि उनके गीतों में आत्म निवेदन एवं समर्पण की भावना, संगीतात्मकता, रागात्मकता, गेयता, कोमलकांत पदों की मधुरता, काल्पनिकता एवं शैलीगत सुकुमारता जैसी विशेषताएँ विद्यमान हैं। वह जीवन की उत्पत्ति विरह से मानती हैं –

विरह का जलजात जीवन, विरह का जलजात
वेदना में जन्म, करुणा में मिला आवास।

उनकी काव्य भाषा संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली है, परंतु उनमें लालित्य एवं मधुरता है। हिंदी साहित्य में उनके अपूर्व योगदान के लिए कवि 'निराला' ने उन्हें **हिंदी के विशाल मंदिर की वीणापाणि** कहा है।

हिमालय से *कविता महादेवी वर्मा द्वारा रचित* ***सांध्यगीत*** *काव्य–संग्रह से ली गई है, जिसमें उन्होंने हिमालय की सुंदरता तथा विशेषताओं का वर्णन किया है। कवयित्री अपने जीवन को जहाँ हिमालय के समान कठोर और दृढ़ बनाना चाहती है वही वे अपने हृदय में हिमालय जैसे मृदु एवं कोमल भावनाओं को संजोए रखना भी चाहती है।*

नीरजा *काव्य-संग्रह से संकलित* ***वर्षा सुंदरी के प्रति*** *कविता में वर्षा रूपी सुंदरी का आलंकारिक वर्णन है। जिसमें वर्षा ऋतु को एक आकर्षक तथा कल्याणकारी सुंदर नायिका के रूप में चित्रित किया गया है। कवयित्री ने वर्षा रूपी सुंदरी से अपने जगतरूपी शिशु को गोद में समेट कर वातावरण में हर्ष और उल्लास की मधुर ध्वनि फैला देने का आग्रह किया है।*

■

हिमालय से

हे चिर महान्!
यह स्वर्णरश्मि छू श्वेत भाल,
बरसा जाती रंगीन हास;
सेली बनता है इंद्रधनुष,
परिमल मल मल जाता बतास!
पर रागहीन तू हिमनिधान!
नभ में गर्वित झुकता न शीश
पर अंक लिये है दीन क्षार;
मन गल जाता नत विश्व देख,
तन सह लेता है कुलिश भार!
कितने मृदु कितने कठिन प्राण!
टूटी है तेरी कब समाधि,
झंझा लौटे शत हार-हार;
बह चला दृगों से किंतु नीर
सुनकर जलते कण की पुकार!
सुख से विरक्त दुःख में समान!
मेरे जीवन का आज मूक,
तेरी छाया से हो मिलाप;
तन तेरी साधकता छू ले,
मन ले करुणा की थाह नाप!
उर में पावस दृग में विहान!

वर्षा सुंदरी के प्रति

रूपसि तेरा घन-केश-पाश!
श्यामल श्यामल कोमल कोमल,
लहराता सुरभित केश-पाश!
नभ गंगा की रजतधार में,
धो आई क्या इन्हें रात ?
कंपित हैं तेरे सजल अंग,
सिहरा सा तन हे सद्यस्नात!
भीगी अलकों के छोरों से
चूती बूँदे कर विविध लास!
रूपसि तेरा घन-केश-पाश!
सौरभ भीना झीना गीला
लिपटा मृदु अंजन सा दुकूल;
चल अंचल में झर-झर झरते
पथ में जुगनू के स्वर्ण फूल;
दीपक से देता बार-बार
तेरा उज्ज्वल चितवन-विलास!
रूपसि तेरा घन-केश-पाश!
उच्छ्वसित वक्ष पर चंचल हे
बक-पाँतों का अरविंद हार,
तेरी निश्वासें छू भू को
बन बन जातीं मलयज बयार;
केकी-रव की नूपुर-ध्वनि सुन
जगती जगती की मूक प्यास!
रूपसि तेरा घन-केश-पाश।
इन स्निग्ध लटों से छा दे तन
पुलकित अंकों में भर विशाल;
झुक सस्मित शीतल चुंबन से
अंकित कर इसका मृदुल भाल;
दुलरा दे ना, बहला दे ना
यह तेरा शिशु जग है उदास!
रूपसि तेरा घन-केश-पाश।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए–

1. महादेवी वर्मा की रचना है –
   (क) ग्रंथि (ख) पल्लव (ग) गुंजन (घ) सांध्य गीत
2. 'हिमालय से' कविता किस काव्य-संग्रह से संकलित है –
   (क) सांध्यगीत (ख) नीरजा (ग) युगवाणी (घ) दीपशिखा
3. 'वर्षा सुंदरी के प्रति' कविता में वर्णन किया गया है –
   (क) बादल का (ख) हिमालय का (ग) वर्षा का (घ) इनमें से कोई नहीं
4. 'जगती जगती की मूक प्यास!' में कौन-सा अलंकार है ?
   (क) अनुप्रास (ख) अतिशयोक्ति (ग) उपमा (घ) यमक
5. महादेवी वर्मा का जन्म स्थान है –
   (क) कौसानी (अल्मोड़ा) (ख) फर्रुखाबाद (उ० प्र०)
   (ग) दिल्ली (घ) इनमें से कोई नहीं

II. दिये गए निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. महादेवी वर्मा का प्रथम काव्य-संग्रह कौन सा है ?
2. महादेवी जी की उस रचना का नाम बताइए, जिसमें नारी संबंधी संघर्षों का उल्लेख मिलता है।
3. 'आधुनिक मीरा' हिंदी के किस कवयित्री को कहा जाता है ?
4. महादेवी को 'हिंदी की विशाल मंदिर की वीणापाणि' किसने कहा है ?
5. 'हिमालय से' कविता का मूलभाव अपने शब्दों में लिखिए।
6. महादेवी वर्मा ने 'वर्षा–सुंदरी' के रमणीय रूप का सजीव चित्रण किस प्रकार किया है।
7. कवयित्री वर्षा में मातृत्व की और जग में शिशु की कल्पना किस प्रकार कर रही है ? पाठ के आधार पर लिखिए।
8. 'बक–पाँतों का अरविंद हार' से कवयित्री का आशय स्पष्ट कीजिए।
9. महादेवी वर्मा का जीवन–परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए।
10. महादेवी वर्मा की भाषा-शैली एवं उनके साहित्यिक अवदान पर प्रकाश डालिए।
11. 'हिमालय से' शीर्षक कविता के काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

III. दिये गए पद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) हे चिर महान्!
यह स्वर्णरश्मि छू श्वेत भाल,
बरसा जाती रंगीन हास;
सेली बनता है इंद्रधनुष,
परिमल मल मल जाता बतास!
पर रागहीन तू हिमनिधान!
नभ में गर्वित झुकता न शीश
पर अंक लिये है दीन क्षार;
मन गल जाता नत विश्व देख,
तन सह लेता है कुलिश भार!
कितने मृदु कितने कठिन प्राण!

(i) प्रस्तुत पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) कविता में प्रयुक्त शब्द 'स्वर्णरश्मि' का समास-विग्रह कर समास का नाम लिखिए।

(ख) रूपसि तेरा घन-केश-पाश!
श्यामल श्यामल कोमल कोमल,
लहराता सुरभित केश-पाश!
नभ गंगा की रजतधार में,
धो आई क्या इन्हें रात ?
कंपित हैं तेरे सजल अंग,
सिहरा सा तन हे सद्यस्नात!

(i) प्रस्तुत पद्यांश का शीर्षक और कवि के नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित पंद्याश की व्याख्या कीजिए।
(iii) उपर्युक्त पद्यांश में प्रयुक्त रस एवं अलंकार का नाम लिखिए।

(ग) चल अंचल में झर-झर झरते
पथ में जुगनू के स्वर्ण फूल;
दीपक से देता बार-बार
तेरा उज्ज्वल चितवन-विलास!
रूपसि तेरा घन-केश-पाश!

(i) उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित पंद्याश की व्याख्या कीजिए।
(iii) उपर्युक्त कविता में प्रयुक्त 'दुकूल' और 'विलास' शब्द का अर्थ लिखिए।

IV. भाषा के रंग :

(क) 'रूपसि तेरा घन–केश–पाश' में कौन सा अलंकार है ? स्पष्ट कीजिए।

(ख) निम्नलिखित पदों में उपसर्ग और प्रत्ययों को मूल शब्दों से अलग करके लिखिए–
गर्वित, विरक्त, दुकूल, मलयज, सजल, साधकता, पुलकित, सस्मित

(ग) निम्नलिखित पदों का समास विग्रह कीजिए–
स्वर्णरश्मि, हिमनिधान, सजल।

V. अनुभूति एवं अभिव्यक्ति :

(क) 'दुलरा देना, बहला देना। यह तेरा शिशु जग है उदास।' इन पंक्तियों के माध्यम से कवयित्री ने वर्षा की महती भूमिका को आरेखित किया है। सामान्य जीवन-यापन में आप वर्षा की भूमिका कहाँ तक आवश्यक मानते हैं? विचार कीजिए।

(ख) हिमालय हमें जीवन में कठोर एवं मृदु दोनों रूप में रहने की प्रेरणा देता है। स्पष्ट कीजिए।

शब्दार्थ

स्वर्ण-रश्मि – सुनहली किरणें। **हास** – हँसी। **सेली** – पगड़ी। **परिमल** – सुगंध। **बतास** – वायु। **रागहीन** – वैरागी। **क्षार** – मिट्‌टी। **कुलिश** – वज्र, कठोर। **झंझा** – आँधी। **मूक** – मौन। **विहान** – सवेरा। **विरक्त** – वैरागी। **थाह** – गहराई। **पावस** – वर्षा। **दृग** – नेत्र। **केश-पाश** – केश–जाल। **रजतधार** – चाँदी के समान जल धारा। **सद्यस्नात** – तुरंत स्नान की हुई। **लास** – आनंदमय नृत्य। **सौरभ** – सुगंध। **भीना** – भरा हुआ, भीनी–भीनी सुगंध। **झीना** – बारीक। **मृदु** – कोमल। **अंजन-सा** – सुरमे जैसा काला अर्थात् नीला। **दुकूल** – रेशमी वस्त्र। **चितवन–विलास** – दृष्टि विलास। **उच्छ्‌वसित** – दीर्घ साँस से भरा हुआ। **वक्ष पर** – छाती पर। **अरविंद** – कमल। **बयार** – हवा। **केकी-रव** – मोर की ध्वनि। **स्निग्ध** – चिकनी। **सस्मित** – मुस्कराहट के साथ। **मृदुल** – कोमल। **भाल** – मस्तक।

■

श्यामनारायण पांडेय

(सन् 1907–1991 ई.)

श्यामनारायण पांडेय का जन्म सन् 1907 ई. में **डुमराँव गाँव, आजमगढ़** (वर्तमान मऊ) उत्तर प्रदेश में हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा गाँव के विद्यालय में ही हुई। इसके बाद संस्कृत शिक्षा के लिए वे काशी (वर्तमान वाराणसी) गए। वाराणसी से उन्होंने साहित्याचार्य की परीक्षा उत्तीर्ण की। वाराणसी में रहकर ही उन्होंने काव्य-रचना प्रारंभ की थी। उन्होंने आधुनिक युग में वीर काव्य की परंपरा को खड़ीबोली में प्रतिष्ठित किया। उनकी मृत्यु सन् 1991 ई. में हुई थी।

उन्होंने उच्च कोटि के खंडकाव्यों की रचना की जिसमें **हल्दीघाटी** सर्वाधिक लोकप्रिय एवं चर्चित है, इसमें महाराणा प्रताप के शौर्य का वर्णन किया गया है। उन्होंने **त्रेता के दो वीर** नामक एक छोटा-सा काव्य लिखा था जिसमें लक्ष्मण-मेघनाद युद्ध के कई प्रसंगों को लेकर दोनों वीरों के महत्त्व का चित्रण है। **माधव, रिमझिम, जौहर, रूपांतरण, जय हनुमान** आदि उनकी अन्य रचनाएँ हैं।

उनकी काव्य-भाषा खड़ी बोली है। भाषा में सहजता एवं सरलता दिखाई पड़ती है। उनके काव्यों में चित्रात्मक एवं गीतात्मक शैली के साथ–साथ मुक्तक छंदों का भी प्रयोग है। उनके काव्य मुख्यतः वीर रस प्रधान हैं, कहीं–कहीं करुण रस का भी प्रयोग मिलता है।

श्यामनारायण पांडेय जी हिंदी साहित्य के महान कवियों में से एक हैं। उन्होंने इतिहास को आधार बनाकार काव्यों की रचना की, जोकि हिंदी साहित्य में सराहनीय प्रयास रहा। इस रचनाकार को वीरग्रंथात्मक काव्यसृजन के लिए हिंदी साहित्य में अद्वितीय स्थान प्राप्त है।

हल्दी घाटी *कविता में 'स्वातंत्र्य-प्रेम' एवं 'स्वाभिमान-रक्षा' हेतु हल्दीघाटी की रणभूमि में अकबर की सेना के विरुद्ध मेवाड़ केसरी राणाप्रताप के अप्रतिम शौर्य, प्रभावशाली रण-कौशल व सैन्य-नेतृत्व, शत्रु सेना पर उनके संहारक-प्रहार आदि घटनाओं का बड़ा सजीव वर्णन है। अंत में अकबर के सेनापति मानसिंह एवं मुगल शासकों के प्रति उनका अतिशय आक्रोश एवं अपनी विजय के प्रति राणा को पूर्णतः आश्वस्त दर्शाया गया है।*

हल्दी घाटी

मेवाड़-केसरी देख रहा,
केवल रण का न तमाशा था।
वह दौड़-दौड़ करता था रण,
वह मान रक्त का प्यासा था।।

चढ़ कर चेतक पर घूम-घूम,
करता सेना रखवाली था।
ले महामृत्यु को साथ-साथ
मानों प्रत्यक्ष कपाली था।।

चढ़ चेतक पर तलवार उठा,
रखता था भूतल पानी को।
राणा प्रताप सिर काट-काट,
करता था सफल जवानी को।।

सेना-नायक राणा के भी,
रण देख देखकर चाह भरे।
मेवाड़ सिपाही लड़ते थे
दूने तिगुने उत्साह भरे।।

क्षण मार दिया कर कोड़े से,
रण किया उतर कर घोड़े से।
राणा रण कौशल दिखा-दिखा,
चढ़ गया उतर कर घोड़े से।।

क्षण भीषण हलचल मचा-मचा,
राणा-कर की तलवार बढ़ी।
था शोर रक्त पीने का यह
रण चंडी जीभ पसार बढ़ी।।

वह हाथी दल पर टूट पड़ा,
मानों उस पर पवि छूट पड़ा।
कट गई वेग से भू ऐसा
शोणित का नाला फूट पड़ा।।

जो साहस कर बढ़ता उसको,
केवल कटाक्ष से टोक दिया।
जो वीर बना नभ-बीच फेंक,
बरछे पर उसको रोक दिया।।

क्षण उछल गया अरि घोड़े पर
क्षण लड़ा सो गया घोड़े पर।
बैरी दल से लड़ते-लड़ते,
क्षण खड़ा हो गया घोड़े पर।।

क्षण भर में गिरते रुंडों से,
मदमस्त गजों के शुंडों से।
घोड़ों के विकल वितुंडों से,
पट गई भूमि नरमुंडों से।।

ऐसा रण राणा करता था,
पर उसको था संतोष नहीं।
क्षण-क्षण आगे बढ़ता था वह,
पर कम होता था रोष नहीं।।

कहता था लड़ता मान कहाँ,
मैं कर लूँ रक्त-स्नान कहाँ ?
जिस पर तय विजय हमारी है,
वह मुगलों का अभिमान कहाँ ?

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए–

1. श्यामनारायण पांडेय का जन्म स्थान है–
   (क) वाराणसी (ख) इलाहाबाद (प्रयागराज) (ग) आजमगढ़ (घ) गोरखपुर।
2. 'तुमुल' किसकी रचना है ?
   (क) सोहनलाल द्विवेदी (ख) माखनलाल चतुर्वेदी
   (ग) रामधारीसिंह 'दिनकर' (घ) श्यामनारायण पांडेय।
3. श्यामनारायण पांडेय को 'साहित्याचार्य' की उपाधि कहाँ से मिली–
   (क) प्रयागराज (इलाहाबाद) (ख) काशी (वाराणसी)
   (ग) लखनऊ (घ) कानपुर।
4. निम्न में से कौन सी रचना श्यामनारायण पांडेय की है–
   (क) जौहर (ख) त्रिधारा (ग) मौर्य विजय (घ) कुरुक्षेत्र।
5. 'हल्दी घाटी' कविता में किसके शौर्य का वर्णन है–
   (क) छत्रसाल (ख) शिवा जी (ग) छत्रपति शाहू जी (घ) महाराणा प्रताप।

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. 'हल्दी घाटी' कविता में किस रस की प्रधानता है ?
2. श्यामनारायण पांडेय को 'हल्दी घाटी' रचना पर कौन–सा पुरस्कार मिला ?
3. श्यामनारायण पांडेय का सबसे लोकप्रिय और चर्चित काव्य का नाम बताइए।
4. 'हल्दी घाटी' कविता का केंद्रीय-भाव स्पष्ट कीजिए।
5. कवि ने महाराणा प्रताप को 'महामृत्यु' एवं 'प्रत्यक्ष कपाली' क्यों कहा है ?
6. 'हल्दी घाटी' कविता की विशेषताएँ लिखिए।
7. 'हल्दी घाटी' कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।
8. 'कहता था लड़ता मान कहाँ' इस काव्य पंक्ति में 'मान' से क्या आशय है?
9. श्यामनारायण पांडेय का जीवन–परिचय तथा उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए।
10. श्यामनारायण पांडेय के साहित्यिक अवदान पर प्रकाश डालिए एवं उनकी भाषा-शैली पर टिप्पणी लिखिए।

III. दिये गए पद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) मेवाड़-केसरी देख रहा,
केवल रण का न तमाशा था।
वह दौड़-दौड़ करता था रण,
वह मान रक्त का प्यासा था।।
चढ़ कर चेतक पर घूम-घूम,
करता सेना रखवाली था।
ले महामृत्यु को साथ-साथ
मानों प्रत्यक्ष कपाली था।।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) 'तमाशा देखना' और 'रक्त का प्यासा होना' मुहावरे का अर्थ लिखिए।

(ख) चढ़ चेतक पर तलवार उठा,
रखता था भूतल पानी को।
राणा प्रताप सिर काट-काट,
करता था सफल जवानी को।।
सेना-नायक राणा के भी,
रण देख देखकर चाह भरे।
मेवाड़ सिपाही लड़ते थे
दूने तिगुने उत्साह भरे।।

(i) उपर्युक्त पद्यांश के कवि एवं शीर्षक का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) उपर्युक्त पद्यांश में किस योद्धा का वर्णन किया गया है ?

(ग) क्षण मार दिया कर कोड़े से,
रण किया उतर कर घोड़े से।
राणा रण कौशल दिखा-दिखा,
चढ़ गया उतर कर घोड़े से।।
क्षण भीषण हलचल मचा-मचा,
राणा–कर की तलवार बढ़ी।
था शोर रक्त पीने का यह
रण चंडी जीभ पसार बढ़ी।।

(i) उपर्युक्त कविता का संदर्भ लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) 'कर' और 'रण कौशल' शब्द का अर्थ लिखिए।

(घ) वह हाथी दल पर टूट पड़ा,
मानों उस पर पवि छूट पड़ा।
कट गई वेग से भू ऐसा,
शोणित का नाला फूट पड़ा।।
जो साहस कर बढ़ता उसको,
केवल कटाक्ष से टोक दिया।
जो वीर बना नभ-बीच फेंक,
बरछे पर उसको रोक दिया।।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का शीर्षक तथा कवि का नाम बताइए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) उपर्युक्त पद्यांश में कौन सा रस प्रयुक्त है ?

(ङ) क्षण उछल गया अरि घोड़े पर
क्षण लड़ा सो गया घोड़े पर।
बैरी दल से लड़ते-लड़ते,
क्षण खड़ा हो गया घोड़े पर।।
क्षण भर गिरते रुंडों से,
मदमस्त गजों के शुंडों से।
घोड़ों के विकल वितुंडों से,
पट गई भूमि नरमुंडों से।।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

(ii) 'रुंड' और 'वितुंड' शब्द का अर्थ लिखिए।

(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

IV. भाषा के रंग :

(क) निम्नलिखित पंक्तियों में किस रस का उल्लेख है ? स्पष्ट कीजिए।
क्षण में गिरते रुंडों से, मदमस्त गजों के शुंडों से।
घोड़े के विकल वितुंडों से, पट गयी भूमि नरमुंडों से।।

(ख) निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार बताइए और स्पष्ट कीजिए–

कट गयी वेग से भू ऐसा।
शोणित का नाला फूट पड़ा।।

(ग) निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखिए एवं उनका वाक्य प्रयोग कीजिए–

तमाशा देखना, रक्त का प्यासा होना, हल–चल मचाना।

V. अनुभूति एवं अभिव्यक्ति :

नवयुवकों में 'स्वातंत्र्य–प्रेम' एवं 'देश-भक्ति की भावना' के विकास के लिए किन बातों पर विशेष बल दिया जाना चाहिए? विचार कीजिए।

शब्दार्थ

मेवाड़ केसरी – राणा प्रताप। **रण** – युद्ध। **रक्त का प्यासा** – जान का दुश्मन। **प्रत्यक्ष** – साक्षात्। **कपाली** – शिव का संहारक रूप जिनके बाएं हाथ में कपाल (खोपड़ी) है। **चेतक** – राणा प्रताप के घोड़े का नाम। **भूतल** – पृथ्वी, धरती। **जवानी** – युवावस्था। **उत्साह** – साहस, धैर्य। **कौशल** – पराक्रम। **रक्त** – खून। **वेग** – तेज। **नभ** – आकाश। **बरछे** – भाला। **बैरी** – दुश्मन। **रुंडों** – धड़ों। **मुंड** – सिर। **शुंड** – सूँड़। **रोष** – क्रोध। **रक्त स्नान** – खून में नहाना, ऐसी घटना जिसमें बहुत लोगों का वध हो। **कर** – हाथ। **राणा-कर** – राणा का हाथ। **पवि** – वज्र, बाण या भालों की नोंक। **शोणित** – रक्त। **कटाक्ष** – टेढ़ी नजर। **अरि घोड़े पर** – शत्रु के घोड़े पर। **विकल** – व्याकुल, बेचैन। **वितुंड** – हाथी। **नरमुंड** – मनुष्यों के कटे सिर।

■

रामनरेश त्रिपाठी

(सन् 1881–1962 ई.)

रामनरेश त्रिपाठी का जन्म उत्तर प्रदेश में जौनपुर जिले (वर्तमान सुल्तानपुर) के **कोइरीपुर** नामक गाँव में सन् 1881 ई. में हुआ था। आरंभिक शिक्षा पूरी करने के बाद उन्होंने स्वाध्याय से हिंदी, अंग्रेजी, बांग्ला और उर्दू का ज्ञान प्राप्त किया। ज्ञान के प्रति लगाव और देशाटन से उनकी साहित्यिक योग्यता विकसित होती गयी और वे बचपन से ही हिंदी की सेवा में लग गये। उन्होंने दक्षिण भारत में हिंदी के प्रचार-प्रसार में अमूल्य योगदान दिया एवं 'हिंदी साहित्य सम्मेलन', प्रयाग में प्रचार-मंत्री पद को सुशोभित किया। उनके **स्वप्न** खंडकाव्य को 'हिंदुस्तानी अकादमी' द्वारा पुरस्कृत किया गया। उनका सन् 1962 ई. में स्वर्गवास हो गया।

उनकी साहित्यिक प्रतिभा गद्य और पद्य में समान रूप से दिखायी पड़ती है। उन्होंने काव्य, नाटक, आलोचना आदि कई विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई। उनकी रचनाओं में **मानसी, मिलन, पथिक** और **स्वप्न** खंडकाव्य हैं तथा 'मानसी' उनकी फुटकर कविताओं का संग्रह है। अन्य रचनाओं में **प्रेमलोक** (नाटक), **लक्ष्मी** (उपन्यास), **स्वप्नों के चित्र** (कहानी संग्रह), **तुलसीदास और उनकी कविता** (आलोचना) आदि प्रमुख हैं। **कविता कौमुदी** (आठ भाग) में उन्होंने हिंदी, उर्दू, बांग्ला और संस्कृत की कविताओं का संकलन किया है। उनके काव्यों में द्विवेदी युगीन नैतिकता तथा छायावाद की सौंदर्य-चेतना का सम्मिलन है। उनकी रचनाओं में देशभक्ति, मानव-सेवा, त्याग आदि के आदर्श दिखायी पड़ते हैं, जिसके विषय में कवि मैथिलीशरण गुप्त ने कहा है–''रामनरेश त्रिपाठी मननशील विद्वान्, परिश्रमी, लोक साहित्य के धनी थे। उन्होंने अपनी रचनाओं में राष्ट्रप्रेम, मानव सेवा, पवित्र प्रेम का नवीन आदर्श उत्पन्न किया।''

रामनरेश त्रिपाठी के काव्यों की भाषा शुद्ध, सहज खड़ी बोली हैं। उनकी काव्य भाषा में तत्सम शब्दों की अधिकता होते हुए भी कहीं–कहीं उर्दू के शब्दों का प्रयोग भी किया गया है। त्रिपाठी जी की भाषा–शैली सरल, स्वाभाविक और प्रवाहपूर्ण है।

__स्वदेश प्रेम__ कविता रामनरेश त्रिपाठी कृत __स्वप्न__ खंड-काव्य से संकलित हैं जिसमें स्वदेश पर मर मिटने की प्रेरणा प्रदान की गई है। कवि ने भारत के वीरों को संबोधित करते हुए कहा है कि जिस भारत देश में तुमने जन्म लिया, वह एक महान देश है। गौरवशाली अतीत की झाँकी को संजोएँ, इसकी महानता और यशोगान के साक्षी सूर्य, चन्द्रमा और तारागण हैं। अतः हे वीरों! प्राण रहते हुए तुम उसे कैसे त्याग सकते हो। अपने प्राण त्यागकर भी भारत माता की रक्षा करो। तुम मृत्यु से निर्भय होकर भारत भूमि की रक्षा करो। देश–प्रेम से ही आत्मा और मानवता का विकास होता है।

■

स्वदेश-प्रेम

अतुलनीय जिनके प्रताप का,
साक्षी है प्रत्यक्ष दिवाकर।
घूम-घूमकर देख चुका है,
जिनकी निर्मल कीर्ति निशाकर।।
देख चुके हैं जिनका वैभव,
ये नभ के अनंत तारागण।
अगणित बार सुन चुका है नभ,
जिनका विजय-घोष रण-गर्जन।।1।।
शोभित है सर्वोच्च मुकुट से,
जिनके दिव्य देश का मस्तक,
गूँज रही हैं सकल दिशाएँ,
जिनके जयगीतों से अब तक।।
जिनकी महिमा का है अविरल,
साक्षी सत्य-रूप हिम-गिरि-वर।
उतरा करते थे विमान-दल
जिसके विस्तृत वक्षःस्थल पर।।2।।
सागर निज छाती पर जिनके,
अगणित अर्णव-पोत उठाकर।
पहुँचाया करता था प्रमुदित,
भूमंडल के सकल तटों पर।।
नदियाँ जिसकी यश-धारा-सी
बहती हैं अब भी निशि-वासर।
ढूँढ़ो उनके चरण-चिह्न भी,
पाओगे तुम इनके तट पर।।3।।

विषुवत्–रेखा का वासी जो,
जीता है नित हाँफ-हाँफ कर।
रखता है अनुराग अलौकिक,
यह भी अपनी मातृभूमि पर।।
ध्रुव-वासी जो हिम में तम में,
जी लेता है काँप-काँप कर।
वह भी अपनी मातृभूमि पर,
कर देता है प्राण निछावर।।4।।
तुम तो, हे प्रिय बंधु, स्वर्ग सी,
सुखद, सकल विभवों की आकर।
धरा-शिरोमणि मातृ-भूमि में,
धन्य हुए हो जीवन पाकर।।
तुम जिसका जल अन्न ग्रहण कर,
बड़े हुए लेकर जिसका रज।
तन रहते कैसे तज दोगे,
उसको, हे वीरों के वंशज।।5।।
जब तक साथ एक भी दम हो,
हो अवशिष्ट एक भी धड़कन।
रखो आत्म-गौरव से ऊँची,
पलकें, ऊँचा सिर, ऊँचा मन।।
एक बूँद भी रक्त शेष हो,
जब तक मन में हे शत्रुंजय !
दीन वचन मुख से न उचारो,
मानो नहीं मृत्यु का भी भय।।6।।
निर्भय स्वागत करो मृत्यु का,
मृत्यु एक है विश्राम-स्थल।
जीव जहाँ से फिर चलता है,
धारण कर नवजीवन-संबल।।

मृत्यु एक सरिता है, जिसमें,
श्रम से कातर जीव नहाकर।
फिर नूतन धारण करता है,
काया-रूपी वस्त्र बहाकर।। 7।।
सच्चा प्रेम वही है जिसकी
तृप्ति आत्म-बलि पर हो निर्भर।
त्याग बिना निष्प्राण प्रेम है,
करो प्रेम पर प्राण निछावर।।
देश-प्रेम वह पुण्य-क्षेत्र है,
अमल असीम त्याग से विलसित।
आत्मा के विकास से जिसमें,
मनुष्यता होती है विकसित।। 8।।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए–

1. रामनरेश त्रिपाठी का जन्म हुआ था–
   (क) सन् 1875 ई. (ख) सन् 1889 ई. (ग) सन् 1880 ई. (घ) सन् 1885 ई.
2. 'पथिक' रचना के रचनाकार हैं–
   (क) मैथिलीशरण गुप्त (ख) महादेवी वर्मा
   (ग) रामनरेश त्रिपाठी (घ) श्यामनारायण पांडेय
3. 'स्वदेश-प्रेम' शीर्षक कविता के रचनाकार हैं–
   (क) रामनरेश त्रिपाठी (ख) श्यामनारायण पांडेय
   (ग) माखनलाल चतुर्वेदी (घ) मैथिलीशरण गुप्त
4. रामनरेश त्रिपाठी की रचना है–
   (क) हल्दी घाटी (ख) सरोज-स्मृति (ग) नीहार (घ) मिलन
5. 'कविता कौमुदी' कितने भागों में विभक्त है –
   (क) पाँच (ख) आठ (ग) सात (घ) दस

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. राम नरेश त्रिपाठी की किस रचना को 'हिन्दुस्तान अकादमी' द्वारा पुरस्कृत किया गया ?
2. कहाँ का निवासी हाँफ-हाँफ कर अपना जीवन व्यतीत करता है?
3. 'स्वदेश-प्रेम' कविता का केंद्रीय-भाव लिखिए।
4. अपनी मातृ-भूमि के प्रति कविता में क्या संदेश दिया गया है ?
5. मृत्यु को विश्राम-स्थल मानने से कवि का क्या आशय है ?
6. 'स्वदेश प्रेम' कविता में कवि ने अतीत की किन गौरवपूर्ण घटनाओं का उल्लेख किया है?
7. स्वदेश प्रेम कविता से रूपक अलंकार के दो उदाहरण लिखिए एवं अलंकार को स्पष्ट कीजिए।
8. जन्म-भूमि को माता-तुल्य मानना ही हमारा धर्म है। स्पष्ट कीजिए।
9. रामनरेश त्रिपाठी का जीवन-परिचय लिखिए एवं उनके प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए।
10. रामनरेश त्रिपाठी को साहित्यिक अवदान का उल्लेख करते हुए उनकी भाषा-शैली पर टिप्पणी लिखिए।

III. दिये गए पद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

(क) अतुलनीय जिनके प्रताप का,
साक्षी है प्रत्यक्ष दिवाकर।
घूम-घूम कर देख चुका है,
जिनकी निर्मल कीर्ति निशाकर।।
देख चुके हैं जिनका वैभव,
ये नभ के अनंत तारागण।
<u>अगणित बार सुन चुका है नभ,</u>
<u>जिनका विजय–घोष रण–गर्जन</u>।।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का शीर्षक एवं कवि का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) भारत देश के प्रताप का साक्षी कौन-कौन है ?

(ख) <u>शोभित है सर्वोच्च मुकुट से,</u>
<u>जिनके दिव्य देश का मस्तक,</u>
<u>गूँज रही हैं सकल दिशाएँ,</u>
<u>जिनके जय-गीतों से अब तक</u>।।

जिनकी महिमा का है अविरल,
साक्षी सत्य-रूप हिम-गिरि-वर।
उतरा करते थे विमान-दल
जिसके विस्तृत वक्षःस्थल पर।।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) उपर्युक्त पद्यांश में कौन–सा रस है ? **स्पष्ट कीजिए।**

(ग) सागर निज छाती पर जिनके,
अगणित अर्णव-पोत उठाकर।
पहुँचाया करता था प्रमुदित,
भूमंडल के सकल तटों पर।।
नदियाँ जिसकी यश-धारा-सी
बहती हैं अब भी निशि-वासर।
ढूँढ़ो उनके चरण-चिह्न भी,
पाओगे तुम इनके तट पर।।

(i) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ii) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक एवं कवि का नाम लिखिए।

(iii) 'निशि' और 'वासर' शब्द का दो–दो पर्यायवाची लिखिए।

(घ) जब तक साथ एक भी दम हो,
हो अवशिष्ट एक भी धड़कन।
रखो आत्म-गौरव से ऊँची,
पलकें ऊँचा सिर, ऊँचा मन।।
एक बूँद भी रक्त शेष हो,
जब तक मन में हे शत्रुंजय !
दीन वचन मुख से न उचारो,
मानो नहीं मृत्यु का भी भय ।।

(i) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ii) उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

(iii) 'शत्रुंजय' का समास–विग्रह सहित समास का नाम लिखिए।

(ङ) सच्चा प्रेम वही है जिसकी
तृप्ति आत्म-बलि पर हो निर्भर।
त्याग बिना निष्प्राण प्रेम है,
करो प्रेम पर प्राण निछावर।।
देश-प्रेम वह पुण्य-क्षेत्र है,
अमल असीम त्याग से विलसित।
आत्मा के विकास से जिसमें,
मनुष्यता होती है विकसित।।

(i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक व कवि का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) उपर्युक्त पंद्याश का 'काव्य-सौंदर्य' लिखिए।

IV. भाषा के रंग :

(क) निम्नलिखित पदों का समास–विग्रह कीजिए–
परीक्षास्थल, देशजाति, गिरिवर, चरणचिह्न, अचर

(ख) निम्नलिखित शब्दों के तीन–तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए–
दिवाकर, निशाकर, नभ, वासर, भूमि

(ग) स्वदेश प्रेम कविता से रूपक अलंकार के दो उदाहरण लिखिए।

V. अनुभूति एवं अभिव्यक्ति :

1. पठित कविता के आधार पर मातृभूमि के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्धारण कीजिए। हम अपने दैनिक व्यवहार में उन कर्तव्यों का कहाँ तक पालन करते हैं? विचार कीजिए।
2. अपने देश के किसी एक वीर सपूत के बारे में जानकारी एकत्र कर अपने शब्दों में लिखें।

शब्दार्थ

अतुलनीय – बेजोड़, जिसकी तुलना न हो सके। **दिवाकर** – सूर्य। **सत्य-रूप-हिम-गिरि-वर** – सत्य स्वरूप वाला श्रेष्ठ हिमालय। **निशाकर** – चंद्रमा। **तम** – अंधकार। **अर्णव-पोत** – समुद्री जहाज। **रण-गर्जन** – युद्ध गर्जना। **साक्षी** – प्रत्यक्ष दृष्टा। **वक्षःस्थल** – छाती। **अवशिष्ट** – शेष। **संबल** – सहारा। **कातर** – दुःखी। **शत्रुंजय** – शत्रुओं को जीतने वाला। **निष्प्राण** – निर्जीव–प्राणहीन। **अमल** – स्वच्छ। **विलसित** – सुशोभित। **प्रमुदित** – प्रसन्न होकर। **सकल** – समस्त। **निशि-वासर** – रात-दिन। **हिम** – बर्फ। **आकर** – खजाना, खान, भंडार। **दम** – साँस। **नूतन** – नवीन, नया। **तृप्ति** – संतोष। **सरिता** – नदी। **विषुवत रेखा** – भूमध्य रेखा। **आलौकिक** – लोक से परे, असाधारण।

■

केदारनाथ सिंह

(सन् 1934–2018 ई.)

आधुनिक युग के कवि केदारनाथ सिंह का जन्म उत्तर प्रदेश के **बलिया** जिले के चकिया नामक गाँव में सन् 1934 ई0 में हुआ था। वे एक सामान्य किसान परिवार के थे। गाँव के प्राथमिक स्कूल से उनकी प्रारंभिक शिक्षा आरम्भ हुई। उन्होंने बनारस के उदय प्रताप महाविद्यालय से इंटर तथा काशी हिंदू विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त कर वहीं से पी–एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। उदय प्रताप कॉलेज पड़रौना, गोरखपुर विश्वविद्यालय में अध्यापक एवं प्राचार्य पद पर कार्य किए। इसके अतिरिक्त उन्होंने जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय में भी कार्य किया। उन्हें 'ज्ञानपीठ सम्मान', 'साहित्य अकादमी', 'भारत भारती' के साथ–साथ अन्य सम्मानों से भी विभूषित किया गया। उनका निधन सन् 2018 ई0 में नई दिल्ली में हो गया।

केदारनाथ सिंह तीसरे सप्तक के कवि थे। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं–**अभी बिल्कुल अभी, जमीन पक रही है, यहाँ से देखो, तालस्ताय और साइकिल, अकाल में सारस, तथा उत्तर कबीर। बाघ, कविता दशक और ताना–बाना उनकी अन्य चर्चित कृतियाँ हैं। कल्पना और छायावाद, आधुनिक हिंदी कविता में बिंबविधान, मेरे समय के शब्द, कब्रिस्तान में पंचायत** उनकी गद्य रचनाएँ हैं।

केदारनाथ सिंह भावों और विचारों दोनों ही धरातल पर आधुनिक हैं क्योंकि उनके पास अनुभवों का एक संसार है। उनकी कविताओं में अनेक उतार चढाव आए परंतु उन्होंने बड़े सहज और सरल ढंग से उसे आत्मसात कर अपनी कविताओं को जीवंत किया। आधुनिकता एवं भारतीय परंपरा का समाहार होने के कारण उनकी कविताएँ मानवीय मूल्यों और अस्तित्व को उजागर कर ग्रामीण व शहरी परिवेश को पल्लवित एवं पुष्पित करती हैं। केदारनाथ सिंह ग्रामीण संस्कारों के कवि हैं। खेत खलिहान, पकती फसल, पगडडियों आदि में ग्रामीण प्रकृति एवं लोकजीवन की महक मिलती है। वे अत्यंत कला सजग कवि भी हैं। उनकी भाषा अत्यंत सरल, सहज तथा पारदर्शी है। उन्होंने बिंबों प्रतीकों तथा रूपों को अपनी कविताओं में संजोया है जिसके कारण शिल्प की सहजता एवं अपनापन उनकी कविताओं में स्वतः ही आ गयी है।

*इस कविता में **नदी** प्रतीक के माध्यम से संस्कृति समन्वित जीवन-धारा पर बल दिया गया है। नदी केवल जल-धारा के रूप में नहीं है प्रत्युत् वह सांस्कृतिक चेतना की धारा है, वह सांस्कृतिक धरोहर है। इसी तरह सभ्यता व संस्कृति के तत्त्व हमारे जीवन से अविच्छिन्न हैं एवं हमारे अस्तित्व व अस्मिता के लिए आवश्यक हैं। यदि हम अपनी संस्कृति से दूर होते जाएगें तो अवश्य ही हम इसके नकारात्मक परिणाम के भागी होगें।*

■

नदी

अगर धीरे चलो
वह तुम्हें छू लेगी
दौड़ो तो छूट जाएगी नदी
अगर ले लो साथ
वह चलती चली जाएगी कहीं भी
यहाँ तक-कि कबाड़ी की दुकान तक भी
छोड़ दो
तो वहीं अँधेरे में
करोड़ों तारों की आँखे बचाकर
वह चुपके से रच लेगी
एक समूची दुनिया
एक छोटे-से घोंघे में
सचाई यह है
कि तुम कहीं भी रहो
तुम्हें वर्ष के सबसे कठिन दिनों में भी
प्यार करती है एक नदी
नदी जो इस समय नहीं है इस घर में
पर होगी जरूर कहीं न कहीं
किसी चटाई
या फूलदान के नीचे
चुपचाप बहती हुई
कभी सुनना
जब सारा शहर सो जाय
तो किवाड़ों पर कान लगा

धीरे-धीरे सुनना
कहीं आसपास
एक मादा घड़ियाल की कराह की तरह
सुनाई देगी नदी।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए–

1. केदारनाथ सिंह किस 'सप्तक' के कवि हैं–
   (क) तारसप्तक (ख) दूसरे सप्तक (ग) तीसरे सप्तक (घ) चौथे सप्तक
2. केदारनाथ सिंह का जन्म स्थान है –
   (क) निहालपुर, इलाहाबाद (ख) कोइरीपुर, जौनपुर
   (ग) चकिया, बलिया (घ) कौसानी, अल्मोड़ा
3. 'कब्रिस्तान में पंचायत' किसकी रचना है–
   (क) कुँवर नारायण (ख) केदारनाथ सिंह (ग) त्रिलोचन (घ) केदारनाथ अग्रवाल
4. केदारनाथ सिंह की रचना है–
   (क) कहीं नहीं वहीं (ख) जमीन पक रही है
   (ग) कनुप्रिया (घ) धूप के धान
5. 'कल्पना और छायावाद' किसकी रचना है–
   (क) केदारनाथ सिंह (ख) कैलाश वाजपेयी (ग) भवानीप्रसाद मिश्र (घ) नरेन्द्र मोहन

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. 'नदी' कविता में नदी किसका प्रतीक है?
2. हिंदी कविता में 'बिंब–विधान' किसकी गद्य रचना है ?
3. 'नदी' कविता में नदी की गतिशीलता एवं निरंतरता के विषय में बताइए।
4. कबाड़ी दुकान तक भी नदी चली जाएगी से क्या आशय है? स्पष्ट कीजिए।
5. 'नदी' शीर्षक कविता का केंद्रीय-भाव अपने शब्दों में लिखिए।
6. 'वह चुपके से रच लेगी, एक समूची दुनिया, एक छोटे से घोंघे में' का आशय स्पष्ट कीजिए
7. 'नदी' शीर्षक कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहते हैं ?
8. केदारनाथ सिंह का जीवन परिचय और रचनाओं का उल्लेख कीजिए।
9. केदारनाथ सिंह के साहित्यिक योगदान पर प्रकाश डालिए।

III. दिये गए पद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) अगर धीरे चलो
वह तुम्हें छू लेगी
दौड़ो तो छूट जाएगी नदी
अगर ले लो साथ
वह चलती चली जाएगी कहीं भी
यहाँ तक-कि कबाड़ी की दुकान तक भी

(i) उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

(ii) उपर्युक्त पद्यांश में कवि नदी के माध्यम से किसके बारे में बात कर रहे है ?

(iii) रेखांकित पद्यांश की व्याख्या स्पष्ट कीजिए।

(ख) छोड़ दो
तो वहीं अँधेरे में
करोड़ों तारों की आँखे बचाकर
वह चुपके से रच लेगी
एक समूची दुनिया
एक छोटे-से घोंघे में।

(i) उपर्युक्त कविता के रचयिता एवं शीर्षक का नाम बताइए।

(ii) रेखांकित पद्यांश का आशय स्पष्ट कीजिए।

(iii) आँख के दो पर्यायवाची लिखिए।

(ग) सचाई यह है
कि तुम कहीं भी रहो
तुम्हें वर्ष के सबसे कठिन दिनों में भी
प्यार करती है एक नदी
नदी जो इस समय नहीं है इस घर में
पर होगी जरूर कहीं न कहीं
किसी चटाई
या फूलदान के नीचे

(i) उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

(ii) 'कठिन दिनों में भी प्यार करती रहती है नदी' का आशय स्पष्ट कीजिए।

(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए?

(घ) चुपचाप बहती हुई
कभी सुनना
जब सारा शहर सो जाय
तो किवाड़ों पर कान लगा
धीरे-धीरे सुनना
कहीं आसपास
एक मादा घड़ियाल की कराह की तरह
सुनाई देगी नदी।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश का आशय स्पष्ट कीजिए।

(iii) उपर्युक्त पंद्याश का काव्यगत सौंदर्य स्पष्ट कीजिए?

IV. भाषा के रंग :

(क) निम्नलिखित शब्दों का अर्थ बताइए–
रच ले, समूची, कराह, किवाड़, घड़ियाल

(ख) निम्नलिखित शब्दों का तत्सम् शब्द बताइए–
नदी, आँख, कान, सच, प्यार

(ग) निम्न पदों में कौन सा अलंकार है ? स्पष्ट कीजिए।
अगर ले लो साथ
वह चलती चली जाएगी कहीं भी।

V. अनुभूति एवं अभिव्यक्ति :

(क) संस्कृति के प्रति उदासीनता की भावना का हमारे समाज पर कैसा प्रभाव पड़ रहा है? इससे बचने एवं सांस्कृतिक चेतना के विकास के लिए किन बातों पर बल दिए जाने की आवश्यकता है? विचार कीजिए।

(ख) प्रकृति से संबंधित किसी अन्य कविता को कंठस्थ कर उसका सामूहिक सस्वर वाचन कीजिए।

शब्दार्थ

छू – स्पर्श। **रच लेगी** – निर्माण कर लेगी। **कबाड़ी** – रद्दी की दुकानवाला। **समूची** – संपूर्ण।ा। **किवाड़** – दरवाजा। **घड़ियाल** – मगरमच्छ। **दुनिया** – संसार। **आँख बचाकर** – छिपकर। **चुपके से** – बिना आहट किए। **फूलदान** – गमला। **चुपचाप** – मौन रहकर। **कराह** – पीड़ा की आवाज, आह।

■

अशोक वाजपेयी

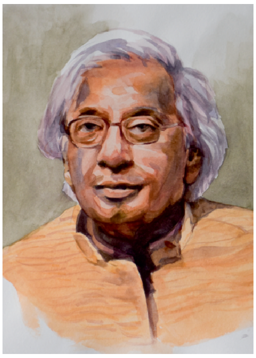

(सन् 1941 ई.)

अशोक वाजपेयी समकालीन कवि हिंदी साहित्य के एक प्रमुख साहित्यकार हैं। उनका जन्म सन् 1941 में **मध्य प्रदेश** के **दुर्ग जिले** में हुआ था। उनके पिता का नाम परमानंद वाजपेयी और माता का नाम विमला देवी था। वाजपेयी जी की प्रारंभिक शिक्षा लाल स्कूल में हुई। सन् 1956 ई. में हायर सेकेंडरी पास करने के बाद उन्होंने सागर विश्वविद्यालय से बी0 ए0 तदंतर सेंट स्टीवेंस कॉलेज दिल्ली से अंग्रेजी साहित्य में एम0 ए0 किया। इसके पश्चात् उन्हें दिल्ली के ही दयाल सिंह कालेज में प्राध्यापक पद पर नियुक्ति मिल गई। आई0 ए0 एस0 की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् उन्हें मध्य प्रदेश शासन भोपाल द्वारा संस्कृति एवं प्रकाशन विभाग में विशेष सचिव नियुक्त किया गया।

काव्य-संग्रह **कहीं-नहीं वहीं** पर उन्हें 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त उन्हें **दयावती मोदी कवि शेखर सम्मान** और **कबीर सम्मान** से भी सम्मानित किया गया। वाजपेयी ने मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में 'भारत भवन' की स्थापना में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है।

अशोक वाजपेयी की प्रमुख रचनाएँ हैं –

शहर अब भी संभावना है, एक पतंग अनंत में, अगर इतने से, तत्पुरुष, कहीं नहीं वहीं, बहुरि अकेला, थोड़ी-सी जगह, घास में दुबका आकाश, आविन्यो, जो नहीं है, अभी कुछ और, तिनका-तिनका, फिलहाल, कुछ पूर्वग्रह, समय से बाहर, सीढ़ियाँ शुरू हो गई हैं, कविता का गल्प, कवि कह रहा है, तीसरा साक्ष्य, साहित्य विनोद, कला विनोद, पुनर्वसु एवं **कविता का जनपद।** इसके अतिरिक्त **मुक्तिबोध, शमशेर बहादुर सिंह तथा अज्ञेय** की चुनी हुई कविताओं का संपादन उन्होंने किया।

साहित्यिक पत्रकारिता के क्षेत्र में भी अशोक वाजपेयी का उल्लेखनीय योगदान है। **समवेत, पहचान, पूर्वग्रह, बहुवचन, कविता एशिया, समास** आदि उनके साहित्यिक पत्रकारिता के आधार-स्तंभ हैं। इसके अतिरिक्त वे **द बुक रिव्यू** समेत अनेक पत्रिकाओं के सलाहकार संपादक भी रहे हैं। उनकी कविताओं का मुख्य वर्ण्य-विषय है–प्रेम, जीवन

और मृत्यु। इसके अतिरिक्त उनकी रचनाओं में मनुष्य की जिजीविषा, हर्ष-विषाद आदि का वर्णन मिलता है। अशोक वाजपेयी निजता और आत्मीयता के कवि हैं, सार्वजनिकता के नहीं। वे शब्द की गरिमा और पवित्रता में विश्वास रखते हैं। उन्होंने साहित्यिक खड़ी बोली का प्रयोग किया है। शैली छंदमुक्त एवं अतुकांत है।

'युवा जंगल' *में कवि ने हरे जंगल के माध्यम से कहा है कि मानव को हरे जंगल के समान सदैव दृढ़, सहनशील, आशा तथा उत्साह की प्रेरणा को ग्रहण करना चाहिए।*

'भाषा अनंत है' *कविता में कवि ने भाषा की अनंत शक्ति, सामर्थ्य तथा उसकी शाश्वत सत्ता को स्वीकार करते हुए उसे सार्वकालिक बताया है।*

■

युवा जंगल

एक युवा जंगल मुझे,
अपनी हरी उँगलियों से बुलाता है।
मेरी शिराओं में हरा रक्त बहने लगा है।
आँखों में हरी परछाइयाँ फिसलती हैं
कंधों पर एक हरा आकाश ठहरा है
होंठ मेरे एक हरे गान में काँपते हैं –
मैं नहीं हूँ और कुछ
बस एक हरा पेड़ हूँ
हरी पत्तियों की एक दीप्त रचना।
ओ जंगल युवा,
बुलाते हो
आता हूँ
एक हरे बसंत में डूबा हुआ
आऽताऽ हूँ......।

भाषा एकमात्र अनंत है

फूल झरता है
फूल शब्द नहीं !
बच्चा गेंद उछालता है,
सदियों के पार
लोकती है उसे एक बच्ची !
बूढ़ा गाता है एक पद्य,
दुहराता है दूसरा बूढ़ा,

भूगोल और इतिहास से परे
किसी दालान में बैठा हुआ !
न बच्चा रहेगा,
न बूढ़ा,
न गेंद, न फूल, न दालान
रहेंगे फिर भी शब्द
भाषा एकमात्र अनंत है।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए–

1. अशोक वाजपेयी का जन्म–स्थान है–
   (क) भोपाल (ख) दुर्ग (ग) दिल्ली (घ) सागर
2. अशोक वाजपेयी की किस रचना पर 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार मिला–
   (क) शहर अब भी संभावना है (ख) थोड़ी सी जगह
   (ग) एक पतंग अनंत में (घ) कहीं–नहीं वही
3. 'तत्पुरुष' के रचनाकार है –
   (क) केदारनाथ सिंह (ख) सुमित्रानंदन पंत
   (ग) अशोक वाजपेयी (घ) रामनरेश त्रिपाठी
4. 'युवा जंगल' के रचनाकार हैं–
   (क) सुमित्रानंदन पंत (ख) अज्ञेय
   (ग) अशोक वाजपेयी (घ) मैथिलीशरण गुप्त।
5. 'पुर्नवसु' किसकी रचना है–
   (क) हजारीप्रसाद द्विवेदी (ख) अशोक बाजपेयी
   (ग) त्रिलोचन (घ) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. 'युवा जंगल' कविता का केंद्रीय-भाव स्पष्ट कीजिए।
2. 'मेरे शिराओं में हरा रक्त बहने लगा है' का आशय स्पष्ट कीजिए।
3. कवि ने 'भाषा को अनंत' क्यों माना है ? स्पष्ट कीजिए।
4. 'भाषा एकमात्र अनंत है' शीर्षक कविता के माध्यम से कवि पाठक को क्या संदेश देना चाहते हैं ?

5. 'युवा जंगल' कविता के माध्यम से कवि ने पाठक के मन में किस भाव को जागृत किया है ?
6. अशोक वाजपेयी के साहित्यिक अवदान एवं उनकी भाषा–शैली पर प्रकाश डालिए।
7. अशोक वाजपेयी का जीवन परिचय बताते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए।

III. दिये गए पद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) एक युवा जंगल मुझे,
अपनी हरी उँगलियों से बुलाता है।
मेरी शिराओं में हरा रक्त बहने लगा है।
आँखों में हरी परछाइयाँ फिसलती हैं
कंधों पर एक हरा आकाश ठहरा है
होंठ मेरे एक हरे गान में काँपते हैं –

(i) उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) 'युवा' और 'जंगल' के दो–दो पर्यायवाची शब्द लिखिए।

(ख) फूल झरता है
फूल शब्द नहीं !
बच्चा गेंद उछालता है,
सदियों के पार
लोकती है उसे एक बच्ची !
बूढ़ा गाता है एक पद्य,
दुहराया है दूसरा बूढ़ा,
भूगोल और इतिहास से परे
किसी दालान में बैठा हुआ !

(i) उपर्युक्त कविता के कवि एवं शीर्षक का नाम लिखिए।
(ii रेखांकित पद्यांश का अंश स्पष्ट कीजिए।
(iii) कवि पद्यांश में किसकी विशेषता बता रहा है।

IV. भाषा के रंग :

(1) निम्नलिखित शब्दों के तीन–तीन पर्यायवाची शब्द लिखें–
जंगल, आँख, आकाश, पेड़, फूल।
(2) निम्नलिखित शब्दों के तत्सम लिखिए –
उँगली, होंठ, सदी, पत्ता।

(3) निम्नलिखित शब्दों का अर्थ लिखिए–
युवा, शिराओं, दीप्त, लोकती, दालान।

(4) निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार को स्पष्ट कीजिए–
(क) एक युवा जंगल मुझे,
अपनी हरी उँगलियों से बुलाता है।
(ख) न गेंद, न फूल, न दालान
रहेंगे फिर भी शब्द
भाषा एकमात्र अनंत है।

V. अनुभूति एवं अभिव्यक्ति :

जगत् में सब कुछ नश्वर है किंतु भाषा शाश्वत है। अतएव भाषा का प्रभाव अनंत है। इसलिए हमें भाषा के प्रति संवेदनशील रहना चाहिए। आप भाषा के प्रति कितना संवेदनशील हैं? – विचार कीजिए।

शब्दार्थ

युवा जंगल – युवा (नवीन) जंगल। **शिराओं** – नाड़ियाँ। **रक्त** – खून। **परछाइयाँ** – छाया। **सदियों** – शताब्दियाँ। **ठहरा** – रुका हुआ। **काँपते** – हिलते। **दीप्त** – प्रकाशवान। **आलोकित** – प्रज्वलित। **झरता** – गिरता हुआ। **लोकती** – पकड़ लेती। **पद्य** – गीत, कविता। **परे** – दूर। **अनंत** – जिसका कोई अंत न हो।

■

गद्य–खंड

हिंदी गद्य का विकास : एक संक्षिप्त परिचय

साहित्य मानव चेतना की अभिव्यक्ति है। चेतना अनुभूति की सघनता तथा चिंतन की गहनता के समन्वित आधार पर रूप ग्रहण करती है। अनुभूति का संबंध ह्रदय की संवेदनशीलता से है और चिंतन वस्तुतत्व के स्थितिबोध के लिए उठने वाली शंकाओं, जिज्ञासाओं तथा प्रश्नों के बौद्धिक समाधान से। ह्रदय की संवेदनशील वृत्तियाँ विशिष्ट छंद, स्वर, लय, गति, प्रवाह तथा ध्वनि के आधार पर मूर्त होकर पदरचना में सौष्ठव ला देती है। शब्दों में नाद–सौंदर्य आ जाता है। इस संवेदनात्मक अभिव्यक्ति को पद्य कहा जाता है। दूसरी ओर चिंतन, जटिल समस्याओं के बौद्धिक समाधान, तर्कों की श्रृंखला, विचारों के क्रम, नियमों की मर्यादा, शब्द रूपों में संयम, चिंतन की छंदमुक्त अभिव्यक्ति को सामान्यतः गद्य कहा जाता है। गद्य विचार प्रधान होता है।

साहित्यिक हिंदी गद्य का क्रमबद्ध इतिहास उन्नीसवीं शती से प्राप्त होता है। इसके पहले भी राजस्थानी–गद्य, ब्रजभाषा–गद्य तथा खड़ी बोली–गद्य की परंपरा मंद गति से चल रही थी। 'राजस्थानी', 'ब्रजभाषा' तथा 'खड़ी बोली' के गद्य रूपों पर विचार करने से पूर्व हमें आदिकालीन गद्य की स्थिति और गद्य–रूपों की पृष्ठभूमि को जानने की जरूरत है। आदिकालीन गद्य के स्वरूप का बताने वाली निम्नलिखित कृतियाँ हैं–

1. कुवलयमाला कथा (नवीं शती)
2. राउलवेल (ग्यारहवीं शती)
3. उक्तिव्यक्ति प्रकरण (बारहवीं शती)
4. वर्णरत्नाकर (चौदहवीं शती)
5. कीर्तिलता (चौदहवीं शती)

राजस्थानी गद्य :

राजस्थानी गद्य का सूत्रपात दसवीं शताब्दी से ही हो गया था। इसका स्वरूप अपेक्षाकृत प्रौढ़ था। इसमें दान–पत्र, पट्टे–परवाने, जैनियों के धार्मिक उपदेश, राजनीति, गणित, इतिहास आदि विविध विषय उपलब्ध होते हैं। टीकाओं और अनुवाद ग्रंथों की परंपरा भी इसमें मिलती है। राजस्थानी गद्य प्रारंभ से संस्कृत की समास शैली और भाषा के अपभ्रंश रूपों से प्रभावित रही है। बाद में, इस पर ब्रजभाषा गद्य का प्रभाव भी स्पष्ट दिखाई देता है। राजस्थानी गद्य के ये रूप, तीन प्रकार की साहित्यिक रचनाओं में प्राप्त होते हैं।

1. स्वतंत्र रूप से लिखे गए मौलिक तथा अनूदित ग्रंथों में
2. टीकाओं में
3. कवियों की निजी रचनाओं में बीच–बीच में टीकाओं के रूप में

सन् 1847 में फतहराम वैरागी कृत 'पंचाख्यान' में राजस्थानी गद्य का अधिक परिमार्जित रूप मिलता है। स्वतंत्र रूप से लिखे गये ग्रंथों में गद्य का रूप अधिक प्रौढ़ व परिमार्जित है। कवि और इतिहासकार श्यामलदास लिखित इतिहास ग्रन्थ 'वीरविनोद' (1835 ई.) दो भागों में विभक्त है। इस ग्रंथ में मुख्यतः मेवाड़ का इतिहास वर्णित है, पर प्रसंगवश जयपुर, जोधपुर, जैसलमेर आदि राजस्थान की दूसरी रियासतों का वर्णन भी मिलता है।

ब्रजभाषा गद्य :

ब्रजभाषा का प्राचीनतम रूप आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार सन् 1343 ई. तक ही उपलब्ध होता है। इस गद्य का प्रयोग गोरखपंथी योगियों ने अपने धार्मिक उपदेश में किया था। कालांतर में भाषायी शोधों के आधार पर (जिसे आचार्य शुक्ल ने 1343ई० का माना है) वह 1658 ई. से पहले का नहीं हो सकता है, ऐसा विद्वानों ने माना है।

आगे चलकर 17वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में वल्लभाचार्य के पुत्र गोसाई विट्‌ठलनाथ कृत 'शृंगार–रस–मंडन' तथा विट्‌ठलनाथ के पुत्र गोकुलनाथ कृत 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' आदि कृतियों में प्रयुक्त गद्य को ब्रजभाषा गद्य का प्रचलित रूप माना गया है। 1603 ई. में नाभादास द्वारा रचित 'अष्टयाम' बैकुंठमणि शुक्ल का 'अगहनमाहात्म्य' और 'बैशाखमाहात्म्य' (1623 ई.) तथा सन् 1710 में सूरति मिश्र द्वारा रचित 'बैताल पचीसी' आदि ग्रंथों ने इस परंपरा को जीवित रखा। ब्रजभाषा गद्य के मौलिक तथा अनुदित ग्रंथ इस प्रकार हैं –

प्रियादास कृत 'सेवक चरित्र' (1779 ई.), हीरालाल कृत 'आईने अकबरी की भाषा वचनिका' (1795 ई.), लल्लूलाल कृत 'राजनीति' (1802 ई.) और 'माधवविलास' (1817 ई.) तथा माणिकलाल ओझा कृत 'सोम वंशन की वंशावली' (1828 ई.) उल्लेखनीय है। भाषा की दृष्टि से प्रियादास और लल्लूलाल की कृतियाँ महत्वपूर्ण हैं।

इसके अतिरिक्त ब्रजभाषा गद्य में अनेक महत्वपूर्ण टीकाएँ भी लिखी गई हैं। इसके बावजूद ब्रजभाषा गद्य जीवन की नवीन आवश्यकताओं के अनुरूप अपने को सशक्त न बना सका।

खड़ीबोली गद्य (दक्खिनी) :

दक्षिण भारत के निवासी, मुसलमानों के दक्षिण प्रवेश के पहले से ही उत्तर भारत की भाषाओं और बोलियों से परिचित थे, क्योंकि 'चालुक्य राजवंश' और 'यादव राजवंश' के संस्थापक उत्तर भारत से ही वहाँ पहुंचे थे। अलाउद्‌दीन खिलजी ने दक्षिण भारत पर आक्रमण करके राज्य

विस्तार किया तो उत्तर और दक्षिण के बीच एक नए सांस्कृतिक संबंध की शुरुआत हुई। ये लोग दिल्ली से अपने साथ एक भाषा भी ले गये। प्रो. एहतेशाम हुसैन के शब्दों में ''इस भाषा में पंजाबी, हरियाणवी का मेल था। यह ब्रजभाषा के प्रभाव से बची नहीं थी। सबसे बड़ी बात यह थी इसमें फारसी–अरबी के अनेक शब्द भी सम्मिलित हो गए थे। इतिहास से पता चलता है कि आरंभ में उन्होंने उसी भाषा से काम चलाया, यहाँ तक कि वह उन्नति करके साहित्य की भाषा बन गई। साहित्यकारों ने उसको कभी 'हिंदी' कभी 'जबाने हिंदुस्तानी' कहा और कभी 'दक्खिनी' कहकर पुकारा। दक्खिनी खड़ीबोली गद्य के पूरे विकास को तीन चरणों में बाँट सकते हैं–

1. प्रारंभिक काल (1300–1400 ई.)
2. मध्यकाल (1491–1687 ई.)
3. उत्तरकाल (1688–1850 ई.)

प्रारम्भिक काल में सबसे प्रसिद्ध गद्य लेखक 'ख्वाजा बंदा नेवाज गेसूदराज' हैं। इनकी प्रसिद्ध कृति 'मेराजुल आशकीन' दक्खिनी गद्य की प्रथम पुस्तक मानी जाती है। 'शिकारनामा' और 'तिलावतुल–वजूद' दो अन्य रचनाएं हैं।

दक्खिनी हिंदी विकास के दूसरे चरण में मुल्ला 'वजही' विशेष रूप से उल्लेखनीय है। 'कुतुबमशतरी' सन् 1609 ई. में इनकी लिखी गई महत्त्वपूर्ण रचना है। वजही की प्रख्यात गद्य–कृति 'सबरस' (1635 ई.) है।

दक्खिनी गद्य के विकास के तीसरे चरण में अनेक गद्य लेखकों ने अपनी रचनाओं द्वारा 'वजही' की परंपरा को आगे बढ़ाया। इस युग का गद्य आधुनिक हिंदी गद्य के बहुत निकट आ गया।

खड़ी बोली गद्य (उत्तर भारत) :

खड़ी बोली गद्य के उद्भव के विषय में विद्वानों के दो मत हैं। जार्ज ग्रियर्सन, आर. डब्ल्यू. फ्रेजर, नलिन मोहन सान्याल साहित्यिक खड़ीबोली का उद्भव सर्वप्रथम गिलक्राइस्ट की अध्यक्षता में लल्लूलाल तथा सदल मिश्र द्वारा बताते हैं। आचार्य शुक्ल व डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय ने खड़ी बोली गद्य का प्रारंभ अकबर के समय में गंगकवि द्वारा 'चंद–छंद बरनन की महिमा' (1570 ई.) से माना है। इसके अतिरिक्त खड़ी बोली गद्य की महत्वपूर्ण प्रारंभिक रचनाएँ हैं– रामप्रसाद निरंजनी की 'भाषायोगवशिष्ठ' (1741 ई), पं. दौलतराम कृत 'जैन पद्मपुराण का भाषानुवाद' (1761 ई.), मुंशीसदासुखलाल 'नियाज' कृत 'सुखसागर', लल्लूलाल कृत 'प्रेमसागर' (1810 ई.) , सदलमिश्र कृत 'नासिकेतोपाख्यान' (1803 ई.), इंशा अल्ला खाँ कृत 'रानी केतकी की कहानी' (1800–1808 ई.) मध्य लिखी गई है। 'रानी केतकी की कहानी' का दूसरा नाम 'उदयभान चरित' है।

हिंदी खड़ी बोली के विकास में जिन भाषा–पंडितों ने अपना योगदान दिया है उनमें लल्लूलाल, सदलमिश्र, गंगाप्रसाद शुक्ल का नाम विशेष उल्लेखनीय है। इनके अतिरिक्त इन्द्रेश्वर, नरसिंह, ख्यालीराम, ब्रह्मसच्चिदानंद, मधुसूदन तर्कालंकार, ईश्वरचंद विद्यासागर, तथा दीनबंधु हैं।

अध्ययन सुविधा की दृष्टि से हिंदी गद्य साहित्य को निम्नलिखित कालखंडों में विभाजित किया जा सकता है लेकिन विभिन्न साहित्यकारों के साहित्यिक योगदान को इस नामकरण के माध्यम से स्पष्ट नहीं किया जा सकता।

1. पूर्व भारतेंदु युग
2. भारतेंदु युग
3. द्विवेदी युग
4. शुक्लयुग
5. शुक्लोत्तर युग
6. स्वातंत्र्योत्तर युग

शुक्ल युगीन (छायावाद) गद्य साहित्य :

सन् 1918 से 1938 तक के समय को हिंदी गद्य–साहित्य में 'शुक्ल युग', 'प्रसाद युग', 'प्रेमचंद युग' के नाम से जाना जा सकता है। क्योंकि गद्य साहित्य की महत्वपूर्ण विधाओं उपन्यास, कहानी, निबंध, नाटक एवं आलोचना के क्षेत्र में इस युग का महत्वपूर्ण योगदान है। प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद तथा रामचंद्र शुक्ल इस युग के ऐसे कृतिकार हैं, जिन्होंने एकाधिक गद्य विधाओं को समृद्ध करने में उल्लेखनीय योगदान दिया। इस युग में विभिन्न गद्य विधाओं की उन्नति हुई।

द्विवेदी युग के पश्चात् हिंदी गद्य व्याकरणबद्ध एवं परिमार्जित रूप में सामने आया। हिंदी की जातीय शैली का निर्माण अनेक प्रभावों के समन्वय से हुआ है। हिंदी गद्य ने अंग्रेजी से स्पष्ट भावव्यंजकता, बंगला से सरसता और मधुरता, मराठी से गंभीरता एवं उर्दू से प्रवाह ग्रहण किया। हिंदी गद्य की जातीय शैली का उत्कृष्ट रूप हमें प्रेमचंद के लेखन में दिखाई देता है। जातीय शैली के अतिरिक्त हिंदी गद्य लेखकों की निजी शैलियों की अनेकरूपता भी दिखाई देती है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने हिंदी गद्य को प्रौढ़ता ही नहीं, गंभीरता, संयम, समासत्व तथा शक्तिमत्ता प्रदान की। बाबू श्यामसुंदर दास कुशल वक्ता थे। उनका गद्य भाषण की संपूर्ण विशेषताओं को लेकर सामने आया है। उसमें प्रवाह, सरलता और स्पष्टता है, किंतु विस्तार भी है।

सन् 1918 ई. से स्वाधीनता संग्राम में गुणात्मक परिवर्तन आया। ब्रिटिश साम्राज्यवाद ने उसी मात्रा में दमन चक्र भी तेज किया। सन् 1919 ई. में जलियांवाला बाग की घटना हुई। देश के औद्योगिक नगरों में हड़तालें होने लगीं। सन् 1921 ई. के आस–पास उत्तर प्रदेश के पूर्वी जिलों में किसान आंदोलन तीव्र हुआ। इसी वर्ष दक्षिण में मोपला विद्रोह हुआ। इसका प्रभाव हिंदी साहित्य पर भी पड़ा। स्वाधीनता का लक्ष्य और अधिक स्पष्ट हुआ, वैज्ञानिक दृष्टि अधिक सक्रिय हुई। इस दौर में फ्रायड के मनोविश्लेषण का प्रभाव भी रचनाकारों पर पड़ा। साहित्य में यथार्थ को परखने की दृष्टि आई, वहीं कल्पना–प्रवणता अवलोकित हुई। इस काल के साहित्य में यथार्थ का आग्रह और कल्पना का उपयोग, दोनों दिखाई पड़ते हैं। प्रेमचंद में यथार्थवाद के साथ आदर्श और स्वच्छंदतावादी रुझान भी हैं। निराला, प्रसाद, पंत के काव्य में भी यथार्थवादी रंग हैं। महादेवी वर्मा की करुणा का संबंध यथार्थ की विषमता में है, जो खुलकर उनके रेखाचित्रों में प्रकट हुआ है। स्वाधीनता आंदोलन स्वाधीन मानसिकता के बिना असंभव था। इस युग में यथार्थ से विक्षुब्धता है, तो स्वप्न–निर्माण भी है। आशा–आकांक्षा के स्वप्नलोक के बिना संघर्ष नहीं हो सकता। इसीलिए भारत अपनी पराधीनता के यथार्थ से उबरने और स्वाधीनता के स्वप्न की पूर्ति के लिए संघर्षरत था। पराधीनता हमारा राष्ट्रीय कलंक थी और स्वाधीनता हमारा राष्ट्रीय स्वप्न। यथार्थ और आदर्श इस एक ऐतिहासिक स्थिति के ही दो पहलू थे। इसलिए इस दौर के साहित्य में, ये दोनों साहित्य प्रेरक हैं। यथार्थ–चित्रण के लिए सबसे समर्थ विधा उपन्यास ही थी, वह प्रेमचंद के उपन्यासों में चरमोत्कर्ष पर पहुँची।

इस युग की सीमा में रचित गद्य अधिक कलात्मक हो गया है। उसमें अनुभूति की सघनता और भावों की तरलता है। रायकृष्णदास, वियोगीहरि, माखनलाल चतुर्वेदी, जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', नंददुलारे वाजपेयी, पांडेय बेचेन शर्मा 'उग्र', शिवपूजन सहाय आदि लेखकों ने छायावादी गद्य को समृद्ध किया है।

छायावादी युग में राजनीतिक दृष्टि से महात्मा गांधी का नेतृत्व जनता को सत्य, अहिंसा और असहयोग के माध्यम से स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए निरंतर प्रेरणा एवं शक्ति प्रदान कर रहा था। 1919 ई. के प्रथम अवज्ञा आंदोलन की असफलता, जलियाँवाला बाग कांड तथा ऐसी अन्य घटनाओं से जनता का मनोबल कम नहीं हुआ था, साइमन कमीशन के बहिष्कार तथा नमक–कानून–भंग सदृश जन आंदोलनों से इसी तथ्य की पुष्टि होती है। सामाजिक एवं राजनैतिक परिवर्तनों का प्रभाव छायावाद युग के गद्य साहित्य पर भी दिखाई देता है। द्विवेदी युग में हिंदी गद्य का व्याकरणसम्मत परिमार्जित रूप स्थिर हो चुका था। अतः विभिन्न गद्य विधाओं का विकास स्वाभाविक था। इसलिए छायावाद युग का गद्य साहित्य, द्विवेदी युग की तुलना में अधिक विकासशील और समृद्ध है।

नाट्य साहित्य की दृष्टि से इस युग को 'प्रसाद युग' कहना उचित होगा। यद्यपि प्रसाद ने 1918 के पूर्व से ही नाटकों की रचना आरंभ कर दी थी, उनकी आरंभिक रचनाएँ 'सज्जन', 'कल्याणी–परिणय', 'प्रायश्चित' आदि थीं। छायावाद युग में रचित 'अजातशत्रु', 'स्कंदगुप्त', 'चंद्रगुप्त', 'ध्रुवस्वामिनी' आदि नाटकों के माध्यम से प्रसाद ने हिंदी नाट्य साहित्य को विशिष्ट स्तर और गरिमा प्रदान की। कलात्मक उत्कर्ष की दृष्टि से प्रसाद के तीन प्रमुख नाटक हैं – 'स्कंदगुप्त', 'चंद्रगुप्त', 'ध्रुवस्वामिनी'। इस तथ्य से इनकार नहीं किया जा सकता है कि हिंदी नाटक को साहित्यिक भूमिका प्रदान करने का प्रयास सर्वप्रथम भारतेंदु हरिश्चंद्र ने किया था। इस युग के अन्य नाटककारों में हरिकृष्ण प्रेमी ('रक्षाबंधन', 'प्रतिशोध' आदि), लक्ष्मीनारायण मिश्र ('अशोक, संयासी', 'मुक्ति का रहस्य', 'सिंदूर की होली'), 'रामकुमार वर्मा' ('बादल की मृत्यु'), 'उपेंद्रनाथ अश्क' (लक्ष्मी का स्वागत) आदि उल्लेखनीय हैं।

कहानी की दृष्टि से छायावाद युग को प्रेमचंद युग कहा जाता है। उन्होंने 'ईदगाह', 'नमक का दारोगा', 'पूस की रात', 'कफन' जैसी अनेक कहानियों का सृजन किया। उनकी कहानियाँ 'मानसरोवर' नाम से आठ भागों में संकलित हैं। शिल्प और भाषा की दृष्टि से भी उन्होंने हिंदी कथा–साहित्य को विशिष्ट स्तर प्रदान किया। इस युग के अन्य गद्य लेखक हैं चतुरसेन शास्त्री, शिवपूजन सहाय, बेचन शर्मा 'उग्र', जैनेंद्र, भगवतीचरण वर्मा, राधिकारमण प्रसाद सिंह, वृंदावनलाल वर्मा, राहुल सांकृत्यायन, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुदर्शन, विष्णु प्रभाकर, चंद्रगुप्त विद्यालंकार आदि।

निबंध और आलोचना के क्षेत्र में इस युग को शुक्ल युग कहा जाता है। आचार्य शुक्ल के निबंध 'चिंतामणि' नाम से संकलित हैं। अन्य साहित्यकारों में गुलाबराय, शांतिप्रिय द्विवेदी, विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, श्यामसुंदर दास, रामकुमार वर्मा आदि उल्लेखनीय हैं।

छायावादी युग में जीवन के प्रति भावात्मक दृष्टिकोण की प्रधानता के कारण निबंध लेखकों में भावुकता भी दिखाई देती है। कई लेखकों ने इस प्रवृत्ति का अतिक्रमण भी किया है। इस युग के निबंध लेखकों में बाबू गुलाबराय (1888–1963 ई.), माखनलाल चतुर्वेदी (1889–1968 ई.) रायकृष्ण दास (1892–1985 ई.), वियोगी हरि (1896–1988 ई), डॉ. रघुवीर सिंह (1909–1991 ई.), जयशंकर प्रसाद (1889–1937 ई.), सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (1896–1961 ई.), महादेवी वर्मा (1907–1987 ई.), शांतिप्रिय द्विवेदी (1906–1967 ई.), राहुल सांकृत्यायन (1893–1963 ई.), नंददुलारे वाजपेयी (1906–1967 ई.) तथा कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर (1906–1995 ई.) प्रमुख हैं।

गद्य साहित्य के तृतीय उत्थान में आलोचकों ने भाषा के गुण दोष के कथन के आगे बढ़कर कवियों की विशेषताओं और उनकी अंतःप्रवृत्ति की छानबीन की ओर भी ध्यान दिया है। आचार्य शुक्ल की रचनाओं के कारण हिंदी की समालोचना ने नए युग में पदार्पण किया। इस

युग के प्रमुख आलोचक हैं – आचार्य रामचंद्र शुक्ल, कृष्णशंकर शुक्ल, बाबू गुलाबराय, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, लक्ष्मीनारायण सुधांशु, विनय मोहन शर्मा, डॉ. सत्येंद्र, शांतिप्रिय द्विवेदी, विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, फादर कामिल बुल्के, पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल।

शुक्ल युगीन आलोचना के प्रमुख प्रकार हैं– तुलनात्मक आलोचना, विश्लेषणात्मक आलोचना, शास्त्रीय आलोचना, रचनाकार–केंद्रित आलोचना।

हिंदी उपन्यास और कहानी के क्षेत्र में छायावाद का दौर 'प्रेमचंद युग' हैं। प्रेमचंद को उपन्यास सम्राट कहा जाता है। 'सेवासदन', 'प्रेमाश्रम', 'रंगभूमि', 'निर्मला', 'गबन', 'कर्मभूमि' और 'गोदान' जैसे उपन्यासों के माध्यम से प्रेमचंद ने हिंदी उपन्यास साहित्य को मनोरंजन के स्तर से ऊपर उठा कर जीवन के साथ सार्थक रूप से जोड़ने का काम किया। उन्होंने सामयिक समस्याओं को अपने उपन्यासों का आधार बनाने के बावजूद जीवन की सहज–सामान्य धारा को उचित महत्व दिया।

हिंदी उपन्यास के विकासक्रम में प्रेमचंद का विशेष महत्त्व है। प्रेमचंद में आर्यसमाज की तार्किकता, गांधी की विनयशीलता और तिलक की तेजस्विता का अद्‌भुत समन्वय है। 'सेवासदन' (1918 ई.) से लेकर 'गोदान' (1936 ई.) तक आते–आते उनके विचारों में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ है। प्रेमचंद ने साहित्य को जीवन की व्यापक अनुभूति के साथ संबद्ध करके देखा। प्रेमचंद के उपन्यासों में व्यक्ति चेतना, सामाजिक विसंगतियां, यथार्थ की अनुभूति, आदर्श की कल्पना, बाह्य घटना वैविध्य, आंतरिक मंथन तथा भाव द्वंद्व सभी कुछ मिल जाता है।

इस युग के प्रमुख उपन्यासकार हैं– विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक (1891–1945 ई.), श्रीनाथ सिंह (1901–1995 ई.), शिवपूजन सहाय (1893–1963 ई.), भगवती प्रसाद वाजपेयी (1899–1973 ई.), चंडीप्रसाद हृदयेश (1898–1936 ई.), राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह (1890–1971 ई.) सियारामशरण गुप्त (1895–1963 ई.)।

हिंदी की प्रारंभिक कहानियों में कथानक का विकास आकस्मिक तथा दैवी घटनाओं पर निर्भर था। कालांतर में कथा विकास चरित्रों की मनोवैज्ञानिक विशेषताओं द्वारा होने लगा। कहानी विकास के प्रथम चरण में 'सरस्वती' के माध्यम से चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' और प्रेमचंद, 'इंदु' के माध्यम से प्रसाद तथा हिंदी गल्पमाला' के माध्यम से जी. पी. श्रीवास्तव तथा इलाचंद्र जोशी आदि लेखक सामने आये।

शुक्लोत्तर (छायावादोत्तर) गद्य साहित्य :

हिंदी गद्य साहित्य की दृष्टि से यह युग सर्वांगीण उन्नति का युग है। इसी युग में भारत ने पराधीनता की बेड़ियाँ तोड़ी। इस युग में विभिन्न गद्य विधाओं का बहुमुखी विकास हुआ। इस

युग के लेखकों ने कथासाहित्य, नाटक, आलोचना के साथ–साथ रिपोर्ताज और इंटरव्यू जैसे नए साहित्यिक विधाओं के माध्यम से भावों को अभिव्यक्त करने लगे। इस युग में राष्ट्र के नव निर्माण पर बल दिया जाने लगा। 'कथ्य' की कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए सर्वथा नए प्रतीक, उपमान अथवा बिंब ही प्रयुक्त नहीं हुए अपितु फ्लैशबैक, चेतना प्रवाह आदि शैलियों का भी प्रयोग किया गया।

इस युग के लेखक वस्तुतः मानव–मन के सूक्ष्म संवेदनाओं को सशक्त रूप से अभिव्यक्त करते थे। इस युग का गद्य साहित्य कथ्य और शिल्प दोनों दृष्टियों से वैविध्यपूर्ण है। इस युग के प्रमुख नाटककार हैं जगदीश माथुर ('कोणार्क', 'पहला राजा'), धर्मवीर भारती ('अंधा युग'), लक्ष्मीनारायण लाल ('मादा कैक्टस', 'तीन आँखों वाली मछली'), मोहन राकेश ('आषाढ़ का एक दिन', 'लहरों का राजहंस'), हरिकृष्ण प्रेमी ('आहुति', 'स्वप्नभंग'), जगन्नाथ प्रसाद मिलिंद ('समर्पण'), चंद्रगुप्त विद्यालंकार ('न्याय की रात'), नरेश मेहता ('सुबह के घंटे'), मन्नू भंडारी ('बिना दीवारों का घर'), ज्ञानदेव अग्निहोत्री ('नेफ़ा की एक शाम') आदि उल्लेखनीय हैं।

प्रेमचंद के बाद हिंदी उपन्यास कई मोड़ों से गुजरता हुआ दिखाई पड़ता है। इस युग में साहित्यकारों ने अनेक प्रयोग किए। इस क्षेत्र में अज्ञेय ('शेखर एक जीवनी', 'नदी के द्वीप'), इलाचंद्र जोशी ('घृणामयी', 'संन्यासी', 'ऋतुचक्र'), यशपाल ('दादा कामरेड'), रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' ('चढ़ती धूप'), भगवती चरण वर्मा ('चित्रलेखा'), अमृतलाल नागर ('बूँद और समुद्र', 'अमृत और विष'), हजारी प्रसाद द्विवेदी ('बाणभट्ट की आत्मकथा'), रांगेय राघव ('मुर्दों का टीला'), नागार्जुन ('रतिनाथ की चाची', 'बलचनमा'), फणीश्वरनाथ रेणु ('मैला आंचल'), रामदरश मिश्र ('पानी के प्राचीर'), धर्मवीर भारती ('गुनाहों का देवता'), मोहन राकेश ('अंधेरे बंद कमरे') आदि का नाम उल्लेखनीय हैं। कहानी के क्षेत्र में विष्णु प्रभाकर, रामदरश मिश्र, निर्मल वर्मा, इलाचंद्र जोशी, रांगेय राघव, मार्कण्डेय आदि उल्लेखनीय हैं।

स्वातंत्र्योत्तर गद्य साहित्य :

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद लोगों का मोहभंग होने लगा। मूल्य टूटने लगे। वैयक्तिक महत्वाकांक्षाएँ बढ़ने लगीं। ऐसे में साहित्यकारों ने यथार्थ स्थितियों को उजागर किया। मोहन राकेश ने 'अंधेरे बंद कमरे' के माध्यम से आस्थाविहीन समाज तथा अनिश्चित की स्थिति में लटके हुए मनुष्य को रेखांकित किया। इस दृष्टि से 'वे दिन' (निर्मल वर्मा), 'मछली मरी हुई' (राजकमल चौधरी), 'डाक बंगला' (कमलेश्वर), 'अपने से अलग' (गंगा प्रसाद विमल), 'यह पथ बंधु था' (नरेश मेहता), 'राग दरबारी' (श्रीलाल शुक्ल), 'आपका बंटी' (मन्नू भंडारी), 'धरती धन न अपना' (जगदीश चंद्र), 'चित्तकोबरा' (मृदुला गर्ग), 'आधा गाँव' (राही मासूम रज़ा), 'गोबर गणेश' (रमेशचंद्र शाह) आदि उपन्यास उल्लेखनीय हैं।

इस युग में कहानी को लेकर अनेक साहित्यिक आंदोलन हुए। कुछ प्रमुख कहानी आंदोलन हैं – नई कहानी (मोहन राकेश), अ–कहानी (गंगा प्रसाद विमल), सचेतन कहानी (महीप सिंह), समांतर कहानी (कमलेश्वर) सहज कहानी (अमृत राय)। इसी समय आधुनिकताबोध की प्रवृत्ति उभरी। 1950 के बाद की कहानियों में क्रमशः वैयक्तिकता का दबाव बढ़ता गया। यशपाल प्रगतिवादी विचारधारा के प्रतिनिधि कहानीकार हैं। अज्ञेय ने व्यक्ति के आत्मसंघर्ष का चित्रण किया है। इलाचंद्र जोशी ने अपनी कहानियों में मनोवैज्ञानिक केस हिस्ट्री प्रस्तुत की है। अमृतराय, मोहन राकेश, विष्णु प्रभाकर, भैरवप्रसाद गुप्त, राजकमल चौधरी, श्रीकांत वर्मा, उषा प्रियंवदा, महीप सिंह आदि इस युग के उल्लेखनीय साहित्यकार हैं।

कथा–साहित्य के साथ–साथ यात्रा–साहित्य, रिपोर्ताज, साक्षात्कार, बाल साहित्य, लघुकथा आदि अनेक विधाओं का सूत्रपात हुआ है। आज का युग विमर्शों का युग है। स्त्री, दलित, आदिवासी, वृद्ध, किन्नर, किसान, अल्पसंख्यक आदि अनेक विमर्श साहित्य के केंद्र में हैं। प्रभा खेतान, अनामिका, मैत्रेयी पुष्पा, गीतांजलिश्री, चित्रा मुद्‌गल, कृष्णा अग्निहोत्री, मृदुला सिन्हा, ओमप्रकाश वाल्मीकि, पुन्नी सिंह, सुशीला टाकभौरे, रणेंद्र, रमेश उपाध्याय, महुआ माजी आदि अनेक साहित्यकार सामने आ रहे हैं। हिंदी गद्य साहित्य का विकास निरंतर हो रहा है।

गद्य की विविध विधाएँ

कहानी

कहानी वह साहित्य गद्य विधा है, जिसमें जीवन के किसी एक पक्ष का कल्पना मिश्रित, मार्मिक एवं रोचक चित्रण होता है। कहानी आधुनिक साहित्य की सबसे लोकप्रिय विधा है। इसका मुख्य लक्ष्य था, मनोरंजन प्राप्त करना या आनंद पाना। इसमें जीवन का संदेश और पूर्वजों के अनुभव निहित होते थे।

अन्य आधुनिक गद्य विधाओं के समान आधुनिक कहानी का प्रवर्तन भारतेन्दु युग में ही हुआ। कुछ विचारक इंशाअल्लाह खाँ की 'रानी केतकी की कहानी' को हिंदी की पहली कहानी मानते हैं, लेकिन इसमें किस्सागोई के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। इसके बाद राजा शिवप्रसाद सितारे हिंद की 'राजा भोज का सपना' और भारतेंदु हरिश्चंद्र की 'एक अद्‌भुत अपूर्व स्वप्न 'नामक कहानी सामने आई। इन दोनों में भी कहानी नाम का कोई तत्व उपलब्ध नहीं होता। द्विवेदी युग में 'सरस्वती' पत्रिका के प्रकाशन के प्रथम वर्ष में ही किशोरीलाल गोस्वामी की 'इंदुमती' नामक कहानी छपी और इसके बाद बंग महिला की 'दुलाईवाली' आचार्य शुक्ल की 'ग्यारह वर्ष का समय' प्रकाशित हुई। द्विवेदी युग के कहानीकारों में किशोरी लाल गोस्वामी, रामचंद्र शुक्ल, बंग महिला एवं माधव राव सप्रे प्रमुख

हैं। अन्य प्रमुख कहानीकारों में विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक', जयशंकर प्रसाद, प्रेमचंद्र, चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' इत्यादि हैं।

उपन्यास

मानव जीवन समाज का इतिहास के यथार्थ सत्य को संवाद एवं दृश्यात्मक घटनाओं पर आधारित चित्र के माध्यम से पाठकों के समक्ष रखने या प्रस्तुत करने वाली विधा उपन्यास कहलाती है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने लाला श्रीनिवास दास कृत 'परीक्षा गुरु' को हिंदी का प्रथम मौलिक उपन्यास माना है।

मुंशी प्रेमचंद युग–प्रवर्तक उपन्यासकार हैं, इन्होंने 'सेवासदन', 'निर्मला', 'गबन', 'रंगभूमि', 'गोदान', 'कर्मभूमि' आदि उपन्यास लिखे हैं। प्रसाद ने 'कंकाल', 'तितली', 'इरावती' (अपूर्ण) जैसे सशक्त सामाजिक, यथार्थवादी उपन्यासों को हिंदी में प्रस्तुत किया। अन्य प्रमुख उपन्यासकार और उपन्यासों के नाम हैं – पं. विश्वंभरनाथ 'कौशिक' 'माँ', 'भिखारिणी', चतुरसेन शास्त्री 'हृदय की परख', 'हृदय की प्यास', 'अमर अभिलाषा', श्रीरामशरण गुप्त 'गोद', 'अंतिम आकांक्षा', भगवतीचरण वर्मा 'चित्रलेखा', वृंदावनलाल वर्मा 'गढ़कुंडार', 'विराटा की पद्मिनी' इत्यादि।

नाटक

नाटक शब्द 'नट्' धातु से बना है। जिसका अर्थ 'अभिनय' है। यह नट् (अभिनेता) से संबंध होने के कारण नाटक कहलाता है। रंगमंच पर अभिनय द्वारा प्रस्तुत करने की दृष्टि से लिखी गई तथा पात्र एवं संवादों पर आधारित एक से अधिक अंकों वाली दृश्यात्मक साहित्यिक रचना को नाटक कहते हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने महाराजा विश्वनाथ सिंह कृत 'आनंद रघुनंदन' हिंदी नाट्य-साहित्य का प्रथम मौलिक नाटक माना है। हिंदी नाट्य कला के महत्वपूर्ण नाटककार एवं उनके नाटक हैं– जयशंकर प्रसाद (स्कंदगुप्त, चंद्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी, विशाल इत्यादि), लक्ष्मीनारायण मिश्र (अशोक, सिंदूर की होली, राजयोग इत्यादि), उदयशंकर भट्ट, उपेंद्रनाथ 'अश्क' (स्वर्ग की झलक, लक्ष्मी का स्वागत अलग–अलग रास्ते इत्यादि), सेठ गोविंद दास (विकास, सेवापथ, अमीरी और गरीबी इत्यादि), रामकुमार वर्मा, जगदीशचंद्र माथुर (कोणार्क, शारदीया इत्यादि), मोहन राकेश (आधे–अधूरे, लहरों के राजहंस इत्यादि) आदि।

एकांकी

एकांकी का अर्थ है एक अंक का नाटक। इसमें किसी घटना या समस्या की प्रस्तुति होती है। हिंदी एकांकी के जनक रामकुमार वर्मा माने जाते है। इसका शिल्पगत स्वरूप नाटक से मिलता जुलता है। प्रमुख एकांकीकार एवं उनकी एकांकी है – रामकुमार वर्मा

(पृथ्वीराज की आँखें, रेशमी टाई, सत्यकिरण, रजत–रश्मि इत्यादि), भुवनेश्वर प्रसाद मिश्र (कारवाँ, प्रतिभा का विवाह, ताँबे के कीड़े, सीकों की गाड़ी इत्यादि), लक्ष्मीनारायण मिश्र (प्रलय के पंख पर, एक दिन, कावेरी में कमल, नारी का रंग इत्यादि), जगदीशचंद माथुर (मेरी बासुरी), विपिन कुमार अग्रवाल (तीन अपाहिज, कूड़े का पीपा, रेल कब आएगी इत्यादि)

निबंध

निबंध शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है– 'नि' और 'बंध', जिसका अर्थ है, अच्छी तरह से बंधा हुआ। संक्षेप में निबंध उस गद्य रचना को कहते हैं जिसमें लेखक किसी विषय पर अपने विचारों को सीमित, सजीव, स्वछंद और सुव्यवस्थित रूप से व्यक्त करता है। आलोचकों ने निबंध को 'गद्य की कसौटी' कहा है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कहा है– ''यदि गद्य कवियों की कसौटी है, तो निबंध गद्य की कसौटी है।'' हिंदी निबंध की शुरुआत 19वीं सदी के उत्तरार्ध से मानी जाती है। हिंदी के प्रमुख निबंधकार हैं– भारतेंदु हरिश्चंद्र (निबंध संग्रह – हरिश्चंद्र गाथा भाग चार और भारतेंदु के निबंध), बालकृष्ण भट्ट (साहित्य–सुमन निबंधावली प्रथम भाग एवं द्वितीय भाग), बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', प्रताप नारायण मिश्र (दाँत, भौं, बाल, क्रोध), बालमुकुंद गुप्त, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, सरदार पूर्ण सिंह, श्यामसुंदर दास (समाज और साहित्य, संस्कृति और सभ्यता, साहित्य की विशेषताएं), रामदास गौड़, रामचंद्र शुक्ल, डॉ पीतांबरदत्त बड़थ्वाल, आदि।

विषय और शैली की दृष्टि से निबंध के चार भेद होते हैं –

1. विचारात्मक निबंध
2. भावात्मक निबंध
3. वर्णनात्मक निबंध
4. विवरणात्मक निबंध।

आलोचना

'आलोचना' का शाब्दिक अर्थ है 'किसी वस्तु को भलीभाँति देखना'। गुण दोष निरूपण या विवेचन करना। हिंदी आलोचना की अनवरत परंपरा का सूत्रपात द्विवेदी युग से प्रारंभ होता है। जहाँ एक ओर आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'कालिदास की निरंकुशता' शीर्षक आलोचना लिखकर गुण-दोष दिखाने वाली शैली में भाषा और व्याकरण के दोषों का संग्रह किया वहीं दूसरी ओर आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने व्याख्यात्मक, सैद्धांतिक, गवेषणात्मक आलोचना पद्धति को अपनाते हुए कवियों की विशेषताओं एवं उनकी अंतःवृत्तियों की छानबीन पर ध्यान दिया। इनके समय में भाषा की वैज्ञानिक समीक्षा भी हुई। समीक्षक की हैसियत से शुक्ल जी का आदर्श बहुत ऊँचा

है। यह हिंदी के युग प्रवर्तक आलोचक रहे हैं। आचार्य नंददुलारे बाजपेयी, हजारी प्रसाद द्विवेदी, शांतिप्रिय द्विवेदी, रामविलास शर्मा, नलिन विलोचन शर्मा आदि आलोचना के मेरुदण्ड रहे हैं।

जीवनी

किसी विशिष्ट व्यक्ति के जीवन की जन्म से लेकर मृत्यु तक की घटना को क्रमबद्ध ढंग से प्रस्तुत करना जीवनी कहलाती है। हिंदी में जीवनी साहित्य को समृद्ध बनाने वालों प्रमुख लेखकों में रामनाथ सुमन, डॉ रामविलास शर्मा, अमृतराय एवं गुलाबराय आदि का नाम लिया जाता है।

आत्मकथा

जब कोई कथाकार कवि या व्यक्ति अपने जीवन की स्मरणीय घटनाओं का क्रमबद्ध वर्णन करता है तब उसे आत्मकथा कहते हैं। साहित्यिक आत्मकथा में हरिवंशराय बच्चन की आत्मकथा चार भागों में लिखी गई है– 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ', 'नीड़ का निर्माण फिर', 'बसेरे से दूर', 'दशद्वार से सोपान तक'। प्रमुख आत्मकथाकार एवं उनकी आत्मकथा है– सुभाषचंद्र बोस–'तरुण स्वप्न', डॉ0 श्यामसुंदर दास–'मेरी आत्मकहानी', देवराज उपाध्याय 'बचपन के दो दिन', पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र'–'अपनी खबर', हरिभाऊ उपाध्याय–'साधना के पथ पर', सुमित्रानंदन पंत–'साठ वर्ष : एक रेखांकन'।

संस्मरण

संस्मरण का अर्थ है– सम्यक (पूर्णरूपेण) स्मरण। अर्थात् जब लेखक सहज, आत्मीयता तथा गंभीरता से अपने या किसी अन्य व्यक्ति के जीवन में, बीती किसी घटना अथवा दृश्य का स्मरण कर उसका वर्णन करता है तो उसे 'संस्मरण' कहते हैं। हिंदी में इस विधा के प्रमुख लेखकों में श्री नारायण चतुर्वेदी, पदमसिंह शर्मा, बनारसीदास चतुर्वेदी, महादेवी वर्मा प्रमुख हैं। श्री हरिभाऊ उपाध्याय ने 'आचार्य द्विवेदी' नामक संस्मरणात्मक निबंध को इस विधा के प्रतिनिधि निबंध के रूप में रखा गया है। प्रमुख संस्मरण लेखक एवं उनकी रचनाएँ हैं – रामवृक्ष बेनीपुरी–'माटी की मूरतें', 'मील के पत्थर', देवेंद्र सत्यार्थी–'क्या गोरी क्या साँवरी', 'रेखायें बोल उठीं'; भदंत आनंद कौशल्यायन–'जो भूल न सका', 'जो लिखना पड़ा'; शांतिप्रिय द्विवेदी–'पदचिह्न', 'परिव्राजक की कथा'; कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'–'भूले हुए चेहरे', 'दीपजले शंख बजे', 'माटी हो गयी सोना', अज्ञेय–'लिखि कागद कोरे'; माखनलाल चतुर्वेदी–'समय के पाँव'।

यात्रा साहित्य

जब लेखक अपनी यात्रा के दौरान देखे गए स्थानों का वर्णन करता है तब उसे यात्रावृत्त या यात्रा साहित्य कहते हैं। इसमें लेखक वर्ण्य विषय का वर्णन आत्मीयता तथा

निजता के साथ करता है। जिस विषय का वर्णन करता है, उसके साथ उसका जुड़ाव होता है साथ ही उसके जीवन संदर्भ भी उसमें आते है।

इस विधा की शुरुआत भारतेंदु युग से मानी जाती है। स्वयं भारतेंदु ने 'मेहदावल की यात्रा', 'सरयूपार की यात्रा', 'हरिद्वार की यात्रा', 'लखनऊ की यात्रा', 'वैद्यनाथ की यात्रा' शीर्षक से यात्रावृत्त लिखा है। इस विधा के प्रमुख यात्रावृत्तकार एवं उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं– राहुल सांकृत्यायन–'मेरी लद्दाख यात्रा', 'यात्रा के पन्ने', 'रूस में पच्चीस मास', अज्ञेय–'अरे यायावर रहेगा याद', डॉ0 नगेंद्र–'तंत्रालोक से यंत्रालोक तक', डॉ0 रघुवंश–'हरी घाटी', प्रभाकर माचवे–'गोरी नजरों में हम', रामवृक्ष बेनीपुरी–'पैरों में पंख बांधकर', 'उड़ते चलो–उड़ते चलो' इत्यादि।

रिपोर्ताज

यह मूलतः फ्रेंच भाषा का शब्द है। अग्रेंजी में इस विधा के लिए 'रिपोर्ट' शब्द प्रचलित है। किसी घटना के यथातथ्य विवरण को 'रिपोर्ट' कहते है जो प्रायः समाचार–पत्रों के लिए लिखी जाती है। रिपोर्ट के साहित्यिक और कलात्मक रूप को हम ''रिपोर्ताज'' कह सकते है। 'रिपोर्ताज' में वर्ण्य विषय का आंखों देखा और कानों सुना मार्मिक वर्णन होता है। इसमें घटनाओं के तथ्यात्मक वर्णन को कलात्मक ढंग से व्यक्त किया जाता है।

इस विधा के प्रवर्तक शिवदान सिंह चौहान की कृति 'लक्ष्मीपुरा' है। इनके अतिरिक्त, प्रकाशचंद गुप्त का 'स्वराज भवन', 'अल्मोड़े का बाजार'; रांगेय राघव का 'तूफानों के बीच'; विवेकी राय का 'बाढ़! बाढ़!! बाढ़!!!' मुख्य रिपोर्ताज है। प्रभाकर माचवे, विष्णुप्रभाकर, लक्ष्मीचंद जैन, धर्मवीर भारती इस विधा के प्रमुख लेखक हैं।

रेखाचित्र

यह 'चित्रकला' से उत्पन्न शब्द है। अंग्रेजी में जिसे 'स्कैच' कहते है; उसे हिंदी में 'शब्दचित्र', 'भावचित्र', 'कल्पना चित्र', 'पूर्ण चित्र' या 'रेखाचित्र' नाम दिया जाता है। इसमें शब्दों की कलात्मक रेखाओं द्वारा किसी व्यक्ति, वस्तु अथवा घटना के बाह्य तथा आंतरिक स्वरूप का शब्द चित्र इस प्रकार अंकित किया जाता है कि पाठक के हृदय में उसका सजीव तथा यथार्थ चित्र अंकित किया जाता है।

इस विधा की शुरुआत छायावाद काल में हुई। इसके प्रवर्तकों में महादेवी वर्मा, श्री राम शर्मा, पद्मसिंह शर्मा, रामवृक्ष बेनीपुरी आते हैं। महादेवी वर्मा का 'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाए', कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर का 'जिंदगी मुस्कुराई', 'बाजे पायलिया के घुँघरु', 'महके आंगन–चहके द्वार', आदि प्रमुख रेखाचित्र हैं। अन्य रेखाचित्रकारों में प्रकाशचंद्र गुप्त और अमृतराय इत्यादि के नाम आते हैं।

पत्र–साहित्य

जब कोई लेखक अपने किसी मित्र, परिचित अथवा अल्प परिचित व्यक्ति को अपने संबंध में या किसी महत्त्वपूर्ण समस्या के संबंध में उसकी और अपनी सामाजिक स्थिति को ध्यान में रखकर तथा उसके प्रति उचित आदर सम्मान या स्नेह का भाव प्रकट करते हुए निजी तौर पर पत्र लिखकर भेजता है और उत्तर की अपेक्षा भी रखता है, तो वह पत्र–साहित्य का सृजन करता है! इसमें पत्र लेखक मुक्त होकर अपने को व्यक्त करता है। बनारसीदास चतुर्वेदी द्वारा संकलित 'पद्मसिंह शर्मा के पत्र', वियोगी हरि के 'बड़ों के प्रेरणादायक कुछ पत्र' तथा हरिवंशराय बच्चन के 'पंत के 200 पत्र बच्चन के नाम' उल्लेखनीय पत्र–संकलन हैं।

डायरी

जब कोई कवि, लेखक या व्यक्ति अपने जीवन में घटित होने वाली घटनाओं का तिथिबद्ध विवरण लिखता है, तो वह डायरी विधा कहलाती है। नरदेवशास्त्री 'वेदतीर्थ' को प्रथम डायरी लेखक माना गया है। उनकी डायरी 'जेल डायरी' के प्रकाशन के साथ ही हिंदी में डायरी लेखन का उदय हुआ। छायावाद काल में धीरेंद्र वर्मा ने 'मेरी कॉलेज की डायरी' लिखी।

गद्य–काव्य

किसी कथानक, चरित्र या विचार की, कल्पना और अनुभूति के माध्यम से गद्य में सरल, रोचक और रमणीय अभिव्यक्ति गद्य-काव्य कहलाता है। इसके माध्यम से किसी भावपूर्ण विषय की काव्यात्मक अभिव्यक्ति होती है। गद्य-काव्य प्रचलित गद्य से अधिक सरस, भावात्मक, अलंकृत, संवेदनात्मक, तथा संगीतात्मक होता है। इसमें कवि या लेखक अपने हृदय की संवेदना की अभिव्यक्ति इस प्रकार करता है कि पाठक उसे पढ़कर रसमय हो जाता है। इसमें अनुभूति की सघनता होती है। इसमें रसमयता, कलात्मकता, भावात्मक और चमत्कारिता है। इस विधा की शुरुआत छायावाद से मानी जाती है। हिंदी साहित्य में रायकृष्ण दास गद्य-काव्य के जनक माने जाते हैं, इनकी कृति 'साधना' से इस विधा का सूत्रपात माना जाता है। गद्य-काव्य के अन्य लेखक एवं उनकी कृतियाँ हैं– वियोगी हरि–'तरंगिणी', 'अंतर्नाद', चतुरसेन शास्त्री–'अंतःस्थल', 'तरलाग्नि', माखनलाल चतुर्वेदी–'साहित्य देवता' आदि।

भेंटवार्ता

'भेंटवार्ता' वह विधा है, जिसके माध्यम से भेंटकर्ता किसी महान व्यक्ति के मन और जीवन में प्रश्नों के झरोखें से झाँक कर उसके आंतरिक दृष्टिकोण को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करता है। इस विधा की शुरुआत छायावाद में हुई। बनारसीदास चतुर्वेदी का 'रत्नाकर जी से बातचीत', दूसरा 'प्रेमचंद जी के साथ दो दिन', श्रीराम शर्मा–'कबूतर', पद्म सिंह शर्मा–'मैं इनसे मिला' (दो भागों में), देवेंद्र सत्यार्थी–'कला के हस्ताक्षर', प्रमुख भेंटवार्ता कृतियाँ हैं।

अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए –

1. राजस्थानी गद्य का प्रारंभिक रूप कब से मिलता है ?
   (क) 10वीं शती के आस–पास (ख) 11वीं शती के आस–पास
   (ग) 12वीं शती के आस–पास (घ) 13वीं शती के आस–पास

2. 'श्रृंगार रस मंडन' कृति के रचनाकार कौन हैं ?
   (क) गोकुलनाथ (ख) विट्ठलनाथ (ग) वल्लभाचार्य (घ) चतुर्भजदास

3. 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' की भाषा क्या है ?
   (क) खड़ीबोली गद्य (ख) अवधी गद्य (ग) ब्रजभाषा गद्य (घ) मैथिली गद्य

4. 'आइने अकबरी की भाषा वचनिका' किसकी रचना है ?
   (क) नंददास (ख) वल्लभाचार्य (ग) पं. रतनलाल (घ) हीरालाल

5. 'राजनीति' ग्रंथ का रचनाकाल क्या है ?
   (क) 1800 ई. (ख) 1801 ई. (ग) 1802 ई. (घ) 1803 ई.

6. ख्वाजा बंदा नेवाज गेसूदराज की दक्खिनी गद्य की रचना है–
   (क) कुतुबमुश्तरी (ख) मेराजुल आशकीन (ग) सबरस (घ) हिदायतनामा

7. आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'खड़ी बोली गद्य' की प्रथम रचना किसे माना है?
   (क) प्रेमसागर (ख) सुखसागर (ग) भाषायोगवशिष्ठ (घ) चंद–छंद बरनन की महिमा

8. 'सोम वंशन की वंशावली' कृति का रचना काल क्या है?
   (क) 1810 ई. (ख) 1815 ई. (ग) 1820 ई. (घ) 1828 ई.

9. 'अगहनमाहात्म्य' और 'बैशाखमाहात्म्य' किसकी रचना है?
   (क) सूरति मिश्र (ख) नाभादास (ग) बैकुठमणि शुक्ल (घ) रामप्रसाद निरंजनी

10. खड़ीबोली गद्य में 'विष्णपुराण' के आधार पर 'सुखसागर' की रचना किसने की है?
    (क) लल्लू लाल (ख) इंशा अल्ला खां (ग) सदासुख लाल (घ) सदल मिश्र

11. रानी केतकी की कहानी के रचनाकार कौन हैं ?
    (क) सदल मिश्र (ख) इंशा अल्ला खाँ (ग) लल्लू लाल (घ) सदासुख लाल

12. 'अजातशत्रु' नाटक के नाटककार कौन हैं ?
    (क) जयशंकर प्रसाद (ख) महादेवी वर्मा (ग) रामकुमार वर्मा (घ) सुमित्रानंदन पंत

13. रामकुमार वर्मा की एकांकी है–
    (क) लक्ष्मी का स्वागत (ख) सिंदूर की होली (ग) बादल की मृत्यु (घ) रक्षाबंधन

14. 'कफन' कहानी के कहानीकार कौन हैं ?
(क) जयशंकर प्रसाद (ख) जैनेंद्र (ग) प्रेमचंद (घ) शिवपूजन सहाय

15. आचार्य रामचंद्र शुक्ल के निबंध संग्रह का क्या नाम है ?
(क) ठलुआ क्लब (ख) चिंतामणि (ग) विचार बीथी (घ) शिवशंभू के चिट्ठे

16. 'मानसरोवर' नामक संकलन किस विधा से संबंध रखती है?
(क) उपन्यास (ख) नाटक (ग) कहानी (घ) रेखा चित्र

17. 'गोदान' प्रसिद्ध उपन्यास है–
(क) भगवती चरण वर्मा का (ख) रागेय राघव का
(ग) प्रेमचंद का (घ) अज्ञेय का

18. अजातशत्रु, स्कंदगुप्त और ध्रुवस्वामिनी किसका नाटक है?
(क) मुंशी प्रेमचंद (ख) लक्ष्मीनारायण मिश्र (ग) जयशंकर प्रसाद (घ) रामकुमार वर्मा

19. 'रक्षाबंधन' नामक रचना किस विधा की है?
(क) कहानी (ख) उपन्यास (ग) नाटक (घ) एकांकी

20. 'मैला आँचल' उपन्यास के लेखक हैं–
(क) प्रेमचंद (ख) भगवती चरण वर्मा (ग) यशपाल (घ) फणीश्वर नाथ रेणु

21. 'चित्रलेखा' उपन्यास के लेखक हैं–
(क) प्रेमचंद (ख) भगवती चरण वर्मा (ग) जयशंकर प्रसाद (घ) निराला

22. 'उसने कहा था' प्रसिद्ध कहानी के कहानीकार हैं–
(क) प्रेमचंद (ख) जैनेंद्र (ग) चंद्रधर शर्मा गुलेरी (घ) श्रीनाथ सिंह

23. 'शेखर एक जीवनी' किस विधा की रचना है ?
(क) कहानी (ख) नाटक (ग) यात्रा साहित्य (घ) उपन्यास

24. 'मैला आँचल' उपन्यास है–
(क) मनोवैज्ञानिक (ख) ऐतिहासिक (ग) आंचलिक (घ) पौराणिक

25. 'ईदगाह', 'नमक का दरोगा', 'पूस की रात' के कहानीकार हैं –
(क) जयशंकर प्रसाद (ख) भगवती चरण वर्मा (ग) प्रेमचंद (घ) रामकुमार वर्मा

26. 'उदयभान चरित' किस कहानी का दूसरा नाम है?
(क) कफन (ख) रानी केतकी की कहानी
(ग) नमक का दरोगा (घ) शतरंज के खिलाड़ी

27. सुखसागर के रचनाकार है–
(क) लल्लू लाल (ख) मुंशी सदासुख लाल (ग) सदल मिश्र (घ) इंशा अल्लाह खाँ

28. प्रेमसागर के रचनाकार हैं –
(क) मुंशी सदासुख लाल (ख) सदल मिश्र (ग) लल्लू लाल (घ) प्रेमचंद
29. हिंदी गद्य के आरंभिक प्रयोग मिलते हैं –
(क) राजस्थानी गद्य में (ख) ब्रजभाषा गद्य में (ग) पट्टे परवानों में (घ) उपर्युक्त सभी में
30. 'मेराजुल आशकीन' के रचनाकार है–
(क) मुंशी सदासुखलाल (ख) ख्वाजा बंदा नवाज गेसूदराज
(ग) इंशा अल्लाह खाँ (घ) रसखान
31. सन् 1918 ई. से 1936 ई. तक का समय है–
(क) शुक्ल युग (ख) प्रेमचंद युग (ग) प्रसाद युग (घ) उपर्युक्त सभी
32. उपन्यास 'सम्राट' कहा जाता है–
(क) अज्ञेय को (ख) प्रसाद को (ग) प्रेमचंद को (घ) भगवतीचरण वर्मा को
33. 'बाणभट्ट' की आत्मकथा के रचनाकार हैं–
(क) जयशंकर प्रसाद (ख) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(ग) रांगेय राघव (घ) धर्मवीर भारती
34. इलाचंद्र जोशी की कहानियों का विषय है –
(क) सामाजिक (ख) मनोवैज्ञानिक (ग) ऐतिहासिक (घ) राजनैतिक
35. 'नासिकेतोपाख्यान' के लेखक हैं –
(क) लल्लूलाल (ख) दौलतराम (ग) सदल मिश्र (घ) मधुसूदन
36. 'चंद–छंद बरनन की महिमा' रचना है –
(क) गंग (ख) गोस्वामी तुलसीदास (ग) अमीर खसरो (घ) मुंशी प्रेमचंद

■

डॉ0 राजेंद्र प्रसाद

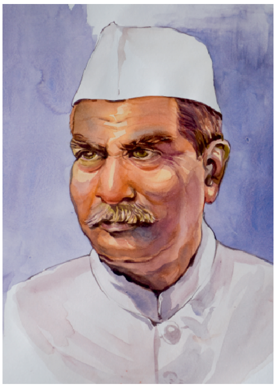

(सन् 1884 – 1963 ई.)

भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद स्वाधीनता आंदोलन के अग्रिम पंक्ति के नेताओं में से एक थे। उनका जन्म सन् 1884 ई. में **बिहार** के **सारण** जिले के **जीरादेई** (वर्तमान सिवान जनपद) में हुआ था। उनके पिता का नाम श्री महादेव सहाय व माता का नाम श्रीमती कमलेश्वरी देवी था। पिता संस्कृत-फारसी के विद्वान थे। वे पाँच भाई-बहनों में सबसे छोटे थे। 13 वर्ष की आयु में उनका विवाह राजवंशी देवी से हुआ। राजेंद्र बाबू बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि के थे, प्रारंभिक शिक्षा फारसी में मौलवी साहब से लेने के बाद आगे की शिक्षा हेतु पटना के टी. के. घोष अकादमी में प्रवेश लिये। उन्होंने 1902 ई. में 18 वर्ष की अवस्था में कोलकाता के प्रसिद्ध प्रेसीडेंसी कॉलेज में प्रवेश लिए एवं सन् 1911 ई. में एल.एल.एम. में स्वर्ण पदक प्राप्त किये। विधि के क्षेत्र में ही डॉक्टरेट की उपाधि ग्रहण की। सन् 1911 से 1920 ई. तक राजेंद्र बाबू ने कोलकाता और पटना में वकालत की। जब महात्मा गाँधी ने 1917 ई. में चंपारण सत्याग्रह शुरू किया, जिससे प्रभावित होकर वह राष्ट्रीय आंदोलन में कूद पड़े। राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेने के कारण पहली बार 1933 ई. में उन्हें जेल जाना पड़ा। जेल प्रवास के दौरान ही उन्होंने आत्मकथा लेखन की शुरुआत की।

डॉ. राजेंद्र प्रसाद हिंदी, उर्दू, बांग्ला, अंग्रेजी भाषाओं में पारंगत थे। वह 1934 ई. में अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए। वह संविधान सभा के अध्यक्ष बनाए गए और संविधान निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी। उन्हें भारत सरकार का सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' प्रदान किया गया। सरलता और सहजता की प्रतिमूर्ति देशरत्न डॉ. राजेंद्र प्रसाद का सन् 1963 ई. में पटना के 'सदाकत आश्रम' में निधन हो गया।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का हिंदी और हिंदी-साहित्य के प्रति अगाध प्रेम था। हिंदी पत्र-पत्रिकाओं यथा – 'भारत मित्र', 'भारतोदय', 'कमला' आदि में उनके लेख छपते रहते थे। उनके निबंधों में सरसता, सहजता और लालित्य देखने को मिलता है। वे हिंदी साहित्य सम्मेलन के सभापति पद को भी सुशोभित कर चुके थे। उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं – **भारतीय शिक्षा, गाँधी जी की देन, साहित्य, शिक्षा और संस्कृति, आत्मकथा, बापू के कदमों में, मेरी**

यूरोप यात्रा, संस्कृत का अध्ययन, चंपारण में महात्मा गांधी, महात्मा गाँधी और बिहार, समरिमिनिसेंस, इंडिया डिवाइडेड।

डॉ. राजेंद्र प्रसाद की भाषा में व्यावहारिक हिंदी का सर्वाधिक प्रयोग है, जो सरल सुबोध और आत्मीय भाव से पाठकों को आकर्षित करती है। उनके निबंधों में संस्कृत, उर्दू, खड़ी बोली हिंदी के साथ-साथ बिहारी हिंदी का भी प्रयोग हुआ है। वह जगह-जगह स्थानीय लोकोक्तियों और मुहावरों से परहेज नहीं करते।

भारतीय संस्कृति *डॉ0 राजेंद्र प्रसाद द्वारा अखिल भारतीय सांस्कृतिक सम्मेलन में दिया गया उद्घाटन–भाषण है, जो 15 मार्च, सन् 1951 ई. को दिया गया था। यह भाषण* ***साहित्य, शिक्षा और संस्कृति*** *शीर्षक पुस्तक से यहाँ संक्षिप्त रूप में संकलित है। प्रस्तुत पाठ में भारतीय संस्कृति में विद्यमान 'अनेकता में एकता' के गुण को दर्शाते हुए भारतवर्ष की विविधता को बहुत ही महत्त्वपूर्ण ढंग से व्यक्त किया गया है। विभिन्न भाषा, जाति, रूप, रंग, धर्म, वर्ण आदि को एक सूत्र में गूंथकर भारतीयता की एक विशेष पहचान बताई गई है। भारतीय संस्कृति में समन्वय की भावना का गुण विद्यमान है, जिसके कारण यह देश विश्व के मानचित्र पर अपनी सांस्कृतिक पहचान को अक्षुण्ण बनाए हुए हैं।*

■

भारतीय संस्कृति

कोई विदेशी जो भारत से बिल्कुल अपरिचित हो, एक छोर से दूसरे छोर तक सफर करे तो उसको इस देश में इतनी विभिन्नताएँ देखने में आएगी कि वह कह उठेगा कि यह एक देश नहीं, बल्कि कई देशों का एक समूह है, जो एक-दूसरे से बहुत बातों में और विशेष करके ऐसी बातों में, जो आसानी से आँखों के सामने आती हैं, बिल्कुल भिन्न है। प्राकृतिक विभिन्नताएँ भी इतनी और इतने प्रकारों की और इतनी गहरी नजर आयेंगी, जो किसी भी एक महाद्वीप के अंदर ही नजर आ सकती हैं। हिमालय की बर्फ से ढकी हुई पहाड़ियाँ एक छोर पर मिलेंगी और जैसे-जैसे वह दक्खिन की ओर बढ़ेगा गंगा, जमुना, ब्रह्मपुत्र से प्लावित समतलों को छोड़कर फिर विंध्य, अरावली, सतपुड़ा, सह्याद्रि, नीलगिरि की श्रेणियों के बीच समतल हिस्से रंग-बिरंगे देखने में आएगे। पश्चिम से पूर्व तक जाने में भी उसे इस प्रकार की विभिन्नताएँ देखने को मिलेंगी। हिमालय की सर्दी के साथ-साथ जो साल में कभी भी मनुष्य को गर्म कपड़ों से और आग से छुटकारा नहीं देती, समतल प्रांतों की जलती हुई लू और कन्याकुमारी का वह सुखद मौसम, जिसमें न कभी सर्दी होती है और न गर्मी, देखने को मिलेगा। अगर असम की पहाड़ियों में वर्ष में तीन सौ इंच वर्षा मिलेगी तो जैसलमेर की तप्त भूमि भी मिलेगी, जहाँ साल में दो-चार इंच भी वर्षा नहीं होती। कोई ऐसा अन्न नहीं, जो यहाँ उत्पन्न न किया जाता हो। कोई ऐसा खनिज पदार्थ नहीं, जो यहाँ के भू-गर्भ में न पाया जाता हो और न कोई ऐसा वृक्ष अथवा जानवर है, जो यहाँ के फैले हुए जंगलों में न मिले। यदि इस सिद्धांत को देखना हो कि आबो–हवा का असर इंसान के रहन-सहन, खान-पान, वेश-भूषा और शरीर और मस्तिष्क पर पड़ता है तो उसका जीता-जागता सबूत भारत में बसने वाले भिन्न-भिन्न प्रांतों के लोग देते हैं। इसी तरह मुख्य-मुख्य भाषाएँ भी कई प्रचलित हैं और बोलियों की तो कोई गिनती ही नहीं; क्योंकि यहाँ एक कहावत मशहूर है –

''कोस-कोस पर बदले पानी, चार कोस पर बानी।''

भिन्न-भिन्न धर्मों के माननेवाले भी, जो सारी दुनिया के सभी देशों में बसे हुए हैं, यहाँ भी थोड़ी-बहुत संख्या में पाये जाते हैं और जिस तरह यहाँ की बोलियों की गिनती आसान नहीं, उसी तरह यहाँ भिन्न-भिन्न धर्मों के संप्रदायों की भी गिनती आसान नहीं। इन विभिन्नताओं को देखकर अगर अपरिचित आदमी घबड़ाकर कह उठे कि यह एक देश

नहीं, अनेक देशों का एक समूह है; यह एक जाति नहीं, अनेक जातियों का समूह है तो इसमें आश्चर्य की बात नहीं। क्योंकि ऊपर से देखने वाले को, जो गहराई में नहीं जाता, विभिन्नता ही देखने में आएगी। पर विचार करके देखा जाय तो इन विभिन्नताओं की तह–तह में एक ऐसी समता और एकता फैली हुई है, जो अन्य विभिन्नताओं को ठीक उसी तरह पिरो लेती है और पिरोकर एक सुंदर समूह बना देती है–जैसे रेशमी धागा भिन्न-भिन्न प्रकार की और विभिन्न रंग की सुंदर मणियों अथवा फूलों को पिरोकर एक सुंदर हार तैयार कर देता है, जिसकी प्रत्येक मणि या फूल दूसरों से न तो अलग है और न हो सकता है और केवल अपनी ही सुंदरता से लोगों को मोहता नहीं, बल्कि दूसरों की सुंदरता से वह स्वयं सुशोभित होता है और इसी तरह अपनी सुंदरता से दूसरों को भी सुशोभित करता है। यह केवल एक काव्य की भावना नहीं है, बल्कि एक ऐतिहासिक सत्य है, जो हजारों बरसों से अलग-अलग अस्तित्व रखते हुए अनेकानेक जल-प्रपातों और प्रवाहों को संगमस्थल बनकर एक प्रकांड और प्रगाढ़ समुद्र के रूप में भारत में व्याप्त है, जिसे भारतीय संस्कृति का नाम दे सकते हैं। इन अलग-अलग नदियों के उद्‌गम भिन्न-भिन्न हो सकते हैं और रहे हैं। इनकी धाराएँ भी अलग-अलग बही हैं और प्रदेश के अनुसार भिन्न-भिन्न प्रकार के अन्न और फल-फूल पैदा करती रही हैं; पर सब में एक ही शुद्ध, सुंदर, स्वस्थ और शीतल जल बहता रहा है, जो उद्‌गम और संगम में एक ही हो जाता है।

आज हम इसी निर्मल, शुद्ध, शीतल और स्वस्थ अमृत की तलाश में यहाँ इकट्‌ठे हुए हैं और हमारी इच्छा, अभिलाषा और प्रयत्न यह है कि वह इन सभी अलग-अलग बहती हुई नदियों में अभी भी उसी तरह बहता रहे और इनको वह अमर तत्त्व देता रहे, जो जमाने के हजारों थपेड़ों को बरदाश्त करता हुआ भी आज हमारे अस्तित्व को कायम रखे हुए है और रखेगा, जैसे कि हमारे कवि इकबाल कह गए हैं –

''बाकी मगर है अब तक नामो-निशाँ हमारा,
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी,
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जमाँ हमारा।''

यह एक नैतिक और आध्यात्मिक स्रोत है, जो अनंतकाल से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इस सारे देश में बहता रहा है और कभी-कभी मूर्त रूप होकर हमारे सामने आता रहा है। यह हमारा सौभाग्य रहा है कि हमने ऐसे ही एक मूर्त रूप को अपने बीच चलते-फिरते, हँसते-रोते भी देखा है और जिसने अमरत्व की याद दिलाकर हमारी सूखी हड्डियों में नई मज्जा डाल हमारे मृतप्राय शरीर में नये प्राण फूँके और मुरझाये हुए दिलों को फिर खिला दिया। वह अमरत्व सत्य और अहिंसा का है, जो केवल इसी देश के लिए नहीं, आज मानवमात्र के जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक हो गया है। हम इस देश में प्रजातंत्र

की स्थापना कर चुके हैं, जिसका अर्थ है व्यक्ति की पूर्ण स्वतंत्रता, जिसमें वह अपना पूरा विकास कर सके और साथ ही सामूहिक और सामाजिक एकता भी। व्यक्ति और समाज के बीच में विरोध का आभास होता है। व्यक्ति अपनी उन्नति और विकास चाहता है और यदि एक की उन्नति और विकास दूसरे की उन्नति और विकास में बाधक हो तो संघर्ष पैदा होता है और यह संघर्ष तभी दूर हो सकता है, जब सब के विकास के पथ अहिंसा के हों। हमारी सारी संस्कृति का मूलाधार इसी अहिंसा-तत्व पर स्थापित रहा है। जहाँ-जहाँ हमारे नैतिक सिद्धांतों का वर्णन आया है, अहिंसा को ही उसमें मुख्य स्थान दिया गया है। अहिंसा का दूसरा नाम या दूसरा रूप त्याग है और हिंसा का दूसरा रूप या नाम स्वार्थ जो बहुत करके भोग के रूप में हमारे सामने आता है। पर हमारी सभ्यता ने तो भोग भी त्याग से ही निकाला है और भोग भी त्याग में ही पाया है। श्रुति कहती है–'तेन त्यक्तेन भुजीथाः' इसी के द्वारा हम व्यक्ति के बीच का विरोध, व्यक्ति और समाज के बीच का विरोध, समाज और समाज के बीच का विरोध, देश और देश के बीच के विरोध को मिटाना चाहते हैं। हमारी सारी नैतिक चेतना इसी तत्त्व से ओत-प्रोत है। इसलिए हमने भिन्न-भिन्न विचारधाराओं को स्वच्छतापूर्वक अपने-अपने रास्ते बहने दिया। भिन्न-भिन्न धर्मों और सांप्रदायों को स्वतंत्रतापूर्वक पनपने और पसरने दिया। भिन्न-भिन्न भाषाओं को विकसित और प्रस्फुटित होने दिया। भिन्न-भिन्न देशों के लोगों को अपने में अभिन्न भाव से मिल जाने दिया। भिन्न-भिन्न देशों की संस्कृतियों को अपने में मिलाया और अपने को उनमें मिलने दिया और देश और विदेश में एकसूत्रता तलवार के जोर से नहीं, बल्कि प्रेम और सौहार्द से स्थापित की। दूसरों के हाथों और पैरों पर, घर और सम्पत्ति पर जबरदस्ती कब्जा नहीं किया, उनके हृदयों को जीता और इसी वजह से प्रभुत्व, जो चरित्र और चेतना का प्रभुत्व है, आज भी बहुत अंश में कायम है, जब हम स्वयं उस चेतना को बहुत अंशों में भूल गये हैं और भूलते जा रहे हैं।

उद्दंड परिणामों से अपने को सुरक्षित रखकर हम उनका उपयोग अपनी रीति से किस प्रकार कर सकते हैं अर्थात् अनको अपनी संस्कृति के अनुकूल किस तरह बना सकते हैं। इस बारे में दो बातों का हमें बराबर ध्यान रखना है। पहली बात तो यह है कि हर प्रकार की प्रकृतिजन्य और मानव-कृत विपदाओं के पड़ने पर भी हमारे लोगों की सृजनात्मक शक्ति कम नहीं हुई। हमारे देश में साम्राज्य बने और मिटे, विभिन्न सम्प्रदायों का उत्थान-पतन हुआ, हम विदेशियों से आक्रांत और पद दलित हुए, हम पर प्रकृति और मानव ने अनेक बार मुसीबतों के पहाड़ ढा दिये, पर फिर भी हम लोग बने रहे, हमारी संस्कृति बनी रही और हमारा जीवन एवं सृजनात्मक शक्ति बनी रही। हम अपने दुर्दिनों में भी ऐसे मनीषियों और कर्मयोगियों को पैदा कर सके जो संसार के इतिहास के किसी युग में

अत्यंत उच्च आसन के अधिकारी होते। अपनी दासता के दिनों में हमने गाँधी जैसे कर्मठ, धर्मनिष्ठ, क्रांतिकारी को, रवींद्र ठाकुर जैसे मनीषी कवि को और अरविंद तथा रमण महर्षि जैसे योगियों को पैदा किया और उन्हीं दिनों में हमने ऐसे अनेक उद्भट विद्वान् और वैज्ञानिक पैदा किये, जिनका सिक्का संसार मानता है। जिन हालातों में पड़कर संसार की प्रसिद्ध जातियाँ मिट गईं, उनमें हम न केवल जीवित ही रहे, वरन् अपने आध्यात्मिक और बौद्धिक गौरव को बनाये रख सके। उसका कारण यही है कि हमारी सामूहिक चेतना ऐसे नैतिक आधार पर ठहरी हुई है, जो पहाड़ों से भी मजबूत है, समुद्रों से भी गहरी है और आकाश से भी अधिक व्यापक है।

हमारे सामने आज जो अत्यंत महत्त्वपूर्ण प्रश्न है वह यह है कि हमारी यह ऐतिहासिक–नैतिक चेतना जो हमारे जन–जीवन की आज तक प्रधान संचालक रही है, वह आज की परिस्थितियों में हमारे लिए लाभदायक है या नहीं। इस बात से तो कोई इंकार नहीं कर सकता कि हमारे देश में इस बारे में दो विचार धाराएँ हैं। कुछ लोगों का विचार है कि वर्तमान उद्योग–प्रधान युग में उस नैतिक चेतना का कोई विशेष मूल्य नहीं जो मनुष्य को अहिंसा और सेवा तथा त्याग का पाठ पढ़ाती हो। कहा जाता है कि वर्तमान प्रतियोगात्मक आर्थिक व्यवस्था में तो स्वार्थ–साधना की तीव्र भावना, दूसरो को एक तरफ ठेलकर अपने को आगे बढ़ाने की अदम्य लालसा इत्यादि गुणों की अत्यंत आवश्यकता है। अभी कुछ दिनों पूर्व इसी प्रकार के आचरण को हमारे शासक लोग अधिक पसंद करते थे। औद्योगिक युग की इस उद्दंड अहं भावना के मुकाबले में अपनी ऐतिहासिक नैतिक चेतना के विनम्रता और विनय के आदर्श को हमें तोलना है और यह तय करना है कि हम अपनी उस ऐतिहासिक नैतिक चेतना को भारत के नवनिर्माण की प्रधान प्रेरक शक्ति बनायेंगे अथवा वर्तमान काल के पाश्चात्य सभ्यता के उद्दंड अहमत्व को।

यहाँ यह कह देना अनुपयुक्त न होगा कि इस उद्दंड अहमत्व को महत्त्व देने का ही अनिवार्य परिणाम यह है कि पाश्चात्य देशों में एक ओर तो श्रेणी–संघर्ष के सिद्धांत का जन्म हुआ है और दूसरी ओर हृदयहीन आर्थिक और राजनैतिक शोषण और साम्राज्यवादिता का। इस आदर्श के फलस्वरूप ही अनुष्य की कीमत मशीन के पुर्जे से अधिक नहीं रह गई है, और मानव–जीवन में भी मत्स्य–न्याय का बोलबाला हो रहा है। हमें यह तय करना है कि संस्कृति और सभ्यता की प्रगति का अनिवार्य भाग यह मत्स्य–न्याय ही है, अथवा वैसी प्रगति उस नैतिक चेतना के आधार पर भी हो सकती है, जो भारत के मनीषियों ने यहाँ के नर–नारियों के सामने रखी थी। पाश्चात्य देशों ने पिछली शताब्दियों में विज्ञान में जो प्रगति की है और उद्योग धंधों में जो अभूतपूर्व विकास किया है। हम अपने को और इस देश को यदि उससे अलग भी रखना चाहें तो नहीं रख सकते और

अलग रखना भी न तो जरूरी है न वांछनीय। हमें देखना यह है कि उसके दूसरी बात जो इस संबंध में विचारणीय है, वह यह है कि संस्कृति अथवा सामूहिक चेतना ही हमारे देश का प्राण है। इसी नैतिक चेतना के सूत्र से हमारे नगर और ग्राम, हमारे प्रदेश और संप्रदाय, हमारे विभिन्न वर्ग और जातियाँ, आपस में बँधी हुई हैं। जहाँ उनमें और सब तरह की विभिन्नताएँ हैं, वहाँ उन सबमें यह एकता है। इसी बात को ठीक तरह से पहचान लेने से बापू ने जनसाधारण को बुद्धिजीवियों के नेतृत्व में क्रांति करने के लिए तत्पर करने के लिए इसी नैतिक चेतना का सहारा लिया था। अहिंसा, सेवा और त्याग की बातों से जनसाधारण का हृदय इसीलिए आंदोलित हो उठा; क्योंकि उन्हीं से तो वह शताब्दियों से प्रभावित और प्रेरित रहा। जनसाधारण के हृदय में उनकी धड़कती चेतना को क्रांति की शक्ति बनाने में ही बापू की दूरदर्शिता थी और इसी में उनकी सफलता थी।

मैं तो यही समझता हूँ कि यदि हमें अपने समाज और देश में उन सब अन्यायों और अत्याचारों की पुनरावृत्ति नहीं करनी है, जिनके द्वारा आज के सारे संघर्ष उत्पन्न होते हैं तो हमें अपनी ऐतिहासिक, नैतिक चेतना या संस्कृति के आधार पर ही अपनी आर्थिक व्यवस्था बनानी चाहिए अर्थात् उसके पीछे वैयक्तिक लाभ और भोग की भावना प्रधान न होकर वैयक्तिक त्याग और सामाजिक कल्याण की भावना ही प्रधान होनी चाहिए। हमारे प्रत्येक देशवासी को अपने सारे आर्थिक व्यापार उसी भावना से प्रेरित होकर करने चाहिए। वैयक्तिक स्वार्थों और स्वत्वों पर जोर न देकर वैयक्तिक कर्त्तव्य और सेवा-निष्ठा पर जोर देना चाहिए और हमारी प्रत्येक कार्यवाही इसी तराजू पर तौली जानी चाहिए। किसी भी क्रिया के पीछे जो भावना निहित होती है, उसका बड़ा प्रभाव हुआ करता है और परिणाम भी, यद्यपि देखने में क्रिया का रूप एक ही क्यों न हो। एक छोटे-से उदाहरण से यह बात स्पष्ट की जा सकती है। एक सम्मिलित परिवार है, जिसका प्रत्येक व्यक्ति इस भावना से काम करता है कि उसका कर्त्तव्य है कि सभी व्यक्तियों को अधिक-से-अधिक वह सुख पहुँचा सके और प्रत्येक व्यक्ति पूरी शक्ति लगाकर जितना भी उपार्जन किया जा सकता है, करता है। सबका सामूहिक उपार्जन मान लीजिए कि एक रकम होती है, जिससे अधिक उपार्जन करने की शक्ति परिवार में नहीं हो। उसी परिवार का प्रत्येक व्यक्ति इस भावना से काम करता है कि उसको अपने सुख के लिए अधिक-से-अधिक उपार्जन करना चाहिए और उपार्जन करता हो तो भी सब व्यक्तियों का सामूहिक उपार्जन उतना होगा, जितना कि प्रथमोक्त स्थिति में और सामूहिक सम्पत्ति दोनों स्थितियों में बराबर होगी और उसका बराबर बँटवारा कर दिया जाय तो प्रत्येक को बराबर ही सुख होगा। पर इन दोनों स्थितियों में बहुत बड़ा अंतर यह पड़ जायगा कि पहली स्थिति में संघर्ष का कोई भय नहीं; क्योंकि कोई केवल अपने लिए कुछ नहीं कर रहा है और दूसरे में संघर्ष अनिवार्य है; क्योंकि प्रत्येक अपने लिए ही कर रहा है। हम समझते हैं कि हमारी संस्कृति का तकाजा है कि पहली स्थिति

में हम अपने को लायें और यदि संसार का संघर्ष मिटाना है तो उसी भावना को सर्वमान्य बनाना होगा। जब तक ऐसा नहीं होता, संघर्ष चाहे वह व्यक्ति-व्यक्ति के बीच का हो, चाहे देश-देश के बीच का हो, वर्तमान रहेगा ही।

आज विज्ञान मनुष्य के हाथों में अद्‌भुत और अतुल शक्ति दे रहा है, उसका उपयोग एक व्यक्ति और समूह के उत्कर्ष और दूसरे व्यक्ति और समूह के गिराने में होता ही रहेगा। इसलिए हमें उस भावना को जाग्रत रखना है और उसे जाग्रत रखने के लिए कुछ ऐसे साधनों को भी हाथ में रखना होगा, जो उस अहिंसात्मक त्याग-भावना को प्रोत्साहित करें और भोग-भावना को दबाये रखें। नैतिक अंकुश के बिना शक्ति मानव के लिए हितकर नहीं होती। वह नैतिक अंकुश यह चेतना या भावना ही दे सकती है। वही उस शक्ति को परिमित भी कर सकती है और उसके उपयोग को नियंत्रित भी।

वर्तमान युग में भारतीय संस्कृति के समन्वय के प्रश्न के अतिरिक्त यह बात भी विचारणीय है कि भारत की प्रत्येक प्रादेशिक भाषा की सुंदर और आनंदप्रद कृतियों का स्वाद भारत के अन्य प्रदेशों के लोगों को कैसे चखाया जाय। मैं समझता हूँ कि इस बारे में दो बातें विचारणीय हैं। क्या इस बारे में यह उचित नहीं होगा कि प्रत्येक भाषा की साहित्यिक संस्थाएँ उस भाषा की कृत्तियों को संघ-लिपि अर्थात् देवनागरी में भी छपवाने का आयोजन करें। मुझे विश्वास है कि कम-से-कम जहाँ तक उत्तर की भाषाओं का संबंध है, यदि वे सब अपनी कृतियों को देवनागरी में भी छपवाने लगें तो उनका स्वाद लगभग सारे उत्तर भारत में लोग आसानी से ले सकेंगे; क्योंकि इन सब भाषाओं में इतना साम्य है कि एक भाषा का अच्छा ज्ञाता दूसरी भाषाओं की कृतियों का स्वल्प परिश्रम से समझ जायगा।

दूसरी बात है ऐसी संस्था की स्थापना की, जो इन सब भाषाओं में आदान-प्रदान का सिलसिला अनुवाद द्वारा आरंभ करे। यदि सब भारतीय भाषाओं का प्रतिनिधित्व करनेवाला सांस्कृतिक संगम स्थापित हो जाता है तो इस बारे में बड़ी सहूलियत होगी। साथ ही वह संगम साहित्यिकों को प्रोत्साहन भी प्रदान कर सकेगा और अच्छे साहित्य के स्तर के निर्धारण और सृजन करने में भी पर्याप्त अच्छा कार्य कर सकेगा। साहित्य संस्कृति का एक व्यक्त रूप है। उसके दूसरे रूप – गान, नृत्य, चित्रकला, वास्तुकला, मूर्तिकला इत्यादि में देखे जाते हैं। भारत अपनी एकसूत्रता इन सब कलाओं द्वारा प्रदर्शित करता आया है।

इन सब विषयों पर हमें इस प्रतिज्ञा को ध्यान में रखकर विचार करना है, जो इस भवन में शाहजहाँ ने उसके निर्माण के पश्चात् खुदवा दी थी। उसने गर्व के साथ खुदवा दिया था –

''गर फ़िरदौस बर–रु–ए–जमीं अस्त,
हमीं अस्त ओ हमीं अस्तओ हमीं अस्त।''

(यदि पृथ्वी पर स्वर्ग कहीं है तो यहाँ ही है, यहाँ ही है) यह स्वप्न तभी सत्य होगा और पृथ्वी पर स्वर्ग तो तभी स्थापित होगा, जब अहिंसा, सत्य और सेवा का आदर्श सारे भूमंडल में मानव-जीवन का मुख्य आधार और प्रधान प्रेरक शक्ति होगा।

— *राजेंद्र प्रसाद*

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए –

1. डॉ. राजेंद्र प्रसाद को भारत सरकार द्वारा किस सम्मान से सम्मानित किया गया ?
(क) भारत रत्न (ख) पद्म भूषण (ग) पद्मविभूषण (घ) पद्मश्री

2. डॉ. राजेंद्र प्रसाद की कृति नहीं है –
(क) भारतीय शिक्षा (ख) मेरी यूरोप यात्रा
(ग) चंपारन में महात्मा गाँधी (घ) देहाती दुनिया

3. डॉ. राजेंद्र प्रसाद किस वर्ष अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए ?
(क) 1930 ई. (ख) 1931 ई. (ग) 1933 ई. (घ) 1934 ई.

4. 'कोस–कोस पर बदले पानी, ... कोस पर बानी।' इस लोकोक्ति को पूर्ण कीजिए –
(क) तीन (ख) पाँच (ग) दो (घ) चार

5. डॉ. राजेंद्र प्रसाद किस राजनेता से प्रभावित थे?
(क) महात्मा गाँधी (ख) सरदार वल्लभ भाई पटेल
(ग) भगत सिंह (घ) लाला लाजपत राय

6. अहिंसा का दूसरा रूप क्या है?
(क) त्याग (ख) सेवा (ग) हिंसा (घ) स्वार्थ

7. 'भारतीय संस्कृति' किस विधा की रचना है?
(क) निबंध (ख) कहानी (ग) उपन्यास (घ) संस्मरण

8. डॉ. राजेंद्र प्रसाद का निधन कहाँ हुआ?
(क) दिल्ली (ख) कोलकाता (ग) पटना (घ) लखनऊ

9. "बाकी मगर है अब तक नामो–निशाँ हमारा।" इस पंक्ति के लेखक हैं –
(क) डॉ. राजेन्द्र प्रसाद (ख) इकबाल
(ग) अकबर इलहाबादी (घ) रामधारी सिंह 'दिनकर'

II. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दीजिए –

1. डॉ. राजेंद्र प्रसाद का जीवन–परिचय देते हुए उनकी कृतियों का उल्लेख कीजिए।
2. प्रस्तुत पाठ की भाषा–शैली पर प्रकाश डालिए।
3. भारतीय प्रजातंत्र का मूल स्वरूप क्या है ?
4. 'भारतीय संस्कृति' के मूल तत्त्व कौन-कौन से हैं, उन पर प्रकाश डालिए।
5. लेखक का सामूहिक चेतना से क्या अभिप्राय है ?
6. लेखक क्यों कहता है कि 'सामूहिक चेतना ही हमारे देश का प्राण है?'
7. लेखक ने भारतीय कलाओं के महत्त्व को किस रूप में दर्शाया है ?
8. देवनागरी लिपि के बारे में लेखक के क्या विचार हैं ?
9. डॉ. राजेंद्र प्रसाद का जीवन परिचय देते हुए उनके साहित्यिक योगदान पर प्रकाश डालिए।

III. दिए गए गद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

(क) एक छोर से दूसरे छोर तक सफर करे तो उसको इस देश में इतनी विभिन्नताएँ देखने में आयेंगी कि वह कह उठेगा कि यह एक देश नहीं, बल्कि कई देशों का एक समूह है, जो एक-दूसरे से बहुत बातों में और विशेष करके ऐसी बातों में, जो आसानी से आँखों के सामने आती हैं, बिल्कुल भिन्न है। प्राकृतिक विभिन्नताएँ भी इतनी और इतने प्रकार की और इतनी गहरी नजर आयेंगी, जो किसी भी एक महाद्वीप के अंदर ही नजर आ सकती हैं। हिमालय की बर्फ से ढकी हुई पहाड़ियाँ एक छोर पर मिलेंगी और जैसे-जैसे वह दक्खिन की ओर बढ़ेगा गंगा, जमुना, ब्रह्मपुत्र से प्लावित समतलों को छोड़कर फिर विंध्य, अरावली, सतपुड़ा, सह्याद्रि, नीलगिरि की श्रेणियों के बीच समतल हिस्से रंग-बिरंगे देखने में आयेंगे।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ii) प्रमुख नदियों एवं पर्वत श्रेणियों के नाम लिखिए।
(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ख) भिन्न-भिन्न धर्मों के माननेवाले भी, जो सारी दुनिया के सभी देशों में बसे हुए हैं, यहाँ भी थोड़ी-बहुत संख्या में पाये जाते हैं और जिस तरह यहाँ की बोलियों की गिनती आसान नहीं, उसी तरह यहाँ भिन्न-भिन्न धर्मों के संप्रदायों की भी गिनती आसान नहीं। इन विभिन्नताओं को देखकर अगर अपरिचित आदमी घबड़ाकर कह उठे कि यह एक देश नहीं, अनेक देशों का एक समूह है; यह एक जाति नहीं, अनेक जातियों का समूह है तो इसमें आश्चर्य की बात नहीं। क्योंकि ऊपर से देखने वाले को, जो गहराई में नहीं जाता, विभिन्नता ही देखने में आयेगी।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ii) लेखक ने भारतीय संस्कृति को अनेक देशों का समूह क्यों कहा है ?
(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ग) यह एक नैतिक और आध्यात्मिक स्रोत है, जो अनंतकाल से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से संपूर्ण देश में बहता रहा है और कभी-कभी मूर्त रूप होकर हमारे सामने आता रहा है। यह हमारा सौभाग्य रहा है कि हमने ऐसे ही एक मूर्त रूप को अपने बीच चलते-फिरते, हँसते-रोते भी देखा है और जिसने अमरत्व की याद दिलाकर हमारी सूखी हड्डियों में नयी मज्जा डाल हमारे मृत प्राय शरीर में नये प्राण फूँके और मुरझाये हुए दिलों को फिर खिला दिया। वह अमरत्व सत्य और अहिंसा का है, जो केवल इसी देश के लिए नहीं, आज मानवमात्र के जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक हो गया है।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।

(ii) मानव मात्र के लिए क्या अत्यंत आवश्यक हो गया है ?

(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(घ) दूसरी बात जो इस संबंध में विचारणीय है, वह यह है कि संस्कृति अथवा सामूहिक चेतना ही हमारे देश का प्राण है। इसी नैतिक चेतना के सूत्र से हमारे नगर और ग्राम, हमारे प्रदेश और संप्रदाय, हमारे विभिन्न वर्ग और जातियाँ आपस में बँधी हुई हैं। जहाँ उनमें और सब तरह की विभिन्नताएँ, वहाँ उन सबमें यह एकता है। इसी बात को ठीक तरह से पहचान लेने से बापू ने जनसाधारण को बुद्धिजीवियों के नेतृत्व में क्रांति करने के लिए तत्पर करने के लिए इसी नैतिक चेतना का सहारा लिया था।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।

(ii) हमारे देश का प्राण क्या है ?

(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ड.) वर्तमान युग में भारतीय संस्कृति के समन्वय के प्रश्न के अतिरिक्त यह बात भी विचारणीय है कि भारत की प्रत्येक प्रादेशिक भाषा की सुंदर और आनंदप्रद कृतियों का स्वाद भारत के अन्य प्रदेशों के लोगों को कैसे चखाया जाय। मैं समझता हूँ कि इस बारे में दो बातें विचारणीय हैं। क्या इस संबंध में यह उचित नहीं होगा कि प्रत्येक भाषा की साहित्यिक संस्थाएँ उस भाषा की कृत्तियों को संघ-लिपि अर्थात् देवनागरी में भी छपवाने का आयोजन करे। मुझे विश्वास है कि कम-से-कम जहाँ तक उत्तर की भाषाओं का संबंध है, यदि वे सब अपनी कृतियों को देवनागरी में भी छपवाने लगें तो उनका स्वाद लगभग सारे उत्तर भारत में लोग आसानी से ले सकेंगे; क्योंकि इन सब भाषाओं में इतना साम्य है कि एक भाषा का अच्छा ज्ञाता दूसरी भाषाओं की कृतियों का स्वल्प परिश्रम से समझ जायगा।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ एवं लेखक का नाम लिखिए।

(ii) लेखक ने देवनागरी लिपि पर क्यों जोर दिया है ?

(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

IV. **भाषा के रंग :**

1. पाठ में आए विदेशी शब्दों की सूची तैयार कीजिए।
2. निम्नलिखित प्रत्ययों से शब्दों की रचना कीजिए–
   त्व, प्रद, ईय
3. निम्नलिखित शब्दों के उपसर्ग लिखिए–
   अपार्जन, परिश्रम, प्रत्येक, अत्याचार

V. अनुभूति और अभिव्यक्ति :

1. आप अपने आस–पास के परिवेश को ध्यान में रखते हुए 'भारतीय संस्कृति' पर कक्षा में चर्चा कीजिए।
2. हमारा देश विविधताओं का देश है। इसे आप कैसे महसूस करते हैं? अपने सहपाठियों के साथ इस अनुभव को साझा कीजिए।

शब्दार्थ

भू-गर्भ – पृथ्वी का भीतरी भाग। **आबो-हवा** – वातावरण। **उद्‌गम** – निकलने का स्थान। **प्रपात** – झरना। **विभिन्नताओं** – अलग–अलग, विविधताएं। **आक्रांत** – प्रताड़ित, जिस पर आक्रमण हो। **उत्कर्ष** – उन्नति। **प्रगाढ़** – गहरा। **निर्मल** – स्वच्छ। **अस्तित्व** – वजूद, उपस्थिति, विद्यमान होना। **आध्यात्मिक** – आत्मा सम्बन्धित। **मृतप्राय** – मरणासन्न। **श्रुति** – वेद, उपनिषद। **अहिंसा** – हिंसा न करना। **प्रस्फुरित** – विकसित। **सौहार्द** – सद्‌भाव। **मनीषी** – विद्वान, बुद्धिमान। **व्यापक** – विस्तृत। **बुद्धिजीवी** – प्रबुद्धवर्ग, बुद्धियुक्त। **स्वत्व** – अधिकार। **जाग्रत** – जागरुक, जानने वाला।

■

आचार्य रामचंद्र शुक्ल

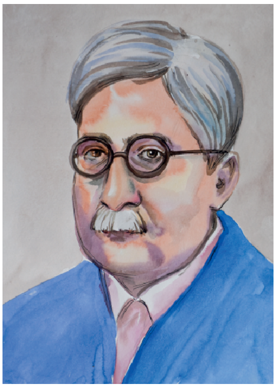

(सन् 1884–1941 ई.)

हिंदी आलोचना के शिखर पुरुष आचार्य रामचंद्र शुक्ल का जन्म सन् 1884 ई. में उत्तर प्रदेश के जनपद **बस्ती** के ग्राम **अगोना** में हुआ था। उनके पिता का नाम पं. चंद्रबली शुक्ल था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा हमीरपुर जिले के राठ तहसील में हुई। सन् 1898 ई. में उन्होंने मिर्जापुर के जुबिली स्कूल से मिडिल परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् मिर्जापुर के ही, लंदन मिशन स्कूल से 1901 ई. में स्कूल फाइनल की परीक्षा उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् इंटर की पढ़ाई के लिए कायस्थ पाठशाला, प्रयागराज में प्रवेश लिये, किंतु कुछ कारणवश पढ़ाई अधूरी रह गई। स्वाध्याय द्वारा उन्हें साहित्य के क्षेत्र में अद्वितीय स्थान प्राप्त हुआ तथा 1904 ई. में लंदन मिशन स्कूल में कला अध्यापक नियुक्त हुए। उन्होंने 1908 ई. में 'हिंदी शब्द सागर' के सहायक संपादक के रूप में काशी नागरी प्रचारिणी सभा में कार्य प्रारंभ किया। वह सन् 1919 ई. में काशी हिंदू विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में प्राध्यापक नियुक्त हुए तथा श्यामसुंदर दास के अवकाश ग्रहण करने के पश्चात् सन् 1937 ई. में अध्यक्ष पद को सुशोभित किये। अंततः इस पद पर कार्यरत रहते हुए सन् 1941 ई. में उनका निधन हो गया।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल हिंदी साहित्य के शीर्षस्थ आलोचक, इतिहासकार और श्रेष्ठ निबंधकार रहे हैं। 'हिंदी साहित्य का इतिहास' के लेखक के रूप में उनका योगदान अप्रतिम है, इसके साथ ही निबंध के क्षेत्र में उन्हें युग–प्रवर्तक के रूप में भी जाना जाता है। आचार्य शुक्ल ने हिंदी के सैद्धांतिक और व्यावहारिक आलोचना को अपने चिंतन से वैश्विक उच्चता प्रदान करने के साथ ही मलिक मुहम्मद जायसी, सूरदास और तुलसीदास के कविकर्म की व्यापकता को विश्लेषित और रेखांकित किया। उनकी आलोचना ने कवि से अलग कृति को केंद्र में रखते हुए कविता की ऐतिहासिक और सामाजिक व्याख्या की, जिससे साहित्य का वास्तविक और गतिशील यथार्थ पाठकों के समक्ष स्पष्ट हो सका। उन्होंने अपने लेखन में दर्शन, मनोविज्ञान, इतिहास और समाजशास्त्र का प्रयोग करते हुए हिंदी साहित्य के लेखन और उसकी आलोचना को वैज्ञानिकता प्रदान की।

रामचंद्र शुक्ल की प्रमुख रचनाएं हैं– **रस मीमांसा, गोस्वामी तुलसीदास, सूरदास, जायसी ग्रंथावली, हिंदी साहित्य का इतिहास, चिंतामणि (चार भागों में), त्रिवेणी, काव्य में रहस्यवाद तथा विश्व प्रपंच, कल्पना का आनंद, शशांक, बुद्धचरित** उनके ग्रंथ हैं।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के व्यक्तित्व में गंभीरता, दृढ़ता, भावुकता, नैतिकता और हास्य तथा व्यंग्य का समावेश था। उनकी भाषा में व्यक्तित्व–विधायिनी शक्ति तथा उनका हास्य मर्यादित और व्यंग्य अमोघ रहा है। उनका भाषा विषयक दृष्टिकोण अत्यंत व्यापक एवं उदार रहा है, इसीलिए आवश्यकतानुसार उसे समृद्ध करने के लिए उन्होंने अंग्रेजी, तत्सम, तद्भव, देशज तथा अरबी-फ़ारसी के शब्दों का प्रयोग किया। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने आचार्य रामचंद्र शुक्ल के संदर्भ में कहा है– **"आचार्य रामचंद्र शुक्ल हिंदी के गौरव थे। समीक्षा क्षेत्र में उनका कोई प्रतिद्वंदी न उनके जीवन काल में था, न अब (उनके स्वर्गवास के अनंतर) कोई उनका समकक्ष आलोचक है। 'आचार्य' शब्द ऐसे ही कर्ता साहित्यकारों के योग्य है। पंडित शुक्ल सच्चे अर्थों में आचार्य थे।"** जिस प्रकार भारतेंदु ने हिंदी भाषा को प्रतिष्ठित किया, उसी प्रकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने हिंदी अलोचना को नई दिशा दी।

मित्रता *निबंध में एक सच्चे मित्र और उसका चयन करते समय किन गुणों पर ध्यान देना चाहिए, इस विषय पर आचार्य शुक्ल ने बहुत ही सुसज्जित भाषा एवं सहज शैली में लिखा है। एक सच्चा मित्र जीवन में औषधि के समान होता है। एक सच्चे मित्र का यह कर्त्तव्य है कि वह हमारा सही मार्गदर्शन करे, हमको सही दिशा में प्रेरित करें। कुसंगति एक बड़ा दुर्गुण है। यह व्यक्ति को अवनति के गड्ढ़े में गिराता है। इसलिए, लेखक ने ऐसे मित्रों से बचने को प्रेरणा दी है। हमें हमेशा उत्तम, सच्चरित्र, ईमानदार एवं विवेकशील लोगों को ही मित्र बनाना चाहिए।*

नोट– यहाँ प्रस्तुत पाठ 'मित्रता' उनका प्रसिद्ध निबंध है। किंतु, यह उनके किसी भी संकलन में शामिल नहीं है।

■

मित्रता

जब कोई युवा पुरुष अपने घर से बाहरी संसार में अपनी स्थिति जमाता है, तब पहली कठिनता उसे मित्र चुनने में पड़ती है। यदि उसकी स्थिति बिल्कुल एकांत और निराली नहीं रहती तो उसकी जान-पहचान के लोग धड़ाधड़ बढ़ते जाते हैं और थोड़े ही दिनों में कुछ लोगों से उसका हेल-मेल हो जाता है। यही हेल-मेल बढ़ते-बढ़ते मित्रता के रूप में परिणत हो जाता है। मित्रों के चुनाच की उपयुक्तता पर उसके जीवन की सफलता निर्भर हो जाती है; क्योंकि संगति का गुप्त प्रभाव हमारे आचरण पर बड़ा भारी पड़ता है। हम लोग ऐसे समय में समाज में प्रवेश करके अपना कार्य आरंभ करते हैं, जबकि हमारा चित्त कोमल और हर तरह का संस्कार ग्रहण करने योग्य रहता है। हमारे भाव अपरिमार्जित और हमारी प्रवृत्ति अपरिपक्व रहती है। अपने मनोवेगों की शक्ति और अपनी प्रकृति की कोमलता का पता हमीं को नहीं रहता। हम लोग कच्ची मिट्टी की मूर्ति के समान रहते हैं, जिसे जो जिस रूप में चाहे, उस रूप में ढाले – चाहे राक्षस बनाए, चाहे देवता। ऐसे लोगों का साथ करना हमारे लिए बुरा है, जो हमसे अधिक दृढ़ संकल्प के हैं; क्योंकि हमें उनकी हर बात बिना विरोध के मान लेनी पड़ती है। पर ऐसे लोगों का साथ करना और बुरा है, जो हमारी ही बात को ऊपर रखते हैं; क्योंकि ऐसी दशा में न तो हमारे ऊपर कोई नियंत्रण रहता है और न हमारे लिए कोई सहारा। दोनों अवस्थाओं में जिस बात का भय रहता है, उसका पता युवकों को प्रायः बहुत कम रहता है। यदि विवेक–बुद्धि से काम लिया जाय तो यह भय नहीं रहता, पर युवा पुरुष प्रायः विवेक से कम काम लेते हैं। कैसे आश्चर्य की बात है कि लोग एक घोड़ा लेते हैं तो उसके गुण-दोष कितना परख कर लेते हैं, पर किसी को मित्र बनाने में उसके पूर्व आचरण और स्वभाव आदि का कुछ भी विचार और अनुसंधान नहीं करते। वे उसमें सब बातें अच्छी-ही-अच्छी मानकर अपना पूरा विश्वास जमा देते हैं। हँसमुख चेहरा, बातचीत का ढंग, थोड़ी चतुराई या साहस – ये ही दो-चार बातें किसी में देखकर लोग चटपट उसे अपना बना लेते हैं। हम लोग यह नहीं सोचते कि मैत्री का उद्देश्य क्या है, क्या जीवन के व्यवहार में उसका कुछ मूल्य भी है। यह बात हमें नहीं सूझती कि यह ऐसा साधन है, जिसमें आत्मशिक्षा का कार्य बहुत सुगम हो जाता है। एक प्राचीन विद्वान् का वचन है – ''विश्वासपात्र मित्र से बड़ी भारी रक्षा रहती है। जिसे ऐसा मित्र मिल जाए, उसे समझना चाहिए कि खज़ाना मिल गया।'' विश्वासपात्र मित्र जीवन की औषधि है। हमें अपने मित्रों से यह आशा रखनी चाहिए कि वे उत्तम संकल्पों से हममें दृढ़ करेंगे, दोषों और त्रुटियों से हमें बचाएँगे, हमारे सत्य, पवित्रता और मर्यादा के प्रेम को पुष्ट करेंगे, जब हम कुमार्ग पर पैर रखेंगे, तब वे हमें सचेत करेंगे, जब हम हतोत्साहित होंगे, तब हमें उत्साहित करेंगे। सारांश यह है कि वे

हमें उत्तमतापूर्वक जीवन-निर्वाह करने में हर तरह से हमारी सहायता करेंगें। सच्ची मित्रता में उत्तम वैद्य की-सी निपुणता और परख होती है, अच्छी-से-अच्छी माता का-सा धैर्य और कोमलता होती है। ऐसी ही मित्रता करने का प्रयत्न प्रत्येक व्यक्ति को करना चाहिए।

छात्रावस्था में तो मित्रता की धुन सवार रहती है। मित्रता हृदय से उमड़ी पड़ती है। पीछे के जो स्नेह-बंधन होते हैं, उसमें न तो उतनी उमंग रहती है, न उतनी खिन्नता। बाल-मैत्री में जो मग्न करनेवाला आनंद होता है, जो हृदय को बेधने वाली ईर्ष्या और खिन्नता होती है, वह और कहाँ ? कैसी मधुरता और कैसी अनुरक्ति होती है, कैसा अपार विश्वास होता है! हृदय के कैसे-कैसे उद्‌गार निकलते हैं! वर्तमान कैसा आनंदमय दिखायी पड़ता है और भविष्य के संबंध में कैसे लुभानेवाली कल्पनाएँ मन में रहती हैं! कितनी जल्दी बातें लगती हैं और कितनी जल्दी मानना-मनाना होता है! 'सहपाठी की मित्रता' इस उक्ति में हृदय के कितने भारी उथल-पुथल का भाव भरा हुआ है। किंतु जिस प्रकार युवा पुरुष की मित्रता स्कूल के बालक की मित्रता से दृढ़, शांत और गंभीर होती है, उसी प्रकार हमारी युवावस्था के मित्र बाल्यावस्था के मित्रों से कई बातों में भिन्न होते हैं। मैं समझता हूँ कि मित्र चाहते हुए बहुत-से लोग मित्र के आदर्श की कल्पना मन में करते होंगे, पर इस कल्पित आदर्श से तो हमारा काम जीवन की झंझटों में चलता नहीं। सुंदर प्रतिमा, मनभावनी चाल और स्वच्छंद प्रकृति ये ही दो-चार बातें देखकर मित्रता की जाती है.; पर जीवन-संग्राम में साथ देनेवाले मित्रों में इनमें से कुछ अधिक बातें चाहिए। मित्र केवल उसे नहीं कहते, जिसके गुणों की तो हम प्रशंसा करें, पर जिसे हम स्नेह न कर सकें। जिससे अपने छोटे-छोटे काम तो हम निकालते जाएँ, पर भीतर-ही-भीतर घृणा करते रहें। मित्र सच्चे पथ-प्रदर्शक के समान होना चाहिए, जिस पर हम पूरा विश्वास कर सकें।

मित्र भाई के समान होना चाहिए, जिसे हम अपना प्रीति-पात्र बना सकें। हमारे और हमारे मित्र के बीच सच्ची सहानुभूति होनी चाहिए – ऐसी सहानुभूति, जिससे एक से हानि-लाभ को दूसरा अपना हानि-लाभ समझे। मित्रता के लिए यह आवश्यक नहीं है कि दो मित्र एक ही प्रकार का कार्य करते हों या एक ही रुचि के हों। प्रकृति और आचरण की समानता भी आवश्यक या वांछनीय नहीं है। दो भिन्न प्रकृति के मनुष्यों में बराबर प्रीति और मित्रता रही है। राम धीर और शांत प्रकृति के थे, लक्ष्मण उग्र और उद्धत स्वभाव के थे, पर दोनों भाइयों में अत्यंत प्रगाढ़ स्नेह था। उदार तथा उच्चाशय कर्ण और लोभी दुर्योधन के स्वभावों में कुछ विशेष समानता न थी, पर उन दोनों की मित्रता खूब निभी। यह कोई बात नहीं है कि एक ही स्वभाव और रुचि के लोगों में ही मित्रता हो सकती है। समाज में विभिन्नता देखकर लोग एक-दूसरे की ओर आकर्षित होते हैं। जो गुण हममें नहीं हैं, हम चाहते हैं कि कोई ऐसा मित्र मिले, जिसमें वे गुण हों। चिंताशील मनुष्य प्रफुल्लित चित्त का साथ ढूँढ़ता है, निर्बल बली का, धीर उत्साही का। उच्च आकांक्षा वाला चंद्रगुप्त युक्ति और उपाय के लिए चाणक्य का मुँह ताकता था। नीति-विशारद अकबर मन बहलाने के लिए बीरबल की ओर देखता था।

मित्र का कर्त्तव्य इस प्रकार बताया गया है – 'उच्च और महान् कार्यों में इस प्रकार सहायता देना, मन बढ़ाना और साहस दिलाना कि तुम अपनी निज की सामर्थ्य से बाहर काम कर जाओ।' यह कर्त्तव्य उसी से पूरा होगा, जो दृढ़-चित्त और सत्य-संकल्प का हो। इससे हमें ऐसे ही मित्रों की खोज में रहना चाहिए, जिनमें हमसे अधिक आत्मबल हो। हमें उनका पल्ला उसी तरह पकड़ना चाहिए, जिस तरह सुग्रीव ने राम का पल्ला पकड़ा था। मित्र हों तो प्रतिष्ठित और शुद्ध हृदय के हों, मृदुल और पुरुषार्थी हों, शिष्ट और सत्यनिष्ठ हों, जिससे हम अपने को उनके भरोसे पर छोड़ सकें और यह विश्वास कर सकें कि उनसे किसी प्रकार का धोखा न होगा।

जो बात ऊपर मित्रों के संबंध में कही गयी है, वही जान-पहचान वालों के संबंध में भी ठीक है। जान-पहचान के लोग ऐसे हों, जिनसे हम कुछ लाभ उठा सकते हों, जो हमारे जीवन को उत्तम और आनंदमय करने में कुछ सहायता दे सकते हों, यद्यपि उतनी नहीं, जितनी गहरे मित्र दे सकते हैं। मनुष्य का जीवन थोड़ा है, उसमें खोने के लिए समय नहीं। यदि क, ख और ग हमारे लिए कुछ नहीं कर सकते हैं, न कोई बुद्धिमानी या विनोद की बातचीत कर सकते हैं, न कोई अच्छी बात बतला सकते हैं, न सहानुभूति द्वारा हमें ढाढ़स बँधा सकते हैं, न हमारे आनंद में सम्मिलित हो सकते हैं, न हमें कर्त्तव्य का ध्यान दिला सकते हैं तो ईश्वर हमें उनसे दूर ही रखे। हमें अपने चारों ओर जड़ मूर्तियाँ सजाना नहीं है। आजकल जान-पहचान बढ़ाना कोई बड़ी बात नहीं है। कोई भी युवा पुरुषों को पा सकता है, जो उसके साथ थियेटर देखने जायँगे, नाच-रंग में जायँगे, सैर-सपाटे में जायँगे, भोजन का निमंत्रण स्वीकार करेंगे। यदि ऐसे जान-पहचान के लोगों से कुछ हानि न होगी तो लाभ भी न होगा। पर यदि हानि होगी तो बड़ी भारी होगी। सोचो तो तुम्हारा जीवन कितना नष्ट होगा। यदि ये जान-पहचान के लोग उन मनचले युवकों में से निकले जिनकी संख्या दुर्भाग्यवश आजकल बहुत बढ़ रही है, यदि उन शोहदों में से निकले, जो अमीरों की बुराइयों और मूर्खताओं की नकल किया करते हैं, दिन-रात बनाव-सिंगार में रहा करते हैं, महफिलों में 'ओ-हो-हो', 'वाह-वाह' किया करते हैं, गलियों में ठट्ठा मारते हैं और सिगरेट का धुआँ उड़ाते चलते हैं। ऐसे नवयुवकों से बढ़कर शून्य, निःसार और शोचनीय जीवन और किसका है ? वे अच्छी बातों के सच्चे आनंद से कोसों दूर हैं। उनके लिए न तो संसार में सुंदर और मनोहर उक्ति वाले कवि हुए हैं और न संसार में सुंदर आचरण वाले महात्मा हुए हैं। उनके लिए न तो बड़े-बड़े वीर अद्भुत कर्म कर गये हैं और न बड़े-बड़े ग्रंथकार ऐसे विचार छोड़ गये हैं, जिनसे मनुष्य जाति के हृदय में सात्विकता की उमंगे उठती हैं। उनके लिए फूल-पत्तियों में कोई सौंदर्य नहीं, झरनों के कल-कल में मधुर संगीत नहीं, अनंत सागर-तरंगों पर गंभीर रहस्यों का आभास नहीं, उनके भाग्य में सच्चे प्रयत्न और पुरुषार्थ का आनंद नहीं, उनके भाग्य में सच्ची प्रति का सुख और कोमल हृदय की शांति नहीं। जिनकी आत्मा अपने इंद्रिय-विषयों में ही लिप्त है; जिनका हृदय नीचाशयों और कलुषित है, ऐसे नाशोन्मुख प्राणियों को दिन-दिन अन्धकार में पतित होते देख कौन ऐसा होगा, जो तरस न खायेगा ? उसे ऐसे प्राणियों का साथ न करना चाहिए।

मकदूनिया का बादशाह डेमेट्रियस कभी-कभी राज्य का सब काम छोड़ अपने ही मेल के दस-पाँच साथियों को लेकर विषय-वासना में लिप्त रहा करता था। एक बार बीमारी का बहाना करके इसी प्रकार वह अपने दिन काट रहा था। इसी बीच उसका पिता उससे मिलने के लिए गया और उसने एक हँसमुख जवान को कोठरी से बाहर निकलते देखा। जब पिता कोठरी के भीतर पहुँचा, तब डेमेट्रियस ने कहा – 'ज्वर ने मुझे अभी छोड़ा है।' पिता ने कहा – 'हाँ! ठीक है, वह दरवाजे पर मुझे मिला था।'

कुसंग का ज्वर सबसे भयानक होता है। यह केवल नीति और सद्‌वृत्ति का ही नाश नहीं करता, बल्कि बुद्धि का भी क्षय करता है। किसी युवा पुरुष की संगति यदि बुरी होगी तो वह उसके पैरों में बँधी चक्की के समान होगी, जो उसे दिन-दिन अवनति के गड्ढ़े में गिराती जाएगी और यदि अच्छी होगी तो सहारा देनेवाली बाहु के समान होगी, जो उसे निरंतर उन्नति की ओर ले जाएँगी।

इंग्लैंड के एक विद्वान् को युवावस्था में राज-दरबार में जगह नहीं मिली। इस पर जिंदगी भर वह अपने भाग्य को सराहता रहा। बहुत-से लोग इसे अपना बड़ा दुर्भाग्य समझते, पर वह अच्छी तरह जानता था कि वहाँ वह बुरे लोगों की संगति में पड़ता, जो उसकी आध्यात्मिक उन्नति में बाधक होते। बहुत-से लोग ऐसे होते हैं, जिनके घड़ी भर के साथ से भी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है; क्योंकि उनके ही बीच में ऐसी-ऐसी बातें कही जाती हैं, जो कानों में न पड़नी चाहिए, चित्त पर ऐसे प्रभाव पड़ते हैं, जिनसे उसकी पवित्रता का नाश होता है। बुराई अटल भाव धारण करके बैठती है। बुरी बातें हमारी धारणा में बहुत दिनों तक टिकती हैं। इस बात को प्रायः सभी लोग जानते हैं कि भद्दे व फूहड़ गीत जितनी जल्दी ध्यान पर चढ़ते हैं, उतनी जल्दी कोई गंभीर या अच्छी बात नहीं। जिन भावनाओं को हम दूर रखना चाहते हैं, जिन बातों को हम याद करना नहीं चाहते, वे बार-बार हृदय में उठती हैं और बेधती हैं; अतः तुम पूरी चौकसी रखो, ऐसे लोगों को कभी साथी न बनाओ, जो अश्लील, अपवित्र और फूहड़ बातों से तुम्हें हँसाना चाहें। सावधान रहो। ऐसा न हो कि पहले-पहल तुम इसे एक बहुत सामान्य बात समझो और सोचो कि एक बार ऐसा हुआ, फिर ऐसा न होगा अथवा तुम्हारे चरित्र-बल का ऐसा प्रभाव पड़ेगा कि ऐसी बातें बकने वाले आगे चलकर आप सुधर जाएँगे। नहीं, ऐसा नहीं होगा। जब एक बार मनुष्य अपना पैर कीचड़ में डाल देता है, तब फिर यह नहीं देखता कि वह कहाँ और कैसी जगह पैर रखता है। धीर-धीरे उन बुरी बातों में अभ्यस्त होते-होते तुम्हारी घृणा कम हो जाएगी। पीछे तुम्हें इनसे चिढ़ न मालूम होगी; क्योंकि तुम यह सोचने लगोगे कि चिढ़ने की बात ही क्या है। तुम्हारा विवेक कुंठित हो जायगा और तुम्हें भले-बुरे की पहचान न रह जायगी। अंत में होते-होते तुम भी बुराई के भक्त बन जाओगे; अतः हृदय को उज्ज्वल और निष्कलंक रखने का सबसे अच्छा उपाय यही है कि बुरी संगत की छूत से बचो। यह पुरानी कहावत है –

"काजल की कोठरी में कैसो ही सयानो जाय,
एक लीक काजल की लागि है पै लागि है।"

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए –

1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल का जन्म कहाँ हुआ था ?
   (क) 1905 ई. (ख) 1884 ई. (ग) 1919 ई. (घ) 1908 ई.
2. आचार्य रामचंद्र शुक्ल का निबंध–संग्रह चिंतामणि कितने भागों में प्रकाशित हुआ ?
   (क) एक (ख) दो (ग) चार (घ) इनमें से कोई नहीं।
3. आचार्य रामचंद्र शुक्ल की रचना है–
   (क) त्रिवेणी (ख) उत्तर कबीर (ग) पुर्ननवा (घ) भारतीय शिक्षा
4. सच्चे मित्र की तुलना किससे की गई है?
   (क) मिठाई (ख) औषधि (ग) अध्यापक (घ) विष
5. डेमेट्रियस कहाँ का बादशाह था?
   (क) एथेंस (ख) स्पार्टा (ग) ब्रिटेन (घ) मकदूनिया

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल का संक्षिप्त जीवन परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए।
2. आचार्य रामचंद्र शुक्ल का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।
3. सच्चे मित्र का चुनाव करते समय हमें किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?
4. 'कुसंग का ज्वर सबसे भयानक होता है।' लेखक इस पंक्ति के माध्यम से क्या कहना चाहता है?
5. विश्वास पात्र मित्र को जीवन की औषधि क्यों कहा गया है ?

III. दिये गए गद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

(क) हम लोग कच्ची मिट्टी की मूर्ति के समान रहते हैं, जिसे जो जिस रूप का चाहे, उस रूप का करे–चाहे राक्षस बनावे, चाहे देवता। ऐसे लोगों का साथ करना हमारे लिए बुरा है, जो हमसे अधिक दृढ़ संकल्प के हैं; क्योंकि हमें उनकी हर एक बात बिना विरोध के मान लेनी पड़ती है। पर ऐसे लोगों का साथ करना और बुरा है, जो हमारी ही बात को ऊपर रखते हैं; क्योंकि ऐसी दशा में न तो हमारे ऊपर कोई दबाव रहता है और न हमारे लिए कोई सहारा रहता है। दोनों अवस्थाओं में जिस बात का भय रहता है, उसका पता युवा पुरुषों को प्रायः बहुत कम रहता है।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।

(ii) किन लोगों का संगत करना हमारे लिए बुरा है ?

(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ख) विश्वासपात्र मित्र से बड़ी भारी रक्षा रहती है। जिसे ऐसा मित्र मिल जाये, उसे समझना चाहिए कि खजाना मिल गया।' विश्वासपात्र मित्र जीवन की एक औषधि है। हमें अपने मित्रों से यह आशा रखनी चाहिए कि वे उत्तम संकल्पों में हमें दृढ़ करेंगे, दोषों और त्रुटियों से हमें बचायेंगे हमारे सत्य, पवित्रता और मर्यादा के प्रेम को पुष्ट करेंगे, जब हम कुमार्ग पर पैर रखेंगे, तब वे हमें सचेत करेंगे, जब हम हतोत्साहित होंगे, तब वे हमें उत्साहित करेंगे।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।

(ii) विश्वास पात्र को जीवन की औषधि क्यों कहा जाता है ?

(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ग) मित्र का कर्त्तव्य इस प्रकार बताया गया है – 'उच्च और महान् कार्यों में इस प्रकार सहायता देना, मन बढ़ाना और साहस दिलाना कि तुम अपनी निज की सामर्थ्य से बाहर काम कर जाओ।' यह कर्त्तव्य उसी से पूरा होगा, जो दृढ़.–चित्त और सत्य–संकल्प का हो। इससे हमें ऐसे ही मित्रों की खोज में रहना चाहिए, जिनमें हमसे अधिक आत्मबल हो। हमें उनका पल्ला उसी तरह पकड़ना चाहिए, जिस तरह सुग्रीव ने राम का पल्ला पकड़ा था। मित्र हों तो प्रतिष्ठित और शुद्ध हृदय के हों, मृदुल और पुरुषार्थी हों, शिष्ट और सत्यनिष्ठ हों, जिससे हम अपने को उनके भरोसे पर छोड़ सकें और यह विश्वास कर सकें कि उनसे किसी प्रकार का धोखा न होगा।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।

(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) 'आत्मबल' से आप क्या समझते है ?

(घ) कुसंग का ज्वर सबसे भयानक होता है। यह केवल नीति और सद्वृत्ति का ही नाश नहीं करता, बल्कि बुद्धि का भी क्षय करता है। किसी युवा पुरुष की संगति यदि बुरी होगी, तो वह उसके पैरों में बँधी चक्की के समान होगी, जो उसे दिन-दिन अवनति के गड्ढ़े में गिराती जायगी और यदि अच्छी होगी तो सहारा देनेवाली बाहु के समान होगी, जो उसे निरंतर उन्नति की ओर उठाती जाएँगी।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) 'सुदृढ़ बाहु' का क्या अर्थ है ?

(ङ) सावधान रहो, ऐसा न हो कि पहले.पहल तुम इसे एक बहुत सामान्य बात समझो और सोचो कि एक बार ऐसा हुआ, फिर ऐसा न होगा अथवा तुम्हारे चरित्र–बल का ऐसा प्रभाव

पड़ेगा कि ऐसी बातें बकने वाले आगे चलकर आप सुधर जायेंगे। नहीं, ऐसा नहीं होगा। जब एक बार मनुष्य अपना पैर कीचड़ में डाल देता है, तब फिर यह नहीं देखता कि वह कहाँ और कैसी जगह पैर रखता है। धीर–धीरे उन बुरी बातों में अभ्यस्त होते–होते तुम्हारी घृणा कम हो जायगी।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) 'चरित्र बल' को कैसे सुदृढ़ बनाए।

IV. भाषा के रंग :

1. निम्नलिखित शब्दों का समास विग्रह करते हुए समास का नाम भी बताइए –
   सहानुभूति, जीवन–निर्वाह, उच्चाशय, महात्मा।
2. निम्नलिखित में प्रत्यय जोड़कर संज्ञा रूप लिखिए–
   गहरा, कोमल, भाव।
3. निम्नलिखित शब्दों का तत्सम रूप लिखिए–
   कान, सिंगार, काजल।

V. अनुभूति और अभिव्यक्ति :

1. आपका सामना किसी ऐसे मित्र से हुआ हो, जिसने आपको बुराई की ओर धकेला हो। इस संदर्भ में अपने अनुभव को लिखिए।

शब्दार्थ

अपरिमार्जित – अशुद्ध, बिना शुद्ध किया हुआ। **परिणत** – बदलना, रूपांतरित। **प्रवृत्ति** – रुचि।, **संकल्प** – सुदृढ़ विचार। **प्रकृति** – स्वभाव। **प्रतिमा** – मूर्ति, **प्रगाढ़** – अत्याधिक प्रेम। **कलुषित** – गंदा, मलिन। **कुसंग** – बुरी संगति। **निःसार** – सारहीन। **अनुसंधान** – खोज। **चेष्टा** – प्रयास, संघर्ष। **सद्‌वृत्ति** – सच्चा आचरण। **मृदुल** – कोमल। **मग्न** – लीन, लगातार एक ही कार्य में प्रवृत्त रहना। **निष्कलंक** – कलंक से रहित।

■

जयशंकर प्रसाद

(सन् 1889–1937 ई.)

जयशंकर प्रसाद का जन्म **सन् 1889 ई.** में **वाराणसी** में हुआ था। उनके पिता का नाम देवीप्रसाद साहु था। वे काशी के प्रसिद्ध क्वींस कालेज में पढ़ने गए, परंतु स्थितियाँ अनुकूल न होने के कारण आठवीं से आगे नहीं पढ़ पाए। बाद में स्वाध्याय से उन्होंने संस्कृत, हिंदी, फारसी का अध्ययन किया। अपने पैतृक कार्य को करते हुए भी उन्होंने अपने भीतर काव्य प्रेरणा को जीवित रखा। उनका जीवन बहुत सरल था। अत्यधिक श्रम करने तथा जीवन के अंतिम दिनों में यक्ष्मा से पीड़ित रहने के कारण सन् 1937 ई. को उनका निधन हो गया।

प्रसाद अत्यंत सौम्य, शांत एवं गंभीर प्रकृति के व्यक्ति थे और परनिंदा एवं आत्मस्तुति दोनों से सदा दूर रहते थे। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। मूलतः वे कवि थे, लेकिन उन्होंने नाटक, उपन्यास, कहानी, निबंध आदि अनेक साहित्यिक विधाओं में उच्चकोटि की रचनाओं का सृजन किया। उनकी प्रमुख काव्य-कृतियाँ हैं – **चित्राधार, कानन-कुसुम, झरना, आँसू, लहर और कामायनी**। आधुनिक हिंदी की श्रेष्ठतम काव्य-कृति मानी जाने वाली 'कामायनी' पर उन्हें हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा **मंगलाप्रसाद पारितोषिक** दिया गया। वे कवि के साथ-साथ सफल गद्यकार भी थे। **अजातशत्रु, चंद्रगुप्त, स्कंदगुप्त** और **ध्रुवस्वामिनी** उनके नाटक हैं तो **कंकाल, तितली** और **इरावती (अपूर्ण)** उपन्यास। **आकाशदीप, आँधी** और **इंद्रजाल** उनके कहानी संग्रह हैं।

उनका साहित्य कोमलता, माधुर्य, शक्ति और ओज का साहित्य माना जाता है। छायावादी कविता की अतिशय काल्पनिकता, सौंदर्य का सूक्ष्म चित्रण, प्रकृति-प्रेम, देश-प्रेम और शैली की लाक्षणिकता उनकी कविता की प्रमुख विशेषताएँ हैं। इतिहास और दर्शन में उनकी गहरी रुचि थी जो उनके साहित्य में स्पष्ट दिखाई देती है।

प्रसाद की भाषा पूर्णतः साहित्यिक, परिमार्जित एवं परिष्कृत हिंदी है। भाषा प्रवाहयुक्त होते हुए भी संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली है, जिसमें सर्वत्र ओज एवं माधुर्य गुण विद्यमान है। अपने सूक्ष्म भावों को व्यक्त करने के लिए उन्होंने लक्षणा एवं व्यंजना का आश्रय लिया

है। उनकी शैली काव्यात्मक चमत्कारों से परिपूर्ण है। संगीतात्मकता एवं लय पर आधारित उनकी शैली अत्यंत सरस एवं मधुर है तथा उनका साहित्य प्रसाद गुण से युक्त है।

ममता *नामक कहानी जयशंकर प्रसाद के* ***आकाशदीप*** *कहानी संग्रह में संकलित है। इसमें प्रसाद ने नारी के आदर्शों को स्थापित किया है। विपरीत परिस्थितियों में भी ममता ने अपने स्वाभिमान की रक्षा करते हुए कर्तव्य एवं धर्म का पालन किया। आक्रमण के पश्चात् वर्षों बाद अपनी झोपड़ी में शरणागत के रूप में आयें मुगल सम्राट हुमायूँ को आश्रय देकर ममता ने अपने धर्म एवं संस्कृति का आदर्श प्रस्तुत किया।*

■

ममता

(1)

रोहतास-दुर्ग के प्रकोष्ठ में बैठी हुई युवती ममता, शोण के तीक्ष्ण गंभीर प्रवाह को देख रही है। ममता विधवा थी। उसका यौवन शोण के समान ही उमड़ रहा था। मन में वेदना, मस्तक में आँधी, आँखों में पानी की बरसात लिए, वह सुख के कंटक-शयन में विकल थी। वह रोहतास–दुर्गपति के मंत्री चूड़ामणि की अकेली दुहिता थी, फिर उसके लिए कुछ अभाव होना असंभव था, परंतु वह विधवा थी। हिंदू-विधवा संसार में सबसे निराश्रय प्राणी है – तब उसकी विडंबना का कहाँ अंत था ?

चूड़ामणि ने चुपचाप उसके प्रकोष्ठ में प्रवेश किया। शोण के प्रवाह में, उसके कल-नाद में, अपना जीवन मिलाने में वह बेसुध थी। पिता का आना न जान सकी। चूड़ामणि व्यथित हो उठे। स्नेह-पालिता पुत्री के लिए क्या करें, यह स्थिर न कर सकते थे। लौटकर बाहर चले गये। ऐसा प्रायः होता, पर आज मंत्री के मन में बड़ी दुश्चिंता थी। पैर सीधे न पड़ते थे।

एक पहर बीत जाने पर वे फिर ममता के पास आये। उस समय उनके पीछे दस सेवक चाँदी के बड़े थालों में कुछ लिए खड़े थे। कितने ही मनुष्यों के पद-शब्द सुन ममता ने घूमकर देखा। मंत्री ने सब थालों को रखने का संकेत किया। अनुचर थाल रखकर चले गये।

ममता ने पूछा–''यह क्या है पिताजी ?''

''तेरे लिए बेटी! उपहार है।'' – कहकर चूड़ामणि ने उसका आवरण उलट दिया। स्वर्ण का पीलापन उस सुनहली संध्या में विकीर्ण होने लगा। ममता चौंक उठी–

''इतना स्वर्ण! यह कहाँ से आया ?''

''चुप रहो ममता, यह तुम्हारे लिए है!''

''तो क्या आपने म्लेच्छ का उत्कोच स्वीकार कर लिया ? पिताजी, यह अनर्थ है, अर्थ नहीं। लौटा दीजिये। पिताजी! हम लोग ब्राह्मण हैं, इतना सोना लेकर क्या करेंगे ?''

''इस पतनोन्मुख प्राचीन सामंत-वंश का अंत समीप है, बेटी! किसी भी दिन शेरशाह रोहिताश्व पर अधिकार कर सकता है। उस दिन मंत्रित्व न रहेगा, तब के लिए बेटी।''

''हे भगवान्! तब के लिए! विपद के लिए! इतना आयोजन! परम पिता की इच्छा के विरुद्ध इतना साहस! पिताजी, क्या भीख न मिलेगी ? क्या कोई हिंदू भू-पृष्ठ पर न बचा रह जायगा, जो ब्राह्मण को दो मुट्ठी अन्न दे सके ? यह असम्भव है। फेर दीजिये पिताजी, मैं काँप रही हूँ – इसकी चमक आँखों को अंधा बना रही है।''

''मूर्ख है''– कहकर चूड़ामणि चले गये।

दूसरे दिन जब डोलियों का ताँता भीतर आ रहा था, ब्राह्मण मंत्री चूड़ामणि का हृदय धक्-धक् करने लगा। वह अपने को रोक न सका। उसने जाकर रोहिताश्व-दुर्ग के तोरण पर डोलियों का आवरण खुलवाना चाहा। पठानों ने कहा–

''यह महिलाओं का अपमान करना है।''

बात बढ़ गयी। तलवारें खिंची, ब्राह्मण वहीं मारा गया और राजा-रानी और कोष सब छली शेरशाह के हाथ पड़े; निकल गई ममता। डोली में भरे हुए पठान सैनिक दुर्ग भर में फैल गये, पर ममता न मिली।

(2)

काशी के उत्तर में धर्मचक्र विहार, मौर्य और गुप्त सम्राटों की कीर्ति का खँडहर था। भग्न चूड़ा, तृण-गुल्मों से ढके हुए प्राचीर, ईंटों के ढेर में बिखरी हुई भारतीय शिल्प की विभूति, ग्रीष्म रजनी की चंद्रिका में अपने को शीतल कर रही थी।

जहाँ पंचवर्गीय भिक्षु गौतम का उपदेश ग्रहण करने के लिए पहले मिले थे, उसी स्तूप के भग्नावशेष की मलिन छाया में एक झोंपड़ी के दीपालोक में एक स्त्री पाठ कर रही थी–

''अनन्याश्चिनायन्तो मां ये जनाः पयर्युपासते–''

पाठ रुक गया। एक भीषण और हताश आकृति दीप के मंद प्रकाश में सामने खड़ी थी। स्त्री उठी, उनके कपाट बंद करना चाहा। परंतु उस व्यक्ति ने कहा–''माता! मुझे आश्रय चाहिए।''

''तुम कौन हो ?''– स्त्री ने पूछा।

''मैं मुगल हूँ। चौसा-युद्ध में शेरशाह से विपन्न होकर रक्षा चाहता हूँ। इस रात अब आगे चलने में असमर्थ हूँ।''

''क्या शेरशाह से!'' स्त्री ने अपने ओठ काट लिये।

''हाँ, माता!''

''परंतु तुम भी वैसे ही क्रूर हो, वही भीषण रक्त की प्यास, वही निष्ठुर प्रतिबिंब, तुम्हारे मुख पर भी है। सैनिक! मेरी कुटी में स्थान नहीं, जाओं कहीं दूसरा आश्रय खोज लो!''

''गला सूख रहा है, साथी छूट गये हैं, अश्व गिर पड़ा है– इतना थका हुआ हूँ, इतना!''– कहते-कहते वह व्यक्ति धम से बैठ गया और उसके सामने ब्रह्माण्ड घूमने लगा। स्त्री ने सोचा, यह विपत्ति कहाँ से आयी। उसने जल दिया, मुगल के प्राणों की रक्षा हुई। वह सोचने लगी –''सब विधर्मी दया के पात्र नहीं – मेरे पिता का वध करनेवाले आततायी!'' घृणा से उसका मन विरक्त हो गया।

स्वस्थ होकर मुगल ने कहा –''माता! तो फिर मैं चला जाऊँ ?'' स्त्री विचार कर रही थी –''मैं ब्राह्मणी हूँ, मुझे तो अपने धर्म अतिथिदेव की उपासना – का पालन करना चाहिए। परंतु यहा नहीं-नहीं, सब विधर्मी दया के पात्र नहीं। परंतु यह दया तो नहीं कर्त्तव्य करना है। तब!''

मुगल अपनी तलवार टेककर उठ खड़ा हुआ। ममता ने कहा –''क्या आश्चर्य है कि तुम भी छल करो, ठहरो।''

''छल! नहीं, तब नहीं स्त्री! जाता हूँ, तैमूर का वंशधर स्त्री से छल करेगा ? जाता हूँ। भाग्य का खेल है।''

ममता ने मन में कहा –''यहाँ कौन दुर्ग है! यही झोंपड़ी न, जो चाहे ले ले, मुझे तो अपना कर्त्तव्य करना पड़ेगा।'' वह बाहर चली आई और मुगल से बोली –''जाओ भीतर, थके हुए भयभीत पथिक! तुम चाहे कोई हो, मैं तुम्हें आश्रय देती हूँ। मैं ब्राह्मण-कुमारी हूँ, सब अपना धर्म छोड़ दें, तो मैं भी क्यों छोड़ दूँ?'' मुगल ने चंद्रमा के मंद प्रकाश में वह महिमामय मुखमंडल देखा, उसने मन-ही-मन नमस्कार किया। ममता पास की टूटी हुई दीवार में चली गयी। भीतर, थके पथिक ने झोंपड़ी में विश्राम किया।

प्रभात में खँडहर की संधि से ममता ने देखा, सैकड़ों अश्वारोही उस प्रांत में घूम रहे हैं। वह अपनी मूर्खता पर अपने को कोसने लगी।

अब उस झोंपड़ी से निकलकर उस पथिक ने कहा –''मिरजा। मैं यहाँ हूँ।''

शब्द सुनते ही प्रसन्नता की चीत्कार-ध्वनि से वह प्रांत गूँज उठा। ममता अधिक भयभीत हुई। पथिक ने कहा –''वह स्त्री कहाँ है ? उसे खोज निकालो।'' ममता छिपने के लिए अधिक सचेष्ट हुई वह मृग-दाव में चली गयी। दिन–भर उसमें से न निकली। संध्या में जब उन लोगों के जाने का उपक्रम हुआ, तो ममता ने सुना, पथिक घोड़े पर

सवार होते हुए कह रहा है –''मिरजा! उस स्त्री को मैं कुछ दे न सका। उसका घर बनवा देना; क्योंकि मैंने विपत्ति में यहाँ विश्राम पाया था। यह स्थान भूलना मत।'' इसके बाद वे चले गये।

चौसा के मुगल-पठान-युद्ध को बहुत दिन बीत गये। ममता अब सत्तर वर्ष की वृद्धा है। वह अपनी झोंपड़ी में एक दिन पड़ी थी। शीतकाल का प्रभात था। उसका जीर्ण कंकाल खाँसी से गूँज रहा था। ममता की सेवा के लिए गाँव की दो-तीन स्त्रियाँ उसे घेरकर बैठी थीं; क्योंकि वह आजीवन सबके दुःख-सुख की सहभागिनी रही।

ममता ने जल पीना चाहा, एक स्त्री ने सीपी से जल पिलाया। सहसा एक अश्वारोही उसी झोंपड़ी के द्वार पर दिखायी पड़ा। वह अपनी धुन में कहने लगा –''मिरजा ने जो चित्र बनाकर दिया है, वह तो इसी जगह का होना चाहिए। वह बुढ़िया मर गयी होगी, अब किससे पूछूँ कि एक दिन शहंशाह हुमायूँ किस छप्पर के नीचे बैठे थे ? यह घटना भी तो सैंतालीस वर्ष से ऊपर की हुई!''

ममता ने अपने विकल कानों से सुना। उसने पास की स्त्री से कहा –''उसे बुलाओ।''

अश्वारोही पास आया। ममता ने रुक-रुक कर कहा–''मैं नहीं जानती कि वह शहंशाह था, या साधारण मुगल; पर एक दिन इसी झोंपड़ी के नीचे वह रहा। मैंने सुना था कि वह मेरा घर बनवाने की आज्ञा दे चुका था। मैं आजीवन अपनी झोंपड़ी खोदवाने के डर से भयभीत ही थी। भगवान ने सुन लिया, मैं आज इसे छोड़े जाती हूँ। अब तुम इसका मकान बनाओ या महल, मैं अपने चिर-विश्राम-गृह में जाती हूँ!''

वह अश्वारोही अवाक् खड़ा था। बुढ़िया के प्राण-पक्षी अनन्त में उड़ गये।

वहाँ एक अष्टकोण मंदिर बना और उस पर शिलालेख लगाया गया –

''सातों देश के नरेश हुमायूँ ने एक दिन यहाँ विश्राम किया था। उनके पुत्र अकबर ने उनकी स्मृति में यह गगनचुंबी मंदिर बनाया।''

पर उसमें ममता का कहीं नाम नहीं।

■

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए –

1. जयशंकार प्रसाद किस वाद के कवि हैं?
   (क) प्रयोगवाद (ख) छायावाद (ग) प्रगतिवाद (घ) नकेनवाद
2. जयशंकर प्रसाद 'ब्रजभाषा' में किस उपनाम से कविता लिखते थे?
   (क) रमाधार (ख) मुंशी (ग) कलाधर (घ) प्रसाद
3. जयशंकर प्रसाद की कौन–सी कृति महाकाव्य है –
   (क) आँसू (ख) लहर (ग) झरना (घ) कामायनी
4. जयशंकर प्रसाद का नाटक नहीं है–
   (क) चंद्रगुप्त (ख) आषाढ़ का एक दिन (ग) ध्रुवस्वामिनी (घ) स्कंदगुप्त
5. 'ममता' कहानी किस कहानी संकलन में संकलित है–
   (क) छाया (ख) इंद्रजाल (ग) आकाशदीप (घ) प्रतिध्वनि
6. ममता किस नदी के प्रवाह को देख रही थी?
   (क) गंगा (ख) यमुना (ग) शोण (घ) गंडक
7. ''क्या कोई हिंदू भू–पृष्ठ पर न बचा रह जायेगा, जो ब्राह्मण को दो मुट्ठी अन्न दे सके?'' यह कथन किसका है?
   (क) चूड़ामणि (ख) हुमायूँ (ग) ममता (घ) अश्वारोही
8. ''सातों देशों के नरेश हुमायूँ ने एक दिन यहाँ विश्राम किया था।'' यह कहाँ लिखा था?
   (क) शिलालेख में (ख) अश्वारोही के पत्र में
   (ग) ममता की झोपड़ी के बाहर (घ) रोहतास–दुर्ग के द्वार पर
9. अष्टकोणीय मंदिर का निर्माण किसने कराया?
   (क) हुमायूँ (ख) शेरशाह (ग) बाबर (घ) अकबर
10. ''मिरजा! उस स्त्री को मैं कुछ दे न सका। उसका घर बनवा देना।'' यह कथन किसका है?
    (क) बाबर (ख) चूड़ामणि (ग) हुमायूँ (घ) अकबर

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. ममता की तुलना में उसके पिता का चरित्र आपको कैसा लगता है? स्पष्ट कीजिए।
2. कहानी में उल्लिखित घटनाओं की ऐतिहासिकता के संबंध में आपका क्या मत है? अपने शब्दों में लिखिए।
3. 'ममता' कहानी के आधार पर जयशंकर प्रसाद की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।
4. जयशंकर प्रसाद का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए।
5. जयशंकर प्रसाद का जीवन परिचय देते हुए उनके साहित्यिक अवदान पर प्रकाश डालिए।
6. 'ममता' कहानी का क्या उद्देश्य क्या है? स्पष्ट कीजिए।

III. दिये गए गद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

(क) रोहतास-दुर्ग के प्रकोष्ठ में बैठी हुई युवती ममता, शोण के तीक्ष्ण गंभीर प्रवाह को देख रही है। ममता विधवा थी। उसका यौवन शोण के समान ही उमड़ रहा था। मन में वेदना, मस्तक में आँधी, आँखों में पानी की बरसात लिये, वह सुख के कंटक-शयन में विकल थी। वह रोहतास दुर्गपति के मंत्री चूड़ामणि की अकेली दुहिता थी, फिर उसके लिए कुछ अभाव होना असंभव था, परंतु, वह विधवा थी। हिंदू-विधवा संसार में सबसे तुच्छ निराश्रय प्राणी है – तब उसकी विडंबना का कहाँ अन्त था ?

(i) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) गद्यांश के आधार पर संसार में सबसे तुच्छ निराश्रय प्राणी कौन है ?

(ख) "इस पतनोन्मुख प्राचीन सामंत-वंश का अंत समीप है, बेटी! किसी भी दिन शेरशाह रोहिताश्व पर अधिकार कर सकता है। उस दिन मंत्रित्व न रहेगा, तब के लिए बेटी।"

"हे भगवान्! तब के लिए! विपद के लिए! इतना आयोजन! परमपिता की इच्छा के विरुद्ध इतना साहस! पिताजी, क्या भीख न मिलेगी ? क्या कोई हिंदू भू-पृष्ठ पर न बचा रह जायगा, जो ब्राह्मण को दो मुट्ठी अन्न दे सके ? यह असंभव है। फेर दीजिये पिताजी, मैं काँप रही हूँ – इसकी चमक आँखों को अंधा बना रही है।"

(i) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।

(ii) ममता ने अपने पिता से क्या कहा ?

(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ग) स्वस्थ होकर मुगल ने कहा –"माता! तो फिर मैं चला जाऊ ?" स्त्री विचार कर रही थी–"मैं ब्राह्मणी हूँ, मुझे तो अपने धर्म अतिथिदेव की उपासना का पालन करना चाहिए। परंतु यहा नहीं-नहीं, सब विधर्मी दया के पात्र नही। परंतु यह दया तो नहीं कर्त्तव्य करना है। तब ?"

मुगल अपनी तलवार टेककर उठ खड़ा हुआ। ममता ने कहा–"क्या आश्चर्य है कि तुम भी छल करो, ठहरो।"

"छल! नहीं, तब नहीं स्त्री! जाता हूँ, तैमूर का वंशधर स्त्री से छल करेगा ? जाता हूँ।"

(i) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।

(ii) ममता ने किस उपासना का पालन किया ?

(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(घ) चौसा के मुगल-पठान-युद्ध को बहुत दिन बीत गये। ममता अब सत्तर वर्ष की वृद्धा है। वह अपनी झोंपड़ी में एक दिन पड़ी थी। शीतकाल का प्रभात था। उसका जीर्ण कंकाल खाँसी से गूँज रहा था। ममता की सेवा के लिए गाँव की दो-तीन स्त्रियाँ उसे घेरकर बैठी थीं; क्योंकि वह आजीवन सबके दुःख-सुख की सहभागिनी रही।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ एवं लेखक का नाम लिखिए।

(ii) चौसा का युद्ध किसके मध्य हुआ था ?

(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ङ) वह अश्वारोही अवाक् खड़ा था। बुढ़िया के प्राण-पक्षी अनन्त में उड़ गये। वहाँ एक अष्टकोण मन्दिर बना और उस पर शिलालेख लगाया गया – ''सातों देश के नरेश हुमायूँ ने एक दिन यहाँ विश्राम किया था। उसके पुत्र अकबर ने उसकी स्मृति में यह गगनचुंबी मंदिर बनाया।''पर उसमें ममता का कहीं नाम नहीं।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।

(ii) अकबर ने किसकी स्मृति में मंदिर बनवाया ?

(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

IV. भाषा के रंग :

1. निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त प्रत्यय बताइए–
   पीलापन, भारतीय, खुलवाना, प्रसन्नता
2. निम्नलिखित शब्दों का संधि–विच्छेद कीजिए–
   पतनोन्मुख, दीपालोक, अश्वारोही
3. निम्नलिखित शब्दों का समास-विग्रह कीजिए–
   आजीवन, अष्टकोण, दुर्गपति, शीतकाल

V. अनुभूति एवं अभिव्यक्ति :

आपके आस–पास कोई चरित्र 'ममता' जैसा हो तो उस पर एक कहानी लिखिए।

शब्दार्थ

तीक्ष्ण – तेज, तीव्र। **वेदना** – पीड़ा, कष्ट। **प्रकोष्ठ** – राज प्रासाद, राजमहल का मुख्य कक्ष। **शोण** – सोन नदी। **दुहिता** – पुत्री। **निराश्रय** – बेसहारा, सहारा रहित। **विहार** – बौद्ध भिक्षुओं का आश्रम। **तोरण** – किले का मुख्य द्वार। **तुच्छ** – महत्वहीन। **भू-पृष्ठ** – पृथ्वी तल।, **तृण गुल्म** – झाड़ी, घास का गुच्छा। **प्राचीर** – चहारदीवारी। **विधर्मी** – अन्य धर्म का। **जीर्ण कंकाल** – वृद्ध शरीर, ढाँचा मात्र। **उपक्रम** – कार्यक्रम आयोजन। **विरक्त** – मोहमाया से रहित। **अश्वारोही** – घुड़सवार। **चिर विश्राम गृह** – स्वर्ग लोक।

■

पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी

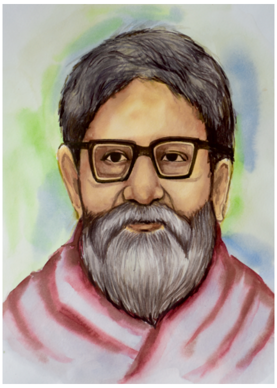

(सन् 1894 – 1971ई.)

द्विवेदी युग के साहित्यिक रत्नों में से पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी भी एक रत्न थे। उनका जन्म सन् 1894 ई. में मध्य प्रदेश के **जबलपुर** जनपद के **खैरागढ़** में हुआ। उनके पिता का नाम श्री पुन्नालाल बख्शी और माता का नाम श्रीमती मनोरमा देवी था। विद्यार्थी जीवन से ही इनके अंदर काव्यात्मक प्रतिभा थी। स्नातक की शिक्षा ग्रहण करने के लिए काशी हिंदू विश्वविद्यालय गए। वहाँ से स्नातक करने के उपरांत ही वे 'सरस्वती' पत्रिका में अपनी रचनाएँ प्रकाशित होने के लिए भेजने लगे। खैरागढ़ के प्रसिद्ध इतिहासकार प्रद्युम्न सिंह के सान्निध्य में उन्होंने साहित्य सृजन का आरंभ किया। उनकी प्रथम कहानी 'तारिणी' जबलपुर से प्रकाशित होने वाली **'हितकारिणी'** पत्रिका में सन् 1911 ई. में प्रकाशित हुई। वह अंग्रेजी कवि वर्ड्सवर्थ से अधिक प्रभावित थे। महावीर प्रसाद द्विवेदी के 'सरस्वती' पत्रिका से अवकाश लेने पर इसके संपादक बने। उनका काव्य से ज्यादा आलोचना की ओर झुकाव था। उनका निधन सन् 1971 ई. में छत्तीसगढ़ के रायपुर में हो गया।

पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी ने जीवन, समाज, धर्म-संस्कृति और साहित्य– सभी क्षेत्रों में उत्कृष्ट साहित्य का सृजन किया। उन्होंने सन् 1929 से 1934 ई. तक अनेक ग्रंथों यथा – 'पंचपात्र', 'विश्व साहित्य', 'प्रदीप' की रचना की। सन् 1949 से 1957 ई. के 8 वर्षों के काल में 'कुछ', 'यात्री', 'हिंदी कथा साहित्य', 'बिखरे पन्ने', 'तुम्हारे लिए', 'कथानक' आदि ग्रंथ लिखे। यही नहीं उन्होंने देश-विदेश के कवियों, लेखकों की रचनाओं का भी अनुवाद किया है। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं :

काव्य-संग्रह– 'शतदल', 'अश्रुदल'

अनुवाद–'प्रायश्चित', 'उन्मुक्ति का बंधन'

कहानी-संग्रह–'झलमला', 'अंजलि'

आलोचना–'विश्व साहित्य', 'हिंदी साहित्य विमर्श', 'साहित्य शिक्षा', 'हिंदी उपन्यास साहित्य', 'हिंदी कहानी साहित्य'।

पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी ने सन् 1920–1927 ई. तक 'सरस्वती' पत्रिका का संपादन किया। पत्रकारिता की भाषा उनके साहित्य की भाषा को भी प्रभावित करती है। इस हेतु शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली का प्रयोग उन्होंने किया। उनकी भाषा में संस्कृत शब्दावली का अधिक प्रयोग है। उर्दू तथा अंग्रेजी के शब्द भी सायास आए हैं। भाषा में गतिशीलता और प्रखरता के भी दर्शन होते हैं। जिस कारण उनकी शैली गंभीर, प्रभावोत्पादक, स्वाभाविक और स्पष्ट है। उनके लेखन में व्यंग्यात्मक, विवेचनात्मक, भावात्मक, समीक्षात्मक शैली का भी प्रयोग हुआ है।

क्या लिखूँ *पाठ के अंतर्गत निबंधकार ने लिखने की कला का बहुत ही सुंदर वर्णन किया है। प्रस्तुत निबंध में लेखक ने अपने लेखन अनुभव को बड़े ही सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है। इसमें लेखक ने यह बताया है कि लिखना एक कला है। अच्छे निबंध लेखन के लिए विषय का चुनाव ठीक प्रकार से करना चाहिए। विद्वानों के कथनानुसार निबंध लिखने के पूर्व उसकी रूपरेखा तैयार कर लेनी चाहिए। लेखक के अनुसार प्रगतिशील साहित्य का निर्माण हो रहा हैं, जिसमें तरुण एवं वृद्ध दोनों भविष्य के स्वप्न देख रहे हैं। क्योंकि स्वप्न सुखद होते हैं। इसमें निबंधकार ने आत्मीय भाव को भाषायी संवेदना देने का प्रयास किया है। प्रस्तुत निबंध* ***'कुछ'*** *नामक निबंध–संग्रह से लिया गया है।*

■

क्या लिखूँ ?

मुझे आज लिखना ही पड़ेगा। अंग्रेजी के प्रसिद्ध निबंध लेखक ए.जी. गार्डिनर का कथन है कि लिखने की एक विशेष मानसिक स्थिति होती है। उस समय मन में कुछ ऐसी उमंग-सी उठती है, हृदय में कुछ ऐसी स्फूर्ति-सी आती है, मस्तिष्क में कुछ ऐसा आवेग-सा उत्पन्न होता है कि लेख लिखना ही पड़ता है। उस समय विषय की चिंता नहीं रहती। कोई भी विषय हो, उसमें हम अपने हृदय के आवेग को भर ही देते हैं। हैट टाँगने के लिए कोई भी खूँटी काम दे सकती है। उसी तरह मनोभावों को व्यक्त करने के लिए कोई भी विषय उपयुक्त है। असली वस्तु है हैट, खूँटी नहीं। इसी तरह मन के भाव ही तो यथार्थ वस्तु हैं, विषय नहीं। गार्डिनर साहब के इस कथन की यथार्थता में मुझे संदेह नहीं, पर मेरे लिए कठिनता यह है कि मैंने उस मानसिक स्थिति का अनुभव ही नहीं किया है, जिसमें भाव अपने-आप उत्थित हो जाते हैं। मुझे तो सोचना पड़ता है, चिंता करनी पड़ती है, परिश्रम करना पड़ता है, तब कहीं मैं एक निबंध लिख सकता हूँ। आज तो मुझे विशेष परिश्रम करना पड़ेगा, क्योंकि मुझे कोई साधारण निबंध नहीं लिखना है। आज मुझे नमिता और अमिता के लिए आदर्श निबंध लिखना होगा। नमिता का आदेश है कि मै 'दूर के ढोल सुहावने होते हैं इस विषय पर लिखूँ। अमिता का आग्रह है कि मैं समाज सुधार पर लिखूँ। ये दोनों ही विषय परीक्षा में आ चुके हैं और इन दोनों पर आदर्श निबंध लिखकर मुझे उन दोनों को निबंध-रचना का रहस्य समझाना पड़ेगा।

दूर के ढोल सुहावने अवश्य होते हैं, पर क्या वे इतने सुहावने होते हैं कि उन पर पाँच पेज लिखे जा सकें? इसी प्रकार समाज-सुधार की चर्चा अनादि काल से लेकर आज तक होती आ रही है और जिसके संबंध में बड़े-बड़े विज्ञों में भी विरोध है, उसको मैं पाँच पेज में कैसे लिख दूँ? मैंने सोचा कि सबसे पहले निबंधशास्त्र के आचार्यों की सम्मति जान लूँ। पहले यह तो समझ लूँ कि आदर्श निबंध है क्या और वह कैसे लिखा जाता है; तब फिर मैं भविष्य की चिंता करूँगा। इसलिए मैंने निबंधशास्त्र के कई आचार्यों की रचनाएँ देखीं। एक विद्वान् का कथन है कि निबंध छोटा होना चाहिए। छोटा निबंध बड़े की अपेक्षा अधिक अच्छा होता है, क्योंकि बड़े निबंध में रचना की सुंदरता नहीं बनी रह सकती। इस कथन को मान लेने में ही मेरा लाभ है। मुझे छोटा ही निबंध लिखना है, बड़ा नहीं। पर लिखूँ कैसे? निबंधशास्त्र के उन्हीं आचार्य महोदय का कथन है कि

निबंध के दो प्रधान अंग हैं – सामग्री और शैली। पहले तो मुझे सामग्री एकत्र करनी होगी, विचार-समूह संचित करना होगा। इसके लिए मनन करना चाहिए। यह तो सच है कि जिसने जिस विषय का अच्छा अध्ययन किया है, उसके मस्तिष्क में उस विषय के विचार आते हैं। पर यह कौन जानता था कि 'दूर के ढोल सुहावने' पर भी निबंध लिखने की आवश्यकता होगी। यदि यह बात पहले ज्ञात होती तो पुस्तकालय में जाकर इस विषय का अनुसंधान कर लेता; पर अब समय नहीं। मुझे तो यहीं बैठकर दो घंटों में दो निबंध तैयार कर देने होंगे। यहाँ न तो विश्वकोश है और न कोई ऐसा ग्रंथ, जिनमें इन विषयों की सामग्री उपलब्ध हो सके। अब तो मुझे अपने ही ज्ञान पर विश्वास कर लिखना होगा।

विज्ञों का कथन है कि निबंध लिखने के पहले उसकी रूपरेखा बना लेनी चाहिए। अतएव सबसे पहले मुझे 'दूर के ढोल सुहावने' की रूपरेखा बनानी है। मैं सोच ही नहीं सकता कि इस विषय की कैसी रूपरेखा है। निबंध लिख लेने के बाद मैं उसका सारांश कुछ ही वाक्यों में भले ही लिख दूँ, पर निबंध लिखने के पहले उसका सार दस-पाँच शब्दों में कैसे लिखा जाय? क्या सचमुच हिंदी के सब विज्ञ लेखक पहले से अपने-अपने निबंधों के लिए रूपरेखा तैयार कर लेते हैं? ए. जी. गार्डिनर को तो अपने लेखों का शीर्षक बनाने में ही सबसे अधिक कठिनाई होती है। उन्होंने लिखा है कि मैं लेख लिखता हूँ और शीर्षक देने का भार मैं अपने मित्र पर छोड़ देता हूँ। उन्होंने यह भी लिखा है कि शेक्सपीयर को भी नाटक लिखने में जितनी कठिनता न हुई होगी, उतनी कठिनता नाटकों के नामकरण में हुई होगी। तभी तो घबड़ाकर नाम न रख सकने के कारण उन्होंने अपने एक नाटक का नाम रखा 'जैसे तुम चाहो'। इसलिए मुझसे तो यह रूपरेखा तैयार न होगी।

अब मुझे शैली निश्चित करनी है। आचार्य महोदय का कथन है कि भाषा में प्रवाह होना चाहिए। इसके लिए वाक्य छोटे-छोटे हों, पर एक-दूसरे से सम्बद्ध। यह तो बिल्कुल ठीक है। मैं छोटे-छोटे वाक्य अच्छी तरह लिख सकता हूँ। पर मैं हूँ मास्टर। कहीं नमिता और अमिता यह न समझ बैठे कि मैं यह निबंध बहुत मोटी अक्ल वालों के लिए लिख रहा हूँ। अपनी विद्वत्ता का प्रदर्शन करने के लिए, अपना गौरव स्थापित करने के लिए यह आवश्यक है कि वाक्य कम-से-कम आधे पृष्ठ में तो समाप्त हों। बाणभट्ट ने 'कादंबरी' में ऐसे ही वाक्य लिखे हैं। वाक्यों में कुछ अस्पष्टता भी चाहिए; क्योंकि यह अस्पष्टता या दुर्बोधता गांभीर्य ला देती है। इसलिए संस्कृत के प्रसिद्ध कवि श्रीहर्ष ने जान-बूझकर अपने काव्य में ऐसे गुत्थियाँ डाल दी हैं, जो अज्ञों से न सुलझ सकें और सेनापति ने भी अपनी कविता मूढ़ों के लिए दुर्बोध कर दी है। तभी तो अलंकारों, मुहावरों और लोकोक्तियों का समावेश भी निबंधों के लिए आवश्यक बताया जाता है। तब क्या किया जाय?

अंग्रेजी के निबंधकारों ने एक दूसरी पद्धति को अपनाया है। उनके निबंध इन आचार्यों की कसौटी पर भले ही खरे सिद्ध न हों, पर अंग्रेजी साहित्य में उनका मान अवश्य है। उस पद्धति के जन्मदाता मानहेन समझे जाते हैं। उन्होंने स्वयं जो कुछ देखा, सुना और अनुभव किया, उसी को अपने निबंधों में लिपिबद्ध कर दिया। पाश्चात्य साहित्य में ऐसे निबंधों का विकास आधुनिक युग में हुआ है। आख्यायिका की तरह यह निबंध कला भी अधुनिक युग की रचना है। ऐसे निबंधों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे मन की स्वच्छंद रचनाएँ हैं। उनमें न कवि की उदात्त कल्पना रहती है, न आख्यायिका-लेखक की सूक्ष्म दृष्टि और न विज्ञों की गंभीर तर्कपूर्ण विवेचना। उनमें लेखक की सच्ची अनुभूति रहती है। उनमें उसके सच्चे भावों की सच्ची अभिव्यक्ति होती है, उनमें उसका उल्लास रहता है। कवि उच्च मार्ग से प्रेरित होकर काव्य की रचना करते हैं, विज्ञ ज्ञान की कसौटी पर सत्य की परीक्षा पर प्रबंध लिखते हैं। आख्यायिका लेखक कल्पना के द्वारा मनुष्य–जीवन का रहस्य प्रत्यक्ष कराने के लिए चरित्र–वैचित्र्य और घटना वैचित्र्य की सृष्टि करते हैं। पर ये निबंध तो उस मानसिक स्थिति में लिखे जाते हैं, जिसमें न ज्ञान की गरिमा रहती है और न कल्पना की महिमा, जिसमें हम संसार को अपनी ही दृष्टि से देखते हैं और अपने ही भाव से ग्रहण करते हैं। तब इसी पद्धति का अनुसरण कर मैं भी क्यों न निबंध लिखूँ। पर मुझे तो दो निबंध लिखने होंगे।

मुझे अमीर खुसरो की एक कहानी याद आयी। एक बार प्यास लगने पर वे एक कुएँ के पास पहुँचे। वहाँ चार औरतें पानी भर रही थीं। पानी माँगने पर पहले उनमें से एक ने खीर पर कविता सुनने की इच्छा प्रकट की, दूसरी ने चर्खे पर, तीसरी ने कुत्ते पर और चौथी ने ढोल पर। अमीर खुसरो प्रतिभावान थे, उन्होंने एक ही पद्य में चारों की इच्छाओं की पूर्ति कर दी। उन्होंने कहा –

खीर पकायी जतन से, चर्खा दिया चला।
आया कुत्ता खा गया, तू बैठी ढोल बजा।।

मुझमें खुसरो की प्रतिभा नहीं है, पर उनकी इस पद्धति को स्वीकार करने से मेरी कठिनाई आधी रह जाती है। मैं भी एक ही निबंध में इन दोनों विषयों का समावेश कर दूँगा। एक ही ढेले से दो चिड़ियाँ मार लूँगा।

दूर के ढोल सुहावने होते हैं; क्योंकि उनकी कर्कशता दूर तक नहीं पहुँचती। जब ढोल के पास बैठे हुए लोगों के कान के पर्दे फटते रहते हैं, तब दूर किसी नदी के तट पर संध्या समय, किसी दूसरे के कान में वहीं शब्द मधुरता का संचार कर देते हैं। ढोल के उन्हीं शब्दों को सुनकर वह अपने हृदय में किसी के विवाहोत्सव का चित्र अंकित कर लेता है। कोलाहल से पूर्ण घर के एक कोने में बैठी हुई किसी लज्जाशीला नव-वधू की

कल्पना वह अपने मन में कर लेता है। उस नव-वधू के प्रेम, उल्लास, संकोच, आशंका और विषाद से युक्त हृदय के कंपन ढोल की कर्कश ध्वनि को मधुर बना देते हैं। सच तो यह है कि ढोल की ध्वनि के साथ आनंद का कलरव, उत्सव व प्रमोद और प्रेम का संगीत ये तीनों मिले रहते हैं। तभी उसकी कर्कशता समीपस्थ लोगों को भी कटु नहीं प्रतीत होती और दूरस्थ लोगों के लिए तो वह अत्यंत मधुर बन जाती है।

जो वृद्ध हो गये हैं, जो अपनी बाल्यावस्था और तरुणावस्था से दूर हट आये हैं, उन्हें अपने अतीतकाल की स्मृति बड़ी सुखद लगती है। वे अतीत का ही स्वप्न देखते हैं। तरुणों के लिए जैसे भविष्य उज्ज्वल होता है, वैसे ही वृद्धों के लिए अतीत। वर्तमान से दोनों को असंतोष होता है। तरुण भविष्य को वर्तमान में लाना चाहते हैं और वृद्ध अतीत को खींचकर वर्तमान में देखना चाहते हैं। तरुण क्रांति के समर्थक होते हैं और वृद्ध अतीत गौरव के संरक्षक। इन्हीं दोनों के कारण वर्तमान सदैव क्षुब्ध रहता है और इसी से वर्तमान काल सदैव सुधारों का काल बना रहता है।

मनुष्य जाति के इतिहास में कोई ऐसा काल ही नहीं हुआ, जब सुधारों की आवश्यकता न हुई हो। तभी तो आज तक कितने ही सुधारक हो गये हैं, पर सुधारों का अंत कब हुआ ? भारत के इतिहास में बुद्धदेव, महावीर स्वामी, नागार्जुन, शंकराचार्य, कबीर, नानक, राजा राममोहन राय, स्वामी दयानंद और महात्मा गाँधी में ही सुधारकों की गणना समाप्त नहीं होती। सुधारकों का दल नगर-नगर और गाँव-गाँव में होता है। यह सच है कि जीवन में नये-नये दोष उत्पन्न होते जाते हैं और नये-नये सुधार हो जाते हैं। न दोषों का अंत है और न सुधारों का। जो कभी सुधार थे, वही आज दोष हो गये हैं और उन सुधारों का फिर नव सुधार किया जाता है। तभी तो यह जीवन प्रगतिशील माना गया है।

हिंदी में प्रगतिशील साहित्य का निर्माण हो रहा है। उसके निर्माता यह समझ रहे हैं कि उनके साहित्य में भविष्य का गौरव निहित है। पर कुछ ही समय के बाद उनका यह साहित्य भी अतीत का स्मारक हो जायगा और आज जो तरुण हैं, वही वृद्ध होकर अतीत के गौरव का स्वप्न देखेंगे। उनके स्थान में तरुणों का फिर दूसरा दल आ जायेगा, जो भविष्य का स्वप्न देखेगा। दोनों के ही स्वप्न सुखद होते हैं; क्योंकि दूर के ढोल सुहावने होते हैं।

■

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए –

1. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी को किस नाम से लोकप्रियता मिली थी?
   (क) मास्टर जी (ख) लेखक जी (ग) बख्शी जी (घ) प्रद्युम्न जी
2. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी की पहली कहानी किस नाम से प्रकाशित हुई थी?
   (क) हितकारिणी (ख) तारिणी (ग) झलमला (घ) अंजलि
3. काव्य–संग्रह है –
   (क) अंजलि (ख) प्रायश्चित (ग) शतदल (घ) उन्मुक्ति का बंधन
4. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी द्वारा संपादित पत्रिका का नाम है –
   (क) समन्वय (ख) हंस (ग) सरस्वती (घ) मर्यादा
5. 'क्या लिखूँ?' किस विधा की रचना है?
   (क) कहानी (ख) समीक्षा (ग) लेख (घ) निबंध
6. 'क्या लिखूँ?' निबंध में निबंधकार ने किस प्रसिद्ध अंग्रेजी निबंधकार का उल्लेख किया है?
   (क) शेक्सपियर (ख) ए.जी. गार्डिनर (ग) कॉलरिज (घ) इलियट
7. 'क्या लिखूँ?' निबंध में अमीर खुसरो के किस पद का उल्लेख है?
   (क) एक थाल मोती से भरा (ख) गोरी सोवे सेज पर
   (ग) काहे को ब्याहे बिदेश (घ) खीर पकायी जतन से
8. जैसे तरुणों के लिए भविष्य उज्ज्वल होता है, वैसे ही वृद्धों के लिए –
   (क) अतीत (ख) भविष्य (ग) वर्तमान (घ) स्वप्न
9. निम्नलिखित शब्दों में से कौन – सा शब्द शुद्ध है?
   (क) उजज्वल (ख) उज्जवल (ग) उज्ज्वल (घ) उज्वल
10. पदुमलाल पुन्नालाल ने 'सरस्वती' पत्रिका का संपादन किया –
    (क) 1910 ई. से 1917 ई. तक (ख) 1920 ई. से 1925 ई. तक
    (ग) 1920 ई. से 1927 ई. तक (घ) 1920 ई. से 1930 ई. तक

II. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दीजिए –

1. 'बख्शी' जी का पूरा नाम लिखिए।
2. नमिता और अमिता की लेखक से क्या अपेक्षा है ? अपने शब्दों में लिखिए।
3. अंग्रेजी निबंधकार मानटेन निबंध की सबसे बड़ी विशेषता क्या मानते हैं ? स्पष्ट कीजिए।
4. लेखक ने निबंधशास्त्र के किन आचार्यों की रचनाओं का अवलोकन पाठ में किया है ? स्पष्ट कीजिए।

5. लेखक ने एक आदर्श निबंध के क्या गुण बताये हैं ?
6. पाठ में लेखक ने अमीर खुसरो के किस पद्य को लिखा है ?
7. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।
8. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी का जीवन परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए।

III. दिये गए गद्यांशों पर आधारित प्रश्नों का उत्तर दीजिए –

(क) अंग्रेजी के प्रसिद्ध निबन्ध लेखक ए. जी. गार्डिनर का कथन है कि लिखने की एक विशेष मानसिक स्थिति होती है। उस समय मन में कुछ ऐसी उमंग-सी उठती है, हृदय में कुछ ऐसी स्फूर्ति-सी आती है, मस्तिष्क में कुछ ऐसा आवेग-सा उत्पन्न होता है कि लेख लिखना ही पड़ता है। उस समय विषय की चिंता नहीं रहती। कोई भी विषय हो, उसमें हम अपने हृदय के आवेग को भर ही देते हैं। हैट टाँगने के लिए कोई भी खूँटी काम दे सकती है। उसी तरह मनोभावों को व्यक्त करनें के लिए कोई भी विषय उपयुक्त है। असली वस्तु है हैट, खूँटी नहीं। इसी तरह मन के भाव ही तो यथार्थ वस्तु है, विषय नहीं।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) मनोभावों को व्यक्त करने के लिए लेखक ने क्या कहा है ?

(ख) दूर के ढोल सुहावने अवश्य होते हैं पर क्या वे इतने सुहावने होते हैं कि उन पर पाँच पेज लिखे जा सकें ? इसी प्रकार समाज-सुधार की चर्चा अनादि काल से लेकर आज तक होती आ रही है और जिसके संबंध में बड़े-बड़े विज्ञों में भी विरोध है, उसको मैं पाँच पेज में कैसे लिख दूँ ? मैंने सोचा कि सबसे पहले निबंधशास्त्र के आचार्यों की सम्मति जान लूँ। पहले यह तो समझ लूँ कि आदर्श निबंध है क्या और वह कैसे लिखा जाता है; तब फिर मैं भविष्य की चिंता करूँगा। इसलिए मैंने निबंधशास्त्र के कई आचार्यों की रचनाएँ देखीं।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ii) 'दूर के ढोल सुहावने' से क्या तात्पर्य है ?
(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ग) अब मुझे शैली निश्चित करनी है। आचार्य महोदय का कथन है कि भाषा में प्रवाह होना चाहिए। इसके लिए वाक्य छोटे-छोटे हों, पर एक-दूसरे से सम्बद्ध हों। यह तो बिल्कुल ठीक है। मैं छोटे-छोटे वाक्य अच्छी तरह लिख सकता हूँ। पर मैं हूँ मास्टर। कहीं नमिता और अमिता यह न समझ बैठें कि मैं यह निबंध बहुत मोटी अक्ल वालों के लिए लिख रहा हूँ। अपनी विद्वता का प्रदर्शन करने के लिए, अपना गौरव स्थापित करने के लिए यह आवश्यक है कि वाक्य कम-से-कम आधे पृष्ठ में तो समाप्त हों।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) आचार्य महोदय का क्या कथन है ?

(घ) जो वृद्ध हो गये हैं, जो अपनी बाल्यावस्था और तरुणावस्था से दूर हट आये हैं, उन्हें अपने अतीतकाल की स्मृति बड़ी सुखद लगती है। वे अतीत का ही स्वप्न देखते हैं। तरुणों के लिए जैसे भविष्य उज्ज्वल होता है, वैसे ही वृद्धों के लिए अतीत। वर्तमान से दोनों को असंतोष होता है। तरुण भविष्य को वर्तमान में लाना चाहते हैं और वृद्ध अतीत को खींचकर वर्तमान में देखना चाहते हैं। तरुण क्रान्ति के समर्थक होते हैं और वृद्ध अतीत गौरव के संरक्षक। इन्हीं दोनों के कारण वर्तमान सदैव क्षुब्ध रहता है और इसी से वर्तमान काल सदैव सुधारों का काल बना रहता है।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) वर्तमान काल को सुधारों का काल क्यों कहा जाता है ?

(ङ.) हिंदी में प्रगतिशील साहित्य का निर्माण हो रहा है। उसके निर्माता यह समझ रहे हैं कि उनके साहित्य में भविष्य का गौरव निहित है। पर कुछ ही समय के बाद उनका यह साहित्य भी अतीत का स्मारक हो जायगा और आज जो तरुण हैं, वही वृद्ध होकर अतीत के गौरव का स्वप्न देखेंगे। उनके स्थान में तरुणों का फिर दूसरा दल आ जायगा, जो भविष्य का स्वप्न देखेगा। दोनों के ही स्वप्न सुखद होते हैं; क्योंकि दूर के ढोल सुहावने होते हैं।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) प्रस्तुत गद्यांश में प्रगतिशीलता से क्या तात्पर्य है ?

IV. भाषा के रंग :

1. निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त प्रत्यय लिखिए–
   प्रतिभावान, कठिनाई, बनावट, शीर्षक
2. निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त उपसर्ग लिखिए–
   विभूषण, अभिव्यक्ति, निर्मूल, अनुसरण
3. निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग द्वारा अर्थ स्पष्ट कीजिए–
   मनन, आदेश, गरिमा, अभिव्यक्ति और आवेग

v. अनुभूति और अभिव्यक्ति :

1. निबंध लिखते समय आप किस प्रकार की कठिनाई का सामना करते हैं? अपने अनुभव साझा कीजिए।
2. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी की रचनाओं की एक सूची तैयार कीजिए।

शब्दार्थ

कथन – वचन, कही गयी बात। **आवेग** – जोश, उन्माद, मानसिक उत्तेजना। **ए. जी. गार्डिनर** – प्रसिद्ध अंग्रेजी निबंधकार। **बाणभट्ट** – सातवीं शताब्दी के संस्कृत भाषा के प्रसिद्ध गद्यकार। **स्वछंद** – मुक्त, बंधनहीन। **आख्यायिका** – लंबी कहानी, कल्पित कथा। **अभिव्यक्ति** – अपने विचारों को प्रकट करना। **विवेचना** – वर्णन करना। **कलरव** – कर्णप्रिय ध्वनि। **अतीत** – बीता हुआ। **उदात्त** – श्रेष्ठ। **विज्ञ** – विद्वान, जानकार। **प्रगतिशील** – प्रगति करने वाला। **स्मारक** – यादगार स्मृति, चिह्न। **कर्कशता** – कठोरता। **दुर्बोध** – कठिन।

■

रामधारी सिंह 'दिनकर'

(सन् 1908 – 1974ई.)

प्रसिद्ध कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म सन् 1908 ई. में वर्तमान **बिहार** राज्य के **बेगूसराय** जनपद के सिमरिया नामक ग्राम में हुआ। उनकी प्रारंभिक शिक्षा गाँव के पाठशाला से हुई। उन्होंने पटना विश्वविद्यालय से इतिहास और राजनीति विज्ञान से स्नातक की शिक्षा ली। उर्दू, संस्कृत, बांग्ला, अंग्रेजी का गहन अध्ययन किया। इसके बाद उन्होंने उच्च माध्यमिक विद्यालय में प्रधानाचार्य का पद संभाला तथा सन् 1934 से लेकर 1947 ई. तक बिहार सरकार की सेवा में सब रजिस्ट्रार और युद्ध प्रचार विभाग में उप–निदेशक पद का भी दायित्व संभाला। सन् 1950 से 1952 ई. तक मुजफ्फरपुर के लंगट सिंह कॉलेज में हिंदी के विभागाध्यक्ष रहे। सन् 1952 से 1964 ई. तक दो कार्यकाल के लिए उच्च सदन (राज्यसभा) में संसद सदस्य बने। सन् 1959 ई. में उन्हें 'पद्मभूषण' का सम्मान मिला। सन् 1963 से 1965 ई. तक वे भागलपुर विश्वविद्यालय में कुलपति रहे। इसके बाद भारत सरकार में हिंदी सलाहकार बनें। उन्हें **संस्कृति के चार अध्याय** पर 1959 ई. में 'साहित्य अकादमी' और 1972 ई. में **उर्वशी** पर 'ज्ञानपीठ सम्मान' मिला। इन्हें 'आग और राग' का कवि भी कहा जाता है। हिंदी के इस अनंत साधक का सन् 1974 ई. में चेन्नई, तमिलनाडु में निधन हो गया।

रामधारी सिंह 'दिनकर' ओजपूर्ण शैली और वीर रस के कवि हैं। गद्य लेखन में भी उनका व्यापक क्षेत्र है। दिनकर कहते हैं – ''कविता तो कवि की आत्मा का आलोक है, उसके हृदय का रस है, जो बाहर की वस्तु का अवलंब लेकर फूट पड़ती है।'' **संस्कृति के चार अध्याय** नामक पुस्तक लिखकर उन्होंने अपने सशक्त गद्यकार होने का परिचय दिया।

काव्य–कृतियाँ : 'प्रणभंग', 'रेणुका', 'हुंकार', 'रसवंती', 'द्वंद्वगीत', 'कुरुक्षेत्र', 'धूप छाँह', 'नीम के पत्ते', 'सामधेनी', 'बापू', 'इतिहास के आँसू', 'धूप और धुँआ', 'रश्मिरथी', 'दिल्ली', 'नील कुसुम', 'सूरज का ब्याज', 'परशुराम की प्रतीक्षा', 'उर्वशी', 'चक्रवाल', 'कवि श्री', 'सीपी और शंख', 'आत्मा की आँखें', 'कोयला और कवित्व', 'हारे को हरिनाम', 'रश्मिलोक'।

गद्य–कृतियाँ : 'मिट्टी की ओर', 'अर्धनारीश्वर', 'रेती के फूल', 'हमारी सांस्कृतिक एकता', 'भारत की सांस्कृतिक कहानी', 'संस्कृति के चार अध्याय', 'उजली आग', 'देश-विदेश', 'राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीय एकता', 'काव्य की भूमिका', 'पंत, प्रसाद और मैथिलीशरण', 'वेणुवन', 'धर्म, नैतिकता और विज्ञान', 'शुद्ध कविता की खोज', 'साहित्य मुखी', 'चेतना की शिला', 'देश–विदेश', 'मेरी यात्राएँ', 'राष्ट्रभाषा का आंदोलन और गाँधी जी', 'लोकदेव नेहरू', 'वट–पीपल', 'विवाह की मुसीबतें', 'हे राम'।

दिनकर की भाषा में संस्कृत के तत्सम शब्दों के साथ उर्दू फारसी के प्रचलित शब्दों का भी प्रयोग मिलता है। उन्होंने अतुकांत आधुनिक छंदों का प्रयोग किया है। उनकी भाषा गहरे अर्थ को व्यक्त करती है, इसीलिए इसे सामासिक शैली भी कह सकते हैं, कहीं–कहीं उन्होंने व्यास शैली का भी प्रयोग किया है। उनकी शैली में ओजपूर्णता है, जिसके माध्यम से उन्होंने पूँजीवादी संस्कृति का विरोध किया तथा राष्ट्रीय भावना को वाणी दी।

*प्रस्तुत निबंध रामधारी सिंह 'दिनकर' के **'अर्धनारीश्वर'** निबंध–संग्रह में संकलित है। लेखक ने ईर्ष्या की उत्पत्ति के कारण और उससे होने वाले नुकसान का बड़ा ही मनोवैज्ञानिक वर्णन किया है। लेखक ने अपनी सरल एवं स्पष्ट भाषा शैली के माध्यम से ईर्ष्या जैसे विषय को भी रोचक बना दिया है। ईर्ष्या जिस हृदय में जन्म लेती है, वह अपनी वस्तुओं का लाभ नहीं उठाता, वरन दूसरों को देखकर दुःखी होता है। निंदा करना भी ईर्ष्या का एक रूप है। ईर्ष्या के कारण मानवीय गुणों का ह्रास होता है। ईर्ष्यालु व्यक्ति हमेशा दूसरे से प्रतिद्वंद्विता करता रहता है। **नीत्से** ने ईर्ष्यालु व्यक्ति को बाजार की मक्खियों की भाँति कहा है। इससे बचाव के लिए एकांत स्थान की तरफ जाना चाहिए एवं मानसिक अनुशासन रखना चाहिए। ईर्ष्या करना छोड़कर रचनात्मक कार्य में मन लगाना ईर्ष्या से बचने का मार्ग है।*

■

ईर्ष्या, तू न गई मेरे मन से

मेरे घर के दाहिने एक वकील रहते हैं, जो खाने–पीने में अच्छे हैं, दोस्तों को भी खूब खिलाते हैं और सभा-सोसाइटियों में भी काफी भाग लेते हैं। बाल-बच्चों से भरा-पूरा परिवार, नौकर भी सुख देने वाले और पत्नी भी अत्यंत मृदुभाषिनी। भला एक सुखी मनुष्य को और क्या चाहिए ?

मगर, वे सुखी नहीं हैं। उनके भीतर कौन–सा दाह है, इसे मैं भली-भाँति जानता हूँ। दरअसल, उनकी बगल में जो बीमा एजेण्ट हैं, उनके वैभव की वृद्धि से वकील साहब का कलेजा जलता रहता है। वकील साहब को भगवान ने जो कुछ दे रखा है, वह उनके लिए काफी नहीं दीखता। वे इस चिंता में भुने जा रहे हैं कि काश, एजेण्ट की मोटर, उसकी मासिक आय और उसकी तड़क–भड़क मेरी भी हुई होती।

ईर्ष्या का यही अनोखा वरदान है। जिस मनुष्य के हृदय में ईर्ष्या घर बना लेती है, वह उन चीजों से आनंद नहीं उठाता, जो उसके पास मौजूद हैं। बल्कि, उन वस्तुओं से दुःख उठाता है, जो दूसरों के पास है। वह अपनी तुलना दूसरों के साथ करता है और इस तुलना में अपने पक्ष के सभी अभाव उसके हृदय पर दंश मारते रहते हैं। दंश के इस दाह को भोगना कोई अच्छी बात नहीं है। मगर, ईर्ष्यालु मनुष्य करे भी तो क्या? आदत से लाचार होकर उसे यह वेदना भोगनी पड़ती है।

एक उपवन को पाकर भगवान को धन्यवाद देते हुए उसका आनंद नहीं लेना और बराबर इस चिंता में निमग्न रहना कि इससे भी बड़ा उपवन क्यों नहीं मिला, एक ऐसा दोष है, जिससे ईर्ष्यालु व्यक्ति का चरित्र भी भयंकर हो उठता है। अपने अभाव पर दिन-रात सोचते–सोचते वह सृष्टि की प्रक्रिया को भूलकर विनाश में लग जाता है और अपनी उन्नति के लिए उद्यम करना छोड़कर वह दूसरों को हानि पहुँचाने को ही अपना श्रेष्ठ कर्त्तव्य समझने लगता है।

ईर्ष्या की बड़ी बेटी का नाम निंदा है। जो व्यक्ति ईर्ष्यालु होता है, वही व्यक्ति बुरे किस्म का निंदक भी होता है। दूसरों की निंदा वह इसलिए करता है कि इस प्रकार, दूसरे लोग अथवा मित्रों की आँखों से गिर जाएंगे और तब जो स्थान रिक्त होगा, उस पर अनायास मैं ही बैठा दिया जाऊँगा।

मगर, ऐसा न आज तक हुआ है और न आगे होगा। दूसरों को गिराने की कोशिश तो अपने को बढ़ाने की कोशिश नहीं कही जा सकती। एक बात और है कि संसार में कोई भी मनुष्य निंदा से नहीं गिरता। उसके पतन का कारण अपने ही भीतर के सद्‌गुणों का ह्रास होता है। इसी प्रकार, कोई भी मनुष्य दूसरों की निंदा करने से अपनी उन्नति नहीं कर सकता। उन्नति तो उसकी तभी होगी, जब वह अपने चरित्र को निर्मल बनाये तथा अपने गुणों का विकास करे।

ईर्ष्या का काम जलाना है, मगर सबसे पहले वह उसी को जलाती है, जिसके हृदय में उसका जन्म होता है। आप भी ऐसे बहुत-से लोगों को जानते होंगे, जो ईर्ष्या और द्वेष की साकार मूर्ति हैं और जो बराबर इस फिक्र में लगे रहते हैं कि कहाँ सुननेवाले मिलें और अपने दिल का गुबार निकालने का मौका मिले। श्रोता मिलते ही उनका ग्रामोफोन बजने लगता है और वे बड़ी ही होशियारी के साथ एक–एक कांड इस ढंग से सुनाते हैं, मानो विश्व–कल्याण को छोड़कर उनका और कोई ध्येय नहीं हो। मगर, जरा उनके अपने इतिहास को भी देखिए और समझने की कोशिश कीजिए कि जबसे उन्होंने इस सुकर्म का आरंभ किया है, तब से वे अपने क्षेत्र में आगे बढ़े हैं या पीछे हटे हैं। यह भी कि अगर वे निंदा करने में समय और शक्ति का अपव्यय नहीं करते तो आज इनका स्थान कहाँ होता ?

चिंता को लोग चिता कहते हैं। जिसे किसी प्रचंड चिंता ने पकड़ लिया है, उस बेचारे की जिंदगी ही खराब हो जाती है। किंतु, ईर्ष्या शायद, चिंता से भी बदतर चीज है; क्योंकि वह मनुष्य के मौलिक गुणों को ही कुंठित बना डालती है।

मृत्यु, शायद, फिर भी श्रेष्ठ है, बनिस्बत इसके कि हमें अपने गुणों को कुंठित बनाकर जीना पड़े। चिंता–दग्ध मनुष्य समाज की दया का पात्र है। किंतु, ईर्ष्या से जला–भुना आदमी जहर की एक चलती–फिरती गठरी के समान है, जो हर जगह वायु को दूषित करती फिरती है।

ईर्ष्या मनुष्य का चारित्रिक दोष ही नहीं है, प्रत्युत्, इससे मनुष्य के आनंद में भी बाधा पड़ती है। जब भी मनुष्य के हृदय में ईर्ष्या का उदय होता है, सामने का सुख उसे मद्धिम–सा दीखने लगता है। पक्षियों के गीत में जादू नहीं रह जाता और फूल तो ऐसे हो जाते हैं, मानो वे देखने के योग्य ही न हों।

आप कहेंगे कि निंदा के बाण से अपने प्रतिद्वंद्वियों को बेधकर हँसने में एक आनंद है और यह आनंद ईर्ष्यालु व्यक्ति का सबसे बड़ा पुरस्कार है। मगर, यह हँसी मनुष्य की नहीं, राक्षस की हँसी होती है, और यह आनंद भी दैत्यों का आनंद होता है।

ईर्ष्या का संबंध प्रतिद्वंद्विता से होता है, क्योंकि भिखमंगा करोड़पति से ईर्ष्या नहीं करता। यह एक ऐसी बात है, जो ईर्ष्या के पक्ष में भी पड़ सकती है, क्योंकि प्रतिद्वंद्विता से भी मनुष्य का विकास होता है। किंतु, अगर आप संसार व्यापी सुयश चाहते हैं तो आप रसेल के मतानुसार, शायद नेपोलियन से स्पर्द्धा करेंगे। मगर, याद रखिए कि नेपोलियन भी सीजर से स्पर्द्धा करता था और सीजर सिकंदर से तथा सिकंदर हरकूलस से, जिस हरकूलस के बारे में इतिहासकारों का यह मत है कि वह कभी पैदा ही नहीं हुआ।

ईर्ष्या का एक पक्ष, सचमुच ही लाभदायक हो सकता है, जिसके अधीन हर आदमी, हर जाति और हर दल अपने को अपने प्रतिद्वंद्वी का समकक्ष बनाना चाहता है। किंतु, यह तभी सम्भव है, जब कि ईर्ष्या से जो प्रेरणा आती हो, वह रचनात्मक हो। अक्सर तो ऐसा ही होता है ईर्ष्यालु व्यक्ति यह महसूस करता है कि कोई चीज है जो उसके भीतर नहीं है, कोई वस्तु है, जो दूसरों के पास है। किंतु, वह यह नहीं समझ पाता कि इस वस्तु को प्राप्त कैसे करना चाहिए और गुस्से में आकर वह अपने किसी पड़ोसी, मित्र या समकालीन व्यक्ति को अपने से श्रेष्ठ मानकर उससे जलने लगता है, जबकि ये लोग भी अपने आपसे शायद वैसे ही असंतुष्ट हों।

आपने यही देखा होगा कि शरीफ लोग, यह सोचते हुए अपना सिर खुजलाया करते हैं कि फलाँ आदमी मुझसे क्यों जलता है, मैंने तो उसका कुछ नहीं बिगाड़ा. और अमुक व्यक्ति इस कदर मेरी निंदा में क्यों लगा हुआ है ? सच तो यह है कि मैंने' सब से अधि ाक भलाई उसी की की है।

ये सोचते हैं – मैं तो पाक-साफ हूँ, मुझमें किसी व्यक्ति के लिए दुर्भावना नहीं है. बल्कि, अपने दुश्मनों की भी मैं भलाई ही सोचा करता हूँ। फिर ये लोग मेरे पीछे क्यों पड़े हुए हैं ? मुझमें कौन-सा वह ऐब है, जिसे दूर करके मैं इन दोस्तों को चुप कर सकता हूँ ?

ईश्वरचंद विद्यासागर जब इस तजुरबे से होकर गुजरे, तब उन्होंने एक सूत्र कहा, ''तुम्हारी निंदा वही करेगा, जिसकी तुमने भलाई की है।''

और नीत्से जब इस कूचे से होकर निकला, तब उसने जोरों का एक ठहाका लगाया और कहा – ''यार, ये तो बाजार की मक्खियाँ हैं, जो अकारण हमारे चारों ओर भिनभिनाया करती हैं।''

ये सामने प्रशंसा और पीठ पीछे निंदा किया करते हैं। हम इनके दिमाग में बैठे हुए हैं, ये मक्खियाँ हमें भूल नहीं सकतीं और चूँकि ये हमारे बारे में बहुत सोचा करती हैं, इसलिए ये हमसे डरती हैं और हम पर शंका भी करती हैं।

ये मक्खियाँ हमें सजा देती हैं हमारे गुणों के लिए। ये ऐब को तो माफ कर देंगी, क्योंकि बड़ों के ऐब को माफ करने में भी शान है, जिस शान का स्वाद लेने को ये मक्खियाँ तरस रही हैं।

जिनका चरित्र उन्नत है, जिनका हृदय निर्मल और विशाल है, वे कहते हैं – ''इन बेचारों की बातों से क्या चिढ़ना ? ये तो खुद ही छोटे हैं।''

मगर, जिसका दिल छोटा और दृष्टि संकीर्ण है, वे मानते हैं कि ''जितनी भी बड़ी हस्तियाँ हैं, उनकी निंदा ही ठीक है।'' और जब हम इनके प्रति उदारता और भलमनसाहत का बर्ताव करते हैं, तब भी ये यही समझते हैं कि हम उनसे घृणा कर रहे हैं और हम चाहे उनका जितना उपकार करें, बदले में हमें अपकार ही मिलेगा।

दरअसल, हम जो उनकी निंदा का जवाब नहीं देकर चुप्पी साधे रहते हैं, इसे भी वे हमारा अहंकार समझते हैं। खुशी तो उन्हें तभी हो सकती है, जब हम उनके धरातल पर उतरकर उनके छोटेपन के भागीदार बन जाएँ।

सारे अनुभवों को निचोड़कर नीत्से ने एक दूसरा सूत्र कहा, ''आदमी में जो गुण महान् समझे जाते हैं, उन्हीं के चलते लोग उससे जलते भी है।''

तो ईर्ष्यालु लोगों से बचने का क्या उपाय है ? नीत्से कहता है कि ''बाजार की मक्खियों को छोड़कर एकांत की ओर भागो। जो कुछ भी अमर तथा महान है, उसकी रचना और निर्माण बाजार तथा सुयश से दूर रहकर किया जाता है। जो लोग नये मूल्यों का निर्माण करने वाले हैं, वे बाजारों में नहीं बसते, वे शोहरत के पास भी नहीं रहते।'' जहाँ बाजार की मक्खियाँ नहीं भिनकतीं, वह जगह एकांत है।

यह तो हुआ ईर्ष्यालु लोगों से बचने का उपाय। किंतु, ईर्ष्या से आदमी कैसे बच सकता है ?

ईर्ष्या से बचने का उपाय मानसिक अनुशासन है। जो व्यक्ति ईर्ष्यालु स्वभाव का है, उसे फालतू बातों के बारे में सोचने की आदत छोड़ देनी चाहिए। उसे यह भी पता लगाना चाहिए कि जिस अभाव के कारण वह ईर्ष्यालु बन गया है, उसकी पूर्ति का रचनात्मक तरीका क्या है ? जिस दिन उसके भीतर यह जिज्ञासा जगेगी, उसी दिन से वह ईर्ष्या करना कम कर देगा।

■

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए –

1. रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म कब हुआ था?
   (क) 1907ई.　(ख) 1908 ई.　(ग) 1909 ई.　(घ) 1906 ई.
2. रामधारी सिंह 'दिनकर' को किस रचना पर 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' मिला था?
   (क) उर्वशी　(ख) संस्कृति के चार अध्याय
   (ग) वट पीपल　(घ) सीपी और शंख
3. रामधारी सिंह 'दिनकर' को किस रचना पर 'साहित्य अकादेमी' पुरस्कार मिला था?
   (क) आत्मा की आँखें　(ख) लोकदेव नेहरु
   (ग) उर्वशी　(घ) संस्कृति के चार अध्याय
4. रामधारी सिंह 'दिनकर' को किस वर्ष 'पद्मभूषण' से सम्मानित किया गया था?
   (क) 1952 ई.　(ख) 1964 ई.　(ग) 1950 ई.　(घ) 1959 ई.
5. 'ईर्ष्या, तू न गई मेरे मन से' – किस पुस्तक में संकलित है?
   (क) मेरी यात्राएँ　(ख) वट–पीपल　(ग) अर्धनारीश्वर　(घ) आत्मा की आँखें
6. 'ईर्ष्या की बड़ी बेटी का क्या नाम है?
   (क) वरदान　(ख) निंदा　(ग) आनंदा　(घ) संघर्ष
7. रामधारी सिंह 'दिनकर' किस विश्वविद्यालय के कुलपित थे?
   (क) काशी हिंदू विश्वविद्यालय　(ख) पटना विश्वविद्यालय
   (ग) भागलपुर विश्वविद्यालय　(घ) बिहार विश्वविद्यालय
8. रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म किस राज्य में हुआ था?
   (क) बिहार　(ख) उत्तर प्रदेश　(ग) मध्य प्रदेश　(घ) छत्तीसगढ़
9. रामधारी सिंह 'दिनकर' किस कॉलेज में हिंदी के विभागाध्यक्ष थे?
   (क) लंगट सिंह कॉलेज　(ख) मुंशी सिंह कॉलेज
   (ग) ए. एन. कॉलेज　(घ) बी. एन. कॉलेज
10. इनमें कौन–सी कृति रामधारी सिंह 'दिनकर' की नहीं है?
   (क) कुरुक्षेत्र　(ख) रश्मिरथी　(ग) अनामिका　(घ) रसवंती

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. रामधारी सिंह 'दिनकर' का जीवन परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए।
2. रामधारी सिंह 'दिनकर' का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।

3. नीत्से ने निंदा करने वालों की तुलना मक्खियों से क्यों की है ? अपने शब्दों में लिखिए।
4. निंदकों से बचने का नीत्से ने क्या उपाय बताया है ? अपने शब्दों में लिखिए।
5. जीवन में प्रतिद्वंद्विता क्यों आवश्यक है ? अपने शब्दों में लिखिए।
6. ईर्ष्यालु मनुष्य दूसरों की निंदा क्यों करता है ? अपने शब्दों में लिखिए।
7. ईर्ष्यालु लोगों से बचने का क्या उपाय है ? अपने शब्दों में लिखिए।

III. दिये गए गद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

(क) ईर्ष्या का यही अनोखा वरदान है। जिस मनुष्य के हृदय में ईर्ष्या घर बना लेती है, वह उन चीजों से आनंद नहीं उठाता, जो उसके पास मौजूद हैं। बल्कि, उन वस्तुओं से दुःख उठाता है, जो दूसरों के पास हैं। वह अपनी तुलना दूसरों के साथ करता है और इस तुलना में अपने पक्ष के सभी अभाव उसके हृदय पर दंश मारते रहते हैं। दंश के इस दाह को भोगना कोई अच्छी बात नहीं है। मगर, ईर्ष्यालु मनुष्य करे भी तो क्या ? आदत से लाचार होकर उसे यह वेदना भोगनी पड़ती है।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक एवं लेखक का नाम लिखिए।
(ii) मनुष्य दुःख क्यों उठाता है ?
(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ख) ईर्ष्या की बड़ी बेटी का नाम निंदा है। जो व्यक्ति ईर्ष्यालु होता है, वही व्यक्ति बुरे किस्म का निंदक भी होता है। दूसरों की निंदा वह इसलिए करता है कि इस प्रकार, दूसरे लोग जनता अथवा मित्रों की आँखों से गिर जायेंगे और तब जो स्थान रिक्त होगा, उस पर अनायास मैं ही बैठा दिया जाऊँगा।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ii) 'निंदा' किसका नाम है ?
(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ग) ईर्ष्या मनुष्य का चारित्रिक दोष ही नहीं है, प्रत्युत् इससे मनुष्य के आनंद में भी बाधा पड़ती है। जब भी मनुष्य के हृदय में ईर्ष्या का उदय होता है, सामने का सूर्य उसे मद्धिम-सा दीखने लगता है। पक्षियों के गीत में जादू नहीं रह जाता और फूल तो ऐसे हो जाते हैं, मानों वे देखने के योग्य ही न हों।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ii) मनुष्य के हृदय में ईर्ष्या उत्पन्न होने पर क्या होता है ?
(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(घ) ईर्ष्या का संबंध प्रतिद्वंद्विता से होता है, क्योंकि भिखमंगा करोड़पति से ईर्ष्या नहीं करता। यह एक ऐसी बात है, जो ईर्ष्या के पक्ष में भी पड़ सकती है, क्योंकि प्रतिद्वंद्विता से मनुष्य का विकास होता है। किंतु, अगर आप संसार व्यापी सुयश चाहते हैं तो आप रसेल के मतानुसार, शायद नेपोलियन से स्पर्द्धा करेंगे। मगर, याद रखिए कि नेपोलियन भी सीजर से स्पर्द्धा करता था और सीजर सिकंदर से तथा सिकंदर हरकुलस से।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) लेखक ने 'प्रतिद्वंद्विता से मनुष्य का विकास होता है।' लेखक ने ऐसा क्यों कहा ?

(ङ) तो ईर्ष्यालु लोगों से बचने का क्या उपाय है ? नीत्से कहता है कि ''बाजार की मक्खियों को छोड़कर एकान्त की ओर भागो। जो कुछ भी अमर तथा महान है, उसकी रचना और निर्माण बाजार तथा सुयश से दूर रहकर किया जाता है। जो लोग नये मूल्यों का निर्माण करने वाले हैं, वे बाजारों में नहीं बसते, वे शोहरत के पास भी नहीं रहते।'' जहाँ बाजार की मक्खियाँ नहीं भिनकतीं, वह जगह एकान्त है।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक एवं लेखक का नाम लिखिए।

(ii) लेखक ने ईर्ष्यालु लोगों से बचने का क्या उपाय बताया है ?

(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(च) ईर्ष्या से बचने का उपाय मानसिक अनुशासन है। जो व्यक्ति ईर्ष्यालु स्वभाव का है, उसे फालतू बातों के बारे में सोचने की आदत छोड़ देनी चाहिए। उसे यह भी पता लगाना चाहिए कि जिस अभाव के कारण वह ईर्ष्यालु बन गया है, उसकी पूर्ति का रचनात्मक तरीका क्या है ? जिस दिन उसके भीतर यह जिज्ञासा जगेगी, उसी दिन से वह ईर्ष्या करना कम कर देगा।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।

(ii) लेखक ईर्ष्या से बचने के लिए किस आदत को छोड़ने को कहता है ?

(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

IV. भाषा के रंग :

1. निम्नलिखित शब्दों के उपसर्ग बताइए–
   उपवन, अपव्यय, निदान, सुकर्म
2. निम्नलिखित शब्दों के प्रत्यय बताइए–
   मौलिक, अहंकार, रचनात्मक, भौतिक
3. वाक्य-प्रयोग द्वारा शब्द युग्मों का अर्थ स्पष्ट कीजिए–
   मूर्ति - मूर्त, ईर्ष्या - ईर्ष्यालु, व्यक्ति - व्यक्तित्व

V. अनुभूति और अभिव्यक्ति :

1. 'ईर्ष्या' का अनुभव आपको कब हुआ? इससे आपको किस प्रकार की हानि हुई? अपने शब्दों में लिखिए।
2. 'ईर्ष्या' से बचने के उपाय क्या होंगे? सहपाठियों के साथ चर्चा कीजिए।

शब्दार्थ

ईर्ष्या – दूसरों से जलन। **वेदना** – व्यथा, कष्ट। **निमग्न** – डूबा हुआ। **उद्यम** – परिश्रम। **निंदक** – निंदा करने वाला। **दंश** – डंक मारना। **कुंठित** – मंद, कुंद, निश्तेज। **अनायास** – बिना प्रयास के। **कोशिश** – प्रयास। **पतन** – विनाश। **प्रत्युत** – बल्कि, अपितु, वरन। **द्वेष** – शत्रुता, वैर। **अपव्यय** – अनावश्यक खर्च। **स्पर्द्धा** – सकारात्मक कार्य द्वारा आगे बढ़ना। **सीजर** – पहली शताब्दी का प्रसिद्ध रोमन शासक। **नीत्से** – यूरोपीय दार्शनिक व लेखक। **प्रचंड** – अति तीव्र। **चिंतादग्ध** – चिंता में जलता हुआ। **समकालीन** – अपने समय का। **मानसिक अनुशासन** – मन पर नियंत्रण। **जिज्ञासा** – जानने की इच्छा।

■

डॉ0 भगवतशरण उपाध्याय

(सन् 1910 – 1982 ई.)

डॉ. भगवतशरण उपाध्याय महान शिक्षाविद, साहित्यकार एवं पुरातत्त्ववेत्ता थे। उनका जन्म सन् 1910 ई. में उत्तर प्रदेश के **बलिया** जनपद के **उजियारीपुर** ग्राम में हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा गाँव में हुई। उच्च शिक्षा हेतु वाराणसी गए; जहाँ काशी हिंदू विश्वविद्यालय से प्राचीन इतिहास विषय से परास्नातक किया। वे प्राचीन इतिहास पुरातत्त्व के ज्ञाता थे साथ ही हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध उन्नायक भी थे। प्रारंभ में वे पुरातत्त्व विभाग से जुड़े रहे। वे लखनऊ संग्रहालय के अध्यक्ष भी रहे। इस दौरान उन्होंने साहित्य सृजन करना भी शुरू कर दिया था। पिलानी राजस्थान के बिरला महाविद्यालय में प्राध्यापक पद पर रहे, इसके पश्चात् विक्रम विश्वविद्यालय, मध्य प्रदेश के प्राचीन इतिहास विभाग में प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष पद पर रहते हुए सेवानिवृत हुए। यहाँ से अवकाश लेने के उपरांत देहरादून में साहित्य साधना करने लगे। उन्होंने अनेक बार यूरोपीय देशों का भ्रमण किया। वे भारत के प्रतिनिधि के रूप में राजदूत बनकर मॉरीशस में भी कार्यरत रहे। साहित्य के इस अनन्य साधक का निधन 1982 ई. में मॉरीशस में हुआ।

डॉ. भगवतशरण उपाध्याय ने सौ से अधिक ग्रंथों का सृजन किया है। उन्होंने पाश्चात्य सिद्धांतों का भारतीय सिद्धांतों के साथ सफल समन्वय किया। वे रूढ़ियों और परंपराओं से ऊपर उठकर प्राचीन भारतीय संस्कृति व साहित्य के प्रधान व्याख्याकार थे। उनकी प्रमुख रचनाएँ निम्न हैं–

साहित्य और कला, विश्व साहित्य की रूपरेखा, इतिहास के पन्नों पर खून के छींटे, कोलकाता से पीकिंग, फीचर, कुछ एकांकी, इतिहास साक्षी है, ठंडा आम, सागर की लहरों पर, विश्व को एशिया की देन, मंदिर और भवन।

उपाध्याय जी की भाषा सरल और प्रवाहमयी है। इतिहास पुरातत्त्व के विशेषज्ञ होने के कारण भाषा सार्वकालिक व सार्वदेशिक–सी नजर आती है। संस्कृत का प्रयोग व्यवहारिक रूप में करने के कारण उसमें उर्दू-फारसी के शब्दों का पुट मिलता है। भाषा का निरंतर प्रवाह बनाए रखने हेतु प्रचलित लोकोक्ति और मुहावरे का भी प्रयोग करते थे। उन्होनें भाषा को कहीं भी जटिल नहीं होने दिया है। उनमें शिल्प के प्रति भी काफी सजगता दिखती

है। उन्होंने विवेचनात्मक, भावात्मक, वर्णनात्मक, आलोचनात्मक तथा आलंकारिक शैली का भी प्रयोग किया है। अतः भाषा का लालित्य उनके गंभीर चिंतन और विवेचन को रोचक बनाए रखने में सक्षम रहा है।

अजंता *डॉ. भगवतशरण उपाध्याय द्वारा लिखा गया एक पुरातत्त्व संबंधी लेख है। प्रस्तुत पाठ में लेखक ने अजंता की गुफाओं की चित्रकारी और शिल्प को भारत की अमूल्य विरासत के रूप में चित्रित किया है। इस पाठ में इतिहास एवं सौंदर्य के साथ ही साथ दर्शक के चित्त पर पड़ने वाले उनके प्रभाव को मनोरम शैली में प्रस्तुत किया गया है। जीवन को अमर बनाने के लिए मानव ने अनेक प्रयास किए हैं, जिसमें पत्थरों को काटकर, तराशकर सुंदर चित्रकारी की गई है। अजंता की कला भारत की अमूल्य विरासत है। पहाड़ के हृदय तल में स्थित गुफा और मंदिर, अजंता की दीवारों पर खुदी कहानियाँ जैसे बुद्ध चरित एवं जातक कथाएँ, पशु–पक्षियों की कहानियाँ अलौकिक एवं अमूल्य है। जोकि उस काल की अद्भुत कला–शिल्प को दर्शाती है।*

■

अजंता

जिंदगी को मौत के पंजों से मुक्त कर उसे अमर बनाने के लिए आदमी ने पहाड़ काटा है। किस तरह इंसान की खूबियों की कहानी सदियों बाद आनेवाली पीढ़ियों तक पहुँचायी जाए, इसके लिए आदमी ने कितने ही उपाय सोचे और किये। उसने चट्टानों पर अपने संदेश खोदे, ताड़ों-से ऊँचे धातुओं-से चिकने पत्थर के खंभे खड़े किये, ताँबे और पीतल के पत्तरों पर अक्षरों के मोती बिखेरे और उसके जीवन-मरण की कहानी सदियों के उतार पर सरकती चली आयी, चली आ रही है, जो आज हमारी अमानत-विरासत बन गयी है।

इन्हीं उपायों में एक उपाय पहाड़ काटना भी रहा है। सारे प्राचीन सभ्य देशों में पहाड़ काटकर मंदिर बनाये गये हैं और उनकी दीवारों पर एक से एक अभिराम चित्र लिखे गये हैं।

आज से कोई सवा दो हजार साल पहले से ही हमारे देश में पहाड़ काटकर मंदिर बनाने की परिपाटी चल पड़ी थी। अजंता की गुफाएँ पहाड़ काटकर बनायी जाने वाली देश की सबसे प्राचीन गुफाओं में से हैं, जैसे एलोरा और एलीफैंटा की सबसे पिछले काल की। देश की गुफाओं या गुफा-मंदिरों में सबसे विख्यात अजंता के हैं, जिनकी दीवारों और छतों पर लिखे चित्र दुनिया के लिए नमूने बन गये हैं। चीन के तुन-हुआँग और लंका के सिमिरिया की पहाड़ी दीवारों पर उसी के नमूने के चित्र नकल कर लिए गये थे और जब अजंता के चित्रों ने विदेशों को इस प्रकार अपने प्रभाव से निहाल किया, तब भला अपने देश के नगर-देहात उनके प्रभाव से कैसे निहाल न होते ? वाघ और सित्तनवसल की गुफाएँ उसी अजंता की परंपरा में हैं, जिनकी दीवारों पर जैसे प्रेम और दया की एक दुनिया ही सिरज गयी है।

और जैसे संगसाजों ने उस गुफाओं पर रौनक बरसायी है, चितेरे जैसे रंग और रेखा में दर्द और दया की कहानी लिखते गये हैं, कलावंत छेनी से मूरतें उभारते-कोरते गये हैं, वैसे ही अजंता पर कुदरत का नूर बरस पड़ा है, प्रकृति भी वहाँ थिरक उठी है। बम्बई (अब मुम्बई) के सूबे में बम्बई और हैदराबाद के बीच, विंध्याचल के पूरब-पश्चिम दौड़ती पर्वतमालाओं से निचौंधे पहाड़ों का एक सिलसिला उत्तर से दक्खिन चला गया है, जिसे सह्याद्रि कहते हैं। अजंता के गुहा मंदिर उसी पहाड़ी जंजीर को सनाथ करते हैं।

अजंता गाँव से थोड़ी ही दूर पर पहाड़ों के पैरों में साँप-सी लोटती बाधुर नदी कमान-सी मुड़ गयी है। वहीं पर्वत का सिलसिला एकाएक अर्द्धचंद्राकार हो गया है, कोई दो-सौ पचास फुट ऊँचा हरे वनों के बीच मंच पर मंच की तरह उठते पहाड़ों का यह सिलसिला हमारे पुरखों को भा गया है और उन्होंने उसे खोदकर भवनों-महलों से भर दिया। सोचिये जरा ठोस पहाड़ की चट्टानी छाती और कमजोर इंसान का उन्होंने मेल जो किया, तो पर्वत का हिया दरकता चला गया और वहाँ एक-से-एक बरामदे, हाल और मंदिर बनते चले गये।

पहले पहाड़ काटकर उसे खोखला कर दिया गया, फिर उसमें सुंदर भवन बना लिए गये, जहाँ खंभों पर उभारी मूरतें विहँस उठीं। भीतर की समूची दीवारें और छतें रगड़ कर चिकनी कर ली गयीं और तब उनकी जमीन पर चित्रों की एक दुनिया ही बसा दी गयी। पहले पलस्तर लगाकर आचार्यों ने उन पर लहराती रेखाओं में चित्रों की काया सिरज दी, फिर उनके चेले कलावंतों ने उनमें रंग भरकर प्राण फूँक दिये। फिर तो दीवारें उमग उठीं, पहाड़ पुलकित हो उठे।

कितना जीवन बरस पड़ा है इन दीवारों पर; जैसे फसाने अजायब का भंडार खुल पड़ा हो। कहानी से कहानी टकराती चली गयी है। बंदरों की कहानी, हाथियों की कहानी, हिरनों की कहानी। कहानी क्रूरता और भय की, दया और त्याग की। जहाँ बेरहमी है, वहीं दया का भी समुद्र उमड़ पड़ा है। जहाँ पाप है, वहीं क्षमा का सोता फूट पड़ा है। राजा और कँगले, विलासी और भिक्षु, नर और नारी, मनुष्य और पशु सभी कलाकारों के हाथों सिरजते चले गये हैं। हैवान की हैवानी को इंसान की इंसानियत से कैसे जीता जा सकता है, कोई अजंता में जाकर देखे। बुद्ध का जीवन हजार धाराओं में होकर बहता है। जन्म से लेकर निर्वाण तक उनके जीवन की प्रधान घटनाएँ कुछ ऐसे लिख दी गयी हैं कि आँखें अटक जाती हैं, हटने का नाम नहीं लेतीं।

यह हाथ में कमल लिये बुद्ध खड़े हैं, जैसे छवि छलकी पड़ती है, उभरे नयनों की जोत पसरती जा रही है। और यह यशोधरा है, वैसे ही कमल नाल धारण किये त्रिभंग में खड़ी। और यह दृश्य है महाभिनिष्क्रमण का – यशोधरा और राहुल निद्रा में खोये, गौतम दृढ़ निश्चय पर धड़कते हिया को सँभालते। और यह नंद है, अपनी पत्नी सुंदरी का भेजा, द्वार पर आये बिना भिक्षा के लौटे भाई बुद्ध को लौटाने जो आया था और जिसे भिक्षु बन जाना पड़ा था। बार-बार वह भागने को होता है, बार-बार पकड़कर संघ में लौटा लिया जाता है। उधर फिर वह यशोधरा है, बालक राहुल के साथ। बुद्ध आये हैं, पर बजाय पति की तरह आने के भिखारी की तरह आये हैं और भिक्षापात्र देहली में चढ़ा देते हैं, यशोधरा क्या दे, जब उसका स्वामी भिखारी बनकर आया है ? क्या न दे डाले ? पर

है ही क्या उसके पास, उसकी मुकुटमणि सिद्धार्थ के खो जाने के बाद? सोना-चाँदी, मणि-मानिक, हीरा-मोती तो उस त्यागी जगत्राता के लिए मिट्टी के मोल नहीं। पर हाँ, है कुछ उसके पास – उसका बचा एकमात्र लाल – उसका राहुल। और उसे ही वह अपने सरबस की तरह बुद्ध को दे डालती है।

और उधर वह बंदरों का चित्र है, कितना सजीव कितना गतिमान। उधर सरोवर में जल-विहार करता वह गजराज कमल-दण्ड तोड़-तोड़कर हथिनियों को दे रहा है। वहाँ महलों में वह प्यालों के दौर चल रहे हैं, उधर वह रानी अपनी जीवन-यात्रा समाप्त कर रही है, उसका दम टूटा जा रहा है। खाने-खिलाने, बसने-बसाने, नाचने-गाने, कहने-सुनने, वन-नगर, ऊँच-नीच, धनी-गरीब के नजारे हो सकते हैं, सब आदमी अजंता की गुफाओं की इन दीवारों पर देख सकता है।

बुद्ध के इस जन्म की घटनाएँ तो इन चित्रित कथाओं में है ही, उनके पिछले जन्मों की कथाओं का भी इसमें चित्रण हुआ है। पिछले जन्म की ये कथाएँ 'जातक' कहलाती हैं। उनकी संख्या 555 है और इनका संग्रह 'जातक' नाम से प्रसिद्ध है, जिनका बौद्धों में बड़ा मान है। इन्हीं जातक कथाओं में अनेक अजंता के चित्रों में विस्तार के साथ लिख दी गयी हैं। इन पिछले जन्मों में बुद्ध ने गज, कपि, मृग आदि के रूप में विविध योनियों में जन्म लिया था और संसार के कल्याण के लिए दया और त्याग का आदर्श स्थापित करते, वे बलिदान हो गये थे। उन स्थितियों में किस प्रकार पशुओं तक ने मानवोचित व्यवहार किया था, किस प्रकार औचित्य का पालन किया था, यह सब उन चित्रों में असाधारण खूबी से दर्शाया गया है। और उन्हीं को दर्शाते समय चितेरों ने अपनी जानकारी की गाँठ खोल दी है, जिससे नगरों और गाँवों, महलों और झोंपड़ियों, समुद्रों और पनघटों का संसार अजंता के उस पहाड़ी जंगल में उतर पड़ा है। और वह चित्रकारी इस खूबी से संपन्न हुई है कि देखते ही बनता है। जुलूस-के-जुलूस हाथी, घोड़े, दूसरे जानवर जैसे सहसा जीवित होकर अपने-अपने समझाये हुए काम जादूगर के इशारे पर सँभालने लग जाते हैं।

इन गुफाओं का निर्माण ईसा से करीब दो सौ साल पहले ही शुरू हो गया था और वे सातवीं सदी तक बनकर तैयार भी हो चुकी थीं। एक-दो गुफाओं में करीब दो हजार साल पुराने चित्र भी सुरक्षित हैं। पर अधिकतर चित्र भारतीय इतिहास के सुनहरे युग गुप्तकाल (पाँचवीं सदी) और चालुक्य काल (सातवीं सदी) के बीच बने। अजंता संसार की चित्रकलाओं में अपना अद्वितीय स्थान रखता है। इतने प्राचीनकाल के इतने सजीव, इतने गतिमान, इतने बहुसंख्यक कथाप्राण चित्र कहीं नहीं बने। अजंता के चित्रों ने देश-विदेश सर्वत्र की चित्रकला को प्रभावित किया। उसका प्रभाव पूर्व के देशों की कला पर तो पड़ा ही, मध्य-पश्चिमी एशिया भी उसके कल्याणकर प्रभाव से वंचित न रह सका।

–भगवतशरण उपाध्याय

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए –

1. इनमें कौन–सी भगवतशरण उपाध्याय की रचना नहीं है –
   (क) कोलकाता से पीकिंग (ख) इंडिया इन कालिदास
   (ग) ठंडा आम (घ) कोणार्क
2. अजंता की गुफाएँ किस राज्य में स्थित हैं ?
   (क) उत्तर प्रदेश (ख) महाराष्ट्र (ग) मध्य प्रदेश (घ) बिहार
3. 'संगसाज' किसे कहते हैं?
   (क) साथ–साथ रहने वाले को (ख) घड़ी बनाने वाले को
   (ग) पत्थर की मूर्ति बनाने वाले को (घ) अभिनय करने वाले को
4. महात्मा बुद्ध की पत्नी का क्या नाम था?
   (क) उर्मिला (ख) द्रौपदी (ग) सीता (घ) यशोधरा
5. यशोधरा, महात्मा बुद्ध को भिक्षा में क्या देती हैं?
   (क) सोना–चाँदी (ख) अपना लाल – राहुल (ग) मणि–मानिक (घ) हीरा–मोती
6. महात्मा बुद्ध के पिछले जन्म की कथाएँ कहलाती हैं –
   (क) आख्यान (ख) थेरी गाथा (ग) जातक कथा (घ) महाकाव्य
7. अजंता गाँव से थोड़ी दूरी पर कौन–सी नदी बहती है?
   (क) नर्मदा (ख) बाधुर (ग) कृष्णा (घ) चंबल
8. जातक कथाओं की संख्या कितनी हैं?
   (क) 455 (ख) 445 (ग) 545 (घ) 555

II निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

1. अजंता की प्राचीन गुफाएँ किस प्रांत में स्थित हैं ?
2. गुफा की दीवारों पर किस-किस के चित्र अंकित हैं ?
3. डॉ0 भगवतशरण उपाध्याय का जीवन–परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए।
4. भगवतशरण उपाध्याय का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।
5. भित्ति-चित्रों से आप क्या समझते हैं ? उल्लेख कीजिए।
6. गुफाओं की दीवारों पर अंकित महात्मा बुद्ध के चित्रों की विशेषताएँ बताइए।
7. अजंता की गुफाओं की भौगोलिक स्थिति के बारे में लेखक ने क्या कहा है ? स्पष्ट कीजिए।

III. दिये गए गद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

(क) जिंदगी को मौत के पंजों से मुक्त कर उसे अमर बनाने के लिए आदमी ने पहाड़ काटा है। किस तरह इंसान की खूबियों की कहानी सदियों बाद आनेवाली पीढ़ियों तक पहुँचायी जाय, इसके लिए आदमी ने कितने ही उपाय सोचे और किये। उसने चट्टानों पर अपने संदेश खोदे, ताड़ों-से ऊँचे धातुओं-से चिकने पत्थर के खंभे खड़े किये, ताँबे और पीतल के पत्तरों पर अक्षरों के मोती बिखेरे और उसके जीवन-मरण की कहानी सदियों के उतार पर सरकती चली आयी, चली आ रही है, जो आज हमारी अमानत-विरासत बन गयी है।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक एवं लेखक का नाम लिखिए।

(ii) मनुष्य ने अपनी धरोहरों को किस प्रकार संजोकर रखा ?

(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ख) और जैसे संगसाजों ने उन गुफाओं पर रौनक बरसायी है, चितेरे जैसे रंग और रेखा में दर्द और दया की कहानी लिखते गये हैं, कलावंत छेनी से मूरतें उभारते-कोरते गये हैं, वैसे ही अजंता पर कुदरत का नूर बरस पड़ा है, प्रकृति भी वहाँ थिरक उठी है। बम्बई (अब मुम्बई) के सूबे में बम्बई और हैदराबद के बीच, विंध्याचल के पूरब-पश्चिम दौड़ती पर्वतमालाओं से निचौंधे पहाड़ों का एक सिलसिला उत्तर से दक्खिन चला गया है, जिसे सह्याद्रि कहते हैं। अजंता के गुहा मंदिर उसी पहाड़ी जंजीर को सनाथ करते हैं।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक एवं लेखक का नाम लिखिए।

(ii) अजंता की गुफायें कहाँ स्थित हैं ?

(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ग) कितना जीवन बरस पड़ा है इन दीवारों पर; जैसे फसाने अजायब का भंडार खुल पड़ा हो। कहानी से कहानी टकराती चली गयी है। बंदरों की कहानी, हाथियों की कहानी, हिरनों की कहानी। कहानी क्रूरता और भय की, दया और त्याग की। जहाँ बेरहमी है, वहीं दया का भी समुद्र उमड़ पड़ा है। जहाँ पाप है, वहीं क्षमा का सोता फूट पड़ा है। राजा और कँगले, विलासी और भिक्षु, नर और नारी, मनुष्य और पशु सभी कलाकारों के हाथों सिरजते चले गये हैं। हैवान की हैवानी को इंसान की इंसानियत से कैसे जीता जा सकता है, कोई अजंता में जाकर देखे। बुद्ध का जीवन हजार धाराओं में होकर बहता है। जन्म से लेकर निर्वाण तक उनके जीवन की प्रधान घटनाएँ कुछ ऐसे लिख दी गयी हैं कि आँखें अटक जाती हैं, हटने का नाम नहीं लेतीं।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।

(iii) भित्ति चित्रों पर मनुष्य के कौन-कौन से भाव अंकित है ?

(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(घ) यह हाथ में कमल लिये बुद्ध खड़े हैं, जैसे छवि छलकी पड़ती है, उभरे नयनों की जोत पसरती जा रही है। और यह यशोधरा है, वैसे ही कमल नाल धारण किये त्रिभंग में खड़ी। और यह दृश्य है महाभिनिष्क्रमण का – यशोधरा और राहुल निद्रा में खोये, गौतम दृढ़ निश्चय पर धड़कते हिया को सँभालते। और यह नंद है, अपनी पत्नी सुंदरी का भेजा, द्वार पर आये बिना भिक्षा के लौटे भाई बुद्ध को लौटाने जो आया था और जिसे भिक्षु बन जाना पड़ा था। बार-बार वह भागने को होता है, बार-बार पकड़कर संघ में लौटा लिया जाता है। उधर फिर वह यशोधरा है बालक राहुल के साथ।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।

(ii) 'महाभिनिष्क्रमण' से क्या आशय है ?

(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ङ) अजंता संसार की चित्रकलाओं में अपना अद्वितीय स्थान रखता है। इतने प्राचीनकाल के इतने सजीव, इतने गतिमान, इतने बहुसंख्यक कथाप्राण चित्र कहीं नहीं बने। अजंता के चित्रों के देश-विदेश सर्वत्र की चित्रकला को प्रभावित किया। उसका प्रभाव पूर्व के देशों की कला पर तो पड़ा ही, मध्य-पश्चिमी एशिया भी उसके कल्याणकर प्रभाव से वंचित न रह सका।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।

(ii) अजंता किस कला के लिए अद्वितीय स्थान रखता है ?

(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

IV. भाषा के रंग :

1. निम्नलिखित उपसर्गों से शब्द बनाइए–
   सह, परि, उप, अभि, अनु।
2. पाठ में प्रयुक्त विदेशी शब्दों की सूची बनाइए।
3. निम्नलिखित प्रत्ययों का प्रयोग करके नवीन शब्द बनाइए–
   त्व, ता, वा, आई।

V. अनुभूति और अभिव्यक्ति :

1. आपको अजंता के बारे में पढ़कर कैसा लगा? आप ऐसी ही जगहों का पता लगाइए और किसी एक जगह के बारे में टिप्पणी लिखिए।
2. चित्रकला से आप क्या समझते हैं? महात्मा बुद्ध के जीवन से जुड़े संदर्भों पर कुछ चित्र बनाकर अध्यापक को दिखाएँ।

शब्दार्थ

विरासत – उत्तराधिकार में मिला धन। **अभिराम** – रमणीय, सुंदर। **अमानत** – सहेज कर रखी हुई, धरोहर। **संगसाज** – पत्थर के कलाकार। **कुदरत** – प्रकृति। **सह्यादि** – महराष्ट्र में स्थित एक पर्वतमाला। **सिरजना** – बनाना, रचना करना। **विहँस** – मुस्कुराना। **फसाने अजायब** – आश्चर्यजनक कहानियाँ। **महाभिनिष्क्रमण** – शांति की खोज में संसार का त्याग। **मानवोचित** – मनुष्य के लिए उचित। **निचौंधे** – नीचे का भाग। **जोत** – रोशनी। **गुहां** – गुफा। **चितेरे** – चित्रकार। **त्रिभंग** – तीन जगह से मुड़ी हुई। **अद्वितीय** – अद्भुत। **अर्द्धचंद्राकार** – आधे चंद्रमा का आकार। **जगत्राता** – संसार की रक्षा करने वाला।

■

जयप्रकाश भारती

(सन् 1936 – 2005 ई.)

जयप्रकाश भारती हिंदी के कुशल चितेरे–पत्रकार, लेखक, बाल–साहित्य के शिल्पी व निर्माता थे। उनका जन्म सन् 1936 ई. में उत्तर प्रदेश के **मेरठ** जनपद में हुआ। उनके पिता का नाम श्री रघुनाथ सहाय था। जो मेरठ के जिला सत्र न्यायालय में अधिवक्ता थे। जयप्रकाश भारती की शिक्षा दीक्षा मेरठ में ही हुई। उन्होंने विज्ञान से स्नातक की उपाधि ली। वे छात्र जीवन से ही सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहे। मेरठ में साक्षरता कार्यों के प्रचार, प्रसार में उनका उल्लेखनीय योगदान रहा। उन्होंने वर्षों तक निःशुल्क प्रौढ़ रात्रिकालीन पाठशालाएँ संचालित की। पत्रकारिता के क्षेत्र में 'संपादन कला विशारद' की पढ़ाई करके 'दैनिक प्रताप' (मेरठ) तथा 'नवभारत टाइम्स', (दिल्ली) में पत्रकारिता का व्यावहारिक प्रशिक्षण भी लिया। हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानवतावादी सोच व मूल्यपरक पत्रकारिता पर विशेष बल दिया। इस अनन्य समाजसेवी जय प्रकाश भारती का 69 वर्ष की आयु में लंबी बीमारी के कारण सन् 2005 ई. में निधन हो गया।

जयप्रकाश भारती ने अनेक वर्षों तक साहित्यिक 'हिंदुस्तान' और प्रसिद्ध बाल पत्रिका 'नंदन' का संपादन किया।

यूनेस्को द्वारा पुरस्कृत रचनाएँ– 'हिमालय की पुकार', 'अनंत आकाश', 'अथाह सागर'।

भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत रचनाएँ–'चलो चाँद पर चलें', 'देश हमारा–देश हमारा', 'विज्ञान की विभूतियाँ'।

अन्य रचनाएँ–'सरदार भगत सिंह', 'हमारे गौरव के प्रतीक', 'अस्त्र–शस्त्र', 'आदिम युग से अणु युग तक', 'उनका बचपन यूँ बीता', 'लोकमान्य तिलक', 'ऐसे थे हमारे बापू', 'बर्फ की गुड़िया', 'संयुक्त राष्ट्र संघ', 'भारत का संविधान', 'दुनिया रंग–बिरंगी'।

संपादित पुस्तक–'भारत की प्रतिनिधि लोक कथाएँ', 'किरणमाला' (3 भाग)।

जयप्रकाश भारती की भाषा की प्रमुख विशेषता वैज्ञानिक दृष्टिकोणों से युक्त परिनिष्ठित हिंदी थी। उन्होंने अपने रचनाओं में देशज शब्दों की बजाय प्रसंगानुकूल भाषा का प्रयोग

किया है। विषय-वस्तु को पाठक तक ले जाने के लिए जटिल–भाषा को भी सरल, सरस, प्रवाहमयी भाषा बना दिया है। वह साधारण–जन एवं बालकों में वैज्ञानिक भाव का बोध कराने हेतु कहीं-कहीं नाटकीयता का भी सहारा लेते हैं, जिससे भाषा रोचक सरल प्रभावपूर्ण बन जाती है। बाल मनोविज्ञान को व्यक्त करने के लिए तद्भव शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। उनकी शैली आत्मकथात्मक, वर्णनात्मक और सूत्रात्मक है।

प्रस्तुत पाठ ***पानी में चंदा और चाँद पर आदमी*** *जयप्रकाश भारती द्वारा निबंध विधा में लिखी गई एक रचना है, जिसमें मनुष्य के द्वारा चंद्रमा पर कदम रखने के प्रथम प्रयास का बड़ा ही रोमांचक वर्णन हुआ है। लेखक ने पृथ्वी और चंद्रमा की दूरी, चंद्रयान द्वारा चंद्रतल पर उतरने का सजीव चित्र प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत निबंध में संक्षिप्त अंतरिक्ष यात्रा का भी वर्णन हुआ है। 4 अक्टूबर, सन् 1957 को सोवियत नागरिक 'यूरी गागरिन' ने अंतरिक्ष की यात्रा की। नील आर्मस्ट्रांग और एडविन एल्ड्रिन ने चंद्रतल पर 21 घंटे 36 मिनट बिताए। यह सब अनेक अनुसंधानों एवं प्रयासों का परिणाम रहा है। चंद्रमा के रहस्यों को जानने के लिए मनुष्य आज भी प्रयासरत है। जो पहले कहानियों में पानी में चंदा को उतारा जाता था और आज मनुष्य खुद चाँद पर पहुँच गया है। यह पृथ्वी मानव के लिए पालने के समान है। अज्ञात की खोज में मनुष्य कहाँ तक पहुँचेगा कौन कह सकता है।*

■

पानी में चंदा और चाँद पर आदमी

दुनिया के सभी भागों में स्त्री-पुरुष और बच्चे रेडियों से कान सटाये बैठे थे, जिनके पास टेलीविजन थे, वे उसके पर्दे पर आँखें गड़ाये थे। मानवता के संपूर्ण इतिहास की सर्वाधिक रोमांच घटना के एक-एक क्षण के वे भागीदार बन रहे थे – उत्सुकता और कुतूहल के कारण अपने अस्तित्व से ही बिल्कुल बेखबर हो गये थे। युग-युग से किस देश और जाति ने चंद्रमा पर पहुँचने के सपने नहीं सँजोये – आज इस धरा के ही दो मानव उन सपनों को सच कर दिखाने के लिए कृत-संकल्प थे।

सोमवार 21 जुलाई, 1969 को बहुत सबेरे ईगल नामक चंद्रयान नील आर्मस्ट्रांग और एडविन एल्ड्रिन को लेकर चंद्रतल पर उतर गया। चंद्रयान धूल उड़ाता हुआ चंद्रमा के जलविहीन 'शांत सागर' में उतरा। भारतीय समय के अनुसार एक बजकर, सैंतालीस मिनट पर किसी अन्य ग्रह पर मानव पहली बार पहुँचा। असीम अंतरिक्ष को चीरते हुए पृथ्वी से चार लाख किलोमीटर दूर चंद्रमा पर पहुँचने में मानव को 102 घण्टे, 45 मिनट और 42 सेकेंड का समय लगा।

अपोलो–11 को केप केनेडी से बुधवार 16 जुलाई, 1969 को छोड़ा गया था। इसमें तीन यात्री थे – कमांडर नील आर्मस्ट्रांग, माइकल कालिंस और एडविन एल्ड्रिन। चंद्रमा की कक्षा में चंद्रयान मूलयान कोलम्बिया से अलग हो गया और फिर चंद्रतल पर उतर गया, उस समय माइकल कालिन्स मूल यान में 96 किलोमीटर की ऊँचाई पर निरंतर चंद्रमा की परिक्रमा कर रहे थे।

नील आर्मस्ट्रांग ने चंद्रतल से पृथ्वी का वर्णन करते हुए कहा कि वह बहुत चमकीली और सुंदर (बिग ब्राइट एण्ड ब्यूटीफुल) दिखायी दे रही है। एल्ड्रिन ने भाव-विभोर होकर कहा – सुंदर दृश्य है, सब कुछ सुंदर है। उसने कहा कि जहाँ हम उतरे हैं, उससे कुछ ही दूरी पर हमने बैंगनी रंग की चट्टान देखी है। चंद्रमा की मिट्टी और चट्टानें सूर्य की रोशनी में चमक रही हैं। यही एक भव्य एकांत स्थान है।

चंद्रयान ठीक स्थिति में है, यह निरीक्षण करके, कुछ खा-पीकर और सुस्ता लेने के बाद नील आर्मस्ट्रांग चंद्रयान से बाहर निकले। चंद्रयान की सीढ़ियों से धीरे-धीरे वह नीचे उतरे। उन्होंने अपना बायाँ पाँव चंद्रतल पर रखा, जबकि दायाँ पाँव चंद्रयान पर ही रहा। इस बीच आर्मस्ट्रांग दोनों हाथ से चंद्रयान को अच्छी तरह पकड़े रहे। उन्हें यह

तय कर लेना था कि वैज्ञानिक चंद्रतल को जैसा समझते रहे हैं, वह उससे एकदम भिन्न तो नहीं है। आश्वस्त होने के बाद, वह यान के आस-पास ही कुछ कदम चले। चंद्रतल पर पाँव रखते हुए उन्होंने कहा – यद्यपि यह मानव का छोटा-सा कदम है, लेकिन मानवता के लिए बहुत ही ऊँची छलाँग है।

अभी तक एल्ड्रिन भले ही भीतर बैठा हो, लेकिन वह निष्क्रिय नहीं था। उसने मूवी कैमरे से आर्मस्ट्रांग के चित्र लेने शुरू कर दिये थे। बीस मिनट बाद ही एडविन एल्ड्रिन भी चंद्रयान से बाहर निकले। उन्होंने भी चंद्रतल पर चलकर देखा। तब तक आर्मस्ट्रांग चंद्रधूल का एक तात्कालिक नमूना जेब में रख चुके थे। अब उन्होंने टेलीविजन कैमरे को त्रिपाद पर जमा दिया।

अरबों डालर खर्च करके मानव चंद्रतल पर पहुँचा था, उसे अपने सीमित समय में एक-एक क्षण का उपयोग करना था। दोनों चंद्र-विजेताओं को चंद्रमा की चट्टानों तथा मिट्टी के नमूने लेने थे। कई तरह के उपकरण भी वहाँ स्थापित करने थे, जो बाद में भी पृथ्वी पर वैज्ञानिक जानकारी भेजते रह सकें।

इन चंद्र-विजेताओं ने चंद्रतल पर भूकंपमापी यंत्र स्थापित किया और लेसर परावर्तक रखा। इन्होंने एक धातु-फलक, जिन पर तीनों यात्रियों और अमेरिकी राष्ट्रपति निक्सन के हस्ताक्षर थे, वहाँ रखा। धातु-फलक पर खुदे शब्दों को आर्मस्ट्रांग ने जोर से पढ़ा–''जुलाई, 1969 में पृथ्वी ग्रह के मानव चंद्रमा के इस स्थान पर उतरे। हम यहाँ सारी मानव जाति के लिए शांति की कामना लेकर आए।''

दोनों चंद्र-यात्रियों ने अमेरिकी ध्वज चंद्रतल पर फहरा दिया। वायु न होने के कारण इस ध्वज को इस तरह बनाया गया था कि स्प्रिंग की सहायता से यह फैला हुआ ही रहे। विभिन्न राष्ट्रध्वजों के संदेशों की माइक्रो फिल्म भी उन्होंने चंद्रतल पर छोड़ दी। दो रूसी अंतरिक्ष यात्रियों (यूरी गागरिन और एम. के. मोरोव) को मरणोपरांत दिए पदक और तीन अमेरिकी अंतरिक्ष यात्रियों (ग्रिसम, हाट और शैफी) को दिए गए पदकों की अनुकृतियाँ वहाँ रखीं।

अपने व्यस्त कार्यक्रम को पूरा करने में चंद्र-यात्रियों को थकान हो जानी स्वाभाविक थी, लेकिन फिर भी वे बड़े प्रसन्न थे। आरमं में वे बड़ी सावधानी के साथ एक-एक कदम रख रहे थे लेकिन बाद में वे कंगारुओं की तरह उछल-उछलकर चलते देखे गए।

मानव को चंद्रमा पर उतारने का यह सर्वप्रथम प्रयास होते हुए भी असाधारण रूप से सफल रहा, यद्यपि हर क्षण, हर पग पर खतरे थे। चंद्रतल पर मानव के पाँव के निशान उसके द्वारा वैज्ञानिक तथा तकनीकी क्षेत्र में की गई असाधारण प्रगति के प्रतीक हैं। जिस

क्षण डगमग-डगमग करते मानव के पग उस धूलि-धूसरित अनछुई सतह पर पड़े तो मानो वह हजारों-लाखों साल से पालित-पोषित सैकड़ों अंधविश्वासों तथा कपोल-कल्पनाओं पर पद-प्रहार ही हुआ। कवियों की कल्पना के सलोने चाँद को वैज्ञानिकों ने बदसूरत और जीवनहीन करार दे दिया – भला अब चंद्रमुखी कहलाना किसे रुचिकर लगेगा।

हमारे देश में ही नहीं, संसार की प्रत्येक जाति ने अपनी भाषा में चंद्रमा के बारे में कहानियाँ गढ़ी है और कवियों ने कविताएँ रची हैं। किसी ने उसे रजनीपति माना तो किसी ने उसे रात्रि की देवी कह कर पुकारा। किसी विरहिणी ने उसे अपना दूत बनाया तो किसी ने उसके पीलेपन से क्षुब्ध होकर उसे बूढ़ा और बीमार ही समझ लिया। बालक श्रीराम चंद्रमा को खिलौना समझकर उसके लिए मचलते हैं तो सूर के श्रीकृष्ण भी उसके लिए हठ करते हैं। बालक को शांत करने कि लिए एक ही उपाय था – चंद्रमा की छवि को पानी में दिखा देना। लेकिन मानव की प्रगति का चक्र कितना घूम गया है। इस लम्बी विकास-यात्रा को श्रीमती महादेवी वर्मा ने एक ही वाक्य में बाँध दिया है –''पहले पानी में चंदा को उतारा जाता था और आज चाँद पर मानव पहुँच गया है।''

मानव मन सदा से ही अज्ञात के रहस्यों को खोलने और जानने-समझने को उत्सुक रहा है। जहाँ तक वह नहीं पहुँच सकता था, वहाँ वह कल्पना के पंखों पर उड़कर पहुँचा। उसकी अनगढ़ और अविश्वसनीय कथाएँ उसे सत्य के निकट पहुँचाने में प्रेरणा-शक्ति का काम करती रहीं।

अंतरिक्ष युग का सूत्रपात 4 अक्टूबर, 1957 को हुआ था, जब सोवियत रूस ने अपना पहला स्पुतनिक छोड़ा। प्रथम अंतरिक्ष यात्री बनने को गौरव यूरी गागरिन को प्राप्त हुआ। अंतरिक्ष युग के आरंभ के ठीक 11 वर्ष 9 मास 17 दिन बाद चंद्रतल पर मानव उतर गया।

दिसंबर, 1968 में पहली बार अपोलो-8 के तीनों अंतरिक्ष-यात्री चंद्रमा के पड़ोस तक पहुँचे थे। बीच की अवधि में रूस और अमेरिका दोनों ही देशों ने अनेक अंतरिक्ष यान छोड़े। इनमें कुछ स-मानव यान थे और कुछ मानव-रहित। इसे मानव का साहस कहें या दुस्साहस कि उसने अंतरिक्ष में पहुँचकर यान से बाहर निकल अनंत अंतरिक्ष में विचरण भी शुरू कर दिया। अंतरिक्ष में परिक्रमा करते दो यानों को जोड़ने और एक यान से दूसरे यान में यात्रियों के चले जाने के चमत्कारी करतब भी किये गये। अपोलो-11 द्वारा चंद्रविजय से पूर्व मानो – अपोलो-10 के द्वारा इस नाटक का पूर्वाभिनय ही किया गया था। इसके तीन यात्री अंतरिक्ष यान को चंद्रमा की कक्षा में ले गये थे। एक यात्री मूल यान की कक्षा में घूमता रहा था और अन्य दो यात्री चंद्रयान में बैठकर उसे चंद्रमा से केवल 9 मील की दूरी तक ले गये थे। इन्होंने चन्द्र-विजेताओं के उतरने के संभावित स्थल का अध्ययन

किया और अनेक चित्र खींचे थे। चंद्रयान को मूल यान से जोड़ा और फिर सकुशल पृथ्वी पर लौट आये।

मानव को चंद्रतल तक ले जाने और लौटा लाने वाले यान के बारे में भला कौन नहीं जानना चाहेगा। अपोलो-यान-सैटर्न-5 राकेट से प्रक्षेपित किया जाता है। वह विश्व का सबसे शक्तिशाली वाहन है। अंतरिक्ष यान के तीन भाग होते हैं या इन्हें तीन माड्यूल कह सकते हैं।

कमांड माड्यूल का निर्माण इस दृष्टि से किया जाता है कि वापसी के समय पृथ्वी के वायुमंडल में प्रवेश करते समय तीव्र ताप और दबावों को सहन कर सके। नियंत्रण कक्ष, शयनागार, भोजनकक्ष और प्रयोगशाला– इन सबका मिला-जुला रूप ही यह माड्यूल होता है। प्रक्षेपण के समय यदि कोई दुर्घटना हो जाये तो यात्री अपने बचाव के लिए इसे शेष यान से पृथक कर सकते हैं। पुनः प्रवेश के लिए बने कमाण्ड कैप्सूल का वजन 5500 किलोग्राम था। इसमें लगभग साढ़े पाँच घन मीटर खाली स्थान था, जहाँ कि तीनों यात्री अपने सामान्य कार्य सम्पन्न कर सकें। इस स्थान को हम औसत दर्जे की कार जितना मान सकते हैं। कैप्सूल जब तैयार होता है, उस समय इसमें पाँच विद्युत बैटरियाँ होती हैं और 12 रॉकेट इंजन जुड़े होते हैं। तीन आदमियों के लिए चौदह दिन की खाद्य सामग्री और पानी के भंडार एवं मल के निष्कासन की व्यवस्था रहती है। इसमें पैराशूट भी रहते हैं। यात्रियों को बिना चोट पहुँचाये, यह कड़ी-से-कड़ी जमीन पर उतर सकता है।

अंतरिक्ष यान का दूसरा भाग होता है सर्विस माड्यूल–यह औसतन आकार के ट्रक जितना होता है। इसमें दस लाख किलोमीटर की यात्रा करने के लिए पर्याप्त ईंधन था और 14 दिन तक तीन यात्रियों के साँस लेने लायक प्राण-वायु की व्यवस्था थी। यान को चंद्र कक्षा में स्थापित करने के लिए उसकी गति कम करनी पड़ती है और सर्विस माड्यूल के शक्तिशाली राकेट मोटर दागकर ही ऐसा किया जाता है।

चंद्रयान यानी अपोलो-11 का ईगल अंतरिक्ष यान का एक भाग होते हुए भी अपने में पूर्ण था। इसमें दो खंड थे–अवरोह भाग और आरोह भाग। अवरोह भाग में 8200 किलो प्राणोदक था, जिससे 4500 किलो प्रघात के इंजन को चलाया जा सके। चालकों के साँस लेने के लिए आक्सीजन गैस, पीने का पानी, चंद्रतल पर यान को ठंडा रखने की व्यवस्था की गयी थी। चंद्रयान की सभी टाँगें समतल पर टिकनी आवश्यक नहीं, यह आड़ा-तिरछा भी खड़ा हो सकता है। अवरोही भाग में चार रेडियो रिसीवर, ट्रांसमीटर, बैटरियाँ, मूल यान से और पृथ्वी से संचार-व्यवस्था कायम रखने के लिए सात एरियल लगे थे। ईगल के दोनों भाग किसी भी समय अलग किये जा सकते थे। चंद्रतल से वापसी के समय चन्द्रयान का नीचे का भाग प्रक्षेपण यंत्र का काम देता है और उसे चंद्रतल पर ही छोड़ दिया गया।

नील आर्मस्ट्रांग और एडविन एल्ड्रिन ने चंद्रतल पर 21 घंटे, 36 मिनट बिताये। चंद्रतल पर इन दो यात्रियों ने पाँवों के ऐसे निशान छोड़े जैसे कि किसी हल चलाये खेत में पड़ जाते हैं। उन्होंने लाखों डालर का सामान भी वहीं छोड़ दिया।

दोनों चंद्र-विजेताओं ने ऊपरी भाग में उड़ान भरकर चंद्रकक्ष में परिक्रमा करते हुए मूल यान से अपने यान को जोड़ा। फिर वे दोनों यात्री अपने साथी माइकल कालिन्स से आ मिले। अब चंद्रयान को अलग कर दिया गया और उसके कक्ष में ही छोड़ दिया गया। इंजन दागकर यात्री वापसी के लिए पृथ्वी के मार्ग पर बढ़ चले। ये यात्री प्रशांत महासागर में उतरे।

इन यात्रियों को सीधे चंद्र प्रयोगशाला में ले जाया गया। कई सप्ताह किसी से मिलने-जुलने नहीं दिया गया। उनके अनुभव रिकार्ड किये गये। वैज्ञानिकों को यह भी जाँच करनी थी कि ये यात्री ऐसे कीटाणु तो अपने साथ नहीं ले आये, जो मानव जाति के लिए घातक हों। उन यात्रियों के द्वारा लायी गयी धूल और चंद्र-चट्टानों के नमूनों को अनुसंधान और प्रयोग करने के लिए विभिन्न देशों के विशेषज्ञों को सौंप दिया गया।

अपोलो-11 की सफलता के पश्चात् अमेरिका ने अपोलो-12 में भी तीन यात्रियों को चंद्रतल पर खोज करने के लिए भेजा। इसके बाद अपोलो-13 की यात्रा दुर्घटनावश बीच में ही स्थगित करनी पड़ी।

अभी चंद्रमा के लिए अनेक उड़ानें होंगी। दूसरे ग्रहों के लिए मानवरहित यान छोड़े जा रहे हैं। अंतरिक्ष में परिक्रमा करने वाला स्टेशन स्थापित करने की दिशा में तेजी से प्रयत्न किये जा रहे हैं। ऐसा स्टेशन बन जाने पर ब्रह्माण्ड के रहस्यों की पर्तें खोलने में काफी सहायता मिलेगी।

यह पृथ्वी मानव के लिए पालने के समान है। वह हमेशा-हमेशा के लिए इसकी परिधि में बँधा हुआ नहीं रह सकता। अज्ञात की खोज में वह कहाँ तक पहुँचेगा, कौन कह सकता है ?

■

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए –

1. जयप्रकाश भारती का जन्म किस वर्ष हुआ थ?
   (क) 1965 ई. (ख) 1935 ई. (ग) 1966 ई. (घ) 1936 ई.
2. जयप्रकाश भारती किस बाल–पत्रिका के संपादक थे?
   (क) नंदन (ख) चाँद (ग) रविवार (घ) रूपाभ
3. जयप्रकाश भारती के पिता का क्या नाम था?
   (क) राधाकृष्ण दास (ख) जयप्रकाश कर्दम (ग) रघुनाथ सहाय (घ) गोपाल दास
4. 'पानी में चंदा और चाँद पर आदमी' किसकी रचना है?
   (क) रामधारी सिंह 'दिनकर' (ख) मुक्तिबोध
   (ग) निराला (घ) जयप्रकाश भारती
5. जयप्रकाश भारती की मृत्यु किस वर्ष हुई?
   (क) 2003 ई. (ख) 2005 ई. (ग) 2006 ई. (घ) 2007 ई.
6. निम्न में किस यान की यात्रा दुर्घटनावश बीच में ही स्थगित हो गई?
   (क) अपोलो–10 (ख) अपोलो–11 (ग) अपोलो–12 (घ) अपोलो–13
7. 'ईगल' नामक चंद्रयान किस वर्ष चंद्रतल पर उतारा गया था?
   (क) 21 जुलाई 1970 ई. (ख) 21 जुलाई 1979 ई.
   (ग) 21 जुलाई 1969 ई. (घ) 21 जुलाई 1968 ई.
8. 'कमांड कैप्सूल' का वजन कितना किलोग्राम था?
   (क) 5500 किलोग्राम (ख) 5600 किलोग्राम
   (ग) 6600 किलोग्राम (घ) 6100 किलोग्राम
9. 'अंतरिक्ष युग' की शुरुआत किस तिथि से मानी गई है?
   (क) 4 अक्टूबर, 1956 ई. (ख) 4 अक्टूबर, 1957 ई.
   (ग) 4 अक्टूबर, 1955 ई. (घ) 4 अक्टूबर, 1954 ई.
10. नील आर्मस्ट्रांग और एडविन एल्डिन ने चंद्रतल पर कितने समय बिताए थे?
    (क) 22 घंटे 36 मिनट (ख) 23 घंटे 36 मिनट
    (ग) 24 घंटे 37 मिनट (घ) 21 घंटे 36 मिनट

II. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दीजिए –

1. जयप्रकाश भारती की प्रमुख कृतियों के नाम लिखिए।
2. जयप्रकाश भारती का जीवन–परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए।

3. जयप्रकाश भारती का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी भाषा–शैली पर प्रकाश डालिए।
4. चंद्रतल पर पैर रखते हुए आर्मस्ट्रांग को भय क्यों लग रहा था ? अपने शब्दों में लिखिए।
5. अंतरिक्ष की खोज में मानव को अब तक कितनी सफलता मिली है ? अपने शब्दों में लिखिए।

III. दिये गए गद्यांशों पर आधारित प्रश्नों का उत्तर दीजिए –

(क) मानवता के संपूर्ण इतिहास की सर्वाधिक रोमांच घटना के एक-एक क्षण के वे भागीदार बन रहे थे – उत्सुकता और कुतूहल के कारण अपने अस्तित्व से ही बिल्कुल बेखबर हो गये थे। युग-युग से किस देश और जाति ने चंद्रमा पर पहुँचने के सपने नहीं सँजोये – आज इस धरा के ही दो मानव उन सपनों को सच कर दिखाने के लिए कृत-संकल्प थे।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ii) मानव इतिहास की महत्त्वपूर्ण घटना कौन थी ?
(iii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।

(ख) चंद्रयान ठीक स्थिति में है, यह निरीक्षण करके, कुछ खा-पीकर और सुस्ता लेने के बाद नील आर्मस्ट्रांग चंद्रयान से बाहर निकले। चंद्रयान की सीढ़ियों से धीरे-धीरे वह नीचे उतरे। उन्होंने अपना बायाँ पाँव चंद्रतल पर रखा, जबकि दायाँ पाँव चंद्रयान पर ही रहा। इस बीच आर्मस्ट्रांग दोनों हाथ से चंद्रयान को अच्छी तरह पकड़े रहे। उन्हें यह तय कर लेना था कि वैज्ञानिक चंद्रतल को जैसा समझते रहे हैं, वह उससे एकदम भिन्न तो नहीं है। आश्वस्त होने के बाद, वह यान के आस-पास ही कुछ कदम चले। चंद्रतल पर पाँव रखते हुए उन्होंने कहा – यद्यपि यह मानव को छोटा-सा कदम है, लेकिन मानवता के लिए बहुत ही ऊँची छलाँग है।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक एवं लेखक का नाम लिखिए।
(ii) सर्वप्रथम कौन चंद्रयान से बाहर निकला?
(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ग) मानव को चंद्रमा पर उतारने का यह सर्वप्रथम प्रयास होते हुए भी असाधारण रूप से सफल रहा, यद्यपि हर क्षण, हर पग पर खतरे थे। चंद्रतल पर मानव के पाँव के निशान उसके द्वारा वैज्ञानिक तथा तकनीकी क्षेत्र में की गयी असाधारण प्रगति के प्रतीक हैं। जिस क्षण डगमग-डगमग करते मानव के पग उस धूलि-धूसरित अनछुई सतह पर पड़े तो मानो वह हजारों-लाखों साल से पालित-पोषित सैकड़ों अंधविश्वासों तथा कपोल-कल्पनाओं पर पद-प्रहार ही हुआ। कवियों की कल्पना के सलोने चाँद को वैज्ञानिकों ने बदसूरत और जीवनहीन करार दे दिया – भला अब चंद्रमुखी कहलाना किसे रुचिकर लगेगा।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ii) मानव के असाधारण प्रगति का प्रतीक क्या है ?
(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(घ) मानव मन सदा से ही अज्ञात के रहस्यों को खोलने और जानने-समझने को उत्सुक रहा है। जहाँ तक वह नहीं पहुँच सकता था, वहाँ वह कल्पना के पंखों पर उड़कर पहुँचा। उसकी अनगढ़ और अविश्वसनीय कथाएँ उसे सत्य के निकट पहुँचाने में प्रेरणा-शक्ति का काम करती रहीं।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।

(ii) मानव मन सदैव किसके लिए उत्सुक रहा है ?

(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ङ) अभी चंद्रमा के लिए अनेक उड़ानें होंगी। दूसरे ग्रहों के लिए मानवरहित यान छोड़े जा रहे हैं। अंतरिक्ष में परिक्रमा करने वाला स्टेशन स्थापित करने की दिशा में तेजी से प्रयत्न किये जा रहे हैं। ऐसा स्टेशन बन जाने पर ब्रह्माण्ड के रहस्यों की पर्तें खोलने में काफी सहायता मिलेगी। यह पृथ्वी मानव के लिए पालने के समान है। वह हमेशा-हमेशा के लिए इसकी परिधि में बँध ा हुआ नहीं रह सकता। अज्ञात की खोज में वह कहाँ तक पहुँचेगा, कौन कह सकता है ?

(i) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।

(ii) अंतरिक्ष में स्टेशन बन जाने से किसमें सहायता मिलेगी ?

(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

IV. भाषा के रंग :

1. निम्नलिखित शब्दों से उपसर्ग अलग कीजिए–
   प्रयोग, विशेष, बदसूरत, प्रघात, अनुसंधान
2. निम्नलिखित शब्दों से प्रत्यय अलग कीजिए–
   महानता, पहलवान, मानवता, औसतन
3. पाठ से छाँटकर अंग्रेजी शब्दों की सूची बनाइए–

V. अनुभूति और अभिव्यक्ति :

1. इस पाठ को पढ़ते हुए आप किस प्रकार का रोमांच महसूस करते हैं? अध्यापक से अपना अनुभव साझा कीजिए।
2. चंद्रयान पर अपने शब्दों में निबंध लिखिए।

शब्दार्थ

कपोल–कल्पनाओं – झूठी कहानियाँ या कल्पनाएँ। **पद प्रहार** – पैर का आघात। **अंतरिक्ष** – आकाश, शून्य। **त्रिपाद** – तीन पैर वाला। **रजनीपति** – रात्रि का स्वामी, चंद्रमा। – **क्षुब्ध होकर** – दुखी होकर। **प्रक्षेपण** – सामने की ओर फेंकने की क्रिया, राकेट की शक्ति द्वारा अंतरिक्ष में प्रविष्ट कराना। **विरहिणी** – वियोगिनी। **धूल-धूसरित** – धूल से सनी। **अज्ञात** – बिना जानकारी के। **अविश्वसनीय** – जिस पर विश्वास न किया जा सके। **अनगढ़** – बेडौल। **परिक्रमा** – चारों ओर चक्कर लगाना।

■

खंड–II

संस्कृत एवं व्याकरण खंड

प्रथमः पाठः

भारतीया संस्कृतिः

(भारत की संस्कृति)

मानव-जीवनस्य संस्करणं संस्कृतिः। अस्माकं पूर्वजाः मानवजीवन संस्कर्तुं महान्तं प्रयत्नम् अकुर्वन्। ते अस्माकं जीवनस्य संस्करणाय यान् आचारान् विचारान् च अदर्शयन् तत् सर्वम् अस्माकं संस्कृतिः।

'विश्वस्य स्रष्टा ईश्वरः एक एव' इति भारतीय-संस्कृतेः मूलम्। विभिन्नमतावलम्बिनः विविधैः नामभिः एकम् एव ईश्वरं भजन्ते। अग्निः, इन्द्रः, कृष्णः, करीमः, रामः, रहीमः, जिनः, बुद्धः, खिस्तः, अल्लाहः इत्यादीनि नामानि एकस्य एव परमात्मनः सन्ति। तम् एव ईश्वरं जनाः गुरुः इत्यपि मन्यन्ते। अतः सर्वेषां मतानां समभावः सम्मानश्च अस्माकं संस्कृतेः सन्देशः।

भारतीया संस्कृतिः तु सर्वेषां मतावलम्बिनां संगमस्थली। काले काले विविधाः विचाराः भारतीय-संस्कृतौ समाहिताः। एषा संस्कृतिः सामासिकी संस्कृतिः यस्याः विकासे विविधानां जातीनां सम्प्रदायानां विश्वासानांच योगदानं दृश्यते। अतएव अस्माकं भारतीयानाम् एका संस्कृतिः एका च राष्ट्रीयता। सर्वेऽपि वयं एकस्याः संस्कृतेः समुपासकाः, एकस्य राष्ट्रस्य च राष्ट्रियाः। यथा भ्रातरः परस्परं मिलित्वा सहयोगेन सौहार्देन च परिवारस्य उन्नतिं कुर्वन्ति तथैव अस्माभिः अपि सहयोगेन सौहार्देन च राष्ट्रस्य उन्नतिः कर्त्तव्या।

अस्माकं संस्कृतिः सदा गतिशीला वर्तते। मानवजीवनं संस्कर्तुम् एषा यथासमयं नवां नवां विचारधारां स्वीकरोति, नवां शक्तिं च प्राप्नोति। अत्र दुराग्रहः नास्ति, यत् युक्तियुक्तं कल्याणकारि च तदत्र सहर्षं गृहीतं भवति। एतस्याः गतिशीलतायाः रहस्यं मानव-जीवनस्य शाश्वतमूल्येषु निहितम्, तद् यथा सत्यस्य प्रतिष्ठा, सर्वभूतेषु समभावः विचारेषु औदार्यम्, आचारे दृढता चेति।

एषा कर्मवीराणां संस्कृतिः। 'कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः' इति अस्याः उद्घोषः। पूर्वं कर्म, तदनन्तरं फलम् इति अस्माकं संस्कृते नियमः। इदानीं यदा वयं राष्ट्रस्य नवनिर्माणे संलग्नाः स्मः निरन्तरं कर्मकरणम् अस्माकं मुख्यं कर्त्तव्यम्। निजस्य श्रमस्य फलं भोग्यं, अन्यस्य श्रमस्य शोषणं सर्वथा वर्जनीयम्। यदि वयं विपरीतम् आचरामः तदा न वयं सत्यं भारतीय-संस्कृतेः उपासकाः। वयं तदैव यथार्थं भारतीयाः यदा अस्माकम् आचारे विचारे

च अस्माकं संस्कृतिः लक्षिता भवेत्। अभिलाषामः वयं यत् विश्वस्य अभ्युदयाय भारतीय संस्कृतेः एषः दिव्यः सन्देशः लोके सर्वत्र प्रसरेत्।

''सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्।।''

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए –

1. संस्कृतिः शब्दस्य किं तात्पर्यम् ?
2. भारतीयसंस्कृतेः का विशेषता अस्ति ?

   अथवा

   भारतीय-संस्कृतेः मूलं किम् ?
3. भारतीया संस्कृतिः केषां सङ्गमस्थली ?
4. का संस्कृतिः सदा गतिशीला वर्तते ?
5. दुराग्रहः कुत्र नास्ति ?
6. भारतीय-संस्कृतेः कः विशेषः गुणः ?
7. कर्मवीराणां संस्कृतिः का ?
8. 'कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेत् शतं समाः' इति कस्याः संस्कृतेः उद्घोषः अस्ति ?
9. अस्माकं मुख्यं कर्त्तव्यं किम् ?
10. 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' इति कस्याः संदेशः ?

II. निम्नलिखित गद्यांशों का सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए –

(क) मानव-जीवन संस्करणम् .... ईश्वरं भजन्ते।

(ख) विश्वस्य स्रष्टा .... संस्कृतेः सन्देशः।

(ग) भारतीया संस्कृतिः .... उन्नतिः कर्त्तव्या।

(घ) अस्माकं संस्कृतिः सदा .... आचारे दृढता चेति।

(ङ) एषा कर्मवीराणाम् .... भारतीय-संस्कृतेः उपासकाः।

(च) इदानीं यदा वयम् .... लोके सर्वत्र प्रसरेत्।

(छ) सर्वे भवन्तु .... दुःखभाग् भवेत्।

III. व्याकरण–बोध :

निम्नलिखित शब्दों में विग्रह सहित समास-निर्देश कीजिए –

1. निम्नलिखित शब्दों के भाव स्पष्ट कीजिए–

   जीवनस्य संस्करणाय, सामासिकी संस्कृतिः, नवां शक्तिम्, जिजीविषेत्, निरामयाः

2. अधोलिखित अव्यय शब्दों के अर्थ लिखिए–

   एव, यथा, अत्र, तदत्र, मिलित्वा, सर्वत्र

IV. अनुभूति और अभिव्यक्ति :

1. भारतीय संस्कृति की मुख्य विशेषताओं को बिन्दुवार लिखिए।
2. भारतीय संस्कृति के नैतिक मूल्यों को चिह्नित करके अपने व्यवहार में उनको समाहित कीजिए।

शब्दार्थ

संस्करणम् – परिष्कार, सुधार। **संस्कर्तुम्** – संस्कार अथवा सुधार के लिए। **स्रष्टा** – रचयिता (बनाने वाला)। **जिनः** – महावीर स्वामी। **खिस्तः** – ईसा। **सामासिकी** – मिली-जुली। **सौहार्देन** – प्रेम से, मैत्रीपूर्वक। **दुराग्रहः** – अनुचित बातें। **शाश्वतमूल्य** – चिरन्तन मूल्य। वे आदर्श जो कभी नहीं बदलते। **सर्वभूतेषु** – सभी जीवों में (प्राणियों में)। **औदार्यम्** – उदारता। कुर्वन्नेवेह (कुर्वन् + एव + इह)। **इह** – इस संसार में। **कुर्वन् एव** – कार्य (शुभ कार्य) करते हुए ही। **समाः** – वर्ष। **वर्जनीयम्** – छोड़ने योग्य। **अभ्युदयाय** – उन्नति के लिए। **निरामयाः** – निरोगी। **भद्राणि** – कल्याण।

■

द्वितीयः पाठः

आरुणि-श्वेतकेतु-संवादः

(आरुणि श्वेतकेतु संवाद)

श्वेतकेतुर्हारुणेय आस तं ह पितोवाच श्वेतकेतो वस ब्रह्मचर्यम्। न वै सोम्यास्मत्कुलीनोऽननूच्य ब्रह्मबन्धुरिव भवतीति।

स ह द्वादशवर्ष उपेत्य चतुर्विंशतिवर्षः सर्वान्वेदानधीत्य महामना अनूचानमानी स्तब्ध एयाय तं ह पितोवाच श्वेतकेतो यन्नु सोम्येदं महामना अनूचानमानी स्तब्धोऽस्युत तमादेशमप्राक्ष्यः। येनाश्रुतं श्रुतं भवत्यमतं मतमविज्ञातं विज्ञातमिति। कथं नु भगवः स आदेशो भवतीति।

यथासोम्यैकेन मृत्पिण्डेन सर्वं मृन्मयं विज्ञातं स्याद्वाचारम्भणं विकारो नामधेयं मृत्तिकेत्येव सत्यम्।

यथा सौम्यैकेन लोहमणिना सर्वं लोहमयं विज्ञातं स्याद्वाचारम्भणं विकारो नामधेयं लोहमित्येव सत्यम्।

यथा सोम्यैकेन नखनिकृन्तनेन सर्वं कार्ष्णायसं विज्ञातं स्याद्वाचारम्भणं विकारो नामधेयं कृष्णायसमित्येव सत्यमेवं सोम्य स आदेशो भवतीति।

न वै नूनं भगवन्तस्त एतदवेदिषुर्यद्ध्येतदवेदिष्यन् कथं मे नावक्ष्यन्निति भगवां स्त्वेवमेतद् ब्रवीत्विति तथा सोम्येति होवाच।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए–

1. श्वेतकेतुः कः आसीत् ?

   अथवा

   श्वेतकेतुः कस्य पुत्रः ?
2. द्वादशवर्ष उपेत्य चतुर्विंशतिवर्षः कः सर्वान् वेदान् अधीतवान् ?
3. कः अनूचानमानी अभवत् ?
4. आरुणिः कः आसीत् ?
5. आरुणिः श्वेतकेतुं किम् उपदिशति ?

II. अनुवादात्मक प्रश्न :

निम्नलिखित संस्कृत गद्यांशों का सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए –

(क) स ह द्वादशवर्ष .... तमादेशमप्राक्ष्यः।

(ख) येनाश्रुतम् .... मृत्तिकेत्येव सत्यम्।

(ग) यथा सोम्यैकेन .... स आदेशो भवतीति।।

(घ) यथा सोम्यैकेन नखनिकृन्तनेन .... तथा सोम्येति होवाच।

III. अनुभूति और अभिव्यक्ति :

छान्दोग्य उपनिषद् के पठित अंशों के आधार पर सत्य की परिभाषा दीजिए।

शब्दार्थ

आरुणेय – श्वेतकेतु (आरुणि ऋषि का पुत्र)। आरुणि ऋषि को उद्दालक भी कहा जाता है। **वस ब्रह्मचर्यम्** – ब्रह्मचर्य आश्रम में प्रवेश करो। **अननूच्य** – वेद-वेदांगों को न पढ़कर। **अनूचानमानी** – वेद-वेदाङ्गों में पारंगत होकर। **एयाय** – आया। **अश्रुतम्** – न सुना गया। **अमतम्** – अतार्किक। **अविज्ञातम्** – न जाना गया। **मृत्पिण्डेन** – मिट्टी के पिण्ड (लोथड़े से)। **आचारम्भणम्** – आवरण। **लोहमणिना** – सुवर्ण के पिण्ड से। **नखनिकृन्तनेन** – नाखून काटने वाली नहनी से। **कार्ष्णायसम्** – लोहे अथवा काँसे को। **वेदिष्यन्** – जानते हुए। **न अवक्ष्यन्** – न कहते हुए।

■

तृतीयः पाठः

वाराणसी

(बनारस)

वाराणसी सुविख्याता प्राचीना नगरी। इयं विमलसलिलतरङ्गायाः गङ्गायाः कूले स्थिता। अस्याः घट्टानां वलयाकृतिः पंक्तिः धवलायां चन्द्रिकायां बहु राजते। अगणिताः पर्यटकाः सुदूरेभ्यः देशेभ्यः नित्यम् अत्र आयान्ति, अस्याः घट्टानाञ्च शोभां विलोक्य इमां बहु प्रशंसन्ति।

वाराणस्यां प्राचीनकालादेव गेहे गेहे विद्यायाः दिव्यं ज्योतिः द्योतते। अधुनाऽपि अत्र संस्कृतवाग्धारा सततं प्रवहति, जनानां ज्ञानञ्च वर्द्धयति। अत्र अनेके आचार्याः मूर्धन्याः विद्वांसः वैदिकवाङ्मयस्य अध्ययने अध्यापने च इदानीं निरताः। न केवलं भारतीयाः अपितु वैदेशिकाः गीर्वाणवाण्याः अध्ययनाय अत्र आगच्छन्ति, निःशुल्कं च विद्यां गृह्णन्ति। अत्र हिन्दूविश्वविद्यालयः, संस्कृतविश्वविद्यालयः, काशीविद्यापीठम् इत्येते त्रयः विश्वविद्यालयाः सन्ति, येषु नवीनानां प्राचीनानाञ्च ज्ञानविज्ञानविषयाणाम् अध्ययनं प्रचलितः।

एषा नगरी भारतीयसंस्कृतेः संस्कृतभाषायाश्च केन्द्रस्थलम् अस्ति। इत एव संस्कृतवाङ्मयस्य संस्कृतेश्च आलोकः सर्वत्र प्रसृतः। मुगलयुवराजः दाराशिकोहः अत्रागत्य भारतीय-दर्शन-शास्त्राणाम् अध्ययनम् अकरोत्। स तेषां ज्ञानेन तथा प्रभावितः अभवत्, यत् तेन उपनिषदाम् अनुवादः पारसीभाषायां कारितः।

इयं नगरी विवधधर्माणां संगमस्थली। महात्मा बुद्धः, तीर्थङ्करः पार्श्वनाथः, शङ्कराचार्यः, कबीरः, गोस्वामी तुलसीदासः, अन्ये च बहवः महात्मानः अत्रागत्य स्वीयान् विचारान् प्रासारयन्। न केवलं दर्शने, साहित्ये, धर्मे, अपितु कलाक्षेत्रेऽपि इयं नगरी विविधानां कलानां, शिल्पानाञ्च कृते लोके विश्रुता। अत्रत्याः कौशेयशाटिकाः देशे देशे सर्वत्र स्पृह्यन्ते।

अत्रत्याः प्रस्तरमूर्तयः प्रथिताः। इयं निजां प्राचीनपरम्पराम् इदानीमपि परिपालयति–तथैव गीयते कविभिः –

मङ्गलं मरणं यत्र विभूतिर्यत्र भूषणम्।
कौपीनं यत्र कौशेयं काशी केन मीयते।।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए :

1. वाराणसी कस्याः नद्याः कूले स्थिता अस्ति ?

   अथवा

   वाराणसी नगरी कुत्र स्थिता अस्ति ?
2. वाराणस्याः घट्टानां शोभां विलोक्य के बहु प्रशंसन्ति ?
3. वाराणस्यां नगर्यां कति विश्वविद्यालयाः सन्ति ?
4. का नगरी भारतीयसंस्कृतेः संस्कृतभाषायाः च केन्द्रस्थलम् अस्ति ?
5. मुगलयुवराजः दाराशिकोहः कुत्र गत्वा भारतीयदर्शनशास्त्राणाम् अध्ययनम् अकरोत् ?
6. कः मुगलयुवराजः उपनिषदाम् अनुवादः पारसीभाषायां कारितः ?
7. वाराणसी केषां संगमस्थली अस्ति ?
8. कुत्रत्याः कौशेयशाटिकाः देशे देशे सर्वत्र स्पृह्यन्ते ?
9. वाराणसी नगरी किमर्थं प्रसिद्धा ?
10. मरणं मङ्गलं कुत्र भवति ?

II. अनुवादात्मक प्रश्न :

निम्नलिखित संस्कृत गद्यांशों का हिन्दी भाषा में सन्दर्भ सहित अनुवाद कीजिए –

(क) वाराणसी सुविख्याता .... इमां बहु प्रशंसन्ति।

(ख) वाराणस्यां प्राचीनकालादेव .... विद्यां गृह्णन्ति।

(ग) अत्र अनेके आचार्याः .... अध्ययनं प्रचलितः।

(घ) एषा नगरी .... पारसीभाषायां कारितः।

(ङ) इयं नगरी .... सर्वत्र स्पृह्यन्ते।

(च) मङ्गलं मरणम् .... केन मीयते।

III. भाषा के रंग :

1. निम्नलिखित शब्दों में विग्रह सहित समास को स्पष्ट कीजिए–

विमलसलिलतरङ्गायाः, गीर्वाणवाण्याः, ज्ञानविज्ञानविषयाणाम्, कौशेयशाटिकाः

2. 'मंगलं मरणं यत्र' श्लोक को कण्ठस्थ कीजिए।

IV. अनुभूति और अभिव्यक्ति :

(i) वाराणसी पाठ के आधार पर उसके महत्त्व को प्रतिपादित करने वाले तथ्यों को रेखांकित कीजिए।

(ii) प्रस्तुत पाठ के आधार पर वाराणसी में संस्कृत भाषा के लिए किये जाने वाले कार्यों की एक सूची तैयार कीजिए।

शब्दार्थ

सुविख्याता – अत्यन्त प्रसिद्ध। **विमलसलिलतरङ्गायाः** – निर्मल जल की लहरों से युक्त। **कूले** – तट पर। **वलयाकृतिः** – घुमावदार आकृति वाली। **चन्द्रिकायाम्** – चाँदनी में। **मूर्धन्याः** – उच्चकोटि के। **गीर्वाणवाण्याः** – देववाणी संस्कृत के। **प्रसृतः** – फैला। **स्वीयान्** – अपने। **विश्रुता** – प्रसिद्ध। **कौशेयशाटिकाः** – रेशमी साड़ियाँ। **प्रस्तरमूर्तयः** – पत्थर की मूर्तियाँ। **प्रथिताः** –प्रसिद्ध। **विभूतिः** – भस्म (भभूत)। **कौपीनम्** – लँगोट। **मीयते** – मापी जा सकती है या तुलना की जा सकती है।

■

चतुर्थः पाठः

वीरः वीरेण पूज्यते

(वीर के द्वारा वीर पूजा जाता है)

(स्थानम्-अलक्षेन्द्रस्य सैन्य शिविरम्। अलक्षेन्द्रः आम्भीकः च आसीनौ वर्तेते।
वन्दिनं पुरुराजम् अग्रेकृत्वा एकतः प्रविशति यवन-सेनापतिः।)

सेनापतिः— विजयतां सम्राट्।

पुरुराजः— एष भारतवीरोऽपि यवनराजम् अभिवादयते।

अलक्षेन्द्रः— (साक्षेपम्) अहो ! बन्धनगतः अपि आत्मानं वीर इति मन्यसे पुरुराज ?

पुरुराजः— यवनराज ! सिंहस्तु सिंह एव, वने वा भवतु पञ्जरे वा।

अलक्षेन्द्रः— किन्तु पञ्जरस्थः सिंहः न किमपि पराक्रमते।

पुरुराजः— पराक्रमते, यदि अवसरं लभते। अपि च यवनराज !

बन्धनं मरणं वापि जयो वापि पराजयः।
उभयत्र समो वीरः वीर भावो हि वीरता।।

अम्भिराजः—सम्राट् ! वाचाल एष हन्तव्यः।

सेनापतिः— आदिशतु सम्राट्।

अलक्षेन्द्रः— अथ मम मैत्रीसन्धे अस्वीकरणे तव किम् अभिमतम् आसीत् पुरुराज !

पुरुराजः— स्वराज्यस्य रक्षा, राष्ट्रद्रोहाच्च मुक्तिः।

अलक्षेन्द्रः— मैत्रीकरणेऽपि राष्ट्रद्रोहः ?

पुरुराजः— आम् राष्ट्रद्रोहः यवनराज ! एकम् इदं भारतं राष्ट्रम्, बहूनि चात्र राज्यान्, बहवश्च शासकाः। त्वं मैत्रीसन्धिना तान् विभज्य भारतं जेतुम् इच्छसि। आम्भीकः चास्य प्रत्यक्षं प्रमाणम्।

अलक्षेन्द्रः— भारतम् एकं राष्ट्रम् इति तव वचनं विरुद्धम्। इह तावत् राजानः जनाः च परस्परं द्रुह्यन्ति।

पुरुराजः— तत् सर्वम् अस्माकम् आन्तरिकः विषयः। बाह्यशक्तेः तत्र हस्तक्षेपः असह्यः यवनराज ! पृथग्धर्माः, पृथग्भाषाभूषा अपि वयं सर्वे भारतीयाः। विशालम् अस्माकं राष्ट्रम्। तथाहि—

उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।
वर्षं तद् भारतं नाम भारती तत्र सन्ततिः।।

अलक्षेन्द्रः— अथ मे भारतविजयः दुष्करः।

पुरुराजः— न केवलं दुष्करः असम्भवोऽपि।

अलक्षेन्द्रः— (सरोषम्) दुर्विनीत, किं न जानासि, इदानीं विश्वविजयिनः अलक्षेन्द्रस्य अग्रे वर्तसे?

पुरुराजः— जानामि, किन्तु सत्यं तु सत्यम् एव यवनराज ! भारतीयाः वयं गीतायाः सन्देशं न विस्मरामः।

अलक्षेन्द्रः— कस्तावत् गीतायाः सन्देशः ?

पुरुराजः— श्रूयताम्।

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः।।

अलक्षेन्द्रः— (किमपि विचिन्त्य) अलं तव गीतया। पुरुराज ! त्वम् अस्माकं बन्दी वर्तसे। ब्रूहि कथं वर्तितव्यम्।

पुरुराजः— यथैकेन वीरेण वीरं प्रति।

अलक्षेन्द्रः— (पुरोः वीरभावेन हर्षितः) साधु वीर ! साधु ! नूनं वीर असि। धन्यः त्वं, धन्या ते मातृभूमिः। (सेनापतिम् उद्दिश्य) सेनापते !

सेनापतिः— सम्राट् !

अलक्षेन्द्रः— वीरस्य पुरुराजस्य बन्धनानि मोचय।

सेनापतिः— यत् सम्राट् आज्ञापयति।

अलक्षेन्द्रः— (एकेन हस्तेन पुरोः द्वितीयेन च आम्भीकस्य हस्तं गृहीत्वा) वीर पुरुराज ! सखे आम्भीक ! इतः परं वयं सर्वे समानमित्राणि, इदानीं मैत्रीमहोत्सवं सम्पादयामः।

(सर्वे निर्गच्छन्ति)

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए :

1. अलक्षेन्द्रः कः आसीत् ?
2. पुरुराजः कः आसीत् ?
3. वीरः केन पूज्यते ?
4. पुरुराजः केन सह युद्धम् अकरोत् ?
5. 'सिहस्तु सिंह एव, वने वा भवतु पञ्जरे वा' इति कः कथयति ?
6. अलक्षेन्द्रः पुरुराजेन सह केन कारणेन मैत्री इच्छति ?
7. पुरुराजः गीतायाः कं सन्देशम् अकथयत् ?
8. 'भारत विजयः न केवलं दुष्करः असम्भवोऽपि' इति कस्य उक्तिः ?
9. 'भारतम् एकं राष्ट्रम् इति वचनं विरुद्धम्' इति कस्य उक्तिः ?
10. अलक्षेन्द्रः सेनापतिं किम् आदिशत् ?

II. अनुवादात्मक प्रश्न :

निम्नलिखित श्लोकों का सन्दर्भसहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए –

(क) **सेनापतिः**–विजयतां सम्राट् .... अवसरं लभते।

(ख) बन्धनं मरणम् .... भावो हि वीरता।

(ग) **अलक्षेन्द्रः**–मैत्रीकरणेऽपि .... परस्परं द्रुह्यन्ति।

(घ) **पुरुराजः**–तत् सर्वम् .... तत्र सन्ततिः।

(ङ) उत्तरं यत् .... तत्र सन्ततिः।

(च) **अलक्षेन्द्रः**–अथ मे .... सन्देशं न विस्मरामः।

(छ) हतो वा .... युद्धाय कृतनिश्चयः।

III. व्याकरण–बोध :

निम्नलिखित शब्दों में विग्रह सहित समास-निर्देश कीजिए –

1. अधोलिखित सर्वनाम शब्दों में विभक्ति एवं वचन का निर्देश कीजिए –
   एषः, तव, तद्, त्वयि
2. निम्नलिखित शब्दों में से अव्यय पदों को अलग कीजिए –
   भारतवीरः, हन्तव्यः, तत्र, विशालम्, कथम्, नूनम्

IV. अनुभूति और अभिव्यक्ति :

1. राष्ट्रदोह और राष्ट्रप्रेम के भाव को स्पष्ट कीजिए।
2. प्रस्तुत अध्याय के आधार पर पुरुराज के देशभक्ति से सम्बन्धित गुणों को एक तालिका में अभिव्यक्त कीजिए।

शब्दार्थ

अलक्षेन्द्रस्य – सिकन्दर का। **बन्धनगतः** – कैद किया हुआ। **पञ्जरे** – पिजड़े में। **पराक्रमते** – पराक्रम करता है। **उभयत्र** – दोनों ओर। **वाचाल** – अधिक बोलने वाला, बड़बड़ करने वाला। **हन्तव्यः** – मारने योग्य। **अभिमतम्** – विचार। **जेतुम् इच्छसि** – जीतने की इच्छा करते हो। **हिमाद्रेः** – हिमालय के। **सन्ततिः** – सन्तान, प्रजा। **दुष्करः** – कठिन। **सरोषम्** – क्रोध के साथ। **दुर्विनीत** – दुष्ट, विनम्ररहित, उद्दण्ड, अशिष्ट। **हतः** – मारे जाने पर। **प्राप्स्यति** – प्राप्त करोगे। **भोक्ष्यसे** – भोग करोगे, राज्य करोगे। **कौन्तेय** – कुन्तीपुत्र अर्जुन। **कृतनिश्चयः** – व्यवहार करना चाहिए। **हर्षितः** – खुश होकर। **नूनम्** – निश्चय ही। **उद्दिश्य** – उद्देश्य करके, लक्ष्य करके। **मोचय** – मुक्त कर दो। **गृहीत्वा** – पकड़कर। **सम्पादयामः** – पूरा करेंगे।

■

पञ्चमः पाठः

देशभक्तः चन्द्रशेखरः

(देशभक्त चन्द्रशेखर)

(प्रथमं दृश्यम्)

(स्थानम्—वाराणसीन्यायालयः, न्यायाधीशस्य पीठे एकः दुर्धर्षः पारसीकः तिष्ठति, आरक्षकाः चन्द्रशेखरं तस्य सम्मुखम् आनयन्ति। अभियोगः प्रारभते। चन्द्रशेखरः पुष्टाङ्गः, गौरवर्णः, षोडशवर्षीयः किशोरः।)

आरक्षकः— श्रीमन् ! अयम् अस्ति चन्द्रशेखरः। अयं राजद्रोही। गतदिने अनेनैव असहयोगिनां सभायाम् एकस्य आरक्षकस्य दुर्जयसिंहस्य मस्तके प्रस्तरखण्डेन प्रहारः कृतः येन दुर्जयसिंहः आहतः।

न्यायाधीशः— (तं बालकं विस्मयेन विलोकयन्) रे बालक! तव किं नाम ?

चन्द्रशेखरः— आजादः (स्थिरीभूय)।

न्यायाधीशः— तव पितुः किं नाम ?

चन्द्रशेखरः— स्वतन्त्रः।

न्यायाधीशः— त्वं कुत्र निवससि ? तव गृहं कुत्रास्ति ?

चन्द्रशेखरः— कारागार एव मम गृहम्।

न्यायाधीशः— (स्वगतम्) कीदृशः प्रमत्तः स्वतन्त्रतायै अयम् ? (प्रकाशम्) अतीव धृष्टः, उद्दण्डश्चायं नवयुवकः। अहम् इमं पञ्चदश कशाघातान् दण्डयामि।

चन्द्रशेखरः— नास्ति चिन्ता।

(द्वितीयं दृश्यम्)

(ततः दृष्टिगोचरो भवतः कौपीनमात्रावशेषः, फलकेन दृढं बद्धः चन्द्रशेखरः, कशाहस्तेन चाण्डालेन अनुगम्यमानः, कारावासाधिकारी गण्डासिंहश्च।)

गण्डासिंहः– (चाण्डालं प्रति) दुर्मुख ! मम आदेशसमकालमेव कशाघातः कर्त्तव्यः। (चन्द्रशेखरं प्रति) रे दुर्विनीत युवक! लभस्व इदानीं स्वाविनयस्य फलम्। कुरु राजद्रोहम्। दुर्मुख ! कशाघातः एकः (दुर्मुखः चन्द्रशेखरं कशया ताडयति)।

चन्द्रशेखरः– जयतु भारतम्।

गण्डासिंहः– दुर्मुख ! द्वितीयः कशाघातः। (दुर्मुखः पुनः ताडयति)। ताडितः चन्द्रशेखरः पुनः पुनः 'भारतं जयतु' इति वदति। (एवं स पञ्चदशकशाघातैः ताडितः) यदा चन्द्रशेखरः कारागारात् मुक्तः बहिः आगच्छति, तदैव सर्वे जनाः तं परितः वेष्टयन्ति, बहवः बालकाः तस्य पादयोः पतन्ति, तं मालाभिः अभिनन्दयन्ति च।

चन्द्रशेखरः– किमिदं क्रियते भवद्भिः ? वयं सर्वे भारतमातुः अनन्यभक्ताः। तस्याः शत्रूणां कृते मदीयाः इमे रक्तबिन्दवः अग्निस्फुलिङ्गाः भविष्यन्ति।

('जयतु भारतम्' इति उच्चैः कथयन्तः सर्वे गच्छन्ति)

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए :

1. चन्द्रशेखरः कः आसीत् ?
2. चन्द्रशेखरः कथं न्यायालयम् आनीतः ?
3. न्यायाधीशः कः आसीत् ?
4. न्यायाधीशः प्रथमं चन्द्रशेखरं किम् अपृच्छत् ?
5. चन्द्रशेखरः स्वनाम किम् अवदत् ?
6. चन्द्रशेखरः स्वपितुः नाम किम् अकथयत् ?
7. चन्द्रशेखरः स्वगृहं किम् अवदत् ?
8. कः आसीत् गण्डासिंहः ?
9. चन्द्रशेखरं कः कशाघातेन ताडयति?
10. कशाघातेन ताडितः चन्द्रशेखरः किम् अवदत् ?

II. अनुवादात्मक प्रश्न

निम्नलिखित संस्कृत गद्यांशों का सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए –

(क) **आरक्षकः**–श्रीमन् ! अयम् .... मम गृहम्।

(ख) **चन्द्रशेखरः**–आजादः .... कशाघातान् दण्डयामि।

(ग) **गण्डासिंहः**–(चाण्डालं प्रति) दुर्मुख ! .... जयतु भारतम्।

(घ) **गण्डासिंहः**–दुर्मुख ! .... अभिनन्दयन्ति च।

III. व्याकरण–बोध :

निम्नलिखित शब्दों में विग्रह सहित समास-निर्देश कीजिए –

1. अधोलिखित शब्दों में संज्ञा शब्दों को चुनकर उसके प्रकार का निर्देश कीजिए –
   राजद्रोही, सभा, स्थिरीभूय, उद्दण्ड, नवयुवकः, गण्डासिंहः, रक्तबिन्दवः
2. निम्नलिखित शब्दों में समास बताइए –
   कशाघातः, कौपीनमात्रावशेषः, अनन्यभक्ताः, रक्तबिन्दवः

IV. अनुभूति और अभिव्यक्ति :

1. 'देशभक्तः चन्द्रशेखरः' पाठ के आधार पर चन्द्रशेखर आजाद की राष्ट्रीय-भावना पर एक निबन्ध लिखिए।
2. भारत को आजादी दिलाने वाले नवयुवक स्वतन्त्रता सेनानियों की एक सूची बनाइए।

शब्दार्थ

पीठे – आसन पर। **दुर्धर्षः** – प्रचण्ड, उग्र। **अभियोगः** – मुकदमा। **पुष्टाङ्गः** – हृष्ट–पुष्ट शरीर वाला। **विस्मयेन** – आश्चर्य से। **स्थिरीभूय** – स्थिर होकर। **स्वगतम्** – अपने मन में। **धृष्टः** – दुष्ट। **फलकेन** – हथकड़ी से। **लभस्व** – लो, प्राप्त करो। **कशा** – चाबुक। **वेष्टयन्ति** – घेरते हैं। **मदीयाः** – मेरे। **रक्तबिन्दवः** – खून की बूँदें। **अग्निस्फुलिङ्गाः** – आग की चिनगारियाँ।

■

षष्ठः पाठः

जीवन–सूत्राणि

(जीवन के सूत्र)

किंस्विद् गुरुतरं भूमेः किंस्विदुच्चतरं च खात्।
किंस्विद् शीघ्रतरं वातात् किंस्विद् बहुतरं तृणात्।।1।।
माता गुरुतरा भूमेः खात् पितोच्चतरस्तथा।
मनः शीघ्रतरं वातात् चिन्ता बहुतरी तृणात्।।2।।
किंस्वित् प्रवसतो मित्रं किंस्विन् मित्रं गृहे सतः।
आतुरस्य च किं मित्रं किंस्विन् मित्रं मरिष्यतः।।3।।
सार्थः प्रवसतो मित्रं भार्या मित्रं गृहे सतः।
आतुरस्य भिषक् मित्रं दानं मित्रं मरिष्यतः।।4।।
किंस्विदेकपदं धर्म्यम् किंस्विदेकपदं यशः।
किंस्विदेकपदं स्वर्ग्यम् किंस्विदेकपदं सुखम्।।5।।
दाक्ष्यमेकपदं धर्म्यम् दानमेकपदं यशः।
सत्यमेकपदं स्वर्ग्यं शीलमेकपदं सुखम्।।6।।
धान्यानामुत्तमं किंस्विद् धनानां स्यात् किमुत्तमम्।
लाभानामुत्तमं किं स्यात् सुखानां स्यात् किमुत्तमम्।।7।।
धान्यानामुत्तमं दाक्ष्यं धनानामुत्तमं श्रुतम्।
लाभानां श्रेय आरोग्यं सुखानां तुष्टिरुत्तमा।।8।।
किं नु हित्वा प्रियो भवति किन्नु हित्वा न शोचति।
किं नु हित्वार्थवान् भवति किन्नु हित्वा सुखी भवेत्।।9।।
मानं हित्वा प्रियो भवति क्रोधं हित्वा न शोचति।
कामं हित्वार्थवान् भवति लोभं हित्वा सुखी भवेत्।।10।।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए :

1. भूमेः गुरुतरं किम् अस्ति ?
2. खात् (आकाशात्) उच्चतरं किम् ?
3. वातात् शीघ्रतरं किम् अस्ति ?
4. तृणात् बहुतरं किम् अस्ति ?
5. आतुरस्य किं मित्रम् ?
6. मरिष्यतः मित्रं किमस्ति ?
7. गृहे सतः मित्रं किम् ?
8. धनानाम् उत्तमं धनं किम् अस्ति ?
9. किम् एकपदं धर्म्यम् ?
10. लाभानाम् उत्तमं किं स्यात् ?
11. किं हित्वा नरः प्रियो भवति ?
12. नरः किं हित्वा अर्थवान् भवति ?

II. अनुवादात्मक प्रश्न :

निम्नलिखित श्लोकों का सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए–

(क) किंस्विद् गुरुतरम् .... तृणात्।

(ख) माता गुरुतरा .... बहुतरी तृणात्।

(ग) सार्थः प्रवसतो .... मरिष्यतः।

(घ) दाक्ष्यमेकपदम् .... सुखम्।

(ङ) धान्यानामुत्तमम् .... किमुत्तमम्।

(च) धान्यानामुत्तमम् .... तुष्टिरुत्तमा।

(छ) किं नु हित्वा .... सुखी भवेत्।

(ज) मानं हित्वा .... सुखी भवेत्।

III. व्याकरण–बोध :

निम्नलिखित शब्दों में विग्रह सहित समास-निर्देश कीजिए –

1. निम्नलिखित शब्दों में अव्यय-पदों का चुनाव कीजिए और उनके अर्थ स्पष्ट कीजिए–
   किंस्विद्, दानम्, च, स्यात्, हित्वा, आरोग्यम्।
2. निम्नलिखित शब्दों (संज्ञा और सर्वनाम) के आधार पर वाक्य निर्मित कीजिए–
   माता, मित्रम्, किम्, आतुर, भिषक्।

IV. अनुभूति और अभिव्यक्ति :

'जीवन-सूत्राणि' पाठ के श्लोकों को चार्ट पेपर पर लिखिए और कण्ठस्थ भी कीजिए।

शब्दार्थ

किंस्विद् – कौन, क्या। **गुरुतरम्** – अधिक भारी या ऊँची। **खात्** – आकाश से। **वातात्** – हवा से। **प्रवसतः** – प्रवास के समय, विदेश में रहने वाले का। **आतुरस्य** – रोगी का। **सार्थः** – सहयात्री। **भिषक्** – वैद्‌य। **एकपदम्** – मुख्य स्थान (एकमात्र)। **दाक्ष्यम्** – योग्यता या कुशलता। **शील** – चरित्र, सदाचार। **श्रुतम्** – शास्त्रज्ञान। **आरोग्य** – स्वास्थ्य। **तुष्टिः** – सन्तुष्टि, सन्तोष। **हित्वा** – त्यागकर। **शोचति** – शोक करता है।

■

सप्तमः पाठः

केन किं वर्धते ?

(किससे क्या बढ़ता है ?)

सुवचनेन मैत्री,	इन्दुदर्शनेन समुद्रः।
शृङ्गारेण रागः,	विनयेन गुणः।
दानेन कीर्तिः,	उद्यमेन श्रीः।
सत्येन धर्मः,	पालनेन उद्यानम्।
सदाचारेण विश्वासः,	अभ्यासेन विद्या।
न्यायेन राज्यम्,	औचित्येन महत्त्वम्।
औदार्येण प्रभुत्वम्,	क्षमया तपः।
पूर्ववायुना जलदः,	लाभेन लोभः।
पुत्रदर्शनेन हर्षः,	मित्रदर्शनेन आह्लादः।
दुर्वचनेन कलहः,	तृणैः वैश्वानरः।
नीचसङ्गेन दुश्शीलता,	उपेक्षया रिपुः।
कुटुम्बकलहेन दुःखम्,	दुष्टहृदयेन दुर्गतिः।
अशौचेन दारिद्रयम्,	अपथ्येन रोगः।
असन्तोषेण तृष्णा,	व्यसनेन विषयः।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के संस्कृत में उत्तर दीजिए :

1. मैत्री केन वर्धते ?
2. श्रृंगारेण कः वर्धते ?
3. कीर्तिः केन वर्धते ?
4. विश्वासः केन वर्धते ?
5. अशौचेन किं वर्धते ?
6. विद्या केन वर्धते ?
7. असन्तोषेण का वर्धते ?
8. इन्दुदर्शनेन कः वर्धते ?
9. श्रीः केन वर्धते ?
10. लाभेन कः वर्धते ?
11. आह्लादः केन वर्धते ?
12. विषयः केन वर्धते ?
13. रिपुः कया वर्धते ?
14. क्षमया कः वर्धते ?

II. अनुवादात्मक प्रश्न :

निम्नलिखित संस्कृत गद्यांशों का सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए –

(क) सुवचनेन .... कलहः।

(ख) नीचसङ्गेन .... महत्त्वम्।

(ग) क्षमया .... विषयः।

III. अनुभूति और अभिव्यक्ति :

1. प्रस्तुत पाठ की शिक्षाओं को अपने जीवन में उतारिए।
2. 'केन किं वर्धते' पाठ के वाक्यों को स्लोगन रूप में चार्ट-पेपर लिखकर प्रदर्शित कीजिए।

शब्दार्थ

सुवचनेन – मधुर वचनों से। **श्रृंगारेण** – श्रृंगार से। **रागः** – प्रेम। **औदार्येण** – उदारता से। **प्रभुत्वम्** – प्रभुता । **पूर्ववायुना** – पूरब की हवा से (पुरवाई से)। **दुर्वचनेन** – कठोर वचन से (कटुवचन से)। **कलहः** – झगड़ा। **अशौचेन** – अपवित्रता से। **तृष्णा** – प्यास, इच्छा। **इन्दुदर्शनेन** – चन्द्रदर्शन से। **उद्यमेन** – परिश्रम से। **वैश्वानरः** – अग्नि। **अपथ्येन** – गलत खानपान से।

■

अष्टमः पाठः

प्रबुद्धो ग्रामीणः

(बुद्धिमान् ग्रामीण)

एकदा बहवः जनाः धूमयानम् (रेल) आरुह्य नगरं प्रति गच्छन्ति स्म। तेषु केचित् ग्रामीणाः केचिच्च नागरिकाः आसन्। मौनं स्थितेषु तेषु एकः नागरिकः ग्रामीणान् उपहसन् अकथयत् ''ग्रामीणाः अद्यापि पूर्ववत् अशिक्षिताः अज्ञाश्च सन्ति। न तेषां विकासः अभवत् न च भवितुं शक्नोति।'' तस्य तादृशं जल्पनं श्रुत्वा कोऽपि चतुरः ग्रामीणः अब्रवीत्, ''भद्र नागरिक! भवान् एव किञ्चित् ब्रवीतु यतो हि भवान् शिक्षितः बहुज्ञः च अस्ति।'' इदम् आकर्ण्य स नागरिकः सदर्पं ग्रीवाम् उन्नमय्य अकथयत्, ''कथयिष्यामि, परं पूर्वं समयः विधातव्यः।'' तस्य तां वार्त्तां श्रुत्वा स चतुरः ग्रामीण अकथयत्, ''भोः वयम् अशिक्षिताः भवान् च शिक्षितः, वयम् अल्पज्ञा भवान् च बहुज्ञः, इत्येवं विज्ञाय अस्माभिः समयः कर्त्तव्यः, वयं परस्परं प्रहेलिकां प्रक्ष्यामः। यदि भवान् उत्तरं दातुं समर्थः न भविष्यति तदा भवान् दशरुप्यकाणि दास्यति। यदि वयम् उत्तरं दातुं समर्थाः न भविष्यामः तदा दशरुप्यकाणाम् अर्धं पञ्चरुप्यकाणि दास्यामः।''

''आं, स्वीकृतः समयः'', इति कथिते तस्मिन् नागरिके स ग्रामीणः नागरिकम् अवदत्, ''प्रथमं भवान् एव पृच्छतु।'' नागरिकश्च तं ग्रामीणम् अकथयत्, ''त्वमेव प्रथमं पृच्छ'' इति। इदं श्रुत्वा स ग्रामीणः अवदत् ''युक्तम्, अहमेव प्रथमं पृच्छामि।''

अपदो दूरगामी च साक्षरो न च पण्डितः।
अमुखः स्फुटवक्ता च यो जानाति स पण्डितः।।

अस्या उत्तरं ब्रवीतु भवान्।

नागरिकः बहुकालं यावत् अचिन्तयत्, परं प्रहेलिकायाः उत्तरं दातुं समर्थः न अभवत्, अतः ग्रामीणम् अवदत्, अहम् अस्याः प्रहेलिकायाः उत्तरं न जानामि। इदं श्रुत्वा ग्रामीणः अकथयत्, यदि भवान् उत्तरं न जानाति, तर्हि ददातु दशरुप्यकाणि। अतः म्लानमुखेन नागरिकेण समयानुसारं दशरुप्यकाणि दत्तानि।

पुनः ग्रामीणोऽब्रवीत्, ''इदानीं भवान् पृच्छतु प्रहेलिकाम्।'' दण्डदानेन खिन्नः नागरिकः बहुकालं विचार्य न काञ्चित् प्रहेलिकाम् अस्मरत्, अतः अधिकं लज्जमानः अब्रवीत्, ''स्वकीयायाः प्रहेलिकायाः त्वमेव उत्तरं ब्रूहि।'' तदा स ग्रामीणः विहस्य स्वप्रहेलिकायाः सम्यक् उत्तरम् अवदत् 'पत्रम्' इति। यतो हि इदं पदेन विनापि दूरं याति, अक्षरैः युक्तमपि न पण्डितः भवति। एतस्मिन्नेव काले तस्य ग्रामीणस्य ग्रामः आगतः। स विहसन् रेलयानात् अवतीर्य स्वग्रामं प्रति अचलत्। नागरिकः लज्जितः भूत्वा पूर्ववत् तूष्णीम् अतिष्ठत्। सर्वे यात्रिणः वाचालं तं नागरिकं दृष्ट्वा अहसन्। तदा स नागरिकः अन्वभवत् यत् ज्ञानं सर्वत्र सम्भवति। ग्रामीणाः अपि कदाचित् नागरिकेभ्यः प्रबुद्धतराः भवन्ति।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए :

1. धूमयानम् आरुह्य नगरं प्रति के गच्छन्ति स्म ?
2. नागरिकः ग्रामीणान् उपहसन् किम् अकथयत् ?
3. कः प्रथमं प्रश्नम् अपृच्छत् ?

   अथवा

   प्रथमां प्रहेलिकां कः अपृच्छत् ?
4. प्रहेलिका का आसीत् ?
5. प्रहेलिकायाः उत्तरं किम् आसीत् ?
6. दण्डदानेन खिन्नः कः आसीत् ?
7. नागरिकः किमर्थं लज्जितः अभवत् ?
8. सर्वे यात्रिणः कं दृष्ट्वा अहसन् ?
9. नागरिकः किम् अन्वभवत् ?

II. अनुवादात्मक प्रश्न :

निम्नलिखित श्लोकों का सन्दर्भसहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए –

(क) एकदा बहवः जनाः .... समयः विधातव्यः।

(ख) तस्य तां वार्ताम् .... पञ्चरुप्यकाणि दास्यामः।

(ग) आं, स्वीकृतः समयः .... प्रथमं पृच्छामि।

(घ) अपदो .... स पण्डितः।।

(ङ) नागरिकः बहुकालं .... दशरुप्यकाणि दत्तानि।

(च) पुनः ग्रामीणोऽब्रवीत् .... प्रबुद्धतराः भवन्ति।

III. व्याकरण–बोध :

निम्नलिखित शब्दों में विग्रह सहित समास-निर्देश कीजिए –

1. निम्नलिखित शब्दों में से सर्वनाम शब्दों को चुनकर उनके भेद बताइए –
   ग्रामीणाः, श्रुत्वा, भवान्, समयः, अस्माभिः, अतिष्ठत्
2. अधोलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए –
   तादृशम्, कर्तव्यः, अर्धम्, परस्परम्, दृष्ट्वा, विहस्य, सर्वत्र

IV. अनुभूति और अभिव्यक्ति :

1. शिक्षित व्यक्ति की परिभाषा क्या है ?
2. नगर में निवास करने वाले लोग ग्रामीण जन से क्या अधिक प्रबुद्ध होते हैं, प्रस्तुत पाठ के आधार पर अभिव्यक्त कीजिए।

शब्दार्थ

धूमयानम् – रेलगाड़ी। **आरुह्य** – चढ़कर। **केचित्** – कुछ। **नागरिकः** – शहरी। **उपहसन्** – हँसते हुए। **जल्पनम्** – बकवाद। **आकर्ण्य** – सुनकर। **बहुज्ञः** – बहुत जानने वाले। **सदर्पम्** – अहंकार के साथ। **ग्रीवाम्** – गले को (गर्दन को)। **उन्नमय्य** – उठाकर। **समयः** – शर्त, **दातुम्** – देने में। **प्रहेलिका** – पहेली। **अपदः** – बिना पैर के। **दूरगामी** – दूर तक जाने वाला। **साक्षरः** – अक्षरयुक्त। **अमुखः स्फुटवक्ता** – बिना मुख के स्पष्ट कहने वाला। **पण्डितः** – ज्ञानी। **तर्हि** – तो। **खिन्न** – दुःखी। **विचार्य** – विचार करके। **विहस्य** – हँसकर। **पत्रम्** – चिट्ठी। **आगतः** – आ गया। **अवतीर्य** – उतरकर। **भूत्वा** – होकर। **तूष्णीम्** – शान्त। **कदाचित्** – कभी। **प्रबुद्धतराः** – अधिक जागरूक या बुद्धिमान्।

■

नवमः पाठः

अन्योक्तिविलासः

(अन्योक्तियों का सौन्दर्य)

नितरां नीचोऽस्मीति त्वं खेदं कूप ! कदापि मा कृथाः।
अत्यन्तसरसहृदयो यतः परेषां गुणग्रहीताऽसि।।1।।

नीर-क्षीर-विवेके हंसालस्यं त्वमेव तनुषे चेत्।
विश्वमिस्मन्नधुनान्यः कुलव्रतं पालयिष्यति कः।।2।।

कोकिल ! यापय दिवसान् तावद् विरसान् करीलविटपेषु।
यावन्मिलदलिमालः कोऽपि रसालः समुल्लसति।।3।।

रे रे चातक ! सावधानमनसा मित्र ! क्षणं श्रूयताम्।
अम्भोदा बहवो हि सन्ति गगने सर्वेऽपि नैतादृशाः।।
केचिद् वृष्टिभिरार्द्रयन्ति वसुधां गर्जन्ति केचिद् वृथा।
यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनं वचः।।4।।

न वै ताडनात् तापनाद् वह्निमध्ये
न वै विक्रयात् क्लिश्यमानोऽहमस्मि।
सुवर्णस्य मे मुख्यदुःखं तदेकं
यतो मां जना गुञ्जया तोलयन्ति।।5।।

रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातं
भास्वानुदेश्यति हसिष्यति पंकजालिः।
इत्थं विचिन्तयति कोशगते द्विरेफे
हा हन्त! हन्त! नलिनीं गज उज्जहार।।6।।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए :

1. कूपः किमर्थं दुःखम् अनुभवति ?
2. कविः हंसं किं कथयति ?
3. कविः कोकिलं किं बोधयति ?
4. कविः चातकं किं उपदिशति ?
5. सुवर्णस्य किं मुख्यं दुःखम् ?
6. द्विरेफे विचिन्तयति गजः किम् अकरोत् ?

II. अनुवादात्मक प्रश्न :

निम्नलिखित श्लोकों का सन्दर्भसहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए –

(क) नितरां नीचोऽस्मीति .... गुणग्रहीताऽसि।

(ख) नीर-क्षीर-विवेके .... पालयिष्यति कः।

(ग) कोकिल ! यापय .... समुल्लसति।

(घ) रे रे चातक .... दीनं वचः।

(ङ) न वै ताडनात् .... तोलयन्ति।

(च) रात्रिर्गमिष्यति .... उज्जहार।

III. व्याकरण–बोध :

निम्नलिखित शब्दों में विग्रह सहित समास-निर्देश कीजिए –

अत्यन्तसरसहृदयः, सावधानमनसा, वह्निमध्ये

IV. अनुभूति और अभिव्यक्ति :

1. कवि कूप से दुःखी न होने के लिए क्यों कहता है ?
2. सबके सामने याचना क्यों नहीं करनी चाहिए ?
3. 'अन्योक्तिविलास' पाठ के सम्पूर्ण श्लोकों को कण्ठस्थ कीजिए।
4. सदाचार पर एक निबन्ध लिखिए।

शब्दार्थ

नितराम् – अत्यधिक। **खेदम्** – दुःख। **मा कृथाः** – मत करो। **अत्यन्तसरसहृदयः** – अत्यधिक सरल हृदय वाले (अत्यधिक जल वाले)। **कुलव्रतम्** – कुल (वंश) का व्रत या मर्यादा। **करीलविटपेषु** – करील के पेड़ों पर। **यावत्** – जब तक। **अलिमालः** – भौंरे। **रसालः** – आम। **समुल्लसति** – सुशोभित होता है। **चातक** – चातक पक्षी (पपीहा)। **अम्भोदा** – बादल। **वृष्टिभिः** – वर्षा से। **आर्द्रयन्ति** – भिगोते हैं। **पुरतः** – सामने। **मा** – मत। **ब्रूहि** – कहो। **दीनं वचः** – दीनतापूर्ण वचन। **ताडनात्** – पीटने से। **वह्निमध्ये** – आग में। **विक्रियात्** – बेचने से। **क्लिश्यमानः** – दुःखी। **गुञ्जया सह** – रत्ती या गुञ्जा फल के साथ। **तोलयन्ति** – तौलते हैं या तुलना करते हैं। **गमिष्यति** – बीतेगी। **भास्वान्** – सूर्य। **पङ्कजालिः** – भौंरों का समूह। **इत्थम्** – इस प्रकार। **कोशगते** – कमल के पुट में बैठे हुए। **उज्जहार** – उखाड़ फेंका।

■

व्याकरण

शब्दरूप (सर्वनाम)

तद्= वह (पुँल्लिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्, तस्माद्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

तद् = वह (स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पञ्चमी	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
षष्ठी	तस्याः	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयोः	तासु

तद् = वह (नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	तत्, तद्	ते	तानि
द्वितीया	तत्, तद्	ते	तानि

तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्, तस्माद्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

युष्मद् = तुम

(तीनों लिङ्गों के लिए)

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्, त्वा	युवाम्, वाम्	युष्मान्, वः
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्, ते	युवाभ्याम्, वाम्	युष्यभ्यम्, वः
पञ्चमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव, ते	युवयोः, वाम्	युष्माकम्, वः
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

■

काव्य सौंदर्य के तत्त्व

रस

साहित्य में रस का अभिप्राय आनंद है। काव्य को पढ़ने या नाटक देखने से जो विशेष प्रकार का आनंद प्राप्त होता है, उसे रस कहा गया है। यह आनंद राग द्वेष से मुक्त होता है। इसमें व्यक्तिगत सुख दुःख के भाव नहीं होते। यह व्यक्तिगत संकीर्णताओं से मुक्त होता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हृदय की मुक्तावस्था को रस दशा कहा है। हृदय की इस मुक्तावस्था में जीवन का व्यक्तिगत अनुभव और आनंद मनुष्य मात्र का अनुभव और आनंद बन जाता है।

रस के अवयव या अंग

नाट्यशास्त्र के रचयिता **भरतमुनि** ने कहा है – **"विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पतिः"** अर्थात विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है। व्यभिचारी का दूसरा नाम 'संचारी' भी है। इस सूत्र में 'संयोग' से तात्पर्य स्थायी भाव का विभाव, अनुभाव और संचारी भाव से मिलना है तथा 'निष्पत्ति' शब्द का अर्थ रस की अनुभूति से है।

विभाव :

विभाव शब्द का अर्थ है – 'कारण', अर्थात् रसों को उदित और उद्दीप्त करने वाली सामग्री विभाव है। विभाव के प्रमुख दो अंग हैं – 1. आलंबन विभाव, 2. उद्दीपन विभाव

1. आलंबन विभाव : जिसका आलंबन या सहारा पाकर स्थायी भाव जागृत हैं, उसे आलंबन विभाव कहते हैं, जैसे– नायक, नायिका। आलंबन के भी दो भेद हैं– आश्रय और विषय।

(i) **आश्रय**–जिसके मन में 'रति' आदि भाव उत्पन्न होते हैं, उसे आश्रय कहते हैं।

(ii) **विषय**–जिसके लिए आश्रय के मन में भाव उत्पन्न हुआ है, वह विषय है।

उदाहरण – पुष्पवाटिका में राम के मन में सीता को देखकर जो रति भाव जागृत होता है, उसमें राम आश्रय और सीता विषय है।

2. उद्दीपन विभाव : जिन वस्तुओं और परिस्थितियों के कारण स्थायी भाव उद्दीप्त होने लगे, उसे उद्दीपन विभाव कहते हैं। इसके भी दो भेद हैं।

(i) **बाह्य** – प्रकृति वर्णन, चाँदनी रात, कोकिल कूजन, एकांत स्थल आदि।

(ii) **आलंबन की चेष्टाएँ** – जैसे – नायक–नायिका की चेष्टाएँ।

3. अनुभाव : अनु का अर्थ है – 'बाद में'। विभाव का स्थायी भाव से मिलने के उपरान्त जो भाव उत्पन्न होते हैं, उन्हें 'अनुभाव' कहा जाता है। ये अनुभाव उस व्यक्ति में उत्पन्न होते हैं, जो स्थायी भाव का आश्रय और विषय है। जैसे–पुष्प वाटिका में राम का सीता को देखकर चकित या अचंभित हो जाना तथा सीता का राम को एकटक देखते रह जाना। यहां चकित होना, एकटक देखना आदि अनुभाव है। इनकी संख्या चार है।

4. संचारी भाव : संचारी भाव 'स्थायी भावों' के सहायक हैं, जो अनुकूल परिस्थितियों में घटते–बढ़ते हैं। मन के चंचल विकारों को संचारी भाव कहते हैं। संचारी भाव आश्रय के मन में उत्पन्न होते हैं। संचारी भावों में संख्या तैतीस बताई गई है। उदाहरण के लिए, सीता को देखकर राम के मन में हर्षादि जो भाव उत्पन्न होंगे, उन्हें संचारी भाव कहेंगे।

5. स्थायी भाव : रस सिद्धान्त में स्थायी भाव से तात्पर्य 'प्रधान भाव' से है। रति, शोक, उत्साह आदि स्थायी भाव प्रत्येक मनुष्य में होते हैं, वे ही रस की अवस्था को प्राप्त करते हैं। स्थायी भावों की संख्या नौ मानी गई है। कुछ आचार्यों ने इनकी संख्या आठ और कुछ ने दस मानी है।

रस तथा उसके अवयव

रस	स्थायी	विभाव	अनुभाव	संचारी भाव
श्रृंगार हास्य करुण रौद्र वीर भयानक वीभत्स अद्‌भुत वत्सल शांत	रति हास शोक क्रोध उत्साह भय जुगुप्सा विस्मय वात्सल्य निर्वेद	1. आलंबन विभाव (i) आश्रय (ii) विषय 2. उद्‌दीपन विभाव (i) वाह्य (ii) आलंबन की चेष्टाएं	1. सात्विक, 2. कायिक, 3. वाचिक, 4. आहार्य (सात्विक के 8 भेद होते हैं) 1. स्तंभ, 2. स्वेद, 3. रोमांच, 4. स्वरभंग, 5. कंप, 6. विवर्णता, 7. अश्रु, 8. प्रलाप	संचारी भाव की संख्या 33 हैं– निर्वेद, गर्व, दैन्य, श्रम, मद, मोह, जड़ता, उग्रता, विबोध, स्वप्न, अपस्मार, आवेग, मरण, आलस्य, अमर्ष, निद्रा, अवहित्था, उत्सुकता, उन्माद, शंका, स्मृति, मति, व्याधि, संत्रास, लज्जा, हर्ष, असूया, विषाद, धृति, चपलता, ग्लानि, चिंता, विर्तक

(1) हास्य रस : जब साधारण से अलग व्यक्ति, वस्तु, विचित्र, वेश–भूषा, शारीरिक चेष्टाओं और व्यवहार को देखकर विनोद भाव का संचार हो तो उसे हास्य रस कहते हैं। इसका स्थायी भाव 'हास' है। इसका मूल उद्देश्य चित्त को प्रसन्न करने वाला होता है; चोट पहुँचाने वाला नहीं।

उदाहरण : तेहिं समाज बैठे मुनि जाई। हृदय रूप अहमिति अधिकाई।।
तहँ बैठे महेश गन दोऊ। विप्र वेस गति लखइ न कोऊ।।
सखी संग दै कुँवर तब चलि जनु राज–मराल।
देखत फिरइ महीप सब कर सरोज जयमाल।।
जेहि दिसि नारद बैठे फूली। सो दिसि तेहि न विलोकी भूली।।
पुनि–पुनि मुनि उकसहिं अकुलाहीं। देखि दसा हर–गन मुसकाहीं।।

उक्त पंक्ति में **आलंबन**–नारद, **आश्रय**–हर–गण, **स्थायी भाव** – हास **उद्दीपन**–नारद का बंदर रूप, उनका फूलकर खुश होकर उठना–बैठना, उकताना, **अनुभाव**–मुस्कुराना **संचारी भाव** –चपलता आदि के संयोग से हास्य रस की पुष्टि होती है।

उदाहरण : विंध्य के वासी उदासी तपोव्रतधारी महाबिनु नारि दुखारे।
गौतमतीय तरी, तुलसी, सो कथा सुनि भे मुनिवृंद सुखारे।।
ह्वैहै शिला सब चंद्रमुखी परसे पद–मंजुल–कंज तिहारे।
कींहीं भली रघुनायक जू करुणा करि कानन को पगु धारे।।

(2) करुण रस : इष्ट वस्तु की हानि, अनिष्ट की आशंका, प्रेम पात्र का चिर–वियोग, धनहानि आदि से जो क्षोभ उत्पन्न होता है वहाँ विभाव, अनुभाव, संचारी भाव के संयोग से करुण रस की निष्पत्ति होती है। इसका स्थायी भाव शोक है।

उदाहरण– मात को मोह, ना द्रोह, विमात को सोच न तात के गात दहे को,
प्रान को छोभ न बंधु बिछोभ न राज को लोभ न मोद रहे को।
एते पै नेक न मानत श्रीपति एंते मैं सीय वियोग सहे को।।
तारन–भूमि मैं राम कह्यो, मोहि सोच विभीषन भूप कहे को।।

यहाँ पर लक्ष्मण के लिए राम का विलाप करने वाले राम **आश्रय** हैं, लक्ष्मण **आलंबन** हैं, लक्ष्मण का अचेत शरीर तथा उनका गुण कथन आदि **उद्दीपन** है। मति, स्मृति, विषाद इत्यादि **संचारी** भाव है तथा राम का विलाप करना **अनुभाव** है। इसलिए यहाँ पर करुण रस की पुष्टि होती है।

अन्य उदाहरण

जो भूरि भाग्य भरी विदित थी अनुपमेय सुहागिनी।
हे हृदय वल्लभ! हूँ वही अब मैं यहाँ हतभागिनी।।
जो साथिनी होकर तुम्हारी थी अतीव सनाथिनी।
है उसी मुझ–सी जगत् में और कौन अनाथिनी।।

छंद

छंदशास्त्र के प्रणेता आचार्य पिंगल को माना जाता है। वर्णों या मात्राओं के नियमित संख्या के विन्यास से निर्मित 'बंध' को छंद कहते हैं। काव्य के प्रवाह को सुव्यस्थित, संगीत से युक्त, लय से युक्त करने का कार्य छंद करता है। सामान्यतः यति, गति, लय से समन्वित पद्य का रूप छंद है। छंद के द्वारा रचना बिखरने से बच जाती है।

छंद के घटक (तत्व)

1. यति (विराम) – यति का अर्थ है – रुकना। छंद के प्रवाह या लय को बनाये रखने के लिए जहाँ रुकना आवश्यक होता है, वहाँ रुकना ही यति है।

2. गति – गति यति का विलोम शब्द है। बिना रुके छंद का पाठ करने से जो गति या प्रवाह निर्मित होता है, उसी प्रवाह को गति कहते हैं।

3. लय – गति और यति के समुचित प्रयोग या समन्वय से छंद में जो गुण उत्पन्न होता है, उसे लय कहते हैं।

छंद के भेद

मात्रा तथा वर्ण के आधार पर छंद के दो भेद हैं –

(1) मात्रिक छंद – मात्रा के आधार पर जो छंद बनते हैं उन्हें मात्रिक छंद कहते हैं, जैसे – दोहा, चौपाई आदि। मात्रिक छंद मात्राओं की गणना की जाती है।

(2) वार्णिक छंद – वर्णों के आधार पर जो छंद बनते हैं, उन्हें वर्णिक छंद कहते हैं, जैसे – कवित्त, सवैया आदि। वर्णिक छंदों में वर्णों की गणना की जाती है।

वैसे तो छंद दो ही प्रकार के होते हैं लेकिन छायावाद के दौर में महाप्राण निराला ने कविता को छंद के बंधन से मुक्त करने का विचार दिया तत्पश्चात मुक्त छंद की अवधारणा आई।

मात्रा

किसी भी वर्ण के उच्चारण में लगने वाला समय मात्रा कहलाता है। ह्रस्व वर्ण के उच्चारण में जो समय लगता है, वह एक मात्रा होती है। दीर्घ वर्ण के उच्चारण में लगने वाले समय की दो मात्रा होती है। जैसे – 'क' में एक 'का' में दो मात्रा।

लघु और गुरु

छंद की भाषा में वर्णों को ह्रस्व और दीर्घ न कहकर 'लघु' और 'गुरु' कहते हैं। लघु के लिए (।) तथा दीर्घ के लिए (ऽ) संकेत से प्रकट होते हैं।

लघु, गुरु तथा मात्राओं की गणना के नियम –

लघु, गुरु तथा मात्रा के लिए निम्नलिखित नियम है –

1. अ, इ, उ, ऋ – ये स्वर लघु हैं तथा इसकी एक मात्रा होती है।
2. आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ – ये स्वर गुरु हैं, अतएव इसकी दो मात्राएँ मानी जाती हैं।
3. संयुक्ताक्षर के आरंभ में यदि आधा वर्ण हो, तो उसकी मात्रा नहीं गिनी जाती है। जैसे – व्यवहार में 'व्य' को एक मात्रा ही माना जाता है।
4. यदि किसी शब्द के बीच या अंत में संयुक्ताक्षर आता है तो संयुक्ताक्षर के पहले वाला वर्ण गुरु माना जाता है, जैसे – रक्त, भक्त। रक्त, भक्त में संयुक्ताक्षर है – 'क्त'। अतएव इसके पहले के वर्ण भ, र गुरु माने जाएँगे।
5. अनुस्वार और विसर्ग के पहले यदि लघु वर्ण हो, तो उसे गुरु माना जाएगा जैसे – अंत, बसंत। इन शब्दों में 'अ' और 'स' के बाद अनुस्वार आया है, इसीलिए अनुस्वार के पहले वर्ण को गुरु माना जायेगा।
6. किसी लघु वर्ण के बाद अनुस्वार के स्थान पर, यदि चंद्रबिंदु हो तो वह लघु वर्ण गुरु नहीं माना जाएगा। जैसे – 'हंस' में 'ह' के बाद अनुस्वार है, तो यह 'ह' तो गुरु माना जायेगा पर 'हँसी' में 'ह' के बाद चंद्रबिंदु है, तो यह गुरु नहीं माना जाएगा।
7. हलंत के पहले का लघु वर्ण भी गुरु माना जाएगा। जैसे – श्रीमन् में हलंत न् के पहले 'म' है, यह 'म' गुरु होगा। क्योंकि 'न्' में स्वर नहीं है अतः 'न' की मात्रा नहीं गिनी जा सकती।

गण

तीन वर्णों के समूह को 'गण' कहा जाता है। छंदों में आठ प्रकार के गणों का प्रयोग किया जाता है। इन गणों को समझने के लिए छंदःशास्त्र में एक सूत्र है–

"यमाताराजभानसलगा"

इस सूत्र से आठ गणों का स्वरूप ज्ञात होता है यथा –

गण का नाम	उदाहरण	लघु गुरू का क्रम	मात्राएं	सार्थक उदाहरण
1. यगण	यमाता	।ऽऽ	5	यशोदा
2. मगण	मातारा	ऽऽऽ	6	मायावी
3. तगण	ताराज	ऽऽ।	5	तालाब
4. रगण	राजभा	ऽ।ऽ	5	रामजी
5. जगण	जभान	।ऽ।	4	गणेश
6. भगण	भानस	ऽ।।	4	भारत
7. नगण	नसल	।।।	3	नगद
8. सगण	सलगा	।।ऽ	4	सरिता

छंद का विभाजन

चरण (पाद) – छंद में प्रायः चार चरण होते हैं। इनको 'पद' या 'पाद' भी कहते हैं। दूसरे तथा चौथे चरण को सम चरण कहते हैं, पहले और तीसरे चरण को विषम चरण कहते हैं। कहीं–कहीं पर छः चरण भी मिलते हैं।

सम, अर्द्धसम तथा विषम छंद

(1) **सम छंद** – जिस छंद के चारों चरण में समान मात्रा होती है, उसे सम छंद कहते हैं, जैसे – चौपाई।

(2) **अर्द्धसम छंद** – जब किसी छंद के पहले और तीसरे में तथा दूसरे और चौथे में मात्राएं एक समान होती है, वहाँ अर्द्धसम छंद होता है, जैसे – दोहा, सोरठा।

(3) **विषम छंद** – जब किसी छंद के चारों या छः चरणों में मात्राएं अलग–अलग रहती है, तो वहाँ विषम छंद होता है, जैसे – छप्पय, कुण्डलियाँ।

अंत्यानुप्रास या तुक – किसी छंद के प्रत्येक चरण के अंत में एक सी ध्वनि निकलना अंत्यानुप्रास या 'तुक' कहलाता है।

(1) चौपाई– यह सम मात्रिक छंद है। इसमें चार चरण होते हैं तथा प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं। चरण के अंत में जगण (।ऽ।) और तगण (ऽऽ।) का आना वर्जित है।

उदाहरण–

ऽ।। ।। ।। ।।। ।ऽऽ । । । । ऽ । ।।। ।। ऽ ऽ

बंदउँ गुरु पद पदुम परागा। सुरुचि सुबास सरस अनुरागा।।

।।। ऽ।।। ऽ।। ऽ ऽ ।।। ।।। ।। ।। ।। ऽऽ

अमिय मूरिमय चूरन चारू। समन सकल भव रुज परिवारू।।

अन्य उदाहरण

गुरु पद रज मृदु मंजुल अंजन। नयन अमिअ दृग दोष बिभंजन।।
तेहिं करि बिमल बिबेक बिलोचन। बरनउँ रामचरित भवमोचन।।

(2) दोहा– यह अर्धसम मात्रिक छंद है। इस छंद के प्रथम एंव तृतीय चरण में 13–13 मात्राएँ होती है तथा दूसरे एवं चौथे चरण में 11–11 मात्राएँ होती हैं। दोहा के विषम चरणों (पहले व तीसरे) के प्रारंभ में जगण (।ऽ।) नहीं होना चाहिए। सम चरणों (दूसरे और चौथे) के अंत में दो वर्णों में पहला गुरु (ऽ) फिर अंतिम वर्ण लघु (।) होना चाहिए।

ऽ। ऽ। ।। ऽ। ।। ऽ। ऽ।ऽ ऽ।

राम नाम मणि दीप धरु, जीह देहरी द्वार।

।।ऽ ऽ।। ऽ ।।। ऽ ऽ।। । । ऽ ।

तुलसी भीतर बाहिरहु, जो चाहसि उजियार।।

अन्य उदाहराण

श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मन मुकुर सुधार।
बरनौ रघुबर विमल जस, सो दायक फल चार।।

(3) सोरठा – यह अर्द्ध–सम मात्रिक छंद होता है, इसके पहले और तीसरे चरण में 11–11 मात्राएँ तथा दूसरे और चौथे चरण में 13–13 मात्राएँ होती हैं। यह दोहा छंद का एकदम उल्टा रूप होता है।

।। ऽ।। ऽ ऽ। ऽ। ।ऽऽ ।।।ऽ

सुनि केवट के बैन, प्रेम लपेटे अटपटे।

।। ऽ ।। ऽ ऽ। ।।। ऽ। ऽ ।।। ।।

बिहँसे करुणायैन, चितइ जानकी लखन तन।।

(4) रोला – यह एक सममात्रिक छंद है। इसमें चार चरण होते हैं, प्रत्येक चरण में 11–13 के विराम से 24 मात्राएँ होती हैं: जैसे –

ऽ।। ऽ ऽ ।ऽ ।ऽ ।। ऽ ।। ऽ।।
मूलन ही की जहाँ, अधोगति केसव गाइय।
होत हुतासन घूम, नगर एकै गलिनाइय।।
दुर्गति दुर्जन ही जो, कुटिल गति सरितन ही में।
औ फल को अभिलाष, प्रकट कुल कवि के जी में।।

अलंकार

अलंकार शब्द का अर्थ है – आभूषण। यह दो शब्दों से मिलकर बना है– अलम् (भूषण) + कार (करने वाला) अर्थात् भूषण या शोभा बढ़ाने वाला। काव्य में जो तत्त्व शोभा या सौंदर्य उत्पन्न करते है वे अलंकार कहलाते हैं। अलंकार संप्रदाय के प्रतिपादक आचार्य दंडी ने अलंकार की परिभाषा इस प्रकार दी है **"काव्य शोभाकारान् धर्मान् अलंकारान् प्रचक्षते।"** काव्य की शोभा करने वाले धर्मों को अलंकार कहते हैं।

अलंकार दो प्रकार के होते हैं (i) शब्दालंकार (ii) अर्थालंकार।

(i) शब्दालंकार – जब शब्दों के माध्यम से काव्य में चमत्कार उत्पन्न होता है, उसे शब्दालंकार कहते हैं।

(ii) अर्थालंकार – जब अर्थ के माध्यम से काव्य में चमत्कार उत्पन्न होता है, वहाँ अर्थालंकार होता है।

(1) उपमा : जहाँ उपमेय की तुलना उपमान से की जाती है वहाँ उपमा अलंकार होता है। उपमा अलंकार के चार अंग हैं –

(क) उपमेय या प्रस्तुत : जिसकी तुलना की जाती है, उसे 'उपमेय' कहते हैं।

(ख) उपमान या अप्रस्तुत : जिससे तुलना की जाती है, उसे 'उपमान' कहते हैं।

(ग) साधारण धर्म : जिस गुण अथवा धर्म के कारण उपमेय तथा उपमान से समानता दिखाई जाती है, उसे 'साधारण धर्म' कहते हैं।

(घ) वाचक : जिस शब्द के माध्यम से उपमेय तथा उपमान की समता को बताया जाता है, उसे वाचक कहते हैं। जैसे – सम, सरिस इत्यादि।

उदाहरण : पीपर पात सरिस मन डोला।

उक्त पक्तियों में मन की चंचलता की तुलना पीपल के पत्ते से की गयी है। जिसमें मन उपमेय, पीपल का पत्ता उपमान, चंचलता साधारण धर्म तथा सरिस वाचक के संयोग से उपमा अंलकार की निष्पत्ति होती है।

हाय! फूल–सी कोमल बच्ची हुई राख की ढेरी।

(2) रूपक : जहाँ उपमेय को उपमान पर सीधा आरोपित कर दिया जाता है। वहाँ रूपक अलंकार होता है उदाहरण :

1. चरण–कमल बंदौं हरि राई।
   उक्त पंक्ति में चरण उपमेय है जिसे प्रसिद्ध उपमान कमल पर आरोपित कर दिया गया है। इसलिए यहाँ पर रूपक अलंकार है।

अन्य उदाहरण

2. उदित उदय गिरि मंच पर रघुवर बाल पतंग।
   विकसे संत सरोज सब, हरषे लोचन भृंग।।

(3) उत्प्रेक्षा : जहाँ उपमेय में उपमान की सम्भावना व्यक्त की जाती है, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।

उदाहरण : सोहत ओढ़े पीत–पट स्याम सलौने गात।
मनो नीलमनि सैल पर आतप पर्‌यो प्रभात।।

उक्त पंक्तियों में श्रीकृष्ण के पीले वस्त्र में सूर्य की पीली रोशनी की संभावना व्यक्त की गई है, इसलिए यहाँ पर उत्प्रेक्षा अलंकार है।

चमचमात चंचल नयन बिच घूँघट पट झीन।
मानहुँ सुर–सरिता विमल जल उछरत जुग मीन।।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए–

1. 'काव्य की आत्मा' किसे कहा गया है?
   (क) अलंकार (ख) रस (ग) छंद (घ) इनमें से कोई नहीं
2. 'रस' के कितने अंग हैं ?
   (क) पाँच (ख) चार (ग) तीन (घ) इनमें से कोई नहीं
3. भरत मुनि के अनुसार कुल कितने रस हैं ?
   (क) 10 (ख) 9 (ग) 8 (घ) 7
4. सहृदय को रस प्राप्त होता है–
   (क) विभाव से (ख) स्थायी भाव से (ग) अनुभाव से (घ) उपर्युक्त सभी से
5. विभाव कितने प्रकार के होते है ?
   (क) चार (ख) पाँच (ग) तीन (घ) दो

6. हास्य रस का स्थायी भाव है–
(क) हास (ख) शोक (ग) रति (घ) इनमें से कोई नहीं

7. करुण रस का स्थायी भाव है–
(क) रति (ख) शोक (ग) हास (घ) इनमें से कोई नहीं

8. ''विंध्य के वासी उदासी तपोव्रतधारी महा बिनु नारि दुखारे'' पंक्ति में कौन सा रस है?
(क) करुण रस (ख) हास्य रस (ग) श्रृंगार रस (घ) इनमें से कोई नहीं

9. वर्ण के उच्चारण काल में लगने वाले समय को कहा जाता है–
(क) मात्रा (ख) चरण (ग) यति (घ) इनमें से कोई नहीं

10. मात्रा के भेद के आधार पर वर्ण कितने प्रकार के होते हैं ?
(क) चार (ख) तीन (ग) दो (घ) इनमें से कोई नहीं

11. 'छन्द' कितने प्रकार के होते हैं ?
(क) चार (ख) तीन (ग) दो (घ) इनमें से कोई नहीं

12. 'दोहा' का ठीक उल्टा छंद कौन सा है ?
(क) चौपाई (ख) सोरठा (ग) रोला (घ) इनमें से कोई नहीं

13. दोहा छंद में कितने चरण होते हैं ?
(क) चार (ख) तीन (ग) दो (घ) इनमें से कोई नहीं

14. दोहा के पहले एवं तीसरे चरण में मात्रा होती है–
(क) 13–11 मात्राएँ (ख) 13–13 मात्राएँ (ग) 11–13 मात्राएँ (घ) इनमें से कोई नहीं

15. सोरठा के पहले चरण में मात्राएँ होती हैं–
(क) 13–11 मात्राएँ (ख) 11–13 मात्राएँ (ग) 11–11 मात्राएँ (घ) इनमें से कोई नहीं

16. दोहा छन्द के दूसरे और चौथे चरण में कितनी मात्राएँ होती हैं–
(क) 11 मात्राएँ (ख) 12 मात्राएँ (ग) 13 मात्राएँ (घ) 16 मात्राएँ

17. अलंकार के कितने भेद होते हैं ?
(क) दो (ख) तीन (ग) चार (घ) पाँच

18. उपमान और उपमेय के अभेद को कहते हैं–
(क) उपमा अलंकार (ख) रूपक अलंकार (ग) उत्प्रेक्षा अलंकार (घ) भ्रांतिमान अलंकार

19. उपमेय में उपमान की संभावना को क्या कहते हैं ?
(क) उपमा अलंकार (ख) रूपक अंलकार (ग) उत्प्रेक्षा अलंकार (घ) दृष्टांत अलंकार

20. जहाँ उपमेय में उपमान की समानता प्रकट की जाए वहाँ कौन सा अलंकार होता है ?
(क) उत्प्रेक्षा अलंकार (ख) उपमा अलंकार (ग) रूपक अलंकार (घ) संदेह अलंकार

21. निम्नलिखित में से अर्थालंकार है–
(क) श्लेष अलंकार (ख) यमक अलंकार (ग) अनुप्रास अलंकार (घ) रूपक अलंकार

22. अलंकार का शाब्दिक अर्थ है–
(क) वस्त्र (ख) वर्ण (ग) आभूषण (घ) विशिष्ट

23. ''चरण–कमल बंदौ हरि राई'', इस पंक्ति में कौन सा अलंकार है ?
(क) उपमा अलंकार (ख) रूपक अलंकार
(ग) श्लेष अलंकार (घ) अतिशयोक्ति अलंकार

24. नीचे दिये गये विकल्पों में से कौन सा रूपक अलंकार है ?
(क) इसका मुख चन्द्रमा के समान है (ख) चन्द्रमा इसके मुख के समान है
(ग) नायिका का चन्द्रमा रूपी मुख (घ) यह मुख है अथवा चन्द्रमा

25. रूपक अलंकार होता है–
(क) उपमेय उपमान की समानता में (ख) उपमेय उपमान के अभेद में
(ग) उपमेय से उपमान की विशिष्टता में (घ) उपमेय से उपमान की हीनता में

26. ''मुख बाल रवि सम लाल होकर, ज्वाल–सा बोधित हुआ'', प्रस्तुत पंक्ति में कौन सा अलंकार है ?
(क) लाटानुप्रास अलंकार (ख) उपमा अलंकार (ग) श्लेष अलंकार (घ) रूपक अलंकार

27. ''पायो जी मैंने राम रतन धन पायो'', पंक्ति में कौन सा अलंकार है ?
(क) रूपक अलंकार (ख) यमक अलंकार (ग) श्लेष अलंकार (घ) उपमा अलंकार

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. रस कितने प्रकार के होते हैं ?
2. 'करुण रस' का स्थायी भाव क्या है ?
3. 'हास्य रस' का स्थायी भाव क्या है ?
4. 'रस' को कितने भागों में बांटा गया है ?
5. छंद कितने प्रकार के होते हैं ?
6. 'छंद' पढ़ते समय आने वाले विराम को क्या कहते हैं ?
7. अर्धसम मात्रिक छंद का उदाहरण बताइए।
8. जिस छंद में वार्णिक या मात्रिक प्रतिबन्ध न हो, वह छंद क्या कहलाता है ?
9. अलंकार के कितने भेद होते हैं ?
10. शब्दालंकार का एक उदाहरण दीजिए।
11. अर्थालंकार का एक उदाहरण दीजिए।
13. जहाँ उपमेय में उपमान की समानता प्रकट की जाए, वहाँ कौन सा अलंकार होता है ?

समास

समास का अर्थ है– संक्षेप। समास शब्द सम् उपसर्ग पूर्वक अस् धातु से घञ् प्रत्यय लगने से बना है। जब दो या दो से अधिक शब्दों की विभक्तियों (परसर्ग) का लोप करके एक शब्द बना दिया जाता है, तो यह जोड़ने की प्रक्रिया ही समास कही जाती है। एक शब्द बना देने (संक्षेप कर देने) पर भी अर्थ में (भाव में) कोई परिवर्तन नहीं होता है।

जैसे– गृहस्य स्वामी = गृहस्वामी।

गृह का स्वामी = गृहस्वामी।

यहाँ ऊपर संस्कृत के उदाहरण में स्य (षष्ठी विभक्ति का सूचक प्रत्यय) का लोप किया गया है। उसी प्रकार हिंदी के उदाहरण में 'का' परसर्ग का लोप किया गया है।

इसी प्रकार दो से अधिक शब्दों को मिलाने का उदाहरण भी देखा जा सकता है।

रामः च लक्ष्मणः च भरतः च शत्रुघ्नः च।

रामलक्ष्मणभरतशत्रुघ्नाः।

'समस्त पद' (मिले हुए पद) को तोड़ने की प्रक्रिया 'विग्रह' कहलाती है।

समास के भेद – समास के मुख्यतः चार भेद हैं :

1. अव्ययीभाव समास
2. तत्पुरुष समास
3. बहुव्रीहि समास
4. द्वंद्व समास

तत्पुरुष समास के दो उप भेद हैं–

(क) द्विगु समास (ख) कर्मधारय समास

कर्मधारय समास

कर्मधारय समास तत्पुरुष समास का ही भेद है–**तत्पुरुष भेदः कर्मधारयः।** तत्पुरुष समास में उत्तर पद अर्थात् दूसरे पद के अर्थ की प्रधानता होती है। क्योंकि उत्तर पद विशेष्य होता है और पूर्व (पहला) पद विशेषण। विशेषण विशेष्य की विशेषता बताता है, अतः वह विशेष्य की अपेक्षा कम महत्त्व का होता है।

तत्पुरुष समास के दो भेद होते हैं– व्यधिकरण तत्पुरुष तथा समानाधिकरण तत्पुरुष। व्यधिकरण तत्पुरुष समास में पहले और दूसरे पद की विभक्तियाँ अलग-अलग होती हैं। समानाधिकरण तत्पुरुष में दोनों की एक ही विभक्ति हुआ करती है। जैसे 'राज्ञः पुरुषः'। इस उदाहरण में दोनों पदों में अलग-अलग विभक्ति (पहले पद में षष्ठी तथा दूसरे पद में प्रथमा) लगी है। अतः यह व्यधिकरण तत्पुरुष (षष्ठी तत्पुरुष समास) का उदाहरण है। इसी प्रकार समानाधिकरण तत्पुरुष का उदाहरण देखा जा सकता है– नीलकमलम्, जिसके दोनों पदों में एक समान विभक्ति (प्रथमा) लगी है। यही समानाधिकरण तत्पुरुष 'कर्मधारय समास' कहा जाता है।

कर्मधारय समास के निम्नलिखित भेद हैं–

(क) विशेषण पूर्वपद कर्मधारय– इस कर्मधारय समास में पहला पद विशेषण होता है तथा दूसरा पद विशेष्य होता है। जैसे–

समस्त पद	**विग्रह**
नीलकमल	नीला है जो कमल।
कृष्णसर्प	काला है जो साँप।
पीताम्बर	पीला है जो वस्त्र।
परमानन्द	परम है जो आनन्द।
महाजन	महान् है जो जन।
नीलगाय	नीली गाय।
श्वेताम्बर	श्वेत है जो कपड़ा।
महाराजा	महान् है जो राजा।

(ख) विशेषण उत्तरपद कर्मधारय– हिन्दी भाषा में विशेषण कभी-कभी बाद में भी आते हैं। जैसे–

पुरुषोत्तम	= पुरुषों में जो उत्तम।
मुनिवर	= मुनियों में वर (श्रेष्ठ)।
नराधम	= नरों में है जो अधम।

(ग) विशेषण उभयपद कर्मधारय– इस प्रकार के कर्मधारय समास में दोनों पद विशेषण होते हैं। जैसे–

कृष्णश्वेत = कृष्ण और श्वेत।

अन्य उदाहरण– लाल-पीला, श्यामसुन्दर, शुद्धाशुद्ध इत्यादि।

(घ) उपमान पूर्वपद कर्मधारय– उपमान वह वस्तु होती है, जिससे तुलना की जाती है तथा जिसकी तुलना की जाती है, वह वस्तु उपमेय कहलाती है। जैसे– चन्द्रमा के समान सुन्दर मुख है। इस वाक्य में चन्द्रमा उपमान है और मुख उपमेय।

इस प्रकार के समास में उपमान वाचक पदों का समानधर्म के वाचक शब्दों के साथ समास होता है। उपमानपूर्वपद कर्मधारय में उपमान का पहले प्रयोग किया जाता है।

जैसे 'घन इव श्यामः' = घन की तरह श्याम वर्ण (रंग) के। अर्थात् कृष्ण भगवान्। यहाँ घन (बादल) उपमान है, उसका श्याम (साँवलापन) पद जो समान धर्म है, उसके साथ समास होता है–घनश्यामः।

समानधर्म उसे कहते हैं, जो उपमेय और उपमान दोनों में स्थित हो। बादल भी श्यामवर्ण है और उपमेय कृष्ण भी श्यामवर्ण के हैं। अतः 'श्याम' यह पद समानधर्म (सामान्य वचन) का वाचक है।

(ङ) उपमान उत्तरपद कर्मधारय– इस प्रकार के कर्मधारय समास में उपमेय और उपमान दोनों का प्रयोग होता है तथा उपमान पहले न प्रयुक्त होकर बाद में आता है।

जैसे– मुखकमल = कमल के समान मुख।
पुरुषव्याघ्र = बाघ के समान वीर पुरुष।

इसी प्रकार 'चरणकमल', 'मुखचंद्र', 'नरसिंह', 'करकमल' आदि शब्द देखे जा सकते हैं।

द्विगु समास

द्विगु समास मूलतः तत्पुरुष समास का ही भेद है। समानाधिकरण तत्पुरुष समास कर्मधारय समास कहलाता है और कर्मधारय समास का भेद द्विगु है–**'कर्मधारय भेदो द्विगुः।'** वस्तुतः एक अन्य स्थल पर **'द्विगुश्च'** सूत्र द्वारा स्पष्ट कहा गया है कि द्विगु समास भी तत्पुरुष समास है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि द्विगु समास में भी तत्पुरुष समास की मूल विशेषता उत्तर पद की प्रधानता रहती है। चूँकि द्विगु समास कर्मधारय का उपभेद है, अतः इसमें भी विशेषण विशेष्य भाव रहता है। जब कर्मधारय समास का प्रथम शब्द संख्यावाची होता है और दूसरा शब्द संज्ञावाची, तब वह द्विगु समास कहा जाता है–

संख्यापूर्वो द्विगुः।

यह समास प्रायः समाहार (समूह) अर्थ में होता है। जैसे–

समस्त पद	**विग्रह**
पंचवटी	पाँच वट वृक्षों का समूह।
त्रिलोकी	तीन लोकों का समूह।
त्रिभुवन	तीन भुवनों (लोकों) का समूह।
चतुर्युग	चार युगों का समूह।
तिरंगा	तीन रंगों का समाहार (मेल)।
चौराहा	चार राहों का समाहार।

नवरत्न	नव रत्नों का समूह।
सप्तसिन्धु	सात सिन्धुओं का समूह।
सप्तऋषि	सात ऋषियों का समूह।
सतसई	सात सौ (दोहों) का समाहार।
दोपहर	दो पहरों (प्रहर, याम) का समाहार।

नोट = चौबीस घण्टों में आठ याम होते हैं। अतः तीन घण्टे का एक याम (पहर) होता है।

पंचतंत्र	पाँच तन्त्रों का समाहार।
त्रिफला	तीन फलों का समूह।
शताब्दी	शत (सौ) अब्दों (वर्षों) का समाहार।
पंचपात्र	पाँच पात्रों (बरतन) का समाहार।

बहुव्रीहि समास

बहुव्रीहि समास में आये हुए पदों के अर्थों की प्रधानता नहीं होती, अपितु वे विशेषण के रूप में कार्य करते हुए किसी अन्य वस्तु के अर्थ की पहचान कराते हैं।

अन्यपदार्थप्रधानो बहुव्रीहिः।

जैसे– 'पीताम्बरः'

इस समस्त पद का विग्रह है–पीतम् अम्बरं यस्य सः।

पीला है अम्बर (वस्त्र) जिसका।

यहाँ पर समास में आये हुए दोनों पदों (पीतम् और अम्बरम्) के अर्थ अप्रधान (गौण) हो जाते हैं और ये दोनों भगवान् कृष्ण (जो अन्य पद है) के अर्थ को अभिव्यक्त कर देते हैं। इस प्रकार 'पीताम्बर' कहने से भगवान् कृष्ण या विष्णु का बोध हो जाता है, क्योंकि यह प्रसिद्ध है कि वे पीला वस्त्र धारण करते हैं।

इस प्रकार भाव है–पीताम्बरधारी कृष्ण। कृष्ण पद विशेष्य है और पीताम्बर (पीले कपड़े वाले) विशेषण।

सामान्यतः बहुव्रीहि समास के दो भेद होते हैं–

समानाधिकरण बहुव्रीहि, व्यधिकरण बहुव्रीहि।

(क) समानाधिकरण बहुव्रीहि समास–इस प्रकार के भेद में दोनों पदों में समान विभक्ति अर्थात् प्रथमा विभक्ति रहती है। इन प्रथमान्त पदों द्वारा जो अन्य पदार्थ उक्त (कहा जाना) होता है, वह प्रथमा को छोड़कर अन्य विभक्तियों में रहता है। अतः समानाधिकरण बहुव्रीहि के छह भेद हो जाते है–

(i) **द्वितीयानिष्ठ (कर्मकारकयुक्त) समानाधिकरण बहुव्रीहि–**

प्राप्तोदक (ग्राम) = प्राप्त है जल जिसको ऐसा ग्राम।

आरुढवानर (वृक्ष) = चढ़े हैं वानर जिस पर ऐसा वृक्ष।

(ii) **तृतीयानिष्ठ समानाधिकरण बहुव्रीहि–**

हतशत्रु (राजा) = मार डाला है शत्रुओं को जिसने ऐसा राजा।

जितेन्द्रिय = जीत लिया है इन्द्रियों को जिसने।

(iii) **चतुर्थीनिष्ठ समानाधिकरण बहुव्रीहि–**

दत्तभोजन (भिक्षुक) = दे दिया है भोजन जिसको ऐसा भिक्षुक।

उपहृतपशु (रुद्र) = लाया गया है पशु जिसके लिए ऐसे भगवान् रुद्र।

(iv) **पंचमीनिष्ठ समानाधिकरण बहुव्रीहि–**

पतितपर्ण (वृक्ष) = गिर गया है पत्ता जिससे ऐसा वृक्ष।

निर्बल = निकल गया है बल जिससे ऐसा व्यक्ति।

(v) **षष्ठीनिष्ठ समानाधिकरण बहुव्रीहि–**

पीताम्बर (विष्णु) = पीला है वस्त्र जिसका ऐसा विष्णु।

महायश (पुरुष) = महान् आशय है जिसका ऐसा व्यक्ति।

(vi) **सप्तमीनिष्ठ समानाधिकरण बहुव्रीहि–**

वीरपुरुष (ग्राम) = वीर पुरुष हों जिसमें ऐसा ग्राम।

(ख) व्यधिकरण बहुव्रीहि समास– व्यधिकरण बहुव्रीहि समास में दोनों पद अलग-अलग विभक्तियों में रहते हैं।

जैसे– चन्द्रशेखर = चन्द्र है सिर पर जिसके ऐसे भगवान् शंकर।

शूलपाणि = शूल है हाथ में जिसके ऐसे भगवान् शिव।

चक्रपाणि = चक्र है हाथ में जिसके ऐसे भगवान् विष्णु।

इसी प्रकार बहुव्रीहि समास के अन्य उदाहरण भी देखे जा सकते हैं। दशानन, चतुरानन, नीलकण्ठ, मन्दमति, वीणापाणि इत्यादि।

द्वन्द्व समास

द्वन्द्व समास में आये हुए सभी पदों के अर्थ प्रधान होते हैं। **'चार्थे द्वन्द्वः'** परिभाषा के अनुसार इस समास में आये हुए पद 'च' (और) पद से जुड़े होते हैं। विग्रह की दशा में 'च' सभी पदों के बाद आता है। इस समास के मुख्यतया तीन भेद होते हैं–

इतरेतर, समाहार और एकशेष।

(क) इतरेतर द्वन्द्व समास– इतर का अर्थ होता है–अन्य या दूसरा। द्वन्द्व समास के इस भेद में अलग अर्थ वाले दो या दो से अधिक शब्दों का समास होता है। समस्त पद में शब्दों की संख्या के अनुसार विभक्ति और वचन लगाते हैं। जैसे–

समस्त पद		**विग्रह**
राम–कृष्ण	=	राम और कृष्ण।
राम–लक्ष्मण–भरत	=	राम, लक्ष्मण और भरत।

उपर्युक्त उदाहरणों में दो पदों के समास में द्विवचन तथा तीन पदों के समास में बहुवचन स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

अन्य लिङ्गों का समास होने पर बाद में आये हुए शब्द का लिङ्ग के अनुसार रूप बनता है। जैसे –

राम–सीता	=	राम और सीता।
सीता–राम	=	सीता और राम।

इस समास के अन्य उदाहरण इस प्रकार देखे जा सकते हैं–

माता–पिता	=	माता और पिता।
अर्थ–धर्म	=	अर्थ और धर्म।
पत्र–पुष्प–फल	=	पत्र, पुष्प और फल।
सुख–दुःख	=	सुख और दुःख ।
पुत्र–पुत्री	=	पुत्र और पुत्री।
गाय–बैल	=	गाय और बैल।
पति–पत्नी	=	पति और पत्नी।
राजा–रानी	=	राजा और रानी ।

(ख) समाहार द्वन्द्व समास– समाहार का अर्थ होता है– समूह। इस प्रकार के द्वन्द्व समास में आये हुए पद अपना अर्थ बताते हुए भी मुख्य रूप से समाहार अर्थात् समुदाय (समूह) का अर्थ द्योतित करने लगते हैं। जैसे–

पाणिपाद	=	हाथ और पैर का समूह।
हस्तपाद	=	हाथ और पैर का समूह।

(ग) एकशेष द्वन्द्व समास– इस प्रकार के द्वन्द्व समास में आये हुए पदों में से केवल एक ही शेष रहता है। इसीलिए इसको एकशेष द्वन्द्व समास कहते हैं, किन्तु वचन-प्रयोग के द्वारा दूसरे पद का बोध कराया जाता है। जैसे–

माता च पिता च = पितरौ।

ऊपर देखा जा चुका है कि मातृ पद का पितृ शब्द के साथ इतरेतर द्वन्द्व समास भी होता है, वहाँ समस्त पद में माता और पिता दोनों का उल्लेख रहता है– मातापितरौ। किन्तु एकशेष द्वन्द्व में मातृ पद के साथ जब पितृ पद का समास होता है, तो वहाँ पितृ पद ही शेष रहता है। पुनः वहाँ द्विवचन का प्रयोग होकर यह समस्त पद (पितरौ) माता और पिता दोनों के अर्थ को कहता है।

अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. समास किसे कहते हैं ? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।
2. समास-विग्रह का क्या अर्थ है ?
3. किस समास में अन्य पद के अर्थ की प्रधानता होती है ?
4. निम्नलिखित समस्तपदों में से कर्मधारय समास वाले पदों को अलग कीजिए–
   द्वियमुन, त्रिलोकी, लम्बोदर, श्वेतकृष्ण, प्रतिदिन, नीलकमल।
5. निम्नलिखित विकल्पों में कौन सा बहुव्रीहि समास है :
   (क) पंचानन (ख) सप्तऋषि (ग) पञ्चवटी (घ) माता–पिता
6. नीचे दिये गये विकल्पों में सही विग्रह वाले पद का चयन कीजिए–
   (क) महात्मा – महान् और आत्मा (ख) पीताम्बरम् – पीला है अम्बर जिसका
   (ग) घनश्याम – घन के समान श्याम (घ) पतितपर्ण – गिरा है पत्ता जिसको
7. निम्नलिखित शब्दों का समास विग्रह कीजिए और समास का नाम भी स्पष्ट कीजिए –
   धर्मात्मा, चौमासा, चन्द्रशेखर, पुत्रपुत्री, दशानन
8. अधोलिखित वाक्यों में रेखांकित समस्त पदों का विग्रह करते हुए समास का नाम बताइए–
   (i) <u>पीताम्बर</u> भगवान् विष्णु को प्रिय हैं।
   (ii) उसके <u>हस्तपाद</u> कार्य करने में सक्षम नहीं हैं।
   (iii) <u>चौमासा</u> में शाक वर्जित है।
   (iv) <u>षडानन</u> युद्ध करने में निपुण हैं।
   (v) जीवन में <u>सुखदुःख</u> का क्रम चलता रहता है।
   (vi) <u>शूलपाणि</u> भगवान् शिव दुःखों का हरण करने वाले हैं।

■

पर्यायवाची शब्द

जो शब्द अर्थ के स्तर पर समान होते हैं; पर्यायवाची कहलाते हैं। जैसे नेत्र–नयन, लोचन, दृग आदि।

अतिथि – मेहमान, आगंतुक, पाहुन, अभ्यागत

अमृत – पीयूष, सुधा, सोम, अमिय।

असुर – दानव, निशाचर, राक्षस।

अग्नि – आग, हुतासन, पावक, अनल, दहन, कृशानु

आम – आम्र, रसाल, अमृतफल, सहकार, अतिसौरभ, पिकबंधु

आँख – नेत्र, नयन, लोचन, चक्षु।

आकाश – गगन, अंबर, नभ, व्योम, अंतरिक्ष।

इन्द्र – सुरपति, देवेश, सुरेंद्र, देवराज।

कपड़ा – वस्त्र, पट, वसन, अंबर, चीर

कमल – जलज, नीरज, वारिज, राजीव।

किसान – कृषक, क्षेत्रक, क्षेत्रपति, खेतिहर, हलधर

गंगा – सुरसरि, देवनदी, भागीरथी, देवपगा।

घर – गृह, आलय, निकेतन, सदन।

चंद्रमा – शशि, सुधाकर, राकेश, निशाकर।

जल – पानी, अंबु, नीर, वारि, सलिल।

तालाब – सर, सरोवर, जलाशय, तड़ाग।

द्रव्य – धन, वित्त, संपदा, दौलत, संपत्ति

दास – अनुचर, चाकर, सेवक, भृत्य, किंकर

देवता – सूर, देव, अजर, अमर।

नदी – सरिता, तटिनी, तरंगिणी, निर्झरिणी।

नौका – नाव, तरिणी, जलयान, जलपात्र, तरी, बेड़ा

पक्षी – विहग, खग, नभचर।

पर्वत – अचल, भूधर, पहाड़, शैल।

पृथ्वी – भू, धरा, वसुधा, धरणी, भूमि।

पत्नी – भार्या, दारा, गृहिणी, बहू, वधू, कलत्र, प्राणप्रिया

पति – भर्ता, बल्लभ, स्वामी, आर्यपुत्र

पुत्र – तनय, सुत, बेटा, लड़का, आत्मज, तनुज

पुत्री – तनया, सुता, बेटी, आत्मजा, दुहिता, नंदिनी

फूल – पुष्प, सुमन, कुसुम, प्रसून

बादल – मेघ, नीरद, जलद, वारिद, अंबुद।

बिजली – चपला, चंचला, विद्युत, तड़ित्, दामिनी

मछली – मत्स्य, झरव, मीन, जलजीवन, सफरी

महादेव – शंभु, पशुपति, शिव, महेश्वर, शंकर, हर

रात – रात्रि, निशा, रजनी, यामिनी।

राजा – नृप, भूप, महीप, महीपति, नरपति, नरेश

वृक्ष – तरु, द्रुम, पादप, विटप, अगम, पेड़ , गाछ

विष्णु – गरुणध्वज, अच्युत, चक्रपाणि, माधव, केशव, दामोदर, गोविंद, लक्ष्मीपति

समुद्र – सागर, जलधि, पारावार, नीरनिधि, पयोनिधि

शेर – शार्दूल, व्याघ्र, मृगराज, मृगेन्द, सिंह, केहरि

सर्प – अहि, भुजंग, विषधर, व्याल, फणी, नाग

सरस्वती – ब्राह्मी, भारती, वाक्, गिरा, शारदा, वीणापाणि

सूर्य – मार्तंड, दिनकर, भानु, भास्कर, रवि, प्रभाकर

हवा – वायु, समीर, मरुत, वात, बयार, प्रकंपन, पवन

हाथी – गजेंद्र, कुंजर, गज

अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए :

1. अग्नि का पर्यायवाची शब्द नहीं है :

   (क) आग (ख) पावक (ग) अनल (घ) अनिल

2. अमृत का पर्यायवाची शब्द है :

(क) जीवन (ख) पावन (ग) अमिय (घ पिय

3. रसाल, अमृत फल, सहकार किस शब्द का पर्याय है ?
(क) मीठा (ख) जामुन (ग) पपीता (घ आम

4. 'गणेश' शब्द का पर्यायवाची है :
(क) आनन (ख) वदन (ग) नंदन (घ मोदकप्रिय

5. देवनदी, सुरसरिता, मंदाकिनी पर्यायवाची शब्द है :
(क) यमुना के (ख) सरस्वती के (ग) गंगा के (घ सरयू के

6. सूर्यसुता, सूर्यतनया, कालिंदी किसे कहा जाता है ?
(क) गंगा को (ख) यमुना को (ग) सरस्वती को (घ सरयू को

7. चपला, चंचला, विद्युत किस शब्द के पर्याय हैं ?
(क) वर्षा (ख) बादल (ग) वायु (घ बिजली

8. 'समुद्र' शब्द का पर्याय नहीं है :
(क) सागर (ख) जलधि (ग) पारावार (घ महीपति

9. दिनकर, भानु, भास्कर पर्याय है :
(क) सूर्य के (ख) चंद्रमा के (ग) तारों के (घ हाथी के

10. शंभु, शिव, पशुपति आदि हैं :
(क) विलोम (ख) पर्यायवाची (ग) उपसर्ग (घ प्रत्यय

11. सुर, अमर, देव कहलाते हैं :
(क) विलोम (ख) अनुलोम (ग) पर्यायवाची (घ उपसर्ग

12. भवन, सदन, शब्द हैं :
(क) विलोम के (ख) प्रतिलोम (ग) पर्यायवाची के (घ प्रत्यय के

13. पट, वसन का पर्यायवाची शब्द है :
(क) आकाश का (ख) पाताल का (ग) वस्त्र का (घ लकड़ी का

14. अहि, भुजंग, विषधर कहा जाता है :
(क) मेढक को (ख) कोयल को (ग) सर्प को (घ मयूर को

15. जिन शब्दों के अर्थ में समानता हो कहलाते हैं :
(क) विलोम शब्द (ख) प्रतिलोम शब्द (ग) पर्यायवाची शब्द (घ उपसर्ग

■

विपरीतार्थी (विलोम) शब्द

किसी शब्द के विपरीत अर्थ देने वाले शब्द को विपरीतार्थी या विलोम शब्द कहते हैं।

शब्द		**विलोम**	**शब्द**		**विलोम**
जागरण	–	निद्रा	आकाश	–	पाताल
आदान	–	प्रदान	आरोह	–	अवरोह
उन्नति	–	अवनति	अमर	–	मर्त्य
अनुकूल	–	प्रतिकूल	उदय	–	अस्त
अनुज	–	अग्रज	कनिष्ठ	–	ज्येष्ठ
उत्थान	–	पतन	अल्पज्ञ	–	बहुज्ञ
अल्पायु	–	दीर्घायु	दुर्लभ	–	सुलभ
उपकार	–	अपकार	आस्तिक	–	नास्तिक
निर्बल	–	सबल	उत्तर	–	दक्षिण
आयात	–	निर्यात	अंधकार	–	प्रकाश
अमृत	–	विष	आर्द्र	–	शुष्क
आसक्त	–	अनासक्त			

■

वाक्यांश के लिए एक शब्द

वाक्यांशों के लिए एक शब्द –

शब्द–समूह		**एक शब्द**
जो कभी न मरता हो	–	अमर
जिस पर संदेह हो	–	संदिग्ध
जिसे क्षमा न किया जा सके	–	अक्षम्य
जिसका कोई शत्रु न हो	–	अजातशत्रु
जिसका पति मर चुका हो	–	विधवा
उपकार को न मानने वाला	–	कृतघ्न
उपकार को मानने वाला	–	कृतज्ञ
जो कम खाता हो	–	अल्पाहारी
माँस खाने वाला	–	माँसाहारी
माँस न खाने वाला	–	शाकाहारी
ईश्वर को मानने वाला	–	आस्तिक
ईश्वर को न मानने वाला	–	नास्तिक
जिसका आकार न हो	–	निराकार
जो आँखों के सामने हो	–	प्रत्यक्ष
विष्णु का उपासक	–	वैष्णव
शिव का उपासक	–	शैव
बहुत बोलने वाला	–	वाचाल
अच्छे आचरण वाला	–	सदाचारी
सप्ताह में एक बार होने वाला	–	साप्ताहिक
सबको एक समान देखने वाला	–	समदर्शी
परिश्रम करने वाला	–	परिश्रमी
आज्ञापालन करने वाला	–	आज्ञाकारी
सत्य बोलने वाला	–	सत्यवादी

दूसरों का उपकार करने वाला	–	परोपकारी
अच्छे चरित्र वाला	–	सच्चरित्र
जो पढ़ा जा सके	–	पठनीय
जिसका कहीं भी अंत ना हो	–	अनन्त
जिसकी कल्पना न की जा सके	–	अकल्पनीय
जो खाने योग्य न हो	–	अखाद्य
जिसकी गणना न की जा सके	–	अगण्य
जिसका जन्म न हुआ हो	–	अजन्मा
जो कभी बूढ़ा न हो	–	अजर
शरीर के किसी अंग का टूटना	–	अंग–भंग
शिक्षा देने वाला	–	शिक्षक
जो पढ़ना–लिखना जानता हो	–	साक्षर
जानने की इच्छा रखने वाला	–	जिज्ञासु
सौ वर्ष का समय	–	शताब्दी
जिसका कोई सहारा न हो	–	अनाथ
जो सब कुछ जानता हो	–	सर्वज्ञ
जो कीचड़ से उत्पन्न होता है	–	पंकज
वंदन करने योग्य	–	वंदनीय
जिसकी आंखें हिरण की आंखों के समान हो	–	मृगनयनी
अधिक बोलने वाला	–	वाचाल
बीता हुआ	–	विगत
जो नष्ट होने वाला हो	–	नश्वर
जिसके पास कुछ न हो	–	अकिंचन
जिसको क्षमा न किया जा सके	–	अक्षम्य
अनुकरण करने योग्य	–	अनुकरणीय
जिसके समान कोई दूसरा न हो	–	अद्वितीय
सदा सत्य बोलने वाला	–	सत्यवादी
मोक्ष की इच्छा रखने वाला	–	मुमुक्षु
कम बोलने वाले	–	मितभाषी

तत्सम और तद्भव

तत्सम – वे शब्द जो संस्कृत भाषा से अपने मूल स्वरूप में हिंदी भाषा में प्रचलित है उन्हें तत्सम शब्द कहते हैं जैसे – राज्ञ, पितृ, अग्नि, उष्ट्र, घोटक, वत्स इत्यादि।

तद्भव – हिंदी में प्रयुक्त ऐसे शब्द जो अनेक ध्वनि परिवर्तनों के पश्चात् नवीन रूप में हिंदी में प्रयोग किए जाते हैं। जैसे – आग, ऊँट, घोड़ा आदि।

तत्सम	**तद्भव**	**तत्सम**	**तद्भव**	**तत्सम**	**तद्भव**
अग्नि	आग	अक्षर	आखर	अन्यत्र	अनत
अन्न	अनाज	अमावस्या	अमावस	अम्बा	अम्मा
अट्टालिका	अटारी	आश्रय	आसरा	ओष्ठ	ओठ
अँगुली	उँगुली	अश्रु	आँसू	अक्षि	आँख
आम्र	आम	आश्चर्य	अचरज	उलूक	उल्लू
उज्ज्वल	उजाला	उत्थान	उठाना	उष्ट्र	ऊँट
एकत्र	इकट्ठा	कृष्ण	किसन	कर्ण	कान
कृपा	किरपा	कूप	कुँआ	काक	कौआ
कुंभकार	कुम्हार	कोकिल	कोयल	कपाट	किवाड़
कमल	कंवल	कुपुत्र	कपूत	ग्रंथि	गाँठ
ग्राम	गाँव	गृह	घर	गर्दभ	गधा
गर्त	गड्ढा	धूम्र	धुँआ	चैत्र	चैत
चतुर्दश	चौदह	वत्स	बच्चा	शलाका	सलाई
तिक्त	तीखा	क्षीर	खीर	घोटक	घोड़ा
शत	सौ	भक्त	भगत	ग्राहक	गाहक
जिह्वा	जीभ	क्षेत्र	खेत	पुत्र	पूत
प्रिय	प्यारा	लोहकर	लोहार	महिषी	भैंस
लज्जा	लाज	सप्त	सात	वधू	बहू
वानर	बंदर	यमुना	जमुना	सूत्र	सूत

विवाह	व्याह	स्वप्न	सपना	शांक	साग
स्वर	सुर	चर्मकार	चमार	घट	घड़ा
दुग्ध	दूध	नग्न	नंगा	छत्र	छाता
मृत्तिका	मिट्टी	मुख	मुँह	पुत्र	पूत
वार्ता	बात	वाष्प	भाप	सूर्य	सूरज
हृदय	हिरदय	सर्प	साँप	सूचिका	सूई
हस्ति	हाथी	प्रहर	पहर	शुष्क	सूखा
मित्र	मीत	मयूर	मोर	नृत्य	नाच
मृत्यु	मौत	दीपक	दीया	दुर्बल	दुबला
चक्र	चाक	धैर्य	धीरज	भगिनी	बहन
वर्षा	बरखा	छिद्र	छेद	धैर्य	धीरज
रत्न	रतन	दण्ड	दाड़	मक्षिका	मक्खी
गृह	घर	शिक्षा	सीख	पर्यक	पलंग
शर्करा	शक्कर	योगी	जोगी	भातृ	भाई
राज्ञी	रानी	श्वसुर	ससुर	वृद्ध	बूढ़ा
शिर	सिर	प्रिय	प्यारा	पत्र	पत्ता
भिक्षा	भीख	भ्रमर	भौंरा	हस्त	हाथ
मुष्टि	मुट्ठी	मस्तक	माथा	लक्ष	लाख
जीर्ण	झीना	नासिका	नाक	हास	हँसी
निद्रा	नींद	पृष्ठ	पीठ	रुक्ष	रुखा
क्षण	छन	जंघा	जाँघ	पिपासा	प्यासा
चंद्रिका	चाँदनी	त्वरित	तुरंत	नव	नया
बाहु	बाँह	दधि	दही	सौभाग्य	सुहाग

■

उपसर्ग

जो शब्दांश किसी मूल शब्द अथवा सार्थक शब्द के पूर्व में जुड़कर एक विशिष्ट अर्थ देते हैं दूसरे शब्दों में, उस शब्द का अर्थ परिवर्तित कर देते है, उपसर्ग कहे जाते हैं। जैसे – हार शब्द में 'प्र' उपसर्ग लगाकर प्रहार शब्द बनने पर वह एक विशिष्ट अर्थ देने लगा।

उदाहरण के लिए–

उपसर्ग	**मूल शब्द**	**निर्मित शब्द**
प्र	हार	प्रहार
उप	हार	उपहार
सम्	हार	संहार

उपसर्ग	**अर्थ**	**उदाहरण**
अधि	ऊपर, श्रेष्ठ	अधिकार, अधिनायक, अधिकरण, अधिशुल्क, अधिपति।
अनु	पीछे, समान,	अनुभव, अनुभूति, अनुकरण, अनुरोध, अनुशासन, अनुवाद, अनुरूप, बाद में आने वाला अनुसारी, अनुकंपा।
अप	बुरा, हीन	अपयश, अपमान, अपव्यय, अपशब्द, अपकार, अपहरण, अपवाद, अपशकुन, अपकीर्ति।
अभि	सामने, ओर	अभिनय, अभिमुख, अभिज्ञान, अभिमान, अभ्यास, अभियोग, अभिनव, अभिलाषा, अभिशाप, अभ्यागत, अभियान।
उप	निकट, छोटा, सादृश्य	उपवन, उपकार, उपस्थित, उपदेश, उपग्रह, उपमंत्री, उपचार, उपसंहार, उपनाम, उपसर्ग, उपकृत, उपनगर।
निस्/निर्	रहित, नहीं	निष्काम, निस्संदेह, निस्तेज, निश्चय, निश्छल, निर्जन, निर्दोष, निर्दय, निर्वाह, निर्जीव, निर्यात, निरपराध, निरादर, निष्कपट, निर्धन, निष्कलंक, नीरोग, निर्गुण, निर्विघ्न।
परि	चारों ओर	परिचय, परिणाम, परीक्षा, परिवर्तन, परिक्रमा, परिचालक, परिष्कार, पर्यटन, परिधि, परिवार, परिपूर्ण, परिणति, परिपक्व, परिकल्पना।
सु	अच्छा	सुगम, सुबोध, सुलभ, सुशिक्षित, सुजन, स्वच्छ, सुपुत्र, सुदूर, स्वागत, सुकर्म, सुधार, सुकर।
अ	निषेध	अज्ञान, अभाव, अहिंसा, असुंदर, अधर्म, अकाल, अनुचित, अनेक, अनादि, असाध्य।
सह	साथ	सहपाठी, सहमति, सहकारी, सहोदर, सहगान, सहचर, सहयोग।

■

पद परिचय

प्रायः कहा जाता है कि वर्णों के समूह से शब्द बनते हैं और शब्दों के समूह से वाक्य। किंतु वर्णों का समूह तब तक वाक्य में प्रयुक्त नहीं हो सकता, जब तक वह व्याकरणादि से शुद्ध न हुआ हो, दूसरे पदार्थों के संबंध से रहित न हो और अनेक अर्थों का बोधक न हो–

'वर्णाः पदं प्रयोगार्हानन्वितैकार्थबोधकाः'

जब वह वर्ण-समुदाय (शब्द) किसी प्रकार के संबंधतत्त्व (संस्कृत भाषा के अनुसार विभक्तियों से युक्त) हो जाता है तब 'पद' कहलाता है। यही पद वाक्य में प्रयोग किये जा सकते हैं। जैसे केवल 'राम' शब्द वाक्य में प्रयोग नहीं किया जा सकता, जब उसमें 'सु' विभक्ति लगती है, तो 'रामः' बन जाने पर वाक्य में प्रयुक्त हो सकता है। उसी प्रकार हिंदी में राम 'ने' इस प्रकार से संबंधतत्त्वयुक्त होने पर प्रयोग के योग्य होगा।

वाक्य में आये इन्हीं पदों का व्याकरणिक विश्लेषण **'पद-परिचय'** कहा जाता है। अथवा हम कह सकते हैं कि वाक्य में आये पदों को अलग करके उनका स्वरूप तथा अन्य पदों से संबंध बताना ही पद परिचय है। ये पद दो प्रकार के होते हैं–विकारी तथा अविकारी।

1. विकारी पद– विकारी शब्द उनको कहा जाता है, जिनके अलग-अलग रूप वाक्यों में मिलते हैं। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया ये चार प्रकार के शब्द विकारी हैं।

(क) संज्ञा– संज्ञा का अर्थ 'नाम' होता है। किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, गुण तथा भाव आदि के नाम का बोध कराने वाले शब्द संज्ञा कहे जाते हैं। जैसे–राम, श्याम, कुर्सी, कार, बनारस, नदी आदि। इस प्रकार हम देखते हैं कि किसी पदार्थ, स्थान आदि के लिए जो नाम रख दिया गया है, वह संज्ञा कहलाता है।

संज्ञा के मुख्यतः पाँच भेद किये जाते हैं–व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक, समूहवाचक, द्रव्यवाचक।

(i) व्यक्तिवाचक संज्ञा– यहाँ व्यक्ति का अर्थ है– अकेला या व्यष्टि।

जिस नाम से किसी एक वस्तु, स्थान, मनुष्य, प्राणी आदि का बोध होता है, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहा जाता है।

जैसे हमने किसी बच्चे का नाम दीपू रख दिया, कुत्ते का शेरू, नदी का यमुना, स्थान का प्रयागराज, दिन का सोमवार आदि। यहाँ दीपू, शेरू, यमुना, प्रयागराज, सोमवार

व्यक्तिवाचक संज्ञा पद कहलाएंगे। इन नामों (संज्ञाओं) से केवल उन्हीं का बोध होगा, अन्य किसी वस्तु का नहीं।

(ii) जातिवाचक संज्ञा– जाति को सामान्य भी कहते हैं। इसमें एक ही प्रकार के पदार्थ, व्यक्ति आदि का बोध होता है। जैसे मनुष्य एक जाति है। इस 'मनुष्य' शब्द से संसार के सारे मनुष्यों का बोध होगा। इसी प्रकार 'नदी' शब्द कहने से सामान्यतः पृथ्वी पर बहने वाली सभी नदियों का बोध हो जाएगा।

शिक्षक, मंत्री, गाय, घोड़ा, घर, पुस्तक, कुर्सी, मेज, बालक, नगर, कुत्ता, पर्वत, भूकंप आदि जातिवाचक संज्ञाएँ हैं।

(iii) भाववाचक संज्ञा– किसी वस्तु अथवा व्यक्ति आदि की अवस्था, धर्म, शील, स्वभाव आदि का बोध कराने वाली संज्ञाएँ भाववाचक कहलाती हैं। जैसे–उष्णता, शीतलता, दरिद्रता, उजाला, अँधेरा, बालपन, यौवन आदि।

इन्हें प्रायः जातिवाचक संज्ञा, विशेषण, क्रिया आदि में प्रत्यय लगाकर बनाया जाता है।

जातिवाचक संज्ञा से निर्मित– लड़का से लड़कपन, मित्र से मित्रता, दास से दासता या दासत्व, पंडित से पंडिताई इत्यादि।

विशेषण पद से निर्मित– कठोर से कठोरता, मृदु से मृदुता, कोमल से कोमलता, सुंदर से सुंदरता, दुष्ट से धृष्टता आदि।

क्रिया से निर्मित– जैसे पढ़ना से पढ़ाई, लिखना से लिखाई, सजाना से सजावट, दौड़ना से दौड़ इत्यादि।

(iv) समूहवाचक संज्ञा– जो पद किसी समूह या समुदाय का बोध कराते हैं, वे समूहवाचक संज्ञा पद कहलाते हैं।

जैसे– सभा, दरबार, गिरोह, कक्षा, टीम, भीड़ इत्यादि।

इस प्रकार की संज्ञाओं का प्रयोग प्रायः एकवचन में होता है।

(अ) द्रव्यवाचक संज्ञा– कुछ ऐसे शब्द होते हैं, जो उन द्रव्य या पदार्थों का बोध कराते हैं, जिनसे अनेक वस्तुएँ निर्मित होती हैं। इस प्रकार के शब्दों को द्रव्यवाचक संज्ञा कहा जाता है। जैसे सोना-चाँदी, लोहा, पीतल, दूध, लकड़ी, ऊन इत्यादि।

(ख) सर्वनाम– सर्वनाम वे शब्द हैं, जो संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किये जाते हैं। बार-बार संज्ञा शब्दों के प्रयोग से बचने के लिए सर्वनाम वाक्य में प्रयुक्त होते हैं। सर्वनामों के प्रयोग से वाक्य में सहजता और सुंदरता आती है। इसको एक उदाहरण द्वारा समझा जा सकता है–'राधा ने भोजन पकाया फिर वह पढ़ने चली गयी।' यहाँ 'वह' सर्वनाम के प्रयोग से वाक्य सहज हो गया है। यदि बार-बार 'राधा' संज्ञा का प्रयोग किया जाता तो वह सहजता और सुंदरता वाक्य में नहीं रह पाती– 'राधा ने भोजन पकाया फिर राधा पढ़ने चली गयी।' हिंदी भाषा में सर्वनामों की संख्या कम है। मैं, तुम (तू), यह, वह, आप, कौन, क्या, जो, सो, कोई, कुछ आदि

सर्वनाम हैं। सर्वनामों के निम्नलिखित भेद किये जा सकते हैं–

1. पुरुषवाचक सर्वनाम– बातचीत का संबंध तीन प्रकार के व्यक्तियों से होता है–कहने वाला, सुनने वाला तथा कभी कोई तीसरा व्यक्ति जो वहाँ उस समय उपस्थित नहीं रहता। कहने वाला उत्तम पुरुष, सामने सुनने वाला मध्यम पुरुष तथा जो वहाँ उपस्थित नहीं है, वह प्रथम पुरुष या अन्य पुरुष कहा जाता है। इन तीन प्रकार के पुरुषों के लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग होता है, वे पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

उत्तम पुरुष– मैं, हम।

मध्यम पुरुष– तुम, तू, आप।

अन्य पुरुष– यह, वह, ये, वे।

2. निजवाचक सर्वनाम– निज का अर्थ है– अपना। इस सर्वनाम का मुख्य शब्द है– आप। जब 'आप' शब्द का प्रयोग अपने लिए किया जाता है, तब वह निज वाचक सर्वनाम होता है। इसके साथ कभी 'ही' लगकर भी आता है। जैसे– आप ही।

उदाहरणस्वरूप– मैं आप ही पढ़ लेता हूँ या अपने आप ही पढ़ लेता हूँ। 'आप' के पर्याय स्वयं, अपना भी प्रयोग किये जा सकते हैं।

3. निश्चयवाचक सर्वनाम– सर्वनाम के इस प्रकार में निश्चितता को व्यक्त करने वाले पद आते हैं। जैसे–'यह', 'वह' क्रमशः निश्चित समीप अथवा दूर की वस्तुओं, व्यक्तियों आदि का बोध कराते हैं। जैसे यह रख लो, वह ले जाओ।

4. अनिश्चयवाचक सर्वनाम– वे सर्वनाम शब्द जिनसे किसी निश्चित वस्तु का बोध नहीं हो पाता, अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहे जाते हैं। जैसे– कोई, कुछ सर्वनाम शब्द।

'कोई आया है,' 'कुछ है' इन वाक्यों से इस प्रकार के सर्वनाम स्पष्ट हैं।

5. प्रश्नवाचक सर्वनाम– प्रश्न करने अथवा उस तरह के भाव को व्यक्त करने वाले सर्वनाम प्रश्नवाचक सर्वनाम कहे जाते हैं। जैसे क्या, कौन।

उदाहरणार्थ– तुम क्या कर रहे हो ? वह कौन खड़ा है ? इत्यादि।

6. संबंधवाचक सर्वनाम– ये उस प्रकार के सर्वनाम हैं, जो किसी वाक्य में संज्ञा या सर्वनामों के मध्य संबंध (जोड़) स्थापित करते हैं। इसमें जो, जिस, वह, सो आदि पद आते हैं।

जैसे– यह वही बालिका है, जो कल बीमार थी।

(ग) विशेषण– वे शब्द जो संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, विशेषण कहे जाते हैं। जिन शब्दों की विशेषता बतायी जाती है, उन्हें विशेष्य कहा जाता है। विशेषण के निम्नलिखित भेद हैं–

1. सार्वनामिक विशेषण– जब किसी वाक्य में सर्वनाम पद संज्ञा की विशेषता बताने के रूप में प्रयुक्त होता है, तब वह सार्वनामिक विशेषण कहा जाता है।

जैसे—यह घर अच्छा है। मेरी किताब है।

इन उदाहरणों में यह और मेरी ये दोनों पद विशेषण के रूप में आये हुए हैं। 'यह' पद घर की विशेषता बताता है और 'मेरी' पद किताब की विशेषता बताता है कि वह किसी और कि नहीं मेरी है। इसी प्रकार कैसा आदमी, कैसा घर, बहुत बेईमान आदि उदाहरण देखे जा सकते हैं।

2. **गुणवाचक विशेषण**— जो विशेषण शब्द अपने विशेष्य के गुणों की विशेषताओं को अभिव्यक्त करते हैं, गुणवाची विशेषण कहे जाते हैं। गुण शब्द का अभिप्राय है कि वस्तु या व्यक्ति के गुण, दोष, स्वभाव, शील, रूप, रंग, स्थान, आकार आदि का वर्णन।

जैसे—कोमल हाथ, काला आदमी, सरल महिला, पुराना कोट, सुडौल शरीर, भला लड़का, झूठा इंसान आदि।

3. **संख्यावाचक विशेषण**— संज्ञा और सर्वनाम की संख्यात्मक विशेषता बताने वाले विशेषण संख्यावाचक विशेषण कहे जाते हैं। इसमें निश्चित संख्यावाची और अनिश्चित संख्यावाची दोनों तरह के विशेषण होते हैं।

जैसे—चार दिन, पाँच आदमी, प्रथम व्यक्ति, दुगुना अनाज, कुछ किताबें, कई कुर्सियाँ इत्यादि।

4. **परिमाणवाचक विशेषण**— परिमाण का अर्थ होता है—नाप। जो विशेषण पद अपने विशेष्य की नाप—तौल से सम्बन्धित जानकारी देता है, वह परिमाणवाची विशेषण कहलाता है। दो किलो चीनी, चार मीटर कपड़ा। यह भी निश्चित और अनिश्चित भेद से दो प्रकार का होता है।

(घ) क्रिया— क्रिया अत्यन्त महत्त्वपूर्ण विकारी पद है। क्रिया के बिना वाक्य की पूर्णता ही सम्भव नहीं है। क्रिया के द्वारा किसी कार्य के करने या होने की अवस्थिति का ज्ञान होता है। क्रिया पद के मूल में धातु होती है। धातु में ही प्रत्यय जोड़कर क्रिया के रूप बनाये जाते हैं। जैसे पढ़, लिख, जा आदि धातुएँ हैं, जिनमें 'ना' प्रत्यय लगाकर पढ़ना, लिखना, जाना आदि क्रिया के सामान्य रूप बनते हैं। धातुएँ मुख्यतः दो प्रकार की होती हैं— सकर्मक तथा अकर्मक। धातुओं के अर्थ में दो भाग होते हैं फल तथा व्यापार। जब क्रिया के व्यापार का फल कर्म पर टिके, तो वह धातु या क्रिया सकर्मक कहलायेगी। जैसे माता चावल पकाती है। यहाँ माता कर्ता है। चावल का पकना फल है, जिसके लिये पकाने की क्रिया के कई व्यापार किये गये (बटलोही में चावल रखकर चूल्हे पर रखना, उसे देखना, पक जाने पर उतारना इत्यादि)। यहाँ पकना फल का आश्रय चावल है, वह कर्म है। अतः पकना क्रिया सकर्मक है। सकर्मक की पहचान हम क्या, किसे, किसको आदि प्रश्नात्मक शब्दों से कर सकते हैं। जैसे ऊपर के उदाहरण में माता पकाती है। प्रश्न उठता है क्या पकाती है, तो उत्तर होगा चावल या दाल आदि।

जब क्रिया के व्यापार का फल कर्ता पर ही पड़ता है, वह धातु या क्रिया अकर्मक

कही जाती है। जैसे श्यामा सोती है। यहाँ सोने की क्रिया अकर्मक है, क्योंकि उसका फल और व्यापार दोनों श्यामा कर्ता पर ही टिका है।

व्युत्पत्ति के आधार पर क्रिया के भेद–व्युत्पत्ति के आधार धातुएँ दो प्रकार की होती हैं–मूल धातु और यौगिक धातु। पढ़, लिख, खा आदि मूल धातु हैं। इनकी स्वतंत्र सत्ता होती है।

यौगिक धातुएँ तीन प्रकार से बनती हैं–

धातु में प्रत्यय लगाकर अकर्मक से सकर्मक बनाना तथा प्रेरणार्थक क्रिया बनाना। किसी धातु में एक या दो धातु जोड़कर संयुक्त धातु बनाना। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण में प्रत्यय लगाकर नाम धातु बनाना।

प्रेरणार्थक क्रिया– जब कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी दूसरे को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है, तो उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहा जाता है। जैसे शिक्षक कक्षा में छात्र से पढ़वाता है। यहाँ मूल क्रिया पढ़ाना बदलकर पढ़वाना (प्रेरणार्थक) हो गयी है।

यहाँ शिक्षक प्रेरक कर्ता (प्रयोजक कर्ता) है तथा छात्र प्रेरित (प्रयोज्य) कर्ता है।

यौगिक क्रिया– दो या उससे अधिक धातुओं और दूसरे शब्दों के संयोग से यह क्रिया बनती है।

जैसे– हँसना–हँसाना, पढ़ना-पढ़ाना इत्यादि।

संयुक्त क्रिया– यह क्रिया भी दो क्रियाओं के योग से बनती है, किंतु सब क्रियाओं के विपरीत यहाँ क्रिया का मुख्य अर्थ केवल पहली क्रिया से ही बताया जाता है। जैसे चल देना, आ जाना, सो जाना इत्यादि।

नामधातु– संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण शब्दों में प्रत्यय लगकर जो धातुएँ (क्रियाएँ) बनती हैं, वे नामधातु कहलाती हैं। जैसे– संज्ञा शब्द से निर्मित– लालच से ललचाना, बात से बतियाना, शरम से शरमाना आदि।

सर्वनाम शब्द से निर्मित– अपना से अपनाना, दोहरा से दोहराना इत्यादि।

विशेषण शब्द से निर्मित– गरम से गरमाना, नरम से नरमाना आदि।

2. अविकारी पद– अविकारी वे शब्द होते हैं, जिनमें पुरुष, लिङ्ग, वचन, कारक आदि के कारण परिवर्तित नहीं होता। इन्हें अव्यय पद भी कहा जाता है। जैसे यहाँ, वहाँ, किंतु, परंतु, अतः, एवं, तथा, और, इधर, अब, तब आदि पद अव्यय हैं। अव्यय के अंतर्गत क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादि बोधक आदि शब्द आते हैं।

(क) क्रियाविशेषण– क्रिया की विशेषता प्रकट करने वाले पद क्रियाविशेषण कहे जाते हैं। इसके निम्नलिखित भेद हैं–

1. रीतिवाचक क्रियाविशेषण– वे क्रियाविशेषण जिनसे क्रिया के घटित होने की रीति या तरीका पता चलता है, रीतिवाचक क्रियाविशेषण कहलाते हैं। जैसे वह धीरे–

धीरे खा रहा है। इस वाक्य में खाने की क्रिया धीरे–धीरे हो रही है। यहाँ 'धीरे–धीरे' पद रीतिवाचक विशेषण के रूप में हैं। तेज, ऐसे, वैसे, फटाफट, अवश्य, सचमुच, स्वयं, यथासम्भव, भली-भाँति आदि क्रियाविशेषण इसी कोटि के हैं।

2. कालवाचक क्रियाविशेषण– यहाँ काल का अर्थ समय है। समय का बोध कराने वाले क्रियाविशेषण इसके अंतर्गत आते हैं। जैसे–आजकल, कभी, प्रतिदिन, रोज, प्रायः, सदा, पहले, पीछे, तुरंत आदि अव्यय पद।

3. स्थानवाचक क्रियाविशेषण– क्रिया के घटित होने वाले स्थान के विषय में बोध कराने वाले शब्द इसमें आते हैं। जैसे–यहाँ, वहाँ, कहाँ, ऊपर, नीचे, भीतर, आसपास, इधर-उधर आदि। उदाहरणस्वरूप– 'घर के आसपास ही बच्चे खेलते हैं।'

4. परिमाणवाचक क्रियाविशेषण– इस प्रकार के क्रिया विशेषणों से क्रिया के परिमाण से संबंधित विशेषताएँ मालूम पड़ती हैं। जैसे कितना, जितना, उतना, बहुत, कम आदि शब्द।

(ख) संबंधबोधक– संबंधबोधक अव्यय पद वाक्य में आये संज्ञा या सर्वनाम का दूसरे के साथ संबंध का बोध कराते हैं। जैसे– चोर घर के भीतर है। राजू पिता के साथ बाजार गया। इन उदाहरणों में 'के भीतर', 'के साथ' संबंधक बोधक अव्यय शब्द दो संज्ञाओं के बीच संबंध स्थापित कर रहे हैं। उसी प्रकार आगे, पीछे, तक, ओर, द्वारा, बदले, अतिरिक्त, सरीखे, विपरीत, पास, निकट, लिए, निमित्त, आदि अन्य संबंध बोधक अव्ययों की पहचान की जा सकती है।

(ग) समुच्चय बोधक– दो या दो से अधिक शब्दों या वाक्यों को जोड़ने का कार्य करने वाले अव्यय पद समुच्चयबोधक कहे जाते हैं। जैसे–एवं, तथा, और, किन्तु, परन्तु, क्योंकि, अतः, इसलिए, पर, अथवा, या, बल्कि, यद्यपि, अर्थात्, यानि, मानो, कि, ताकि इत्यादि शब्द।

(घ) विस्मयादि बोधक– वे शब्द जो विस्मय (आश्चर्य), हर्ष, घृणा, पीड़ा आदि भावों को सूचित करते हैं, विस्मयादिबोधक अव्यय कहे जाते हैं। इनसे शब्दों या वाक्यों के निर्माण में कोई विशेष सहायता नहीं मिलती। बस ये भावों के त्वरित उद्गार हैं। जैसे अरे !, वाह !, हाय !, अति सुन्दर !, ओह !, शाबाश !, तौबा-तौबा !, छिह ! इत्यादि।

(ङ) निपात– यास्क के अनुसार निपात विभिन्न अर्थों में प्रयुक्त किये जाते हैं। जैसे उपमा अर्थ में, समुच्चय अर्थ में और पादपूर्ति के अर्थ में। निपात भी अव्यय होते हैं। जैसे इव निपात उपमा अर्थ में है। च, वा आदि समुच्चय अर्थ में तथा नूनम, खलु आदि पादपूरण अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। हिंदी में बहुतायत प्रयोग किये जाने वाले कुछ निपात इस प्रकार हैं– तो, न, मत, तक, ही, भी इत्यादि।

वाक्य का स्वरूप

किसी विचार अथवा भाव को पूर्ण रूप से अभिव्यक्त करने वाला शब्द या शब्दसमूह वाक्य कहलाता है। भाषा की सबसे छोटी इकाई अक्षर होता है, जिससे शब्दों का निर्माण होता है और शब्दों से वाक्य बनते हैं। वाक्य की पूर्णता के लिए किसी न किसी क्रिया का बोध होना आवश्यक है, वह चाहे प्रत्यक्ष रूप में हो या अप्रत्यक्ष रूप में। कभी-कभी एक शब्द भी वाक्य का कार्य सम्पन्न करा देते हैं। जैसे जाओ, खाओ इत्यादि।

वाक्य की परिभाषा–शब्दों का सार्थक समूह जब अपनी पूर्णता, सान्निध्यता और व्यवस्थित पदक्रम को प्राप्त करता है तो वाक्य कहलाता है।

वाक्य के तत्व–वाक्य के चार तत्व हैं–

1. सार्थकता–वाक्य मे आये हुए शब्दों का कुछ न कुछ अर्थ अवश्य होना चाहिए।

2. जिज्ञासा–पदों के परस्पर अर्थबोध की जिज्ञासा होनी चाहिए।

3. सान्निध्यता–वाक्यों के शब्दों में आसक्ति या सान्निध्यता होना एक अनिवार्य तत्व है। वाक्य में आये प्रत्येक शब्द की आपस मे संगति होनी चाहिए।

4. पदक्रम–शब्दों का व्यवस्थित और व्याकरणिक क्रम पदक्रम कहलाता है। एक शब्द को कहने के बाद दूसरे शब्द को कहने में विलम्ब आदि नहीं होना चाहिए।

वाक्य खंड– वाक्य के दो अंग (अंश) होते हैं–

1. उद्‌देश्य 2. विधेय

1. उद्‌देश्य

जिसके विषय में कुछ कहा जाता है, वह उद्देश्य कहा जाता है। अथवा जिसके विषय में विधान किया गया हो, उसको सूचित करने वाला शब्द उद्‌देश्य है। जैसे 'राम पढ़ता है।' इस वाक्य में 'राम' पद उद्देश्य है, क्योंकि उसी के विषय में कहा जा रहा है कि वह पढ़ता है। इसी प्रकार 'नदी बहती है।' 'सुधा सुन्दर गाती है।' इन वाक्यों में नदी, सुधा शब्द उद्देश्य हैं।

ध्यान रहे– उद्देश्य कोई संज्ञा या सर्वनाम, विशेषण, क्रियार्थक संज्ञा, वाक्यांश या वाक्य रूप हो सकता है।

जैसे–'सुन्दर पुरुष दिखायी दे रहे हैं।' इस वाक्य में 'सुंदर पुरुष' उद्देश्य होगा। यहाँ 'सुंदर' शब्द पुरुष की विशेषता बता रहा है, अतः वह विशेषण है। इसी प्रकार 'नाचना स्वास्थ्य के लिए अच्छा है।' यहाँ 'नाचना' क्रियार्थक संज्ञा है, जो उद्देश्य रूप में आया है। 'हिमालय की वादियों में हम खो जाते हैं।' इस उदाहरण में 'हिमालय की वादियों में हम' एक वाक्यांश है, जो उद्देश्य है।

2. विधेय

उद्देश्य के विषय में जो बात कही जाती है, उसे 'विधेय' कहा जाता है। अर्थात् वाक्य का वह भाग जो उद्देश्य के बारे में सूचना देता है, वह विधेय है। जैसे 'जानवर दौड़ते हैं।' उदाहरण में 'दौड़ते हैं' विधेय है।

विधेय के अंतर्गत क्रिया, क्रियाविशेषण, कारक, पूर्वकालिक क्रिया, वाक्यांश आदि का विस्तार रहता है। जैसे 'वह मधुर बोलता है।' वाक्य में 'वह' पद उद्देश्य है तथा 'मधुर बोलता है' विधेय है। यहाँ 'मधुर' पद क्रियाविशेषण है।

इसी प्रकार 'राम ने रावण को बाण से मारा।' इस वाक्य में 'रावण को बाण से मारा' विधेय है, जिसमें 'बाण से' पद में करण कारक सन्निहित है।

वाक्य के दो भेद हैं–

1. रचना के आधार पर
2. अर्थ के आधार पर

रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद होते हैं–

1. सरल वाक्य–जिस वाक्य में एक ही उद्देश्य और एक ही विधेय होते हैं, उसे सरल वाक्य कहते हैं। जैसे–मोहन गीत गाता है।

2. संयुक्त वाक्य– जिस वाक्य में दो या दो से अधिक वाक्य स्वतः होते हैं परन्तु समुच्चयबोधक शब्दों, जैसे–और, तथा एवं इत्यादि से जुड़े हुए होते हैं उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं। जैसे– मोहन गीत गा रहा है और राधा खेल रही है।

3. मिश्रित वाक्य– जब एक प्रधान वाक्य पर कई वाक्य आश्रित होते हैं तो उसे मिश्रित वाक्य कहते हैं। जैसे– जब मैं दिल्ली जा रहा था तो कविता सो रही थी।

अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद हैं–

1. साधारण वाक्य	5. इच्छार्थक वाक्य
2. प्रश्नवाचक वाक्य	6. संदेहार्थक वाक्य
3. विस्मयादि बोधक वाक्य	7. आज्ञार्थक वाक्य
4. निषेधात्मक वाक्य	8. संकेतार्थक वाक्य

1. साधारण वाक्य–साधारण रुप से कोई बात कही जाए अथवा उत्तर दिया जाए तो उसे साधारण वाक्य कहते हैं।

जैसे– 1. वह जा रहा है।

2. मै पढ़ रहा हूँ।

2. प्रश्नवाचक वाक्य–जिन वाक्यों में उत्तर की अपेक्षा करते हुए प्रश्न पूछा जाता है उसे प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं।

जैसे– तुम घर कब लौटे थे?

3. विस्मयादिबोधक वाक्य– जिन वाक्यों में आश्चर्य, हर्ष, दुख इत्यादि व्यक्त होते हैं, उसे विस्मयादिबोधक वाक्य कहते हैं।

जैसे– 1. अरे वाह! कितना मोहक दृश्य है।

2. हाय! सर्वनाश हो गया।

4. निषेधात्मक वाक्य– जो वाक्य नकारात्मक अथवा नहीं के अर्थ के साथ बोले जाते हैं, निषेधात्मक वाक्य कहलाते हैं।

जैसे– 1. न मैं घर जा रहा हूँ और न विद्यालय जाऊँगा।

2. मुझे गाना नहीं आता है।

5. इच्छार्थक वाक्य– जो वाक्य इच्छा, आशीर्वाद या प्रशंसा आदि को सूचित करने के लिए बोले जाते हैं, उसे इच्छार्थक वाक्य कहते हैं।

जैसे– 1. आप दीर्घायु रहें।

2. आपकी सभी मनोकामनाएँ पूर्ण हों।

6. संदेहात्मक वाक्य– संदेहपूर्ण कथन को संदेहात्मक वाक्य कहते हैं। अर्थात् जिन वाक्यों में संदेह प्रकट हो।

जैसे– शायद आज पानी बरसे।

7. आज्ञार्थक वाक्य–जिस वाक्यों में को आज्ञार्थक शब्दों का प्रयोग होता है उसे आज्ञार्थक वाक्य कहते हैं।

जैसे– 1. बैठ जाओ।

2. आप घर जाइए।

8. संकेतार्थक वाक्य–जिन वाक्यों में संकेत का बोध होता है उसे संकेतार्थक वाक्य कहते हैं।

जैसे–1. यदि डॉक्टर समय से मिल जायेंगे तो वह ठीक हो जाएगा।

वाच्य परिवर्तन

वाच्य– वाच्य क्रिया का वह रूप या प्रकार है, जिससे यह पता चलता है कि क्रिया कर्ता के अनुसार हुई है, कर्म के अनुसार या भाव के अनुसार हुई है। कभी क्रिया का रूप कर्ता के पुरुष, लिङ्‌ग और वचन के अनुसार रहता है, कभी कर्म के पुरुष, लिङ्‌ग और वचन के अनुरूप रहता है, तो कभी वाक्य भाव (क्रिया) प्रधान हो जाते हैं। इस प्रकार वाच्य के तीन भेद हैं–

1. कर्तृवाच्य– कर्तृवाच्य के वाक्य में कर्ता की प्रधानता होती है, क्रिया कर्ता के अधीन रहती है। व्यवहार में कर्तृवाच्य के वाक्य अधिक प्रयुक्त होते हैं। जैसे– राम पुस्तक पढ़ता है। मैं जाता हूँ। उसने पुस्तक पढ़ी। बच्चे गेंद खेलते हैं। वे रामायण पढ़ते हैं। कविता लिखेगी।

इन उदाहरणों में यह देखा जा सकता है कि कर्ता के अनुसार ही क्रिया का प्रयोग किया गया है। राम पुस्तक पढ़ता है। यहाँ राम कर्ता है, पुस्तक कर्म तथा 'पढ़ता है' क्रिया का रूप है। यहाँ क्रिया राम के अनुसार प्रयुक्त की गयी है, कर्म पुस्तक के अनुसार नहीं।

संस्कृत के अनुसार इसे और स्पष्ट समझा जा सकता है। 'रामः पुस्तकं पठति'। यहाँ 'पठति' क्रिया कर्ता के पुरुष, लिंग, वचन के अनुरूप है। 'ते रामायणं पठन्ति।' उदाहरण में कर्ता के बहुवचनान्त होते ही क्रिया बहुवचन की हो जाती है। यहाँ कर्ता में प्रथमा विभक्ति और कर्म में द्वितीया विभक्ति लगती है। कर्तृवाच्य की क्रिया सकर्मक और अकर्मक दोनों प्रकार की हो सकती है।

2. कर्मवाच्य– कर्मवाच्य के वाक्य में कर्ता गौण हो जाता है, वहाँ कर्म की प्रधानता होती है। कर्म के अनुसार ही क्रिया के पुरुष, वचन, लिंग होंगे। हिंदी भाषा में कर्मवाच्य में प्रायः कर्ता का उल्लेख नहीं किया जाता। कर्मवाच्य के उदाहरण इस प्रकार के होते हैं– पुस्तक पढ़ी जाती है। कपड़ा खरीदा जाता है। भोजन पकाया जाता है। किताब भेजी गयी। हाँ, यदि कर्ता का उल्लेख करना आवश्यक हो, तो उसे करण कारक के अन्तर्गत रखते हैं। जैसे राम से पुस्तक पढ़ी जा रही है अथवा राम द्वारा पुस्तक पढ़ी जा रही है। यहाँ यह ध्यान रहे कि कर्मवाच्य की क्रिया सदैव सकर्मक होती है।

3. भाववाच्य– यहाँ भाव का अर्थ क्रिया है। जिस वाक्य में क्रिया की प्रधानता हो, वहाँ भाव वाच्य होता है। इस प्रकार के वाक्यों में कर्म नहीं होता। इसमें क्रिया हमेशा अन्य पुरुष (प्रथम पुरुष) एकवचन की ही रहती है। जैसे–मोहन से गाया नहीं जाता। खाया नहीं जाता है। मेरे द्वारा सोया नहीं गया। वहाँ कैसे चला जाएगा।

वाच्य-परिवर्तन– जो क्रियाएँ सकर्मक होती हैं, उनके द्वारा कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य दोनों तरह के वाक्य बनते हैं, किन्तु जो क्रियाएँ अकर्मक होती हैं, उनसे केवल कर्तृवाच्य और भाववाच्य ही सम्भव होते हैं। इस प्रकार कर्तृवाच्य का कर्मवाच्य में, कर्मवाच्य का कर्तृवाच्य में तथा कर्तृवाच्य और भाववाच्य का परस्पर परिवर्तन हो सकता है।

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
1. छात्र विद्यालय में खेलते हैं।	छात्रों द्वारा विद्यालय में खेला जाता है।
2. राहुल किताब नहीं पढ़ता है।	राहुल द्वारा किताब नहीं पढ़ी जाती है।
3. माता बच्चों को प्यार करती है।	माता द्वारा बच्चों को प्यार किया जाता है।
4. मोहन ने चित्र बनाया।	मोहन द्वारा चित्र बनाया गया।
5. मैं फूल तोड़ूँगा।	मेरे द्वारा फूल तोड़ा जाएगा।
6. नेताजी ने भाषण दिया।	नेताजी द्वारा भाषण दिया गया।
7. वे रोज पूजा करते हैं।	उनके द्वारा रोज पूजा की जाती है।
8. सुरेश फुटबाल खेल रहा है।	सुरेश द्वारा फुटबाल खेला जा रहा है।
9. राधा कहानी सुनाएगी।	राधा द्वारा कहानी सुनायी जाएगी।
10. वह कभी बाजार नहीं जाता है।	उसके द्वारा कभी बाजार नहीं जाया जाता।

कर्तृवाच्य	भाववाच्य
1. वह लिखेगा।	उसके द्वारा लिखा जाएगा।
2. तुम सो नहीं सकते।	तुमसे सोया नहीं जा सकता।
3. हम नहीं सह सकते।	हमसे नहीं सहा जा सकता।
4. बच्चे खेल रहे हैं।	बच्चों द्वारा खेला जा रहा है।
5. मोहन ने अनुभव किया।	मोहन द्वारा अनुभव किया गया।
6. वे शांत नहीं रहते हैं।	उनसे शांत नहीं रहा जाता है।
7. रमेश नहीं लड़ेगा।	रमेश से नहीं लड़ा जाएगा।
8. बच्चे हँस रहे हैं।	बच्चों द्वारा हँसा जा रहा है।
9. वह बैठ रहा है।	उसके द्वारा बैठा जा रहा है।
10. अब मैं नहीं चल सकता हूँ।	अब मुझसे नहीं चला जाता है।

अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. पद परिचय से क्या अभिप्राय है ? पद और शब्द के अंतर को स्पष्ट कीजिए।
2. विकारी शब्द किसे कहते हैं ? ये कितने प्रकार के होते हैं ?
3. संज्ञा की क्या परिभाषा है ? अपने शब्दों में अभिव्यक्ति कीजिए।
4. निम्नलिखित शब्दों में से सर्वनाम शब्दों का चयन कर उनके भेद स्पष्ट कीजिए –
   मैं, कोई, वह, जिस, क्या, आप ही, सो, कुछ
5. विशेष्य और विशेषण का अंतर उदाहरण के साथ स्पष्ट कीजिए।
6. वाक्य में क्रिया का क्या महत्त्व है ? वह कितने प्रकार की होती है ?
7. निम्नलिखित शब्दों में से क्रियाविशेषण को अलग कीजिए–
   कितना, श्याम, दस, दरवाजा, नित्य, धीरे–धीरे, तुम, दिल्ली
8. वाच्य किसे कहते हैं ? इसके कितने भेद होते हैं ?
9. कर्तृवाच्य में किसकी प्रधानता होती है ?
10. कर्मवाच्य और भाववाच्य में क्या समानता है ?
11. निम्नलिखित वाक्यों में वाच्य का भेद स्पष्ट कीजिए–
    (i) मैं आज नहीं पढ़ूँगा।
    (ii) लड़के ने गाना गाया।
    (iii) इसके द्वारा फूल तोड़ा गया।
    (iv) सुनीता क्रिकेट खेल लेती है।
    (v) रमा से खाना पकाया जाता।
    (vi) वह सो गया।
    (vii) सुरेश ने ग्रंथ लिख दिया था।
    (viii) नौकर द्वारा सेवा की गयी।
    (ix) सविता निरंतर कार्य करती रहती हैं।
    (x) मैंने कार्य सम्पन्न कर लिया था।
12. निम्नलिखित वाक्यों को कर्मवाच्य में परिवर्तित कीजिए–
    (i) वह घर में पढ़ता रहता है।
    (ii) मैं कार्य कर सकता हूँ।
    (iii) रमेश ने गाड़ी खींच ली थी।
    (iv) शांति गीत मधुर गाती है।
    (v) राजीव ने अपना पाठ याद कर लिया था।

(vi) दुकानदार सामान बेचता है।

(vii) रचना नाटक खेल लेती है।

(viii) मनोहर अब गाँव में नहीं खेलता है।

13. निम्नलिखित वाक्यों का कर्तृवाच्य में परिवर्तित कीजिए।

(i) उसके द्वारा गाना नहीं सुना गया।

(ii) मोहन से खाना पकाया जाता है।

(iii) उससे पढ़ा नहीं गया।

(iv) रीना द्वारा खूब नहाया गया।

(v) इंद्रदेव द्वारा वर्षा करायी गयी।

(vi) मुझसे अब सहा नहीं जाता।

(vii) शिक्षक द्वारा छात्र को दंड दिया गया।

(viii) सरला से चला नहीं गया।

14. निम्नलिखित वाक्यों को भाववाच्य में बदलिए–

(i) वह सो रहा है।

(ii) हम लोग जायेंगे।

(iii) राधा रोज खेलती है।

(iv) मैं अब नहीं खाऊँगा।

(v) पेड़ पर पक्षी बैठा है।

(vi) रवि नहीं चल सकता था।

(vii) वह प्रातः विलंब से उठती है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. मैं इस विद्यालय में पढ़ना नहीं चाहता, क्योंकि इसमें पढ़ाई नहीं होती।
2. यदि आप यहाँ आना नहीं चाहते तो मैं आ जाऊँ, क्योंकि काम तो करना ही होगा।
3. यदि आप हमें मित्र बनाना चाहते हैं तो हमारे विरुद्ध विष उगलना बंद कर दें।
4. एडीसन ने कहा था कि प्रतिभा एक औंस बुद्धि और एक टन परिश्रम का मिश्रण है।
5. इस बार सबने कहा कि आज से हम उस विदेशी यात्री को जिसने भारत का गौरवगाान किया है, अपना मान्य अतिथि मानेंगे।

अर्थ के आधार पर वाक्य के भेद बताइए–

1. क्या आप बाग गए थे?
2. गायिका गीत गा रही है।
3. ईश्वर आपको लंबी उम्र दे।
4. मैं आज विद्यालय नहीं जाऊँगा।

5. बेटा! बाज़ार जाकर कुछ फल ले आओ।

6.श्शायद आज मेरे मामा जी आएँ।

7. उफ! आज कितनी वर्षा होगी।

8. यदि बुआ आई तो मैं चिड़ियाघर जाऊँगा।

निम्नलिखित वाक्यों को संयुक्त वाक्य में बदलिए—

1. रोहन बाज़ार जाकर सब्ज़ी और फल लाया।
2. बुआ जी के आने पर हम चिड़ियाघर जाएँगे।
3. मुख्य अतिथि के आते ही प्रधानाचार्य ने उनका स्वागत किया।
4. कक्षा–अध्यापिका के आने पर बच्चे शांत हो गए।
5. आम के पेड़ पर बैठी कोयल कूक रही है।
6. शीला विद्यालय से आते ही पढ़ने बैठ गई।
7. हमने आगरा जाकर ताजमहल देखा।
8. नाना जी आकर चले गए।

निम्नलिखित वाक्यों को मिश्रित वाक्य में बदलिए—

1. मैंने एक सुंदर चिड़िया देखी।
2. सुभाषचंद बोस ने "आज़ाद हिंद फौज़" नाम की सेना बनाई।
3. आने वाला युवक चला गया।
4. माँ की बनाई हुई खीर बहुत स्वादिष्ट थी।
5. प्रयागराज जाने वाली ट्रेन चली गई।
6. मेरे अंग्रेजी अध्यापक ही मुझे हिंदी भी पढ़ाते हैं।
7. अध्यापक द्वारा बताए गए प्रश्न छात्रों ने याद कर लिए।

निम्नलिखित वाक्यों को सरल वाक्यों में बदलिए—

1. सूरज निकला और चारों ओर प्रकाश फैल गया।
2. जो लड़का दुकान पर काम करता था वह गाँव गया है।
3. ममता ने बताया कि परीक्षा की तिथि आगे बढ़ गई है।
4. चोर ने जैसे ही पुलिस को देखा वैसे ही नदी में कूद गया।
5. यदि तुम परिश्रम करोगे तो सफलता मिलेगी।
6. अध्यापिका के जाते ही बच्चे शोर करने लगे।
7. पिता जी मंदिर गए और पूजा की।
8. बादल खूब गरजे किंतु पानी नहीं बरसा।
9. दीपा ने चाय पी और चली गई।

■

लोकोक्ति एवं मुहावरा

लोकोक्ति (कहावतें) – लोकोक्ति शब्द 'लोक' और 'उक्ति' शब्दों से मिलकर बना है। लोक में प्रचलित उक्ति को ही 'लोकोक्ति' या 'कहावत' कहते हैं।

मुहावरा – जब किसी शब्द समूह का सामान्य अर्थ न लेकर उसका लाक्षणिक अर्थ लिया जाता है, उसे 'मुहावरा' कहते हैं।

विशेष – मुहावरे वाक्यांश होते हैं जबकि लोकोक्तियाँ स्वतंत्र वाक्य होती हैं। मुहावरे वाक्य में प्रयुक्त होने पर ही अपना अर्थ देते हैं जबकि लोकोक्तियाँ अर्थपूर्ण होती हैं।

लोकोक्ति एवं मुहावरा	**अर्थ**
अधजल गगरी छलकत जाए	– डींग हाँकना
एक पंथ दो काज	– एक काम में दोहरा लाभ
हाथ कंगन को आरसी क्या	– प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं
धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का	– अस्थिरता के कारण कहीं का भी न होना
न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी	– विवाद को जड़ से खत्म कर देना
का बरखा जब कृषि सुखाने	– काम बिगड़ जाने पर सहायता व्यर्थ होती है।
कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली	– दो असमान व्यक्तियों की तुलना
खोदा पहाड़ निकली चुहिया	– प्रयत्न बड़ा लाभ बहुत थोड़ा
जैसी करनी वैसी भरनी	– किए का फल भोगना पड़ता है।
एक म्यान में दो तलवार	– दो प्रतिद्वंदी एक साथ नहीं रह सकते
साँच को आँच नहीं	– सच्चे को डरने की जरूरत नहीं
नाँच ना जाने आँगन टेढ़ा	– अपनी कुशलता का दोष दूसरे पर मढ़ना
ऊँट के मुँह में जीरा	– आवश्यकता से बहुत कम मिलना
अक्ल का अंधा	– महामूर्ख होना
अक्ल पर पत्थर पड़ना	– बुद्धि नष्ट होना
अंधों में काना राजा	– मूर्ख व्यक्तियों के बीच कम जानने वाला को भी विद्वान मानना
अपने मुँह मियां मिट्ठू बनना	– अपनी प्रशंसा स्वयं करना
एड़ी चोटी एक करना	– बहुत मेहनत करना

जुबान लंबी होना	– बहुत बातूनी होना
तलवे चाटना	– खुशामद करना
अंगूठा दिखाना	– इनकार करना
दो–दो हाथ करना	– लड़ाई झगड़ा करना

मुहावरा : अर्थ एवं प्रयोग –

1. **अक्ल पर परदा पड़ना–** (बुद्धि भ्रष्ट होना)। महेश को अपने भले–बुरे का ज्ञान नहीं रहा, क्योंकि उसकी अक्ल पर परदा पड़ा हुआ है।
2. **अक्ल के पीछे लाठी लिए फिरना–** (बुद्धि से काम न लेना)। रमेश हित और अहित का विचार नही करता, वह अक्ल के पीछे लाठी लिए फिरता है।
3. **अक्ल के घोड़े दौड़ाना–** (अनेक प्रकार से विचार करना)। मनुष्य ने बहुत अक्ल के घोड़े दौड़ाए किंतु वह परमात्मा की लीला का भेद नही पा सका।
4. **अक्ल–चकराना–** (कुछ समझ में न आना)। जब साधारण सी बात में तुम्हारी अक्ल चकरा जाती है, तब तुम गणित का अध्ययन कैसे करोगे।
5. **अक्ल मारी जाना–** (बुद्धि नष्ट होना)। दिन–रात चाण्डाल चौकड़ी में लगे रहते हो, क्या तुम्हारी अक्ल मारी गई है।
6. **अक्ल का दुश्मन–** (बुद्धिहीन होना) इसे समझाने की कोई आवश्यकता नही है, जानते नहीं यह तो पूरा अक्ल का दुश्मन है।
7. **अगर–मगर करना–** (बहाना करना)। यदि तुमको काम नहीं करना हो तो साफ कहो। अगर–मगर करने से कुछ लाभ नहीं।
8. **अंग–अंग ढीला होना–** (बहुत ज्यादा थक जाना) आज सुबह से शाम तक इतना परिश्रम करना पड़ा कि सोहन का अंग–अंग ढीला हो गया।
9. **अंधे के हाथ बटेर लगना–** (बिना प्रयास बड़ी चीज पा लेना)। भोलू के विवाह का रहस्य यह है कि मानो अंधे के हाथ बटेर लग गयी है।
10. **अंधे की लकड़ी–** (एकमात्र सहारा)। सुरेश– यह किसका लड़का है? विद्या– यह मेरी अंधे की लकड़ी है।
11. **अन्न–जल पूरा हो जाना–** (मर जाना)। मनुष्य के जीवन का विश्वास नहीं, न जाने कब अन्न–जल पूरा हो जाए।
12. **अपना–सा मुहँ लेकर रह जाना–** (लज्जित होना, निरूत्तर होना)। नारायण को सबने रोका था कि तुम राम के साथ शास्त्रार्थ मत करो। उसने नहीं माना, शास्त्रार्थ किया और अपना सा मुँह लेकर रह गया।
13. **अपना उल्लू सीधा करना–** (स्वार्थ सिद्ध करना)। दूसरों की चाहे जितनी हानि हो जाय, गोलू अपना उल्लू सीधा करता रहता है।

14. **अपना ही राग अलापना**– (अपने ही मतलब की बात कहना)। तुम दूसरों का सुनना ही नहीं जानते, सदा अपना ही राग अलापते रहते हो।
15. **अपने पैरों पर खड़ा होना**– (स्वावलम्बी होना)। दूसरों पर निर्भर होकर जीवन यापन करना बुरा है। मनुष्य को अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिए।
16. **अपने मियाँ मिट्ठू बनना**– (अपनी प्रशंसा करना, आत्मश्लाघा करना)। रानी अपने स्वादिष्ट व्यंजनों का बखान करती अपने ही मियाँ मिट्ठू बन रही थी।
17. **अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मारना**– (संकट मोल लेना)। रोहन को अपना भेद बताकर मैंने अपने पावों पर अपने आप कुल्हाड़ी मारी है।
18. **अपने मार्ग में काँटे बोना**– (अपने लिए हानिप्रद कार्य करना)। गुरु से विरोध करके तुम अपने मार्ग में काँटे बो रहे हो।
19. **अवसर–चूकना**– (मौका खो देना)। अवसर चूक जाने पर सिवाय पछाताने के और कोई लाभ नही।
20. **अरण्य-रोदन करना**– (व्यर्थ विलाप या भाषण करना)। निर्दयों के समक्ष अपना दुःख कहना अरण्य रोदन ही होता है।
21. **आँख भर आना**– (नेत्रों में आँसू आ जाना)। तीर्थराज आज पाँच साल के बाद घर लौटा है, उसे देखते ही उसकी माता की आँख भर आई।
22. **आँखे चार होना**– (प्रेम होना)। पुष्पवाटिका में राम और सीता की आँखे चार हो गयीं।
23. **आँखों में खून उतर आना**– (क्रोधित होना)। राहुल की बदमाशी को देखते ही मेरी आँखों में खून उतर आता है।
24. **आँखों में धूल झोंकना** – (प्रत्यक्ष धोखा देना)। पुलिस की आँखों में धूल झोंककर चोर भाग गया और पुलिस उसे ढूँढती रह गयी।
25. **आग लगाकर पानी को दौड़ना**– (झगड़ा लगाकर शांत करने का प्रयत्न करना)। संसार में ऐसे लोगों की कोई कमी नहीं हैं जो पहले आग लगाते हैं फिर पानी लेकर दौड़ते हैं।
26. **आग में पानी डालना**– (क्रोध शांत करना)। यदि मैं आग में पानी न डालता तो वह इतना उत्तेजित हो गया था कि तुमको भस्म ही कर देता।
27. **आग लगाकर तमाशा देखना**– (झगड़ा कराकर प्रसन्न होना)। सोहन! क्या यह नीचता नहीं है कि तुम आग लगा कर तमाशा देखना चाहते हो?
28. **आग बबूला होना**– (अत्यंत क्रोधित होना)। शिव–धनुष टूटते ही परशुराम आग बबूला हो उठे।
29. **आटा गीला होना**– (मुसीबत बढ़ जाना)। मैं तो पहले से बेरोजगार था, बीमारी आ जाने से मेरा आटा गीला हो गया।

30. **आटे दाल का भाव मालूम होना**– (दुनियादारी का ज्ञान होना)। जब गृहस्थ जीवन में प्रवेश करोगे तब आटे–दाल का भाव मालूम हो जाएगा।
31. **आधा तीतर आधा बटेर**– (बेमेल चीजों का मिश्रण)। गड़बड़ झाला। वह एक ही दूकान में कपड़े और किताबें बेचना चाहता था। मैंने उससे कहा कि आधा तीतर आधा बटेर होने पर बिक्री कम होगी।
32. **आसमान से तारे तोड़ना**– (असंभव कार्य करना)। प्रेमी ने प्रेमिका से कहा कि मैं तुम्हारे लिए आसमान के तारे भी तोड़ सकता हूँ।
33. **आसमान टूट पड़ना**– (अचानक बड़ी विपत्ति आ जाना)। अभी वह अपने पैरों पर खड़ा ही हो रहा था कि अचानक उस पर आसमान टूट पड़ा, उसे नौकरी से निकाल दिया गया।
34. **आसमान सिर पर उठाना**– (उत्पात मचाना, उपद्रव करना)। आजकल उस चांडाल चौकड़ी ने आसमान सिर पर उठा रखा है।
35. **आस्तीन का साँप**– (विश्वासघाती, कपटी मित्र)। मैनें तुमसे पहले ही कह दिया था कि सतीश आस्तीन का साँप है। अवसर पाते ही डस लेगा।
36. **आस्तीन के साँप पालना** – (विश्वासघाती को मित्र बनाना)। विश्वासघाती रोहन को अपने पास रखना आस्तीन में साँप पालना है।
37. **ईंट से ईंट बजाना**– (विध्वंस करना)। यह बात सही है कि तुम जहाँ कहीं भी जाओगे, ईटों से ईंट बजा दोगे।
38. **ईद का चाँद होना**– (बहुत प्रतीक्षा के बाद मिलना)। मधुसूदन! तुम्हारे तो अब दर्शन ही नहीं होते। यार, तुम तो ईद के चाँद हो गये हो।
39. **उल्टी गंगा बहाना**– (विपरीत कार्य करना)। राजू कभी खेती देखने भी नहीं जाता था। एक दिन खेत में काम करते देख लोगों ने कहा कि आज तो उल्टी गंगा बह रही है।
40. **ओखली में सिर देना**– (जानबूझकर विपत्ति में पड़ना)। अब रोते क्यों हो? तुमने दुष्टों का साथ देकर ओखली में अपना सिर दे दिया है।
41. **काठ का उल्लू**– (बड़ा मूर्ख)। उसे कुछ समझ में नही आता, बिल्कुल काठ का उल्लू है।
42. **कान भरना**– (चुगली करना)। तुम्हारी वहाँ कौन सुनने वाला था? तुम्हारे विरुद्ध उस दुष्ट ने साहब के कान भर दिए होंगे।
43. **कोल्हू का बैल**– (नासमझ परंतु परिश्रमी)। वह अधिक योग्यता नहीं रखता, लेकिन कोल्हू की बैल की तरह मेहनत करता है।
44. **खून खौलना**– (क्रोध आना)। उस चांडाल को देखकर मेरा खून खौल उठता है।
45. **गागर में सागर भरना**– (थोड़े में बहुत कुछ कह देना)। बिहारी ने अपने दोहों में गागर में सागर भर दिया है।

46. **गिरगिट की तरह रंग बदलना**– (एक रंग ढंग पर न रहना)। नेता लोग गिरगिट की तरह रंग बदलते रहते हैं।
47. **चिराग तले अंधेरा होना**– (अपना दोष अपने को न दिखाई देना)। प्रोफेसर साहब का लड़का हाईस्कूल में फेल हो गया, है न चिराग तले अंधेरा।
48. **चुल्लू भर पानी में डूब मरना**–(अत्यधिक लज्जित होना)। तुमने चोरी करना सीख लिया, तुम्हें तो चुल्लू भर पानी में डूब मरना चाहिए।
49. **चेहरे पर हवाइयाँ उड़ना**– (भयभीत होना)। वन में सिंह की गर्जना सुनकर उसके चेहरे पर हवाइयाँ उडने लगी।
50. **जमीन आसमान एक करना**– (बहुत अधिक परिश्रम करना)। तुम्हारे लिए जमीन आसमान एक कर दिया, पर तुम्हारा पता न चला।
51. **टेढ़ी खीर होना**– (कठिन काम होना)। आप के लड़के को सीधा करना तो टेढ़ी खीर हो गया है।
52. **डूबते को तिनके का सहारा**– निराशा में आशा। वह कर्ज में डूबा हुआ था। सौ रुपये मिलने से डूबते को तिनके का सहारा मिल गया।
53. **थूक कर चाटना**– (कह कर मुकर जाना, प्रतिज्ञा भंग करना)। शाम को तुमने रुपये देने को कहा, सुबह इनकार कर गये। तुम्हारी थूक कर चाटने की प्रवृत्ति अच्छी नहीं।
54. **दाँत खट्टे करना**– (पराजित करना)। राणा प्रताप ने हल्दी घाटी के मैदान में मुगलों के दाँत खट्टे कर दिए।
55. **दाल में काला होना**– (संदेह होना)। मैं पहले ही समझ गया था कि दाल में कुछ काला है।
56. **दो नावों पर पैर रखना**– (दो कार्य एक साथ करना)। रमेश नौकरी और व्यवसाय दोनों एक साथ कर दो नाव पर पैर रखे हुए है।
57. **नाक कटना**– (बदनामी होना, इज्जत चली जाना)। उसके पास खाने को कुछ नही था और घर में एकाएक मेहमान आ गये, परन्तु पड़ोसी की मदद से उसकी नाक कटने से बच गई।
58. **नाकों चने चबाना**– (परेशान करना)। वह अधिकारी बहुत सख्त है उसके साथ काम करने में तुम्हें नाकों चनें चबाना पड़ेगा।
59. **नौ दो ग्यारह होना**– (भाग जाना)। राम मोहन को मारकर नौ दो ग्यारह हो गया।
60. **पौ बारह होना**– (खूब लाभ होना)। अपने दादा जी से मिलने के कारण मोहन के पौ बारह हो गये हैं।
61. **फूँक फूँक कर कदम रखना**– (सावधानी से कार्य करना)। आज के वैज्ञानिक युग में हर व्यक्ति को फूँक फूँक कर कदम रखना चाहिए।

62. **रेत से तेल निकालना**– (असंभव को सम्भव कर देना)। उस कंजूस से दस हजार रुपये चंदा लेकर सचमुच राम ने रेत से तेल निकाल लिया।
63. **बहती गंगा में हाथ धोना**– (अवसर का लाभ उठाना)। आजकल बैंकों से छोटे–छोटे कार्यों के लिए ऋण मिल रहा है, तुम भी बहती गंगा में हाथ धो लो।
64. **भैंस के आगे बीन बजाना**– (मूर्ख को उपदेश देना)। निरक्षर व्यक्ति को व्याकरण की अशुद्धियाँ बताना भैंस के आगे बीन बजाना है।
65. **राई का पहाड़ बनाना**– (छोटी बात को बढ़ा–चढ़ा कर कहना)। कुछ लोग अतिशयोक्ति करने में इतने पटु होते हैं कि राई का पहाड़ बना देते हैं।
66. **रफू चक्कर होना**– (भाग जाना)। सोहन के साथ न जाओ, कोई झगड़ा हो गया तो वह तुमको छोड़ कर रफू चक्कर हो जाएगा।
67. **लकीर का फकीर होना**– (अंधविश्वासी होना, पुरानी प्रथा पर चलना)। गाँवों में अब भी अंधविश्वास इतना फैला हुआ है कि ज्यादातर लोग लकीर के फकीर है।
68. **लोहे के चने चबाना**– (कठिन कार्य करना, कठिनाई का सामना करना)। अर्जुन के न रहने पर पांडवों को चक्रव्यूह तोड़ने में लोह के चने चबाने पड़े।
69. **सिर मुड़वाते ओले पड़ना**– (आरम्भ में ही संकट उपस्थित होना)। उसने जैसे ही स्वर्णकार का काम संभाला, सरकार ने स्वर्ण नियंत्रण नियम लागू कर दिया और उस पर सिर मुड़ाते ही ओले पड़ गये।
70. **सूर्य को दीपक दिखाना**– (महान व्यक्ति की तुच्छ प्रशंसा करना)। रविन्द्रनाथ टैगोर को संसार जानता है, तुम सूर्य को दीपक क्यों दिखाते हो?
71. **हवाई किले बनाना**– (कल्पना की उड़ान भरना)। कुछ करके भी दिखाओगे कि सदैव हवाई किले ही बनाते रहोगे।

लोकोक्ति : अर्थ एवं प्रयोग –

1. **अपना हाथ जगन्नाथ**– (स्वयं का किया हुआ कार्य फलदायी होता है)।
   प्रयोग– घर का काम नौकरों से करवाने की अपेक्षा स्वयं करना उत्तम है, अपना हाथ जगन्नाथ।
2. **अंत भला तो सब भला**– (परिणाम अच्छा होने पर सब अच्छा मान लिया जाता है)।
   प्रयोग– सोहन ठीक से पढ़ाई नहीं कर रहा था, लेकिन हाईस्कूल अच्छे अंकों से उत्तीर्ण हो गया। इस पर किसी ने कहा कि चलो भाई अंत भला तो सब भला।
3. **आसमान से गिरा खजूर में अटका**– (किसी कार्य के पूरा होते होते बाधा उत्पन्न हो जाना)।
   प्रयोग– सोहन परीक्षा में किसी तरह उत्तीर्ण हो गया, परंतु पूरी फीस जमा न होने से उसका परीक्षाफल रोक दिया गया। इस पर उसके मित्र ने कहा, 'भाई तुम तो आसमान से गिरे तो खजूर में अटके।'

4. **का वर्षा जब कृषि सुखाने**– (समय बीत जाने पर सहायता व्यर्थ है)।
प्रयोग– सेवानिवृत्त होने के पश्चात् काफी समय तक उसे पेंशन नहीं मिली। उसका अंत समय निकट आया तो पेंशन स्वीकृत हो गई। इस पर उसने कहा कि 'का वर्षा जब कृषि सुखाने।'
5. **घी का लड्डू टेढ़ा भला**– (काम की वस्तु कम अच्छी रहने पर भी ठीक रहती है)।
प्रयोग– मनीषा के बेटे के काले रंग को देखकर सब भला बुरा कह रहे थे, तब उन्होंने कहा कि घी का लड्डू टेढ़ा भला।
6. **चौबे गये छब्बे बनने दुब्बे बनकर आये** – (लाभ के चक्कर में हानि हो जाना)।
प्रयोग– उसने अधिक लाभ कमाने के लिए एक बहुत बड़ा ठेका लिया, परंतु उसे बहुत अधिक घाटा हो गया। उसकी स्थिति देखकर एक पड़ोसी ने कहा, चौबे गये थे छब्बे बनने दुब्बे बनकर आए।
7. **जंगल में मोर नाचा किसने देखा**– (गुणों का प्रदर्शन अनुपयुक्त स्थान पर करना)।
प्रयोग– गाँव में वापस लौटकर जब वह शहर में बनाये मंदिर की सुंदरता का वर्णन करने लगा तो किसी ने कहा जंगल में मोर नाचा किसने देखा।
8. **भई गति मोर छछूंदर केरी**– (असमंजस की स्थिति में होना)।
प्रयोग– करीम ने रहीम को उधार देकर स्वयं को भई गति मोर छछूंदर केरी की स्थिति में डाल लिया है।
9. **समरथ को नहि दोष गोसाईं**– (सबल का कोई दोष नहीं देखता है)।
प्रयोग– अमेरिका हिंद महासागर में अपना नौसैनिक अड्डा बना रहा है। इस संबंध में संयुक्त राष्ट्र संघ की भी परवाह नहीं थी। किसी ने ठीक ही कहा है कि समरथ को नहि दोष गोसाईं।
10. **अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता**– (बड़ा काम एक आदमी से नहीं हो सकता)।
प्रयोग– सभी लोग साथ दें, तभी आंदोलन में सफलता मिल सकती है, अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता।
11. **अधजल गगरी छलकत जाय**– (डींग हाँकना)।
प्रयोग– पाँच बार हाईस्कूल में फेल हुए हैं और दिखाते हैं यों जैसे बड़े धुरंधर पंडित है, सच है अधजल गगरी छलकत जाय।
12. **अपनी अपनी डफली अपना अपना राग**– (एक मत न होना)।
प्रयोग– इस संस्था का शीघ्र ही नाश होगा, कोई नियम नहीं, कोई अध्यक्ष नहीं, सब मुखिया बनते हैं। यहाँ तो बस अपनी अपनी डफली अपना अपना राग।
13. **आँख के अंधे नाम नयनसुख**– (गुण के विपरीत होना)।
प्रयोग– लेखक बनें हैं, कलम पकड़ने की तमीज नहीं। सच है आँख के अंधे नाम नयनसुख।
14. **आगे नाथ न पाछे पगहा**– (कोई नाते रिश्तेदार न होना)।
प्रयोग– स्वामी जी का कौन खाने वाला बेटा है? उनके तो आगे नाथ न पाछे पगहा।

■

पत्र–लेखन

पत्र–सम्प्रेषण के समस्त लिखित साधनों में पत्र आज भी शक्तिशाली एवं प्रभावपूर्ण साधन है। लेख में व्यक्ति का सम्पूर्ण ध्यान विषय-वस्तु के प्रतिपादन की तरफ रहता है, परन्तु पत्र में निकटतम आत्मीयता रहती है तथा इसलिए लेखक और पाठक दोनों सामीप्य का अनुभव करते हैं। संक्षेप में पत्र-लेखन की कुछ महत्तवपूर्ण विशेषताएँ निम्नवत् हैं–

1. सरलता–पत्र की भाषा सरल, सुबोध और ग्राह्य होनी चाहिए। जिसमें स्पष्टता का होना अत्यंत आवश्यक है। जटिल और अस्पष्ट भाषा पत्र को निरर्थक और उबाऊ बना देती है। पत्र के द्वारा पत्र-लेखक का आशय अपने पूर्ण रूप में व्यक्त होना चाहिए।

2. निश्चयात्मकता–पत्र में अभिप्राय की सुनिश्चितता स्पष्ट होनी आवश्यक है। पत्र बढ़कर यदि पाठक में अनिश्चितता बनी रहे तो पत्र का सारा उद्देश्य निरर्थक हो जाता है।

3. संक्षिप्तता–पत्र-लेखक में गागर में सागर भरने की कला होनी चाहिए। पत्र में अनावश्यक विस्तार एवं आलंकारिक शैली के प्रयोग से सदैव बचना चहिए।

शैली-शिल्प को व्यापक रूप में देखते हुए पत्रों को निम्नलिखित दो वर्गों में विभाजित किया जाता है–

1. अनौपचारिक तथा 2. औपचारिक पत्र।

1. अनौपचारिक पत्र–अनौपचारिक पत्र को व्यक्तिगत पत्र भी कहा जाता है। इसीलिए इन पत्रों में व्यक्तिगत अनुभव का विवरण होता है। ये पत्र अपने परिवार के सदस्यों, मित्रों और निकट संबंधियों को लिखे जाते हैं।

2. औपचारिक पत्र–यह पत्राचार उन लोगों के साथ किया जाता है, जिनके साथ हमारा कोई निजी परिचय नहीं होता। यदि होता है तो उसमें व्यक्तिगत लगाव और आत्मीयता गौण होती है। इनमें औपचारिकता और कथ्य संदेश ही मुख्य होता है; इनमें तथ्यों और सूचनाओं पर ही अधिक महत्तव दिया जाता है।

औपचारिक पत्रों के अंतर्गत निम्नलिखित पत्र आते हैं–

(क) आवेदन-पत्र,

(ख) व्यावसायिक-पत्र,

(ग) सरकारी पत्र,

(घ) अव्यावसायिक–पत्र।

औपचारिक और अनौपचारिक पत्रों को एक विशिष्ट प्रकार के ढाँचे में रखकर प्रस्तुत किया जाता है।

नोट : परीक्षार्थी को अपनी व्यक्तिगत पहचान बताने की अनुमति नहीं होती है, अतः पत्र लिखते समय यदि पत्र-लेखक के विषय में कोई सूचना नहीं दी गई है तो 'भेजने वाले के पते' के स्थान पर 'परीक्षा भवन' अथवा XYZ लिख देना चाहिए, अन्यथा दी गई सूचना का प्रयोग कर सकते हैं।

अनौपचारिक पत्रों का प्रारूप

पत्र चाहे औपचारिक हो अथवा अनौपचारिक दोनों में प्रारूप का स्थान महत्त्वपूर्ण होता है। वस्तुतः औपचारिक और अनौपचारिक दोनों प्रकार के पत्रों के ऐसे विशिष्ट प्रारूप होते हैं, जिनके आधार पर पत्र लेखन किया जाता है। उदाहरण के लिए, अनौपचारिक पत्र का प्रारूप–

211, करिश्मा अपार्टमेंट
लूकरगंज
प्रयागराज
8 नवंबर, 20XX

सेवा में,

पिताजी

सादर प्रणाम।

विगत् शाम की डाक से आपका पत्र मिला। आप सभी का कुशलता जानकर मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हुई। यहाँ पर सुरेश, महेश और ऐश्वर्य सभी ठीक हैं।

आपने अपने पत्र में .... दादीजी, माताजी, बुआजी आदि को ....।

पत्र की प्रतीक्षा में

आपका बेटा
रोहन

उक्त प्रारूप के आधार पर अनौपचारिक पत्र में तीन प्रमुख भाग हैं–

(i) शीर्ष भाग,

(ii) मुख्य मध्य भाग

(iii) अधोभाग।

शीर्ष भाग में अपना पता, दिनांक, संबोधन वाक्य और प्रशस्ति आते हैं। मुख्य मध्य भाग में पत्र का संदेश अथा कथ्य रहता है तथा अधोभाग में 'स्वनिर्देश' के अंतर्गत अपना नाम और हस्ताक्षर लिखा रहता है।

औपचारिक पत्र

औपचारिक पत्र का भी अपना एक सुनिश्चित प्रारूप होता है। उसमें शीर्ष भाग में पत्र-प्रेक्षक का पता बायीं ओर लिखा जाता है तथा पत्र-प्रेषक अपना नाम नीचे 'स्वनिर्देश' के बाद लिखते हैं।

औपचारिक पत्र के मध्य भाग को समाप्त करने के बाद आभार–सूचक वाक्य अथवा 'ध ान्यवाद' लिखते हैं और उसके बाद ही 'स्वनिर्देश' लिखते हैं।

औपचारिक पत्रों का प्रारूप

अपनी गली/मोहल्ले की नालियों की समुचित सफ़ाई के लिए नगर निगम के स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखिए।

परीक्षा भवन
प्रयागराज
दिनांक : 4 दिसंबर, 20XX

स्वास्थ्य अधिकारी
नगर निगम,
प्रयागराज।

विषय : मोहल्ले की सफाई हेतु।

महोदय,

आपका ध्यान .... करना पड़ता है।

अतः उक्त ....
.... सकती है।

सधन्यवाद।

भवदीय,
मनोज कुमार

पत्र आरंभ और समाप्त करने की औपचारिक तालिका

पत्र का प्रकार	संबंध	आरंभ	समापन
व्यक्तिगत	माता-पिता, बड़े भाई अथवा बड़ी बहन तथा आदरणीय संबंधियों को	माननीय, पूजनीय, पूज्य, श्रद्धेय, आदरणीय	आपका आज्ञाकारी, स्नेह पात्र, स्नेह भाजन,
	मित्र अथवा सहपाठी को अपने से छोटों को	प्रिय मित्र, मित्रवर, प्रिय, प्रियवर	आपका, तुम्हारा शुभचिंतक, शुभाकांक्षी।
व्यवसायिक	पुस्तक विक्रेता, बैंक मैनेजर या अन्य व्यापारी आदि।	श्रीमान, महोदय, प्रिय महोदय, प्रबंधक महोदय	भवदीय, निवेदक
आवेदन-पत्र	प्रधानाचार्य संबंधित अधिकारी आदि।	श्रीमान, महोदय/महोदया, मान्यवर श्रीमान, मान्य, मान्यवर महोदय/महोदया	विनीता, प्रार्थी, भवदीय, आपका आज्ञाकारी आपका स्नेह भाजन भवदीय, विनीत
कार्यालय	संपादक, नगर निगम अधिकारी, केंद्रीय मंत्री, रेलवे अधीक्षक, आदि।	श्रीमान, मान्यवर, महोदय/महोदया	भवदीय, प्रार्थी, कृपाकांक्षी, निवेदक, विनीत

औपचारिक पत्र

(क) आवेदन/ प्रार्थना-पत्र (प्रधानाचार्य/मुख्याध्यापक को)

1. अपने प्रधानाचार्य को छात्रवृत्ति के लिए एक आवेदन-पत्र लिखिए।

परीक्षा भवन
प्रयागराज
दिनांक : 15 अप्रैल, 20XX

प्रधानाचार्य,
राजकीय इ0 का0 प्रयागराज,
उत्तर प्रदेश।

विषय : छात्रवृत्ति हेतु आवेदन।

महोदय,

कक्षाध्यापिका द्वारा यह सुनकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि विद्यालय के उन छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्तियाँ दी जाएँगी, जो अस्सी प्रतिशत तक अंक प्राप्त करने के साथ-साथ किसी-न-किसी सांस्कृतिक प्रवृत्ति में भी विशेष योग्यता रखते होंगे।

महोदय पिछले वर्ष भी मैंने आठवीं कक्षा में अस्सी प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किए थे तथा वाद–विवाद प्रतियोगिता और कविता पाठ प्रतियोगिता में भी मैंने प्रथम स्थान प्राप्त किया था। इस बार भी मैं अंतर्विद्यालय वार्षिक भाषण प्रतियोगिता में पुरस्कृत किया गया हूँ। आशा करता हूँ कि मैं प्रथम सत्र की परीक्षा में भी अच्छे अंक प्राप्त करूँगा। मैं विद्यालय की हॉकी टीम का कैप्टन भी हूँ तथा सभी अध्यापक मुझसे प्रसन्न रहते हैं।

आशा है आप मुझे छात्रवृत्ति की उपर्युक्त सुविधा प्रदान करके प्रोत्साहित करेंगे। मैं सदैव आपका आभारी रहूँगा।

सधन्यवाद।

आपका आज्ञाकारी शिष्य
क0 ख0 ग0
कक्षा ....

2. विद्यालय में खेल-कूद की सामग्री की ओर ध्यान दिलाते हुए प्रधानाचार्य को एक प्रार्थना-पत्र लिखिए।

परीक्षा भवन
प्रयागराज
दिनांक : 22 फरवरी, 20XX

प्रधानाचार्य,
केंद्रीय विद्यालय, कैण्ट
प्रयागराज।

विषय : खेल-कूद की सामग्री के लिए आवेदन

महोदय,

सविनय निवेदन है कि इस वर्ष हमारे विद्यालय ने क्षेत्रीय खेल प्रतियोगिताओं में बहुत अच्छा प्रदर्शन किया है। आगामी खेल प्रतियोगिताओं के लिए टीमों का चुनाव करने से पूर्व यह आवश्यक हो जाता है कि अपने विद्यालय के खेल के मैदान की समुचित सफ़ाई, ऊँचे-नीचे गड्ढ़ों की भराई, माप के अनुसार मैदान की निशानदेही और यथास्थान पोल गड़वाने की समुचित व्यवस्था की जाए। इन सबके अतिरिक्त खेल की आवश्यक सामग्री–गेंद-बल्ले, हॉकी-स्टिक, फुटबॉल, वॉलीबॉल, जाली (नेट) आदि का यथोचित प्रबंध करना भी आवश्यक है।

आशा है ऊपर दिए गए विवरण के अनुसार आवश्यक प्रबंध करने और सामग्री जुटाने की दिशा में आप शीघ्र ही यथोचित कदम उठाने की कृपा करेंगे।

आपका आज्ञाकारी शिष्य
क0 ख0 ग0
....

(ख) आवेदन–पत्र (नौकरी के लिए)

आवेदन–पत्र का प्रारूप

पद जिसके लिए आवेदन किया जा रहा है–कनिष्ठ लिपिक (हिंदी)

1. नाम : ....
2. पिता का नाम : ....
3. जन्म-तिथि : 20- 12-2001
4. वर्तमान पता : X Y Z
5. स्थायी पता : X Y Z
6. क्या आप अनुसूचित जाति/ जनजाति/पिछड़ी जाति के हैं ? : नहीं
7. यदि हाँ, तो जाति का नाम लिखिए : –
8. क्या आप भारतीय नागरिक हैं ? : हाँ
9. यदि नहीं तो अपनी नागरिकता लिखिए : –
10. योग्यता/अर्हताएँ :

कक्षा बारहवीं प्रथम श्रेणी 2018 के0मा0 शिक्षा बोर्ड, हिंदी, अंग्रेज़ी, गणित,
नई दिल्ली इतिहास, अर्थशास्त्र

बी0 ए0 द्वितीय श्रेणी 2021 इलाहाबाद वि0वि0 हिंदी, अंग्रेजी, इतिहास, अर्थशास्त्र।

टंकण डिप्लोमा 2022 आई.टी.आई., प्रयागराज हिंदी टंकण/अंग्रेज़ी टंकण।

मैं प्रमाणित करता हूँ कि आवेदित पद के लिए निर्धारित अर्हताएँ मुझमें हैं। जो सूचनाएँ इस आवेदन-पत्र में मैंने दी हैं, वे सही हैं।

आवेदन के हस्ताक्षर
X Y Z

दिनांक : ....

3. विज्ञापित पद के लिए आवेदन-पत्र।

परीक्षा भवन
प्रयागराज
दिनांक : 3 नवंबर, 20XX

प्रधानाचार्य,
केन्द्रीय विद्यालय, कैण्ट
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश।

विषय : गणित शिक्षक हेतु आवेदन।

महोदय,

अंग्रज़ी दैनिक 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में 30 अक्टूबर, 20XX को आपकी ओर से विज्ञापित गणित शिक्षक के पद के लिए मैं अपनी सेवाएँ अर्पित करना चाहता हूँ। मेरी शैक्षिक योग्यताओं और शिक्षण-अनुभव का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

- मैंने सन 1997 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय प्रयागराज से गणित में प्रथम श्रेणी के साथ एम0 एस–सी0 किया।
- सन 1999 में मैंने दिल्ली विश्वविद्यालय से संबद्ध राष्ट्रीय शिक्षा प्रशिक्षण संस्थान से बी0 एड्0 प्रथम श्रेणी में किया।
- जुलाई, 2002 से 2006 तक मैंने बाल भारती पब्लिक स्कूल प्रयागराज में गणित के वरिष्ठ शिक्षक के रूप में काम किया। यह एक प्रतिष्ठित विद्यालय है। यहाँ मेरे विद्यार्थियों का परीक्षा परिणाम उल्लेखनीय रहा है।
- एक कुशल शिक्षक होने के साथ-साथ मैं अपने अध्ययन काल में एक श्रेष्ठ वक्ता रहा हूँ और मैंने अनेक बार अंतर्विद्यालयी भाषण प्रतियोगिताओं में अपनी संस्था का सफल प्रतिनिधित्व किया है। इस संबंध में विशेष योग्यताओं के कुछ प्राप्त किए गए प्रमाण-पत्र मेरे पास हैं, जो मैं साक्षात्कार के समय आपके समक्ष प्रस्तुत करूँगा।

यदि महोदय द्वारा मुझे सेवा का अवसर दिया गया तो निश्चय ही मेरी भूमिका से कभी निराश नहीं होना पड़ेगा। आवश्यक प्रमाण-पत्रों की प्रतिलिपियाँ संलग्न कर रहा हूँ, वास्तविक प्रमाण-पत्र साक्षात्कार के समय आपके समक्ष प्रस्तुत करूँगा। आशा है आप मुझे सेवा का अवसर देकर अनुगृहीत करेंगे।

सधन्यवाद।

आवेदक
रामकृपाल सिंह

4. 'नाट्य कला केंद्र' नाम की एक संस्था दूरदर्शन के लिए कार्यक्रम बनाती है। संस्था को कुछ ऐसे युवकों की आवश्यकता है, जो अभिनय जानते हों, कम-से-कम दसवीं तक पढ़े हों और हिंदी और अंग्रेज़ी शुद्ध बोलते हों। अपनी योग्यताओं का विवरण देते हुए 'नाट्य कला केंद्र' को एक आवेदन पत्र लिखिए।

परीक्षा भवन
प्रयागराज
दिनांक : 2 जनवरी, 20XX

प्रबंधक,
नाट्य कला केंद्र
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश।

विषय : अभिनय के लिए आवेदन।

महोदय,

मुझे ज्ञात हुआ है कि आपकी संस्था को कुछ ऐसे कलाकारों की आवश्यकता है, जो अभिनय जानते हों और हिंदी-अंग्रेज़ी शुद्ध बोल सकते हों। इस कार्य हेतु मैं स्वयं को एक उम्मीदवार के रूप में प्रस्तुत करता हूँ। मुझसे संबंधित पूर्ण विवरण निम्नलिखित हैं –

नाम :	क-ख-ग
पिता का नाम :	अ- ब- स
शिक्षा :	दसवीं पास
अन्य योग्यताएँ :	मुझे बचपन से ही अभिनय में रुचि रही है। विद्यालयी स्तर पर मैंने अनेक नाटकों में अभिनय किया है। अभिनय का डिप्लोमा मैंने भारतीय नाटक संस्थान से प्राप्त किया है। मैं हिंदी और अंग्रेज़ी शुद्ध बोलने और लिखने में सक्षम हूँ।

आशा है आप मुझे एक अवसर देने की कृपा करेंगे।

धन्यवाद सहित।

भवदीय,
क0 ख0 ग0

(ग) कार्यालयी पत्र (सरकार/अर्धसरकारी संस्थाओं को)

5. अपनी गली/मोहल्ले की नालियों की समुचित सफ़ाई के लिए नगर निगम के स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखिए।

परीक्षा भवन
प्रयागराज
दिनांक : 4 दिसंबर, 20XX

स्वास्थ्य अधिकारी
नगर निगम,
प्रयागराज।

विषय : मोहल्ले की सफाई हेतु।

महोदय,

आपका ध्यान अलोपी बाग से संलग्न बस्ती की गन्दगी से उत्पन्न दयनीय स्थिति की ओर आकर्षित किया जाता है। इस बस्ती में सफ़ाई-व्यवस्था इतनी निम्नतर और चिंताजनक है कि यहाँ केशनिवासियों के स्वास्थ्य के लिए भयानक खतरा उत्पन्न हो गया है। जगह-जगह सड़ते कूड़े-कचरे के ढेर और उन पर भिनभिनाती मक्खियाँ किसी भी महामारी को आमंत्रित कर सकती हैं। साथ ही कूड़े-कचरे के ढेर को बिखरने से भी रास्ता चलने वालों को भी अत्यधिक कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

अतः उक्त बस्ती की स्वास्थ्य-सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए अविलंब कोई महत्त्वपूर्ण कदम उठाया जाए। अन्यथा स्थिति भयावह हो सकती है।

सधन्यवाद।

भवदीय,
मनोज कुमार

अनौपचारिक पत्र

व्यक्तिगत/पारिवारिक/सामाजिक पत्र

1. विद्यालय के वार्षिकोत्सव के अवसर पर में पुरस्कार-प्राप्ति की प्रसन्नता का वर्णन करते हुए अपनी माता जी को एक पत्र लिखिए।

परीक्षा भवन
दिनांक : 15 मार्च, 20XX

पूज्य माता जी,

सादर चरण स्पर्श।

पिछले एक माह से हम विद्यालय के वार्षिकोत्सव की तैयारी में लगे हुए थे। कल ही यह वार्षिकोत्सव आयोजित किया गया था, जिसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

विगत वर्षों की तरह इस वर्ष भी विद्यालय को सजाया गया था।

सरस्वती वंदना के साथ वार्षिकोत्सव कार्यक्रम का शुभारंभ प्रधनाचार्य ने अतिथियों का स्वागत करते हुए वर्ष की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए किया। तदंनतर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। जिसमें लोक-गीत, लोक-नृत्य, मूक–अभिनय तथा नाटक आदि का प्रस्तुतीकरण किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम का सबसे प्रमुख आकर्षण केन्द्र 'नाटक' था, जिसमें प्रमुख पात्र का अभिनय मेरे द्वारा किया गया, जिसे दर्शकों ने बहुत सराहा। इस अवसर पर कला-प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया, जिसमें नन्हे-मुन्ने कलाकरों के चित्रों को भी प्रदर्शित किया गया था।

सांस्कृतिक कार्यक्रम के पश्चात् मुख्य अतिथि माननीय शिक्षा निदेशक ने विद्यालय की गतिविधियों में भाग लेने वाले छात्रों में पारितोषिक वितरित किया। मुझे सर्वश्रेष्ठ अभिनेता तथा सर्वश्रेष्ठ वक्ता होने का पुरस्कार मिला। यह सब आपके आशीर्वाद तथा गुरुजनों के मार्गदर्शन का परिणाम है। मुख्य अतिथि ने भी मेरे अभिनय की सराहना की।

अंत में मुख्य अतिथि ने विद्यालय की उपलब्धियों की बहुत प्रशंसा की तथा छात्रों को रचनात्मक कार्यों को करते रहने की प्रेरणा भी दी। प्रधानाचार्य द्वारा तभी अतिथियों को धन्यवाद दिए जाने के बाद समारोह का समापन हो गया।

शेष सब कुशल है।

आपका,
आज्ञाकारी पुत्र
क ख ग

2. किसी पर्यटक स्थल का वर्णन करते हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए कि वह भी कुछ दिनों के लिए आपके पास आ जाए।

परीक्षा भवन
प्रयागराज
दिनांक : 20 मार्च, 20XX

प्रिय मित्र दिनेश,'

नमस्ते।

आशा करता हूँ तुम सकुशल होगे। कल ही तुम्हारा पत्र मिला। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि तुम्हारी परीक्षा समाप्त हो गई है तथा विद्यालय ग्रीष्मावकाश के उपलक्ष्य में 30 जून तक के लिए बंद हो गया है।

मेरी बहुत दिनों से यह अभिलाषा थी कि तुम्हें कुछ दिनों के लिए अपने पास बुलाएँ, परन्तु तुम्हारी परीक्षा एवं पढ़ाई का विचार कर ऐसा नहीं कर पा रहा था। अब तुम्हारी परीक्षा समाप्त हो गई है और विद्यालय भी बंद हो गया है, अतः हम तुम्हें अपने घर आने का सप्रेम निमंत्रण प्रेषित करता हूँ।

यद्यपि मेरा घर छोटे से नगर में है, फिर भी इसकी कई विशेषताएँ हैं। इस नगर में अनेक दर्शनीय एवं पर्यटक स्थल हैं। इस नगर का एक-एक कोना अपने नैसर्गिक सौंदर्य से परिपूर्ण है।

मुझे पूरा विश्वास है कि तुम निश्चित रूप से मेरे निमंत्रण को स्वीकार करोगे। हम तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं। आने से पूर्व यहाँ पहुँचने की तिथि से अवगत कराना, जिससे मैं तुम्हें लेने स्टेशन पर आ सकूँ।

तुम्हारा मित्र

क0 ख0 ग0

3. अपने मित्र को अपने बड़े भाई के विवाह में सम्मिलित होने का निमंत्रण भेजिए।

परीक्षा भवन

प्रयागराज

दिनांक : 11 मार्च, 20XX

प्रिय मित्र दिनेश,

नमस्कार।

तुम्हें यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि ईश्वर की असीम अनुकम्पा से मेरे अग्रज श्री नीरज कुमार का शुभ विवाह वाराणसी निवासी श्री विनीत कुमार की पुत्री से दिनांक 25 मार्च, 20XX को होना सुनिश्चित हुआ है। वरयात्रा 25 मार्च को प्रातः दस बजे वाराणसी के लिए प्रस्थान करेगी। इस शुभ अवसर पर मैं तुम्हें सप्रेम आमंत्रित करते हुए आशा करता हूँ कि तुम अपनी उपस्थिति से विवाह समारोह की शोभा बढ़ाओगे।

शेष मिलने पर...

तुम्हारा मित्र

क0 ख0 ग0

4. 'छात्रावास की जीवनशैली' विषय पर अपने मित्र को एक पत्र लिखिए।

परीक्षा भवन

प्रयागराज

दिनाक : 13 मार्च, 20XX

प्रिय मित्र संतोष,

नमस्ते।

तुम्हारा 4-3-20XX का लिखा पत्र क्या मिला, मानों तुम स्वयं मिल गए। उत्तर में देरी के लिए क्षमा-प्राथी हूँ। तुमने छात्रावास के जीवन के बारे में पूछा है। सच बात तो यह है कि यहाँ के आनंद का वर्णन कर पाना कठिन है।

हमारे छात्रावास का भवन विशाल एवं एकदम नया है। इसका परिसर भी स्वच्छ तथा सुंदर है। चारों ओर हरियाली है तथा दोनों ओर खुले 'लॉन' हैं।

सूर्योदय से पूर्व हमें जगा दिया जाता है। हम दैनिक क्रिया से निवृत्त होकर उद्यान में घूमने चले जाते हैं। वहाँ योगासन, व्यायाम आदि करने के बाद दौड़ भी लगाते हैं। वापस आकर हम नाश्ता करते हैं। हमारे छात्रावास का भोजन बहुत बढ़िया होता है।

महीने में एक दिन रात्रि के समय हमारे छात्रावास में विनोद–सभा अवश्य होती है। इसमें हम लोग कविता, कहानी, चुटकुले, ग़जल या कभी गीत गाने के साथ-साथ नृत्य भी प्रस्तुत करते हैं।

शेष फिर कभी मिलने पर...

तुम्हारा स्नेहाकांक्षी

क0 ख0 ग0

5. सड़क–दुर्घटना से घायल मित्र को सांत्वना देते हुए एक पत्र लिखिए।

परीक्षा भवन

प्रयागराज

दिनांक : 26 मार्च, 20XX

प्रिय मित्र अर्जुन,

नमस्कार।

कल अमृत के पत्र द्वारा विदित हुआ कि तुम विगत माह में एक सड़क दुर्घटना में घायल हो गये थे। इस समाचार से न केवल मैं, अपितु मेरे माता-पिता भी अत्यंत दुखी हैं। इतनी भयंकर दुर्घटना में कुछ भी हो सकता था; पर ईश्वर ने तुम्हारी रक्षा की। पढ़ाई आदि के बारे में अधिक चिंता मत करना। विपत्ति के समय ही मनुष्य के

धैर्य एवं साहस की परीक्षा होती है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम इस परीक्षा में अवश्य उत्तीर्ण होगे। तुम न केवल स्वयं साहस का परिचय दोगे बल्कि अपने माता-पिता एवं परिजनों को भी चिंतित होने से बचाने का प्रयास करोगे। मेरे माता-पिता तुम्हारे शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करते हैं। मैं शीघ्र ही तुमसे मिलने आऊँगा।

शेष मिलने पर...

तुम्हारा अभिन्न मित्र

क0 ख0 ग0

अभ्यास

1. कुछ समय पूर्व आपने एक रेफ्रिजेटर खरीदा, जिनमें अनेक कमियाँ हैं। इस समस्याओं के निवारण हेतु अपने विक्रेता के नाम एक पत्र लिखिए, जहाँ से आपने वह खरीदा है।
2. स्वास्थ्य केंद्र पर उपकरणों एवं औषधियों के अभाव के कारण रोगियों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। इस समस्या की ओर अधिकारियों का ध्यान आकर्षित करने के लिए किसी समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।
3. अपने छोटे भाई को मन लगाकर पढ़ने की सलाह देते हुए पत्र लिखिए।
4. अपनी माता जी की बीमारी पर चिंता व्यक्त करते हुए अपने पिता जी को एक पत्र लिखिए।
5. आपके विद्यालय में होने वाले वार्षिक उत्सव में आपको पुरस्कृत किया जाएगा। आप चाहते हैं कि आपकी माता जी भी इसे देखें। माता जी को बुलाने के लिए पत्र लिखिए।
6. अपनी विशेष रुचियों का परिचय देते हुए अपने पत्र-मित्र को पत्र लिखिए।
7. समय के सदुपयोग और परिश्रम पर बज देते हुए छोटे भाई को एक प्रेरणादायक पत्र लिखिए।
8. अपने जन्म-दिन पर मित्र द्वारा भेजे गए उपहार के लिए धन्यवाद-पत्र लिखि्ए।
9. विदेश में स्थित अपने पत्र-मित्र को होली की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए पत्र लिखिए।
10. आपकी माताजी जी विधानसभा चुनाव जीत गई हैं। मतदाताओं की अपेक्षाओं में खरे उतरने की कामना करते हुए उन्हें बधाई पत्र लिखें।
11. वाराणसी में रहने वाली प्रज्ञा की ओर से छात्रावास में रहने वाले भाई को व्यायाम का महत्त्व बताते हुए पत्र लिखिए।
12. आप ग्रीष्ममावकाश में मंसूरी स्थित नाट्य-संस्थान से प्रशिक्षण पाना चाहते हैं, परंतु आपकी माताजी सहमत नहीं हैं। उन्हें नाट्य की विशेषताओं से अवगत कराते हुए पत्र लिखिए।
13. उत्तर मध्य रेलवे के महाप्रबंधक को एक पत्र लिखिए, जिसमें टिकट-निरीक्षक के अभद्र व्यवहार की शिकायत की गई हो।

14. आप पर्यटन के लिए चेन्नई गए थे। वहाँ एक स्थानीय छात्र की सहायता से आपका पयर्टन यादगार हो गया। उसे एक धन्यवाद-पत्र लिखिए।
15. आपके विद्यालय के पुस्तकालय में हिंदी की पत्र-पत्रिकाएँ नहीं मँगाई जातीं। इसकी शिकायत करते हुए प्रधानाचार्य को एक पत्र लिखिए।
16. अपने क्षेत्र में पार्क विकसित कराने के लिए नगर निगम के मुख्य उद्यान-निरीक्षक को पत्र लिखिए।
17. वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर अपने चचेरे भाई को बधाई देते हुए पत्र लिखिए।
18. राज्य परिवहन निगम के मुख्य प्रबंधक को बस चालक के अप्रशंसनीय व्यवहार का उल्लेख करते हुए शिकायती पत्र लिखिए।
19. अपने मित्र को एक पत्र लिखिए, जिसने रूड़की कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग में प्रवेश–परीक्षा में सफलता पर उसे बधाई दी गई हो।
20. आपके छोटे भाई ने बोर्ड–परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। पुरस्कार में एक मोटरसाइकिल खरीदने की जिद करने पर उसे पत्र लिखकर समझाइए कि अवयस्क के लिए वाहन चलाने की वैधानिक अनुमति नहीं होती है।

■